

बैगस्टीन, मार्च 1936

सुभाषचन्द्र बोस

नेताजी

सम्पूर्ण वाङ्मय

खंड 7

सम्पादक

शिशिर कुमार बोस

सुगता बोस

अनुवादक

माधवी दीक्षित



प्रकाशन विभाग

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

भारत सरकार

शक 1919 (1998)

ISBN : 81-230-0537-7

मूल्य : 105.00 रुपये

निदेशक,
प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस,
नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केंद्र • प्रकाशन विभाग

- पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110001
- सुपर बाजार, (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
- कॉमर्स हाउस, करीम भाई रोड, बालार्ड पायर, मुंबई-400038
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069
- राजाजी भवन, बेसेंट नगर, चेन्नई-600009
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, तिरुअनंतपुरम-695001
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004
- एफ विंग, प्रथम तल, केंद्रीय सदन, कोरा मंगला, बंगलौर-560034
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004
- 27/6, राममोहन राय मार्ग, कृषि भवन के पीछे, लखनऊ-226019

विक्रय काउंटर • प्रकाशन विभाग

- पत्र सूचना कार्यालय, 80-मालवीय नगर, भोपाल (म.प्र.)-462003
- पत्र सूचना कार्यालय, सी.जी.ओ. काम्पलेक्स, 'ए' विंग, ए.बी. रोड, इंदौर (म.प्र.)
- पत्र सूचना कार्यालय, के-21, नंद निकेतन, मालवीय नगर, 'सी' स्कीम, जयपुर (राजस्थान)-302003

टाईप सेंटर : प्रिंटक्राफ्ट, नई दिल्ली 110055
मुद्रक : आकाशदीप प्रिन्टर्स, 20 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002



कृतज्ञता-ज्ञापन

एमिली शेंकल

अनिता फैफ

कृष्णा बोस

लियोर्नाड गोर्डन

शर्मिला बोस

सुमन्तरा बोस

नागा सुन्दरम

कार्तिक चक्रवर्ती

विषय सूची

भूमिका

'यह लंबा पत्र समाप्त करने से पहले एक और बात। अपने जीवन में कभी स्वार्थ के लिए जगह मत रखना, मानवता की भलाई की सोचना क्योंकि यही हमेशा-हमेशा के लिए भला है और यही ईश्वर की नज़र में भी उचित है निष्काम भाव से कर्म करो'

एमिली शेंक्ल को सुभाष चंद्र ने लिखा 30 मार्च 1936

'अचानक मुझे 'ब्लीग गीस' का मूर्खतापूर्ण ख्याल आया। यह इस प्रकार किया जाता है। एक चम्मच में सीसा पिघलाया जाता है फिर उसे ठंडे पानी में डाल दिया जाता है। एकदम वह एक आकार ग्रहण कर लेता है इस आकार के आधार पर जिस व्यक्ति ने सीसा पानी में डाला था उसकी भविष्यवाणी की जाती है। मेरे द्वारा डाले गए सीसे ने विचित्र आकार लिया जो भारत का नक्शा सा लग रहा था।'

सुभाष चंद्र बोस को एमिली शेंक्ल 1 जनवरी 1937

वियना में नववर्ष की पूर्व संध्या को 1936 में इस प्रक्रिया ने इस आस्ट्रियाई महिला की सही-सही भविष्यवाणी कर दी थी कि उसका जीवन उस देश के भविष्य से इस प्रकार बंधा है जिस देश को वह कभी देख भी नहीं पाएगी। वियना में अपने घर में 1971 में शेंक्ल ने कृष्णा बोस से बातचीत में याद करते हुए बताया कि सुभाष चन्द्र मुझे कहते थे कि-'भारत मेरा पहला और अंतिम प्यार है।' सुभाष चंद्र बोस के निकटतम मित्र और राजनीति के क्षेत्र में सहयोगी श्री ए०सी०एन० नाम्बियार के अनुसार- उनका केवल एक ही लक्ष्य था-भारत की स्वतंत्रता।' इसी के साथ वे कहते हैं कि एक ही छूट यदि इसे छूट कहा जाए तो, वह यह कि उन्हें सुश्री शेंक्ल से अत्यधिक प्यार था। वास्तव में वे पूरी तरह पागल थे-शेंक्ल से वे बहुत प्यार करते थे। वास्तव में यह गहन और अनिवार्य प्यार था।

सुभाष चंद्र बोस और एमिली शेंक्ल पहली बार वियना में जून 1934 में मिले थे। अपनी पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल' की भूमिका में 29 नवंबर 1934 को उन्होंने केवल इन्हीं के नाम का उल्लेख किया था। अंत में उन्होंने लिखा था—मैं फ्रॉलिन ई० शेंक्ल का

तथा अन्य मित्रों का आभारी हूं जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने में कई प्रकार से सहायता दी। इसी दौरान उनका पत्राचार भी शुरू हुआ, सुभाष चंद्र बोस उन दिनों देश निकाले की वजह से यूरोप में थे और जब उन्हे अपने पिता की गंभीर बीमारी की सूचना मिली तब वे भारत लौटे। रोम से 30 नवंबर 1934 को लिखे बोस ने अपने पहले पत्र में लिखा–'मै बुरा पत्र लेखक हो सकता हूं किंतु बुरा व्यक्ति नहीं हूं।' यही बुरा पत्र लेखक शेक्ल को निरंतर पत्र लिखता रहा चाहे वह जेल में रहा, अस्पताल में रहा, घर में नजरबंद रहा या राजनैतिक क्षेत्र मे अति व्यस्त रहा। सन् 1934 से 1942 तक जो 162 पत्र उन्होंने लिखे, वे इस अक में प्रकाशित किए जा रहे हैं। यह स्पष्ट है कि एमिली शेक्ल ने भी पूर्ण तत्परता से निरंतर पत्र लिखे, किंतु उनके केवल 18 पत्र ही बचे हैं। ये 1980 में एक सिगार के डिब्बे मे, अन्य उन 1921 पत्रो के साथ थे, जो सुभाष बोस व उनके भाई शरत के मध्य सुभाष के भारतीय प्रशासनिक सेवा से त्यागपत्र देने के संबंध में लिखे गए थे। सुभाष चंद्र बोस पत्र लेखन में बुरे नहीं थे किंतु उनके बहुत से पत्र इधर-उधर हो जाते थे, वे प्राप्त पत्रों को संभाल नहीं सकते थे।

इस संकलन के पहले 14 पत्र जो 30 नवंबर 1934 और 26 जनवरी 1935 के मध्य लिखे गए वे इटली, ग्रीस, इजीप्त और इराक होते हुए भारत की वायुयान की यात्रा के दौरान लिखे गए। इसमे वे पत्र भी शामिल हैं जो उन्होने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात शोक अवधि मे घर मे नजरबंदी के दौरान लिखे तथा यात्रा के दौरान कुछ अवधि के लिए वे इटली मे रुके, तब लिखे। अपने 25 जनवरी 1935 के पत्र में उन्होने मुसोलिनी से मुलाकात का जिक्र किया है जो उस शाम होनी थी। वे अपनी पुस्तक 'द इंडियन स्ट्रगल' के प्रकाशन से बहुत प्रसन्न थे। वे एमिली शेंक्ल का टेलिफोन नंबर नहीं भूले हालांकि अपना 23 तारीख का जन्मदिन भूल गए। 1934 तक वे परम मित्र बन चुके थे। एमिली शेंक्ल ने केवल विएना मे ही बोस के साथ कार्य नहीं किया बल्कि उनके साथ वे बैगस्टीन और कार्ललवी वरी भी गई।

वर्ष 1935 में उन्हें विएना में खासतौर से स्वास्थ्य केंद्रों में रहकर एक दूसरे से करीब से मिलने का अवसर मिला। इसलिए ऐसे अवसर कम ही थे कि वे पत्राचार करते। अप्रैल 1935 मे सुभाष बोस का गॉल ब्लैडर का आपरेशन हुआ था जिसकी वजह से वे विएना मे भारतीय राजदूत के तौर पर नहीं रह पाए जैसे कि 1933 और 34 में वे इस रूप में वहां रहे थे। 1936 के पत्र व्यवहार से निष्कर्ष निकलता है कि इन दिनों बोस काफ़ी स्वस्थ महसूस कर रहे थे और यूरोप की यात्रा पर जाने की योजना भी बना रहे थे। उनके आयरलैड से लिखे पत्र बहुत दिलचस्प हैं, जहां उनकी ईमोन डे वेलेरा से कई मुलाकातें हुई। मार्च 1936 में सुभाष बोस ने भारतीय सरकार की इस चेतावनी के बावजूद, कि यदि वे भारत आए तो उन्हें स्वतंत्र नहीं रहने दिया जाएगा, भारत लौटने का

निर्णय लिया। उनके वहा से रवाना होने से कुछ समय पूर्व एमिली शेंक्ल उनके साथ बैगस्तीन में कुछ दिन रही थी।

29 मार्च 1936 में सुभाष बोस ने जहाज कांट वरदे से पत्र लिखा-"ऐसी बहुत सी बाते हैं जो मै तुम्हें लिखना चाहता हू किंतु मै उन्हें क्रमानुसार नहीं लिख पाऊंगा-अत: मेरे पत्र ध्यानपूर्वक पढना।" मार्च 1936 के अंत मे उन्होने तीन पत्र लगातार प्रति दिन लिखे जिनमें 20 महीने के विछोह का जिक्र है। 8 अप्रैल 1936 से 15 मार्च 1937 तक के सभी पत्र पुलिस द्वारा सेसर किए गए इनमे से पहले बंबई की आर्थर रोड जेल से और पूना की यरवदा केंद्रीय जेल से लिखे गए। ग्यारह पत्र कुर्सियांग की नजरबंदी के दौरान के हैं। पाच कलकत्ता के मेडिकल कालेज अस्पताल में कैद के दिनों मे लिखे गए है। इस दौरान एमिली शेक्ल द्वारा लिखे गए आठ पत्र बच रहे। एमिली शेक्ल के एक पत्र ने (जो मिला नहीं) उनके शांत जीवन मे परिवर्तन ला दिया और उनके विचारों को विएना मे पहुचा दिया। इस दौरान लिखे गए पत्रो मे विभिन्न विषयो पर चर्चा है जिसमे आस्ट्रिया की राजनीति, पुस्तके, संगीत, बुडापेस्ट और प्राग के प्रति बोस का आकर्षण, विएना के कैफ़ेटरिया मे चुटकुलेबाजी, आध्यात्मिक और एक दूसरे के स्वास्थ्य के प्रति चिंता आदि विषय शामिल है।

18 मार्च 1937 में बोस ने अपनी रिहाई की सूचना तत्काल शेक्ल को दी "मेरी स्वतंत्रता का अभिप्राय है कि मै आजादी से कहीं भी आ जा सकता हूं, मेरे पत्र सेसर नहीं होंगे यद्यपि चोरी छुपे अवश्य सेसर किए जाते रहेंगे।" अपने 25 मार्च 1937 के पत्र में उन्होंने वादा किया-"मैं प्रत्येक सप्ताह पत्र लिखने का प्रयास करूगा। इस वादे को उन्होंने कुछ माह तक निभाया भी, क्योंकि कलकत्ता से उन्होने कुछ माह तक लगातार पत्र लिखे। ऐसे ही कुर्सियाग, लाहौर और डलहौजी से भी निरंतर पत्र लिखे। 1937 की गर्मियों में उन्होने बिना तिथि के कुछ पत्र लिखे जिनमे उन्होने अग्रेजी के बडे अक्षरो मे अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति भी की। पहले पत्र मे उन्होने लिखा-'मै कई दिन से तुम्हें पत्र लिखने की सोच रहा था। किंतु तुम यह समझ ही सकती हो कि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कर पाना मेरे लिए कितना कठिन है। अब मै तुम्हे यह बताना चाहता हूं कि मै जैसा पहले था वैसा ही अब भी हू। जैसा तुम मुझे जानती थी। एक भी दिन ऐसा नहीं बीतता जब मै तुम्हे याद न करता हू। तुम हमेशा मेरे पास हो। इस विश्व में मै तुम्हारे सिवाय किसी और के बारे में सोच भी नही सकता। मै तुम्हे बता नहीं सकता कि इन दिनो मैने स्वयं को कितना दुखी और अकेला महसूस किया है। मुझे केवल एक ही चीज प्रसन्न कर सकती है। किंतु मै नहीं जानता कि वह संभव है या नहीं। मैं रात-दिन इसी विषय मे सोचता रहता हू और ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि वह मुझे सही मार्ग दिखाए'।

4 नवंबर 1937 को सुभाष चंद्र बोस ने शेंक्ल को (जर्मन) पत्र लिखा, जिसमें अपनी यूरोप की यात्रा की सूचना दी और उन्हें कहा कि उनके लिए कुहास हॉकलैंड, बैगस्टीन में रहने की व्यवस्था कर दे। अब तक बोस जान चुके थे कि 1938 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष वही बनेंगे। 26 दिसंबर, 1937 में सुभाष बोस ने गुप्त रूप से एमिली शेक्ल से विवाह कर लिया। हमने उनसे पूछा कि, इतनी स्पष्टता के बावजूद उन्होंने अपने इस संबंध और शादी को इतना गुप्त क्यो रखना चाहा। एमिली शेक्ल ने बताया कि बोस के लिए उनका देश प्रमुख था। तथा इस विवाह की घोषणा से व्यर्थ के विवाद उठ खड़े होते। यह पता चला कि दिसबर 1937 मे बोस ने बैंगस्टीन में अधूरी आत्मकथा लिखीं। उनके कथा लेखक लियोनार्ड गार्डन ने उनके अध्याय 'माई फेथ' (दार्शनिक) मे प्रेम के प्रति उनके विचारो को अहमियत नहीं दी। गार्डन ने प्रारंभिक अध्यायों मे टिप्पणी भी की है जिसमे बोस ने लिखा था-"मै पूर्ण आध्यात्मिक आदर्शवादी जीवन से समाज सेवा में धीरे-धीरे रमता चला गया। धीरे-धीरे सेक्स के प्रति मेरे विचार भी बदलते गए। सुभाष चंद्र बोस के वैराग्य के विषय में गलत धारणाओं का मुख्य कारण सभवत: उनकी युवावस्था में जीवन मूल्यों के प्रति अधिक आस्था के कारण था। बैगस्टीन के दिन बोस के जीवन के अधिक महत्वपूर्ण दिन थे, उस स्थान की अपेक्षा जहां उन्होने अपनी जीवन कथा लिखी।"

1938 के दौरान लिखे बोस के कई पत्रों मे उनके काग्रेस अध्यक्ष के रूप में व्यस्त कार्यक्रमो व यात्राओ का जिक्र हुआ है। अधिकांश पत्र गाड़ी मे लिखे गए है क्योंकि वे उन दिनो देश भर की यात्रा पर थे। पाठक देखेगे कि उन्होने व्यक्तिगत बातें और प्रेम जर्मन भाषा में ही व्यक्त किया है। 17 अक्तूबर 1938 के पत्र में वे लिखते हैं कि-"हालांकि मैं दिन-रात कार्य मे व्यस्त रहता हूं किंतु फिर भी अकेलापन महसूस करता हूं।" उन्होने पत्रो में बार-बार यह दुहराया है कि वे रात-दिन एमिली शेक्ल के विषय मे ही सोचते रहते है। अध्यक्ष पद के रूप मे अपने पुन: चुनाव के प्रति वे काफी उदासीन दिखाई देते हैं। 4 जनवरी 1939 मे वे लिखते है कि-"यद्यपि मेरे पुन: अध्यक्ष चुने जाने के लोग इच्छुक हैं-फिर भी मुझे महसूस होता है कि मै पुन: अध्यक्ष नहीं बन पाऊंगा-एक प्रकार से तो यह अच्छा ही होगा यदि मै पुन: अध्यक्ष नहीं बनूंगा तो। मेरे पास बहुत सा समय होगा और वह मेरा अपना समय होगा।" चुनाव जीतने के बाद 11 फरवरी 1939 के पत्र मे उन्होने लिखा-"मै एक वर्ष के लिए पुन: चुन लिया गया हूं। महात्मा गांधी और उनके सहयोगियों ने मेरा विरोध किया। पं० नेहरू तटस्थ रहे। चुनाव का परिणाम मेरी अपार विजय है। पूरा देश मेरे चुने जाने पर उत्साहित है किंतु मेरे कंधों पर जिम्मेदारी आ पड़ी है।"

विवादास्पद त्रिपुरी कांग्रेस के दौरान अपनी बीमारी के सबंध मे बोस ने 19 अप्रैल 1939 में लिखा-"मैं चाहता हूं कि मैं बैगस्टीन जा पाऊं-किंतु मालूम नहीं मैं और

समय निकाल पाऊंगा अथवा नहीं।'' कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा दे देने के बाद वे काफ़ी संतुष्ट दीखते थे। 15 जून 1939 में उन्होंने लिखा-'भारत विचित्र देश है। यहां लोग इसलिए लोकप्रिय नहीं होते कि उनके हाथ में शक्ति है बल्कि शक्ति या पद छोड़ देने पर अधिक लोकप्रिय होते हैं।' उदाहरण के लिए इस बार लाहौर में मेरा जोर दार स्वागत हुआ, उस बार की अपेक्षा, जबकि मैं अध्यक्ष था। उन्होंने 21 जून 1939 के पत्र में सुश्री एमिली शेंक्ल को लिखा ''अगस्त तक प्रतीक्षा करो संभवत; मैं बैगस्टीन आ सकूंगा।'' फिर जबलपुर से बंबई जाते समय गाड़ी में 6 जुलाई 1939 को लिखा-'मुझे कम से कम एक माह का अवकाश ले लेना चाहिए। किंतु यह नहीं जानता कि वह छुट्टियां अगस्त के मध्य में शुरू होंगी या सितंबर के शुरू में।'

सितंबर 1939 में युद्ध शुरू हो जाने की वजह से सब योजनाएं स्थगित हो गईं और एमिली शेंक्ल से पत्र-व्यवहार भी बाधित हुआ। भारत से नाटकीय स्थितियों में बच निकलने के बाद फिर उन्होंने अगला पत्र बर्लिन से 3 अप्रैल 1941 को लिखा। यह तो सभी जानते हैं कि बोस यूरोप मुख्यत: ब्रिटिश इंडियन आर्मी में भारतीय सैनिकों की अनुवृद्धि के लिए गए थे। उनका यह विश्वास था कि अंग्रेजी राज के प्रति भारतीय सैनिको की अनिष्ठा उपनिवेशवादी आंदोलन के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है। लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि बोस एक व्यक्तिगत कारण से भी यूरोप अवश्य जाना चाहते थे। वे देश के हित में निजी बलिदान देना भी जारी रखना चाहते थे।

वर्ष 1941 की बसंत ऋतु में एमिली शेक्ल भी बर्लिन में सुभाष बोस के पास रहीं। शेष पूरा साल और 1942 के प्रारंभ के 8 माह वे दोनों एक साथ बर्लिन में सोफ़ीन स्ट्रासे के घर में रहे। 29 नवंबर 1942 मे विएना में उनकी पुत्री अनीता का जन्म हुआ। हालांकि 1942 के अंतिम छ: माह में बोस ने रोम और बर्लिन से भी कुछ पत्र लिखे किंतु प्राय: वे एमिली शेंक्ल से फ़ोन पर बात किया करते थे। दिसंबर 1942 में वे अपनी पुत्री को देखने विएना आए थे। 8 फरवरी 1943 में सबमैरीन द्वारा पूर्वी एशिया के लिए रवाना होने से पूर्व 1943 जनवरी में एमिली शेक्ल कुछ दिन उनके साथ रहीं। सुभाष बोस उन्हें एशिया से भी रेडियो पत्र भेजते रहे किंतु उस समय तक द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विएना पर ब्रिटिश सेना का कब्जा हो चुका था अत: ब्रिटिश सेना के अधिकारी वे पत्र अपने कब्जे मे ले लेते थे।

अपनी खतरनाक सबमैरीन यात्रा पर निकलने से पहले सुभाष बोस ने 8 फरवरी 1943 में अपने बड़े भाई शरत को बंगला भाषा मे पत्र लिखा था-''मैं ख़तरे की राह पर निकल पड़ा हूं। किंतु इस बार घर की दिशा मे। पता नहीं इस बार राह का अंत देख पाऊंगा अथवा नहीं। मैंने यहां शादी कर ली है और मेरी एक बेटी भी है। मेरी

अनुपस्थिति में कृपया आप वही प्यार उन्हें भी देना जो आपने आज तक मुझे दिया है।"
इस पत्र के मिलने के बाद शरतचंद्र बोस अपनी पत्नी विभावती तथा बच्चों शिशिर, रोमा और चित्रा के साथ 1948 में विएना गए। जहां उन्होंने बोस परिवार में एमिली और अनीता का स्वागत भी किया। चार दशकों के बाद जून 1993 में एक बार परिवार इकट्ठा हुआ तब एमिली ने यह निर्णय लिया कि सुभाष चंद्र बोस द्वारा उन्हें लिखे पत्र व उनके द्वारा सुभाष बोस को लिखे पत्र जनता के सामने आने चाहिए। अपनी बेटी के आगस्बर्ग स्थित घर में रात्रि भोज के पश्चात् उन्होंने शिशिर कुमार बोस, कृष्णा बोस, अनीता फैफ़, मार्टिन फ़ैफ, सुगता बोस और माया फैफ़ के सामने एक घोषणा की। उन्हें शिशिर बोस के स्वास्थ्य की बहुत चिंता थी और वे चाहती थीं कि उनके सक्रिय रहते रहते-यह अंक प्रकाशित हो जाना चाहिए।

इस अंक में नेताजी सुभाष चंद्र बोस के व्यक्तित्व के कई शानदार मानवीय और भावनात्मक पहलुओं की झलक मिलती है। इस प्रकाशन द्वारा हम उस महान स्त्री को सम्मानित करना चाहते हैं जिसमें अदम्य साहस था, गज़ब की स्वतंत्र भावना और आत्मसम्मान था जिसने भारत के महान नायक के जीवन को नया रूप और प्रेरणा प्रदान की।

शिशिर कुमार बोस
सुगता बोस

एमिली शेंक्ल को लिखे पत्र

1934-1942

रोम
30.11.34

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा लिखा पत्र मिला, पढ़कर बहुत आनंद आया।

मेरी रोम की यात्रा बहुत सुखद रही। कई बार (ट्रायोल के समीप) हम बादलों से ऊपर पहुंच गए तो कभी तेज धूप में घिर गए। नीचे पृथ्वी पर धुंध छाई थी जिस कारण वह रहस्यमयी प्रतीत हो रही थी। 'डोलोमाइट्स' (खनिज शैल) बर्फ़ से ढके थे और सफेद दिख रहे थे।

ढाई घंटे की यात्रा के पश्चात् हम वेनिस पहुचे। वेनिस से रोम पहुंचने में दो घंटे लगे।

यदि भविष्य मे कभी मैं तुम्हे, मेरी पुस्तकें और ट्रंक भिजवाने के लिए लिखूं तो, तुम प्रत्येक लेख तथा प्रत्येक पत्र अवश्य फाड़ देना। मुझे केवल प्रकाशित पुस्तके ही भेजना। फ्रेंच भाषा का अध्ययन जारी रखना।

यदि संभव हो तो, उन 210 शिलिंग से जो मैने तुम्हें लिफ़ाफ़े में दिए थे, एक टाइपराइटर खरीद लो।

मुझे आशा है कि तुमने पूरी सावधानी से गैली, भूमिका आदि भिजवा दी होगी और कोई गलती नहीं की होगी।

जब-तक मै भारत नहीं पहुच जाता तब तक तुम्हें पत्र नहीं लिख पाऊंगा। चिंता नहीं करना। मै सदा खराब पत्र लेखक रहा हूं किंतु, खराब व्यक्ति नहीं हूं।

यह पत्र मैं तुम्हे एयरमेल से भेज रहा हूं। किसी को बताना नहीं कि मैंने तुम्हें एयरमेल से पत्र भेजा है क्योंकि तुम्हारे सिवाय मैं किसी को भी एयरमेल से पत्र नहीं भेजता, अत: उन्हें यह अच्छा नहीं लगेगा।

कल रात मैं प्रातः साढ़े छः बजे तक, पुस्तक खत्म करने के लिए, कार्य करता रहा और बिल्कुल भी सो नहीं सका। कल प्रातः 7.30 बजे जहाज पकड़ूंगा। मैं वह वायुयान देख आया हूं जिसमें मुझे रोम से कलकत्ता के लिए रवाना होना है। अमैस्टरडम से मैं यहां पहुंच ही चुका हूं।

मेरे कलकत्ता के पते-1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता के पते पर एक औपचारिक पत्र एयरमेल द्वारा भेजो, जिसमें यह सूचना भी देना कि 'विशार्ट' को गैलीज आदि सुरक्षित प्रेषित की जा चुकी है। कृपया पत्र टाइप करके भेजना।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस
(बिना तिथि के, नवंबर, 1934)

टाइपराइटर खरीद लेने की खुशी में उपहारस्वरूप। कृपया मुझे लिखो कि मशीन (टाइपराइटर) कब खरीदी और कैसी चल रही है।

वेनिस
1.12.34
(1.30 अपराह्न)

अभी-अभी मैं यहां पहुंचा हूं और दोपहर का भोजन कर रहा हूं। कुछ ही क्षणों में फिर रवाना होने वाला हूं। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम।

सुभाष चंद्र बोस
30.11.34.

एथेंस
(बिना तिथि का, 1.12.34)

रोम में तुम्हारा तार मिला। मै दोपहर तीन बजे के आस-पास यहां (एथेस) पहुंच गया था। कुछ थकान महसूस हो रही है, अन्यथा स्वस्थ हूं। अनुबंध ज्ञापन के संबंध में, हस्ताक्षर आवश्यक नहीं हैं क्योंकि वह मेरी ही प्रति है। दूसरी प्रति जो विशार्ट भेजी गई है उस पर मैं पहले ही हस्ताक्षर कर चुका हूं। जब कभी मैं तुम्हें यह लिखूं कि मेरे लेख भारत भिजवा दो तो याद रखना कि सभी लेख, पत्रादि नष्ट कर देना, केवल पुस्तकें और कपड़े ही भारत भिजवाना। एथेंस में कुछ भी देख पाना शायद संभव नही होगा। समय

कम है और मुझे कई पत्र लिखने हैं। अंधेरा होने पर मुझे दिखाई कम देता है आशा है आप सभी आनंद से हैं।

सुभाष चंद्र बोस
रात्रि 10 बजे. मैं एथेंस के कुछ स्थल देख पाया हूं।

मिस्र
1.12.34

यहां 4000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन पिरामिड, मस्जिदें, और मकबरे आदि देखने मे बहुत आनंद आया। अब पुनः मैं पूर्व के मध्य क्षेत्र में वापिस पहुंच गया हूं। एथेंस से आते समय रात्रि में हमारा वायुयान बादलों से भी ऊपर उड़ रहा था अतः हमने शानदार सूर्योदय देखा, जो हम केवल पूर्व मे ही देख पाते हैं। यूरोप में शानदार सूर्योदय बहुत कम देखना संभव हो पाता है। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूं। कल प्रातः फिर यात्रा प्रारंभ करूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

इराक
रविवार, 2.12.34

कायरो से आज दोपहर मैं यहां पहुंचा। कल शाम मैं कराची में होऊंगा तथा एक दिन बाद (यानी मंगलवार को) कलकत्ता में। इन पुराने स्थलों को देखने का अलग ही आनंद है। दूसरी ओर स्वर्णिम गुंबदों वाली मस्जिद है जो शायद 450 वर्ष पहले बनाई गई थी। आशा है तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

38/2, एल्गिन रोड अथवा
1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
7.12.34

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मार्ग मे बिना किसी प्रकार की असुविधा के मैं यहां 4 दिसंबर को पहुंच गया था। मेरे पिता इस मृत्यलोक को 2 दिसंबर को ही छोड़ गए थे, यानी मेरे कलकत्ता पहुंचने से 40 घटे पूर्व। मेरी माता की हालत बहुत खराब है, यद्यपि हम भाई व बहन मिलकर उन्हें ढाढ़स बधाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। पाश्चात्य लोगो के लिए हमारी मानसिकता को समझ पाना कठिन है। एक हिंदू पत्नी का जीवन उसके पति के जीवन से कुछ इस प्रकार बंधा होता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसके लिए जीना असंभव होता है। फिर भी, हमे विश्वास है कि वे इस आघात को सह पाने में सक्षम होंगी। पिछले कुछ दिनों में, हमारे परिवार को कई आघात सहने पडे हैं, इन सभी का मेरे माता-पिता पर बहुत असर पडा है।

मैं नहीं जानता कि भविष्य मे, मैं तुम्हें पत्र लिख पाऊंगा अथवा नहीं, किंतु यदि न लिख पाऊं तो कृपया मुझे गलत मत जानना। फिलहाल मैं अपने ही घर में एक कैदी का सा जीवन व्यतीत कर रहा हूं। घर में कैद रहने का आदेश मुझे उसी क्षण दे दिया गया जिस क्षण मैंने कलकत्ता मे कदम रखा था। फिलहाल सरकार ने मुझे मेरी माता के पास एक सप्ताह बिताने की इजाजत दी है। इस एक सप्ताह के दौरान मैं अपने परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त किसी से भी बातचीत अथवा सपर्क नहीं कर सकता। अपने घर से बाहर भी नहीं जा सकता। यह सप्ताह बीतने के बाद मेरे साथ क्या होगा, मैं नहीं जानता। संभवत: भविष्य में तुमसे भी पत्र व्यवहार न कर पाऊ। हर हाल में मेरा भविष्य अनिश्चित है।

मेरा घर का पता है 38/2, एल्गिन रोड अथवा 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। क्योंकि मेरी माताजी पूर्व पते पर रह रही हैं इसलिए मुझे यहीं बंधक बनाया गया है।

वायुयान की यात्रा सुखद थी और यदि मुझे यह मानसिक परेशानी न होती तो और भी आनंद आता। प्रत्येक प्रातः सूर्योदय का दृश्य अद्भुत था। पांच दिन की अवधि में यूरोप व एशिया के इतने देशो पर से गुजरना बहुत रोचक अनुभव था।

तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम व तुम्हे हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

38/2 एल्गिन रोड अथवा
1, वुडबर्न पार्क
20.12.34

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 2 दिसंबर का एयरमेल द्वारा प्रेषित पत्र मुझे 19 तारीख (कल) को मिला। सेंसर होने के कारण कुछ विलंब हुआ। डाक टिकटों से मुझे पता लगा कि वह पत्र 3 तारीख को डाक में डाल दिया गया था, किंतु विएना पोस्ट आफिस से वह 5 तारीख को प्रेषित किया गया। कराची तक यह डच वायुयान में पहुंचा और कराची से कलकत्ता तक गाड़ी में आया। कराची से कलकत्ता तक पहुंचने में उसे 3 दिन लगे। शेष समय सेंसर की वजह से लगा। जब से मैं यहां आया हूं तभी से बंधक हूं इसलिए मेरा सभी पत्र व्यवहार पुलिस अधिकारियों द्वारा सेंसर किए जाने के बाद पास होता है। इस वजह से कुछ विलंब हो जाता है जो अपरिहार्य है।

तुम मुझे निम्न पतों पर पत्र लिख सकती हो–38/2 एल्गिन रोड अथवा 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। सामान्यतः मैं दूसरे पते पर ही रहता हूं (यह मेरे भाई का घर है।) किंतु इन दिनों मैं पहले वाले पते पर हूं क्योंकि मेरी माताजी यहीं रहती हैं और यह घर मेरे माता-पिता का है। दोनों ही घर आस-पास ही हैं।

यहां पहुंचने के कुछ दिन बाद ही मैंने तुम्हें, एयरमेल से एक पत्र भेजा था, वह पत्र यहां से 10 दिसम्बर को प्रेषित किया गया था। उसमें मैंने अपने पिता की मृत्यु के बारे में भी लिखा था, वे मेरे यहां पहुंचने से 40 घंटे पूर्व ही इस दुनिया को छोड़ गए थे। मेरी माता अभी भी संभल नहीं पाई हैं। 50 वर्षों के सुखद वैवाहिक जीवन के पश्चात् इतना बड़ा दुख सहना आसान नहीं है। फिर, हिंदू महिला का जीवन अपने पति के जीवन से इस प्रकार बंधा होता है कि उसके बगैर उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं है फिर भी, हमें विश्वास है कि चूंकि हमारी माताजी धार्मिक प्रवृति की हैं, इसलिए वे धीरे-धीरे इस कष्ट को सहने में सक्षम हो जाएंगी, यदि वे कुछ माह इस कष्ट से उबरने में सफल रहीं तो।

भारत जाते समय मार्ग में, मुझे वायुयान के कैप्टन से पता चला कि डच वायुयान

केवल कराची तक डाक ले जाता है। 'द इम्पीरियल एयरवेज' (ब्रिटिश) कलकत्ता तक डाक ले जाता है। ब्रिटिश वायुयान के लिए तुम्हे शुक्रवार अथवा रविवार को विएना से डाक प्रेषित करनी होगी किंतु डच वायुयान के लिए सोमवार अथवा बुधवार को। तुम्हारा 2 दिसबर का पत्र, जो तुमने तीन तारीख को डाक मे डाला वह ब्रिटिश वायुयान द्वारा नहीं आ सका, इसी कारण विलब हुआ। डच वायुयान द्वारा डाक भेजते समय ध्यान रखना कि केवल कराची तक का खर्च ही देना।

वेनिस से जो कार्ड मैंने तुम्हे भेजा था क्या वह तुम्हे नहीं मिला?

मुझमे इतना धैर्य नही है कि मै अपनी यात्रा के विषय मे विस्तार से तुम्हे लिखू, हालांकि तुम जानना चाहोगी। पहली शाम मैंने रोम-दिव्य शहर मे बिताई। सुबह वहा से चलने से पूर्व मुझे तुम्हारा तार मिला। अगली रात हमने एथेस मे व्यतीत की। ग्रीक के प्राचीन अवशेषो व एक्रोपोलिस आदि को देखने के लिए मेरे पास पर्याप्त समय था। अगली शाम हमने कायरो मे बिताई। कायरो मे हमारे पास इतना समय था कि हमने यहा का अद्भुत तूतारखामिन संग्रहालय तथा पिरामिड देखे। गाइड के आग्रह के कारण, मुझे वहा अपना फोटो खिचवाना पडा। उस फोटो की प्रति साथ मे भेज रहा हूं। उसके पार्श्व मे तुम पिरामिड और स्फिक्स, तूतारखामिन सग्रहालय देखोगी। अनेको आश्चर्यजनक चीजो के साथ-साथ मैने वहां ममिया भी देखीं। अगली रात हमने इराक की राजधानी बगदाद मे बिताई। बगदाद मे भी मैंने पुराने अवशेष तथा स्वर्ण मस्जिद देखी जो 500 वर्ष पुरानी है। 3 तारीख की सुबह हम बगदाद से रवाना हुए और उसी शाम कराची पहुंचे। कराची से हम जोधपुर के लिए वायुयान मे बैठे और रात हमने वही बिताई। अगले दिन दोपहर चार वजे के आसपास हम कलकत्ता मे थे।

यात्रा बेहद दिलचस्प थी। जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा आनदित किया वह था सूर्योदय, जो हमने 2000 मीटर की ऊचाई से देखा। ऐसा अद्भुत सूर्योदय आप लोग यूरोप मे कभी नही देख सकते। वायुयान के ऊपर उठने व नीचे उतरते मे मुझे हल्का सा सिर भारी होता महसूस हुआ, किंतु एक ही ऊचाई पर उड़ने पर कोई असुविधा महसूस नही हुई। उडान के दौरान भी मै बिना किसी कठिनाई के लिख सकता था, हल्का-सा झटका भी महसूस नहीं होता था। वायुयान का शोर अलबत्ता असुविधाजनक था किंतु असहनीय नही था।

कार्ल्सवाद के फ्रॉ-लाई और हर को मेरा प्रणाम कहना। कृपया मुझे कार्ल्सबाद की एलबम भेजने का कष्ट न करना जब तक कि मैं स्वयं तुम्हे न लिखूं।

एथेस (अथवा कायरो) से मै पहले ही तुम्हे लिख चुका हूं कि विशार्ट के साथ अनुबंध के प्रति तुम्हे चिंता करने की आवश्यकता नहीं है वह एक अतिरिक्त प्रति थी जो मेरी थी, जिस पर मेरे हस्ताक्षरों की कोई आवश्यकता नहीं थी।

यह जानकर कष्ट हुआ कि आजकल वहां बहुत ठंडक है और तुम्हारी खांसी बढ़ी है। यहां ठंडा है लेकिन उतना ठंडा नहीं, जितना कि वहां है। हीटर चलाए बिना रात का टैंप्रेचर 22° है। इस देश मे प्राय: हम लोग खिड़कियां व दरवाजे खुले ही रखते हैं।

'आक्सफ्रोई इतिहास' जब तक तुम चाहो अपने पास रख सकती हो, और भी जो पुस्तक चाहो ले सकती हो। क्या तुम्हारा फ्रेंच भाषा का अध्ययन जारी है? यदि हां, तो मैं प्रगति जानने का इच्छुक हूं। जिस पुस्तक के विषय में तुमने जानकारी चाही है, वह मैं अगले पत्र मे लिखूंगा। फिलहाल मुझे स्मरण नहीं कि वह कहां से प्रकाशित हुई है।

यदि इग्लैड में प्रकाशित कोई पुस्तक तुम खरीदना चाहती हो तो मेरे विचार से उसे इंग्लैड से खरीदना ही बेहतर होगा। इसके लिए तुम दो कार्य कर सकती हो–या तो अपनी मित्र एला को लिखो कि वह खरीदकर तुम्हें भेजे अन्यथा इंग्लैंड के किसी पुस्तक विक्रेता को लिखो कि वह तुम्हे भेज दे। तुम इनकी कीमत का भुगतान अमेरिकन एक्सप्रेस कपनी अथवा वैगोलिट्स/कुक को कर सकती हो क्योंकि इन दोनो के कार्यालय कार्टनरिंग मे है। यदि तुम विएना की करेंसी मे भुगतान करोगी तो वे तुम्हारी मित्र (अथवा पुस्तक विक्रेता) को इंग्लैड मे इग्लैड की करेंसी में भुगतान कर देंगे। मेरे विचार से अल्प राशि का भुगतान तो पोस्ट आफ़िस के द्वारा भी किया जा सकता है, किंतु इसके विषय में पूर्णतया पक्के तौर पर कुछ कह नही सकता। मेरे पुस्तक विक्रेता है लिएटन बैल एड कंपनी लिमिटेड, 13, ट्रिनिटी स्ट्रीट, कैंब्रिज, इंग्लैंड। यदि तुम चाहो तो उन्हे भी पुस्तको का आर्डर भेज सकती हो। जब अपना आर्डर भेजो तो उसमें लिख सकती हो कि मैंने तुम्हे उनसे पुस्तके खरीदने की बात सुझाई है। मुझे शंका है कि यदि तुम विएना मे किसी अंग्रेजी पुस्तक को मगाने का आर्डर दोगी तो वह इंग्लैंड से खरीदी जाने की अपेक्षा महंगी मिलेगी।

भविष्य मे किसी आवश्यकता हेतु मेरा तार का पता भी तुम्हारे पास रहना चाहिए वह है–एस्की बोस, कलकत्ता।

आशा है मेरे इस अपेक्षाकृत लंबे पत्र से तुम्हे संतोष हो गया होगा। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हे मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2 एल्गिन रोड
अथवा 1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
31 दिसंबर, 1934

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारे 10 दिसंबर व 18 दिसबर के पत्र एयरमेल द्वारा पाकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। पिछले पत्र से मुझे पता चला कि तुम्हारा टाइपराइटर ठीक कार्य कर रहा है।

तुम्हारे पत्र से यह जानकर मुझे बहुत कष्ट हुआ कि वहां बेहद ठडा है और तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे आशा है कि तुम शीघ्र ही पूर्णत: स्वस्थ होकर बिस्तर त्याग दोगी।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम्हारे फ्रेंच भाषा के पाठ प्रगति पर हैं। जो भी व्यक्ति नई भाषा सीखने में सक्षम होता है उससे मुझे ईर्ष्या होती है। भारत एवं भारतीय दर्शन के संबंध मे तुम्हारी जिज्ञासा मैंने लिख ली है जैसे ही संभव होगा इस विषय मे तुम्हें लिखूंगा।

इस वर्ष का यह अतिम दिवस है। नव वर्ष के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं भेजता हूं और तुम्हारे मंगल की कामना करता हू। तुम्हारे माता-पिता के लिए भी मैं शुभकामनाएं भेज रहा हू, कृपया उन तक पहुंचा देना।

यहां आने के बाद से मेरा स्वास्थ्य बहुत सतोषजनक नहीं है। पिछले सप्ताह तो मेरी पुरानी बीमारी आंतरिक दर्द, बहुत बढ़ गई थी। संभवत: इसका कारण मेरा वह भोजन रहा हो जो मुझे शोक के इन दिनो मे खाना पडा। यह शोक अवधि 3 जनवरी 1935 को समाप्त होगी।

सामान्यत: मेरा घर लौटना सबके लिए बहुत प्रसन्नता का विषय होता है किंतु यह क्षण दुख का है।

अभी हम लोग असहनीय वेदना से उबर नहीं पा रहे हैं। घरेलू दुख के अतिरिक्त मुझे उन बंधनो का कष्ट भी है जो सरकार द्वारा मुझ पर लगाए गए हैं। जैसा कि तुम समाचार पत्रों में भी देख चुकी होगी कि मैं अभी भी अपने घर मे 'कैद' हूं।

मुझे शंका है कि कहीं मुझे आपरेशन न करवाना पड़े। इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं है। किंतु मैं यहां बड़ा आपरेशन करवाना नहीं चाहता। इसलिए मुझे तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कि मैं पुन: यूरोप नहीं आता।

नव वर्ष हेतु तुम्हारी शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी गाल ब्लैडर वाली समस्या हल हो गई है और अब तुम्हें आपरेशन नहीं करवाना पड़ेगा। इस विषय में भी मेरी शुभकामनाएं।

कृपया अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपने लिए हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करो।

तुम्हें पता ही होगा कि नेशनल बिब्लियोथिक, विएना में स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण कार्य संग्रहीत है जो मैंने पिछले वर्ष उन्हें दिया था। यदि आवश्यकता पड़े तो उसका उपयोग भी कर सकती हो। स्वामी विवेकानंद की पुस्तकों में भारतीय दर्शन बहुत अच्छे रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

38, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
8 जनवरी, 1935

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं आज ही यूरोप के लिए रवाना हो रहा हूं। आज बंबई के लिए चल दूंगा और दस तारीख को बंबई से जहाज (एम०बी० विक्टोरिया) लूंगा। 21 जनवरी को इटली में जेनुआ पहुंचूंगा।

हमारे दुख के क्षणों में तुमने जो सहानुभूति दिखाई उसके प्रति मैं तुम्हारा हृदय से आभारी हूं। कृपया अपने माता-पिता तक हमारा धन्यवाद पहुंचा देना।

यहां आने के बाद से मेरा कष्ट बढ़ा है। अतः मुझे आपरेशन करवाना ही पड़ेगा।

डॉ० शर्मा द्वारा तुमने जो उपहार मेरे लिए भिजवाया उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। उपहार के साथ तुम्हारा 7 दिसंबर का पत्र भी प्राप्त हुआ।

आशा है अब तक तुम्हारा जुकाम ठीक हो गया होगा। मुझे संतोष है कि तुम स्वस्थ हो।

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करो और अपने माता-पिता व अपनी बहन को भी मेरी ओर से शुभकामनाएं देना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

नेपल्स
20.1.35

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हे यह सूचित कर दू कि मै नेपल्स तक ठीक-ठाक पहुंच गया हू पोर्ट सईद के बाद मौसम कुछ बिगड गया था जिस कारण हमे यहीं उतरना पड़ा।

विएना आने से पहले एक सप्ताह व्यतीत करूगा। इटली रेल विभाग उन विदेशी पर्यटको को 50 प्रतिशत छूट देता है जो 6 दिन इटली मे व्यतीत करते हैं। तुम्हारा क्या हाल है, इसकी सूचना देते हुए मुझे होटल एक्सेलसियर, रोम के पते पर संक्षिप्त पत्र लिखो।

प्रात. यहा पहुचते ही मैं पोंपेई गया था। आज दोपहर में इन दिनों सक्रिय सोल्फालारा ज्वालामुखी देखने जाऊगा।

माता-पिता को प्रणाम व तुम्हे शुभकामनाए।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च कल या परसो में रोम के लिए रवाना होऊगा। यह पत्र मैं एयरमेल द्वारा नहीं भेज रहा क्योकि आज रविवार है। कृपया एयरमेल द्वारा इस पते पर पत्र लिखो - होटल एक्सेल्सेयर, रोम।

सुभाष चद्र बोस

नेपल्स
22.1.35
सायं 4 बजे

प्रिय सुश्री शेक्ल,

रोम जाने के लिए स्टेशन जाने से पहले मैं यह पत्र लिख रहा हूं, यह पत्र मैं रोम से ही डाक मे डालूगा।

पिछले तीन दिन मैं घूमने मे व्यस्त रहा। मैं पोंपेई, सोल्फालारा ज्वालामुखी, द लिटल विसुवियस, जो इन दिनों सक्रिय था, सग्रहालय आदि देखने गया। मैंने थापरी तथा विसुवियस जाने के लिए टिकट खरीद लिए थे किंतु विचार त्यागना पड़ा क्योंकि बर्फ गिरने लगी थी। नेपल्स में बर्फ गिरने की बात जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा। वहां के लोगों ने मुझे बताया कि पिछले तीस वर्षो मे कभी ऐसी बर्फ नहीं पड़ी। बहरहाल, मैंने थापरी और विसुवियस की टिकटें वापिस करके आज प्रात: विएना की टिकट

खरीद ली है। रास्ते मे मैं तीन दिन रोम मे और संभवत: एक दिन के लिए वेनिस मे भी रुकूगा। अधिक सभावना यही है कि रोम से सीधा विएना ही जाऊगा। मुझे आशा है कि विएना में खूब बर्फ गिर रही होगी और वहा काफी सीलापन होगा। मुझे आशा है कि अब तक तुम मुझे एयरमेल द्वारा पत्र भेज चुकी होगी। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता होगी। माता-पिता को सादर प्रणाम व तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च· मुझे जल्दबाजी मे भारत छोडना पडा। अत तक मुझे विश्वास नहीं था कि मे यहा आऊगा। बहरहाल मैंने 'धूप' जो तुम चाहती थी वह खरीद ली है और स्वामी विवेकानद की पुस्तक 'थाट्स ऑन वेदात' भी ले ली है। क्या मेरा लेख पढ पाओगी?

सुभाष चद्र बोस

होटल पैलेसर एबैसेडेरू
रोम
25 1 35

प्रिय सुश्री शेक्ल,

विएना से एयरमेल द्वारा प्रेषित तुम्हारे पत्र, लिफाफा और पोस्टकार्ड - के लिए धन्यवाद। आज प्रात: ही मुझे मिले। इस होटल के ठीक सामने होटल एक्सेलसियर है। अत: वहां से पत्र प्राप्त करने मे कोई कठिनाई महसूस नहीं होती।

मुझे खेद है कि मैं नेपल्स से शीघ्र ही विएना नहीं पहुच पाया। यहा पर मुझे बहुत-सा कार्य करना है और उस कार्य की उपेक्षा करना मेरे लिए उचित नहीं होगा। आज शाम मुझे महामहिम मुसोलिनी से मुलाकात करनी हे, जिन्हे मैं अपनी पुस्तक की प्रति उपहार में दूंगा।

(कृपया इस बात को बिल्कुल गुप्त रखे।)

पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। प्रिटिग आदि उत्तम है। भूमिका भी छपी है, जिसमे मैंने तुम्हारे प्रति आभार व्यक्त किया है।

यहा का मौसम बहुत बढिया है और जहाज की अपेक्षा अब मेरा स्वास्थ्य बेहतर है। जहाज में मेरे पेट में तीव्र वेदना थी, मध्यसागर भी बहुत चचल था।

कृपया मेरे लिए परिशिष्ट की टाइप प्रति तैयार रखे, अतिम पृष्ठ जो मैंने रोम जाने के लिए विएना से रवाना होते समय लिखे थे।

स्टेशन पर मुझे लेने मत आना। मैं होटल से तुम्हें फोन करूंगा तब तुम मुझे मिलने आ सकती हो। मैं 27 तारीख, रविवार को रोम से चलने की सोच रहा हूं, किंतु अभी कुछ निश्चित नहीं है। संभवतः वेनिस मे एक दिन रुकूंगा, यदि वहां का मौसम अच्छा हुआ तो।

तुम क्या सोचती हो कि मैं तुम्हारा टेलिफोन न० भूल गया हूं?

मेरी वर्षगांठ पर संदेश के लिए धन्यवाद। वास्तव मे मैं तो यह भूल ही गया था। मैं भी कितना मूर्ख हूं - क्या नहीं?

कृपया अपने माता-पिता को भी मेरा धन्यवाद व प्रणाम कहना। तुम्हारे पुराने जुकाम के लिए मैं चिंतित हूं। तुम्हारी बहन व तुम्हारे लिए मेरी शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च मैं यह पत्र एक्सप्रेस डाक से भेज रहा हूं ताकि रविवार तक तुम्हें मिल जाए। मैं कटयार को अपने आगमन की तार द्वारा सूचना दूंगा - चाहो तो तुम उसे अथवा होटल दी फ्रांस को टेलिफोन द्वारा मेरे आगमन की सूचना दे सकती हो।

सुभाष चंद्र बोस

एल्बर्गो पलाज़ो एंबैसीक्रयोटरी
रोम
शनिवार, 26.1.35

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल ही तुम्हे पत्र लिखा था। मुझे लग रहा है कि मैं 28 तारीख, सोमवार की प्रातः से पहले रवाना नहीं हो पाऊंगा और विएना (*सुधावहानोफ़*) मंगलवार की प्रातः ■ बजे पहुंच पाऊंगा। यही सूचना मैं डॉ० कटयार को भी दे रहा हूं। मेरे विचार से विएना में हम सुधावहानोफ ही पहुंचेंगे, किंतु अभी पक्का नहीं है। यदि यहां से रवाना होने में और विलंब हुआ या अपना कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा तो मैं समय पर डॉ० कटयार को सूचित कर दूंगा। तुम्हारा स्टेशन पर पहुंचना आवश्यक नहीं है। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

प्राग
13.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें सूचित कर दूं कि प्रातः मै यहा ठीक-ठाक पहुंच गया हूं। दिनभर यहां व्यस्त रहने के पश्चात् मैं आज रात ही बर्लिन के लिए रवाना हो जाऊंगा। मै राष्ट्रपति बी० से मिला। माता-पिता को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बर्लिन डब्ल्यू 8 डेन
अंटर डेन लिंडन, 5.6
15.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं कल प्रातः प्राग से यहां पहुच गया था किंतु कल अत्यधिक व्यस्त रहा अतः तुम्हे पत्र नहीं लिख पाया। कांग्रेस कुछ दिन के लिए स्थगित हो गई है - अतः मैं सोचता हूं कि मै इटली को जहाज से जा सकता हूं - किंतु अभी निश्चित नहीं है। कल ही मुझे मेरे पते पर रिडायरेक्ट की गई डाक मिली। आशा है कि आज भी कुछ पत्र प्राप्त होंगे। यदि पार्सल आ जाए तो कृपया मुझे यहां के पते पर 'इंडियन स्ट्रगल' भेज देना। संभवतः यहा अभी दो या तीन दिन और ठहरूंगा। माता-पिता को प्रणाम व तुम्हे शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल ब्रिस्टल
बर्लिन डब्ल्यू 8
17.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

दोनों पत्रों के लिए धन्यवाद, एक कल मिला था और एक आज मिला है। मै हर समय लोगों से घिरा रहता हूं इसलिए लंबा पत्र लिखने का समय नहीं मिल पाता। इसलिए कृपया मुझे क्षमा कर देना।

कल एंटवर्प के लिए रवाना होऊंगा और तीन दिन वहां रहूंगा। वहां से पेरिस जाऊंगा।

एंटवर्प मे मेरा पता है - द्वारा मन नाथलाल डी० जावेरी, 24 एवेन्यू वैन डेन नेस्ट, एंटवर्प (बेल्जियम)

पेरिस का मेरा पता है - द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, 11 रु स्क्राइब, पेरिस (एफ० आर०)

कृपया मेरी डाक इसी हिसाब से रिडायरेक्ट करना तथा अमेरिकन प्रेस तथा पेशन कंपोजिट को भी सूचित कर देना।

पेशन कंपोजिट के अपने कमरे मे मैं 2 ओवरकोट और 1 बरसाती छोड आया था। बरसाती मुझे अपने साथ लानी चाहिए थी लेकिन मैं भूल गया। कृपया श्रीमती वेसी से कहे कि वे उन कोटो को सभाल ले।

मैं साथ मे कुछ टिकट भेज रहा हू।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कॉन
19 1.36
प्रात: 10 बजे

कॉन से शुभकामनाए। माता-पिता को मेरा प्रणाम। अभी एटवर्प के लिए रवाना हो रहा हू।

सुभाष चंद्र बोस

ब्रसेल्स
20 1.36

सुभाष चद्र बोस की हार्दिक शुभकामनाए।

किसी अन्य निर्देश तक कृपया सारी डाक इसी पते पर भेजें - द्वारा एन० डी० झावेरी, 14 एवन्यू, वैन डेन नेस्ट, एटवर्प।

द्वारा एन० डी० झावेरी
14 एवेन्यू, वैन डेन नेस्ट
एंटवर्प (बेल्जियम)
22 1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

18 तारीख के कार्ड के लिए धन्यवाद। आशा है ब्रसेल्स से भेजा मेरा कार्ड तुम्हें

मिला होगा। कल हम यहां से ब्रसेल्स के लिए चल देंगे। कार द्वारा केवल एक घंटे का मार्ग है।

मैं यहां जितने दिन रुकना चाहता था उससे अधिक मुझे यहां ठहरना पड़ेगा। इसलिए कृपया मुझे इसी पते पर पत्र लिखो। यहां से मैं पेरिस जाऊंगा, वहां से आयरलैंड के लिए जहाज पकड़ूंगा, शायद 30 तारीख को हैवे से। फरवरी के मध्य में आयरलैंड से लौटूंगा फिर वहां से 28 फरवरी को इटली से 'विक्टोरिया' द्वारा भारत लौटूंगा।

पेरिस में मेरा पता होगा – द्वारा अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी, 11, रो स्क्राइब, पेरिस (Ixe)

बर्लिन में मुझे दो पत्र मिले थे जिनका उत्तर मैंने दे दिया था।

1. बंगला अखबार जो तुम्हें नहीं चाहिए वे इस पते पर भेज दो – द्वारा के.एल. गांगुली, बर्लिन, विल्मर्सडोर, जहींगर स्ट्रीट-38.
2. जो अखबार तुम चाहो अपने पास रख सकती हो।
3. मुझे केवल एक अखबार 'पत्रिका' अथवा 'फारवर्ड' भेज दो।
4. शेष बचे अखबार निम्न पते पर भिजवा दो – द्वारा एच. घोषाल, अल लोआस्था, 15 एम 14, वारस्वावा (पोलन)

   मेरे विचार में ये निर्देश पूर्णतया स्पष्ट हैं। डॉ० सेलिंग और डॉ० कटयार को उनके अखबार हमेशा की तरह मिलते रहने चाहिए।

तुम्हारे जुकाम के विषय में जानकर चिंता हुई। कृपया निम्न कार्य करो –

1. सिंह से कहो कि वह तुम्हें उस इलाज के लिए ले जाए जैसा इलाज तुम पहले भी करवा चुकी हो।
2. डॉ० सेन से कहो कि वे जुकाम और खांसी की दवा लिख दें।
3. साल्वेंट्स का मिश्रण लेकर देखो। किसी भी एपोथीक से तुम स्वयं खरीद सकती हो।

   एक सप्ताह बाद मैं तुम्हें पेरिस से कुछ राशि भेज पाऊंगा।

   मेरी ओर से माता-पिता को सादर प्रणाम व तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

एंटवर्प
24.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

यहां रुके हुए मुझे काफ़ी दिन हो गए हैं, इसलिए मैंने अपनी डाक के विषय में पेरिस लिख दिया था, आज प्रातः मुझे मेरी डाक मिल गई है। 26 तारीख, रविवार में मैं पेरिस के लिए रवाना हो जाऊंगा। कृपया मेरी डाक उसी के मुताबिक रिडायरेक्ट कर देना। हार्वे से 30 तारीख को मैं जहाज द्वारा आयरलैंड के लिए रवाना होऊंगा। पेरिस स्थित अमेरिकन एक्सप्रेस कंपनी के कार्यालय को बता दूंगा कि वे मेरी डाक आयरलैंड भिजवा दें। अपने कुछ मित्रों के साथ आज मैं स्पा जाऊंगा जहां हम वाटर लू और अन्य ऐतिहासिक स्थल देखेंगे। कल वापिस आएंगे और रविवार को मैं पेरिस के लिए चल दूंगा। मैंने तुम्हें एंटवर्प का फ्रांसीसी अखबार भेजा था जिसमें मेरा साक्षात्कार छपा था। आज प्रातः मुझे तुम्हारा पत्र और कार्ड मिला। तुम्हारे स्वास्थ्य के विषय में जानकर चिंता हुई। कृपया अपना ध्यान रखो, जैसा कि पिछले पत्र में भी मैंने लिखा था। आशा है तुमने अमरीका के अखबार श्रीमती हार्प को भिजवा दिए होंगे। तुम्हें जब समय मिले, मेरे सारे कागजात देख लेना। क्या तुमने कम कीमत पर अखबार प्राप्त करने के लिए किसी कैफ़े से बात की। मेरे विचार में तुम्हें फ्रेंच भाषा सीखना जारी रखना चाहिए। अगले पत्र में विस्तार से लिखूंगा। संभवतः मैं बहुत से अखबार पत्र आदि तुम्हारे पास छोड़ आया हूं। कृपया एक बार उन्हें पुनः देख लेना ताकि तुम्हें पता रहे कि तुम्हारे पास वास्तव में क्या क्या है। जल्दबाजी के लिए क्षमा चाहता हूं। तुम्हारे माता-पिता व तुम्हे शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वाटरलू
25.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सुभाष चंद्र बोस की ओर से शुभकामनाएं (अस्पष्ट) के डॉ. पारिख, चंदूलाल मोहनलाल, नत्थालाल दयाभाई झावेरी।

होटल अंबेसेडर
बोलवर्ड हौसमैन
पेरिस IXe
30.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि मैं पेरिस से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। मैं बेहद व्यस्त था। अब मैं डब्लिन के लिए रवाना हो रहा हू। वहा का मेरा पता है - शैलबर्न, होटल डब्लिन (आयरलैंड)

किंतु तुमने मुझे पत्र क्यो नहीं लिखा?

मैं दो पाउड भेज रहा हू जिसके बदले मे तुम्हे 50 शिलिंग मिल जाएंगे। कृपया अपनी फ्रेंच भाषा की पढाई जारी रखो और अपनी खांसी-जुकाम की दवाई खरीद लेना। मुझे आशा है शीघ्र ही तुम्हारा खासी-जुकाम ठीक हो जाएगा।

मुझे आधिकारिक रूप मे सूचना मिली है कि जैसे ही मैं डब्लिन पहुंचूंगा, राष्ट्रपति डी वलेरा मेरी अगवानी करेंगे।

शुभकामनाए

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

यूनाइटेड स्टेट्स लाइंस
जहाज पर
एस.एस. वाशिंगटन
30.1.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

इस समय मैं हार्वे में हूं और शीघ्र ही आयरलैंड के लिए जहाज पकडूंगा। कल शाम मैं वहा पहुंच जाऊंगा। शायद वहां बहुत व्यस्त रहूंगा अत: पत्र नहीं लिख पाऊंगा। आज प्रात: पेरिस से मैंने तुम्हें एक रजिस्टर्ड पत्र लिखा है। डब्लिन के पते पर पत्र लिखते समय याद रखना कि डाक इंग्लैंड होकर जाती है। 12 फरवरी को मैं आयरलैंड से रवाना हो जाऊंगा। डब्लिन में मैं शैलबर्न होटल, डब्लिन,आयरलैंड में रहूंगा। पेरिस में होटल एंबेसडर, बोलवर्ड हौसमैन, पेरिस (IXe) मे रहूगा।

तुम्हारी अस्वस्थता की जानकारी से दुख हुआ। इससे मुझे कष्ट होता है। तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल क्यों नहीं करतीं?

क्या मै तुम्हे सूचित कर चुका हूं कि डब्लिन पहुंच कर सबसे पहले मैं राष्ट्रपति डी वलेरा से मिलूंगा। इसकी व्यवस्था हो चुकी है।

पेरिस में मेरी कई दिलचस्प लोगो मे मुलाकात हुई। आयरलैंड से वापसी मे मै एक सप्ताह पेरिस रुकूंगा, एक सप्ताह स्विट्जरलैंड मे और तीन सप्ताह गैस्टीन मे रहूगा। कांग्रेस 7 अप्रैल तक के लिए स्थगित हो गई है अत: मर्सिलेस से 20 मार्च के आसपास चलूंगा। अब मै लॉयड ट्रीस्टीनो द्वारा नही जाऊगा।

तुम्हारे सभी पत्र मुझे मिल गए है। धन्यवाद।

कुछ शब्द तुमने गलत लिखे है। विएना (बंगला भाषा मे) बंदे मातरम (बगला भाषा मे) आदि। ब्लान का लेख मै अभी पढ़ नही पाया इसका मुझे खेद है। जैसे ही मे वह पढ़ लूंगा, उसके विषय मे तुम्हे लिखूगा। डॉ सेलिग निश्चय ही पडित नेहरू की पुस्तक ले सकते है।

मै तुम्हारे लिए कुछ पत्रकारिता सबंधी कार्य सोच रहा हूं। जैसे ही मेरा विचार स्पष्ट होगा मै तुम्हें लिखूंगा।

अपने एक पत्र मे तुमने मेरी जवानी की चर्चा की है। कितु अब मै युवा नही रहा।

तुमने नई फ्रेंच कैबिनेट देख ही ली होगी। हैरियट उसमे नही है।

फिलहाल तुम एक (पुराना) अखबार खरीद कर उसे पढ सकती हो।

मुझे 'ले मार्टिन' का अनुवाद भिजवाने की तुम्हे कोई आवश्यकता नही है। यदि बंगला भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओ के बहुत से अखबार हें तो तुम वे वारसा मे श्री घोषाल को भिजवा सकती हो। क्या मैने पहले तुम्हे नही लिखा था कि कुछ बंगला भाषा के अखबार डॉ० गांगुली को बर्लिन मे भिजवा दो। उनका पता है - डॉ० के एल गांगुली, जहांगर स्ट्रीट, 38, बर्लिन, विल्मर्स डोर्फ। डॉ० गांगुली को केवल बगला भाषा के अखबार ही भिजवाना।

क्या मै तुम्हें कुछ फ्रासीसी पत्रिकाएं अथवा देनिक समाचार पत्र भिजवाऊ? वैसे, तुम केफे वालों से क्यों नहीं कहती कि वे पुराने फ्रासीसी अखबार तुम्हे दे दे?

जर्मनी की आर्थिक दशा शोचनीय है। वहां के लोग अब इसके लिए सरकार की भर्त्सना नहीं करते। 'हॉस-फ्राउन' को तो विशेष रूप मे इससे कुछ लेनादेना नही।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने सिगरेट पीना कम कर दिया ह।

पेरिस से जाने से पहले मै तुम्हारे लिए सवाददाता खोजने का प्रयास करूंगा। वेसे अभी भी कोशिश मे हू।

मेरा स्वास्थ्य बेहतर है यद्यपि मै बहुत थका हुआ महसूस करता हूं। एंटवर्प और पेरिस मे मुझे भारतीय खाना खाने का अवसर मिला।

अशोक का पता है - द्वारा ग्रिडले एड कपनी, 54, पर्लियामेंट स्ट्रीट, लंदन, एस. डब्ल्यू

अलविदा, तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम। तुम्हारी बहन व तुम्हे मेरी शुभकामनाए।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

शैलबर्न होटल
डब्लिन
7 2 36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तीन फरवरी के तुम्हारे पत्र के लिए शुक्रिया। साथ मे मै डॉ० कटयार के लिए एक पत्र भेज रहा हू कृपया, उसे विएना से रोम के लिए डाक मे डाल देना।

एक कटिंग भेज रहा हूं, इसका अनुवाद करके मुझे भेज देना।

आशा है यहा से मैंने जो कटिंग्स तुम्हे भेजी थीं, वे तुम्हें मिल गई होगी। कृपया उन्हे बंद लिफाफ़े में डॉ कटयार के पास भिजवा दो और उसे लिख देना कि आवश्यक कार्रवाई के पश्चात् वह उन्हे तुम्हे लौटा दे।

यह जानकर मुझे दुख हुआ कि तुम्हें खांसी और जुकाम है।

11 तारीख को डब्लिन से पेरिस के लिए चलूंगा। वहां का पता है - होटल एंबैसेडर, बोलवर्ड हौसमैन पेरिस (Ixe)।

यदि तुम्हें 'न्यू लीडर' की आवश्यकता हो तो सदा उसे ले सकती हो।

एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर भागते-दौडते रहने के बावजूद मेरा स्वास्थ्य ठीक है। लेकिन कुछ थकान महसूस करता है।

तुमने 'टास इको' की कटिंग मुझे भेजकर अच्छा किया।

हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।

सुभाष चंद्र बोस

डब्लिन
मंगलवार, 11.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

साथ में 'द हिंदू' से एक पत्र है, इसे संभाल कर रखना। इसमें स्पष्ट है कि वे हर माह दो लेख चाहते हैं जिसके लिए वे प्रति लेख 30 शिलिंग देंगे। यानि 3 पौंड अथवा 75 आस्ट्रियन शिलिंग प्रति माह। इसके लिए आवश्यक है कि तुम समाचार पत्र नित्य नियम से पढ़ना शुरू कर दो। विएना के अखबारों के लिए नॉयू फ्री प्रेसे से काम चलेगा। किंतु तुम टाइम्स (पुरानी प्रति) को प्रति कन कोमन में प्राप्त कर सकती हो। यदि यह संभव न हो तो 'टाइम्स' नित्य नियम से लेना शुरू कर दो। जब तक मैं यूरोप में हूं, तब तक मैं तुम्हें उसकी कटिंग्स भेजता रहूंगा, परिणामस्वरूप, फिलहाल टाइम्स पढ़ना अति आवश्यक नहीं है। किंतु इस बात को अपने मन में रखना। 'टाइम्स' में केवल दो पृष्ठ ऐसे होते हैं जिनमें विदेशी समाचार प्रकाशित होते हैं, इसलिए शेष पृष्ठ तुम्हारे लिए आवश्यक नहीं हैं।

दूसरी बात, तुम्हें 'हिंदू' नित्य नियम से पढ़ना चाहिए। आजकल उसकी प्रति मेरे लिए आती है। यदि ऐसा है, तो उसे तुम अपने लिए रख लो। यदि तुम रोज़ हिंदू पढ़ोगी तो तुम जान जाओगी कि उसकी सामान्य नीति क्या है। यह अंग्रेज़ी के समाचार पत्रों में सर्वश्रेष्ठ है, किंतु यह मध्यमार्गी राष्ट्रीय दैनिक है, और मैं नहीं समझता कि यह उतना राष्ट्रवादी है जितना कि उसे होना चाहिए था।

भारतीय पाठकों की दृष्टि से यह आवश्यक है कि तुम अपने पहले लेख में जिस देश की चर्चा करो, वहां के वर्तमान राजनैतिक इतिहास की सामान्य चर्चा करो ताकि बाद में जो समाचार तुम भेजो वह भारतीय पाठकों को अच्छा (नहीं) लगे। तुम यूगोस्लाविया से प्रारंभ कर सकती हो अतः प्रथम विश्वयुद्ध से लेकर आज तक के राजनैतिक इतिहास का सामान्य लेखा-जोखा दो। इसके लिए तुम्हें तत्काल यूगोस्लाविया के पत्रकारों से संपर्क साधना चाहिए। श्रीमती फ्यूलप मिलर से कहो कि वे तुम्हारा परिचय श्री मैक्सिम कैंडट से अथवा अन्य किसी योग्य पत्रकार से करवा दें और तुम जितनी संभव हो उतनी जानकारी प्राप्त कर लो। मुझे अधिक जानकारी नहीं है किंतु फिर भी मैं तुम्हें कुछ नोटस भेज सकता हूं जो तुम्हारे लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। उन नोट्स की सहायता से तुम लेख तैयार कर सकती हो।

यदि अधिक सुगम हो तो, तुम किसी अन्य ऐसे देश से प्रारम्भ कर सकती हो। जिसके विषय में तुम जल्दी और आसानी से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकती हो। जिन देशों के विषय मे तुम लिख सकती हो। वे है –

(1) बल्कान राज्य – यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, रूमानिया, ग्रीस, तथा संभवतः हंगरी भी। हालांकि हंगरी की गिनती बल्कान मे नहीं की जाती।

(2) पूर्व के निकट – टर्की, पैलेस्टाइम, सीरिया, मिस्र।

इनमे तुम अरेबिया को भी शामिल कर सकती हो।

तुम्हें याद रखना होगा कि आजकल मिस्र का अत्यधिक महत्त्व है।

मैंने पुनः विचार किया, मेरा मानना है कि तुम्हे 'टाइम्स' प्रतिदिन पढ़ना चाहिए। इसलिए मैं टाइम्स बुक क्लब को लिख रहा हूं कि वे मेरी प्रति तुम्हें भेज दें। तुम इसे पढो और फिर बाद में बीच के चार पृष्ठ जिनमे विदेशों के समाचार होते हैं अथवा कुछ महत्वपूर्ण कटिंग्स मुझे भेज दो।

तुम्हे एक विजिटिंग कार्ड छपवा लेना चाहिए जो इस प्रकार हो।

फ्रालिन ई० शेंक्ल,
('द हिंदू' मद्रास की विशेष प्रतिनिधि, भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रभावशाली दैनिक समाचार पत्र)

विएना – XVIII
टेलि० आर 60-2-67
फ़ेरोगास – 24

उपरोक्त कार्ड निश्चय ही जर्मन भाषा में होना चाहिए।

फिर तुम बल्कान तथा पूर्व निकट के उन सभी देशों के प्रेस अटैची को लिख सकती हो, जिनके विएना में दूतावास हो। उन्हें पत्र लिखो, जिसके साथ अपना कार्ड भी भेजो और उनसे उस सूचना के लिए मिलने का समय मांगों जो वे भारतीय पत्रों में प्रकाशित देखना चाहेंगे। प्रेस अटैची अथवा प्रेस प्रमुख का पता दूतावास के द्वारा होगा। इस सब कार्य के लिए कुछ पैसे की आवश्यकता होगी। इसलिए मैं तुम्हें दो पाउंड (अथवा 50 शिलिंग) पेरिस से भेजने का प्रयत्न करूंगा।

मैं आज पेरिस के लिए चलूंगा और 14 तारीख (अधिकाधिक) तक वहां पहुंच जाऊंगा। कृपया मुझे इस पते पर लिखें – द्वारा होटल अंबेसेडर, बोलवर्ड हौसमैन, पेरिस Ixe.

पहला लेख हैप्सबर्ग पुनरुद्धार के प्रति लिटल एंटेट के रवैये के विषय में भी हो सकता है।

जब तुम पहला लेख एयरमेल से भेजो तो 'द हिंदू' के संपादक से उसके औचित्य के विषय मे अवश्य पूछ लेना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल अंबेसेडर
16, बोलेवर्ड हौसमैन
पेरिस
18.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं तुम्हारे तीन पत्रों के उत्तर नहीं दे पाया। तुम्हारा 15 तारीख का पत्र अगले दिन मिल गया था। बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं यह पत्र बहुत जल्दी मे लिख रहा हूं। इसलिए सिर्फ एक विषय में ही लिखूंगा। 'द हिंदू' को अपना पहला लेख इस सप्ताह मत भेजना। लेख तैयार करने मे कम से कम एक सप्ताह और लो। और भेजने से पहले मुझे अवश्य दिखा लेना।

पहला लेख बढ़िया होना चाहिए - बेशक उसे भेजने में कुछ देरी ही हो जाए। मुझे चिंता है कि कहीं तुम पहला लेख जल्दबाजी मे इसी सप्ताह न भेज दो।

मैं लदन से तुम्हारे लिए एक शब्दकोष का प्रबंध कर रहा हूं। इस सप्ताह तुम्हें दो पाउंड भेजूंगा।

लिटल एंटेट का अभिप्राय चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया और यूगोस्लाविया से है।

तुम्हारे पत्र व्यवहार के लिए मैंने दो फ्रांसीसी महिलाओं का पता लिया है। बाद में भेजूंगा।

तुम्हारे किसी काम आ सकूं तो मुझे प्रसन्नता होगी।

शेष अगले पत्र में, एक बार फिर बता दूं कि इस सप्ताह 'द हिंदू' को लेख मत भेजना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल अंबेसेडर
शनिवार, 22.2.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा पत्र मुझे आज ही मिला, धन्यवाद। मैं साथ में दो पाउंड भेज रहा हूं। अभी भी मैं लंबा पत्र लिखने की स्थिति में नहीं हूं। मेरा कार्यक्रम इस प्रकार है -

1 25 फरवरी, मंगलवार को - लुसाना जाऊंगा।

2 26 तारीख को लुसाना में - पंडित नेहरू से मिलूंगा।

3. 27 तारीख को लुसाना में - विलेन व्यू में रोलां से मिलूंगा।

4 27 और 28 को - बैगस्टीन के लिए रवाना होऊंगा।

(कुरहांस हॉकलैंड, बैगस्टीन)

मेरे पेरिस छोड़ने के पश्चात् जब तक मैं बैगस्टीन में निश्चित रूप से ठहरता नहीं तब तक कोई महत्वपूर्ण बात या पत्र नहीं लिखना। मैं एक जगह नहीं ठहरूंगा इसलिए पत्र खो जाने की आशा है। लुसाना में मेरा पता होगा - द्वारा मैसर्स वैगन-लिट्स/कुक लुसाना, स्विज़।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च: - मैंने तुम्हारे सभी पत्र पढ़ लिए हैं।

सुभाष चंद्र बोस

कुरहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
3.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रात: मैं यहां पहुंचा हूं। 28 फरवरी को श्रीमती नेहरू की मृत्यु के कारण मुझे लुसाना में देर हो गई। मुझे आशा थी कि यहां पहुंचने पर मुझे तुम्हारा पत्र और लेख मिलेगा। मैं बहुत थक गया हूं इसलिए शांति से आराम करना अच्छा लग रहा है। तुम कैसी हो? यहां बहुत सुंदर स्थल है। मैं यहां स्कीइंग करना चाहता हूं। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बैगस्टीन
4.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज मै तुम्हारे 22 जनवरी और 8, 12, 15, 19, 20 तथा 25 फरवरी के पत्रों का जवाब देने बैठा हूं।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम आजकल नित्य नियम से दो विएना के समाचार पत्र पढ रही हो। यद्यपि उनमे आस्ट्रिया के विषय मे पूर्ण जानकारी नहीं होगी लेकिन फिर भी वे बल्कान के विषय में उपयोगी जानकारी दे सकते हैं।

यदि तुम डॉ० एल्वीरा को मिलो या बातचीत हो तो उन्हे मेरा प्रणाम भी कहना। उन्हें बता देना कि मै भविष्य में कहीं भी क्यों न रहूं लेकिन उन्होंने मेरी रूडोल्फीनर हौस में जो देखभाल की उसे कभी भूल नहीं सकता। मेरे विचार से यूरोप छोड़ने से पूर्व मेरा उनसे मिल पाना संभव नहीं हो पाएगा। वे इतनी भली महिला हैं कि उन्हें इसी जीवन में सब सुख प्राप्त होंगे।

तुम्हारे 12 तारीख के पत्र के साथ संलग्न कागज भी मिला। क्योकि पत्र खुला था इसलिए मेरा विश्वास है कि बंबई के अधिकारियो की लिस्ट में तुम्हारा नाम भी अवश्य आ चुका होगा।

'दास लेटजेट फोर्ट' में भारतीयो की कोई चर्चा नहीं है? उसमें क्या केवल कुर्द और नीग्रो की ही चर्चा है? कृपया मुझे इस फिल्म का थोड़ा सा विवरण भेजो। क्या इसकी कहानी भी 'बोसांबो' की कहानी से मिलती-जुलती है?

भूलवश मै तुम्हारे लिए अंग्रेजी शब्दकोष का आर्डर नहीं दे पाया। यह कार्य आज कर रहा हूं। यह कार्ल्सबाद होती हुई मेरे नाम से आएगी अत: तुम छुड़ा लेना।

मैं टाइम्स बुक क्लब को युद्ध पूर्व के यूरोपीय इतिहास के लिए भी लिख रहा हू। मुझे खेद है कि मै यह पहले नहीं कर पाया। यदि मुझे तुम्हारे लिए उपयुक्त पुस्तक मिल गई तो मैं तुम्हारे लिए भी एक खरीद लूंगा। मेरी पुस्तको मे एक बहुत अच्छी पुस्तक जो युद्ध पूर्व के अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर है किंतु मुझे डर है कि वह तुम्हारे लिए बहुत लंबी और लाभकारी होगी। तुम अधिक लोकप्रिय पुस्तक चाहती हो।

कार्ल्सबाद के श्री स्टीनर तुम्हे यहूदियो की विचारधारा के विषय में उपयोगी सूचना दे सकते हैं। किंतु तुम्हें अरब विचारधारा से संबंधित सूचना की अधिक आवश्यकता है।

सीरिया के लिए, मै एक ऐसे सीरियाई नेता का कार्ड भेज रहा हूं जिसे देश निकाला दे दिया गया और जो अब जेनेवा में रह रहा है। तुम मेरा यह कार्ड भी साथ

भेजकर भारतीय प्रेस के लिए अधिक सूचना एकत्र कर सकती हो। उन्हें बता देना कि वे फ्रांसीसी भाषा में लिख सकते हैं और तुम्हें सूचनाएं फ्रासीसी भाषा मे ही उपलब्ध कराएं। यदि सभव हो तो उसे फ्रांसीसी भाषा मे ही पत्र लिखना क्योंकि वह केवल वही भाषा जानता है। यदि फ्रासीसी भाषा मे न लिख पाओ तो अंग्रेजी में लिखना। मेरे विचार से उसके सचिव को अंग्रेजी आती है।

तुम्हारा विजिटिंग कार्ड ठीक है। अपने पहले लेख के साथ यह कार्ड मत भेजना, किंतु अपना पहला (व्यक्तिगत) कार्ड भेज सकती हो। 'द हिंदू' के संपादक से नियुक्ति पत्र के विषय में भी पूछ लेना। जब वह तुम्हे मिल जाए तो तुम अपना नया कार्ड भी भेज सकती हो। अंग्रेजी का विजिटिंग कार्ड आवश्यक नहीं है।

प्रेस प्रमुख महामहिम नहीं होता। आस्ट्रियन प्रेस चीफ का दर्जा, मंत्री के बराबर है। इसलिए उसे माननीय मत्री महोदय का संबोधन कर सकते है। तुम आस्ट्रियन प्रेस प्रमुख से पत्र व्यवहार कर सकती हो लेकिन नियुक्ति पत्र आने तक इंतजार करो। अन्य प्रेस प्रमुखो से पत्र-व्यवहार के लिए नियुक्ति पत्र की प्रतीक्षा करना आवश्यक नहीं है। तुम्हें वर्केर स्बुरो, विएनर, मैसे तथा अन्य विएना के अधिकारियों से पत्र-व्यवहार करना चाहिए जिन्हे विदेश मे प्रचार कराने मे दिलचस्पी हो। वर्केर स्बुरो के प्रमुख संभवतः स्ट्राफैला है और श्री फाल्टिस उन्हें जानते हैं।

दूतावासों के संबंध में-(1) सीरिया और पैलस्टीन औपनिवेशिक राज्य होने की वजह से उनके दूतावास नहीं है। (2) मिस्र का दूतावास विएना में है। (3) अरेबिया (इब्न सउद) का दूतावास लन्दन में है न कि विएना मे। (4) बल्कान देशों, टर्की सहित सभी के दूतावास है। (5) ईराक का दूतावास लंदन एवं अन्य देशों की राजधानियों में है, किंतु शायद विएना में नहीं है। ब्रिटिश दूतावास से सूचना हेतु पत्र व्यवहार करना व्यर्थ है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपने फ्रेंच भाषा के पाठ जारी रखे हुए हो। यह बहुत महत्वपूर्ण है। मैं साथ में दो फ्रांसीसी पते भेज रहा हूं ताकि तुम उनसे पत्र-व्यवहार कर सको। तुम उनसे संपर्क करके कह सकती हो कि श्रीमती व श्री वुड्स, जो 131, मौर हैंपटन रोड, डब्लिन (आयरलैंड) के निवासी है, ने आपसे संपर्क करने को कहा था। शुरू-शुरू में बहुत ही नम्रता भरा पत्र लिखना। दोनों पते बिल्कुल अलग-अलग हैं। किंतु यदि तुम्हें यह महसूस हो कि तुम पत्र-व्यवहार जारी नहीं रख पाओगी तो कृपया पत्राचार प्रारम्भ नहीं करना।

मुझे हर्ष हुआ कि तुम पहले से बेहतर हो। क्या वाकई ऐसा है।

भारत से आया पार्सल 'आइनशरे बेन' जो डब्लिन से रिडायरेक्ट किया गया, मुझे समय पर मिल गया था।

'द हिंदू' के लिए तुम्हारे प्रथम लेख की रूपरेखा बहुत अच्छी है। अब मै पूरा लेख देखना चाहता हूं।

'टाइम्स' में से तुम जितना चाहे कटिंग कर सकती हो। मेरी चिंता मत करना।

जब मै पेरिस मे था तब मुझे तुम्हारे दो लंबे पत्र मिले थे।

पैलस्टीन इग्लैड के अधिकार मे है। सीरिया फ्रांस के अधीन है। अरेबिया स्वतंत्र है जिसके एक भाग पर इब्न सउद (मक्का जैसे धार्मिक स्थलो के सहित) का अधिकार है और दूसरे भाग पर यमन के इमाम का अधिकार है। मिस्र का राजा नाममात्र को है, किंतु वह अंग्रेजो के संरक्षण मे है।

यदि अभी तक तुमने तुर्की के प्रेस प्रमुख से सपर्क नही किया है तो कर लेना चाहिए। मिस्र के लिए नाहस पाशा से पत्र-व्यवहार करना व्यर्थ है।

भारतवासियों को पाठ पढाने से पहले तुम्हे ठीक प्रकार सोच विचार कर लेना होगा। सामान्यत: वे लोग सोचते हैं कि कोई महिला उनके साथ मौजमस्ती करे और उन्हे नृत्य सिखाए। कुछ महिलाएं इस प्रकार की है भी और मुझे डर है कि तुम्हे भी उनमे से एक ही न समझ लिया जाए। डॉ० सेन का व्यवहार तुम्हारे साथ कैसा है?

उदय शंकर के विषय में तुम्हे सूचना किसने दी? मुझे उम्मीद है कि वह अग्निहोत्री के जाल मे नहीं फंसेगा।

मुझे उम्मीद है कि अब तक तुम हंगरी के प्रेस प्रमुख से मिल चुकी होगी। कृपया मुझे एच के विषय में नारीमन का लिखा लेख भिजवा दो।

तुम्हारे कुछ और प्रश्नो का उत्तर देकर मे यह पत्र समाप्त करता हूं।

(1) लोथार्नो समझौता कई वर्ष पहले 9 यूरोपीय शक्तियो के मध्य लोथार्नो मे हुआ था। उसमे यह समझौता किया गया था कि वे यूरोप में शांति रखेंगे और यदि किसी शक्ति पर बाहर से आक्रमण होता है तो वे उसकी सहायता भी करेंगे। समझौते का सही वर्ष मुझे याद नही सभवत: 1925 था।

(2) स्ट्रेसा सम्मेलन, इटली के स्ट्रेसा शहर मे इग्लैंड, फ्रांस और इटली के बीच सपन्न हुआ था। इसका उद्देश्य यह था कि जर्मनी के विरुद्ध तीनो देश आपस मे एक हों।

(3) रोमन पैक्ट से अभिप्राय सभवत: यह था कि इटली, आस्ट्रिया और हगरी का आपस मे आर्थिक और राजनीतिक सहयोग का समझौता हुआ। यह समझौता पिछले वर्ष ही हुआ था।

(4) लिटिल एंटेंट से अभिप्राय चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया तथा रोमानिया है। हंगरी इनके विरुद्ध है।

(5) बल्कान एंटेंट से अभिप्राय टर्की, ग्रीस, रूमानिया और यूगोस्लाविया है। बुल्गारिया और अल्बेनिया इससे अलग है।

आज या कल मैं तुम्हें एक और पत्र लिखूंगा। उसकी प्रतीक्षा करना। यहां बहुत सुंदर और शांत जगह है। खूब वर्फ़ है। तुम कैसी हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कुरहॉस हाकलैंड
बैगस्टीन
5.3.36

प्रिय सुश्री शैंक्ल,

तुम्हारा 4 मार्च का एक्सप्रेस पत्र आज मिला। तुम टेलिफ़ोन कॉल्स से बहुत चिंतित दिखाई देती हो। तुम्हारे लिए बेहतर यही रहेगा कि प्रत्येक व्यक्ति को तुम यह उत्तर दे दो कि मुझे ठीक पता नहीं कि मैं बैगस्टीन पहुंचा हूं अथवा नहीं, उन्हें मेरा बैगस्टीन का पता दे सकती हो। उन लोगों को यह भी बता दो कि तुम्हे मेरा लुसाना से पत्र मिला था जिसमें मैंने जिक्र किया था कि मैं शीघ्र ही बैगस्टीन के लिए रवाना होने वाला हूं।

कृपया पेशन कोस्मोपोलाइट से पूछ लेना कि उन्होने ब्रिटिश कांस्यूलेट को तुम्हारा फ़ोन नंबर दे दिया है अथवा नहीं।

मै ब्रिटिश कांउसिल को एक पत्र लिख रहा हूं। जिसमें उनकी सदस्यता के लिए धन्यवाद दे रहा हूं। वास्तव मे तो मैं, कई दिन से उन्हे पत्र लिखने की सोच रहा था। मै उसमें यह जिक्र कदापि नहीं करूंगा कि वे मेरे पते के विषय मे विएना मे पूछताछ कर रहे थे। जब तुम्हें मेरा यह पत्र मिले तो तुम कांस्यूलेट से फ़ोन पर संपर्क कर सकती हो और इस पत्र के पहले पैराग्राफ़ मे लिखी बाते उन्हे बता सकती हो।

मैं यहां कुछ स्कीइंग करना चाहता हूं। मैने सिह को बूट्स (जूतों) के लिए लिख दिया है। मैं चाहता हूं कि तुम निम्नलिखित चीजे तैयार रखो।

(1) भारतीय ग्रे कपडे की लंबी बिरजिस

(2) उसी कपड़े का कोट (यूरोपीय ढग का)

(3) स्वैटर (सफ़ेद नहीं बल्कि रंगीन)

(4) भूरा गर्म सूट (टेनिस की कमीज के ढंग का)

जब मैं पुनः तुम्हें लिखूं तो यह सब चीजे पार्सल से मुझे भिजवा देना।

क्या तुम्हे मालूम है कि मेरी दूरबीन कहां है? वह मेरे पास नहीं है।

मुझे तुम्हारा सोमवार का पत्र मिल गया है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

कुरहास हाकलैंड
बैगस्टीन
7.3.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

मेरे विचार से मैंने तुम्हारे सभी पत्रों का उत्तर दे दिया है सिवाय आखिरी दो के जो मुझे कल और आज मिले। दोनो के लिए धन्यवाद।

(1) क्या मैंने पेरिस से तुम्हें फ्रेंच अखबार 'ला लुमीरी' की कटिंग भेजी थी। उसमें मेरा साक्षात्कार प्रकाशित हुआ था। यदि नहीं, तो एक भेज दूंगा। पेटिट पेरीसियन की कटिंग भी भेजूंगा जिसमे पंडित नेहरू व मेरे अपने विषय में एक लेख प्रकाशित हुआ है।

(2) क्या तुम्हें ध्यान है कि मैने पटेल के पत्रो का बडल कहां रखा है। यहां मेरे पास काफी समय है, मै उन्हें पढ़ना चाहता हूं। कृपया मुझे सूचित करो कि वे कहां हैं?

(3) मेरी बहुत इच्छा थी कि मैं विएना आता किंतु यह असंभव है। कुछ दिनों मुझे अपना ध्यान रखना होगा क्योकि 18 तारीख को मै बैगस्टीन से रवाना हो जाऊंगा। यदि मै विएना गया तो मुझे स्नान छोड़ने पड़ेगे।

(4) कल माथुर का पत्र मिला, उसमे उन्होने लिखा है कि वे डॉ० सेन के साथ शायद बैगस्टीन आएंगे। यदि उनमे से कोई इधर आ रहा हो तो कृपया वे वस्त्र अवश्य भिजवा देना जो मुझे चाहिएं। भारत विरजिस, उसी कपड़े का भारत में निर्मित कोट, स्वैटर और गर्म कमीज। संभवतः दूरबीन भी भिजवा सको। वह मेरे भाई की है अतः मैं चाहूंगा कि मैं उसे लौटा दूं। यदि कुछ और तुम्हें याद आ जाए जिसे तुम मेरे लिए आवश्यक समझो, वह भी तुम भिजवा सकती हो।

(5) मैं निरंतर सोच रहा हूं कि पेशन कास्मोपोलाइट में पड़े मेरे ट्रंकों का क्या करूं। क्या श्रीमती वैटर से कहूं कि वे मेरे लिए उन्हे अपने यहां रख लें। जो भी विचार बनेगा, मैं तुम्हे लिखूंगा।

(6) अमीर चेकिब अर्सलान का पता यह है-

मानीय अर्सलान लेमीर चेकिब

ए०वी० ई० हैंट सेह 9

जेनेवा (जेन्फ)

मेरा विश्वास है कि इस बीच उन्होने अपना पता बदला नहीं होगा। पत्र के दूसरी ओर 'एब्सेंडर' लिखना मत भूलना ताकि वे न हों तो पत्र तुम्हें वापिस मिल जाए। मैंने श्री जेनी को लिख दिया है कि वे इस विषय में उनसे संपर्क करने की कोशिश करें तथा एक अन्य सीरियाई राष्ट्रवादी नेता माननीय एल-जाबरी से भी मिलने का प्रयास करें।

(7) मै पेरिस को टर्की के विषय में सूचना उपलब्ध कराने के लिए लिख रहा हूं। इस बीच तुम तुर्की के प्रेस प्रमुख से सपर्क कर सकती हो।

(8) मैंने 'टाइम्स' का 16 मार्च तक का चंदा भिजवा दिया है। यह 8 शिलिंग (ब्रिटिश) प्रति माह है। मै सोचता हूं कि तुम्हें टाइम्स की पुरानी प्रति सस्ते दाम मे मिल जानी चाहिए। विएना में लगभग एक दर्जन कैफ़े ऐसे हैं जहां टाइम्स की प्रतियां आती हैं। यदि उनमें से किसी एक से तुम कम दाम पर पत्र लेने का प्रबंध कर सकोगी तो बेहतर रहेगा।

(9) लंदन स्थित इराकी और अरेबियन दूतावास से संपर्क करना व्यर्थ है।

(10) यदि कोई बैगस्टीन आ रहा हो तो मेरा हल्का कोट अवश्य भिजवा देना। और तुम्हारे पास कौन-कौन सी चीजें हैं?

(11) तुम्हारे पत्रों के शेष प्रश्नों के विषय में मै बाद में लिखूंगा। पहले तुम्हारा लेख पढ़ लूं। मैं उसे कल की (रविवार) डाक से भेजने का प्रयत्न करूंगा ताकि सोमवार को तुम्हें मिल जाए, तत्काल उसे टाइप करके सोमवार की शाम को ही डाक में डाल देना। मेरे विचार से इंडिया एयरमेल विएना से मंगलवार और शनिवार (प्रातः 6 बजे) होप्ट पोस्ट से जाती है इसलिए तुम्हें रविवार या बृहस्पतिवार की शाम ब्रांच आफ़िस में डाक डाल देनी चाहिए।

(12) हिंदू ने तुमसे कितना लंबा लेख मांगा है, मैं यह भूल गया हूं। तुम्हारा आलेख (प्रारूप) काफ़ी छोटा है। तुम हिंदू के एक कालम के शब्दों की गिनती करो और यह सुनिश्चित कर लो कि संपादक ने जितना बड़ा लेख मांगा है लेख उससे छोटा न हो।

(13) मैंने 'हिंदू' को पत्र लिखा है जिसमें लिख दिया है कि तुम्हारा लेख इस माह के

मध्य तक अवश्य मिल जाएगा। इसलिए यदि मगलवार की डाक से नहीं भी भेज पाओगी तो भी कोई चिंता नही है। आज इतना ही।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कुर्लहास हाकलैंड
वैगस्टीन
रविवार,
8 3 36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

यह कार्ड मैं तुम्हे यह सूचित करने के लिए लिख रहा हू कि तुम्हारा लेख मै आज नहीं भेज पाऊंगा। अतः तुम्हें आगामी एयरमेल (शुक्र या रविवार) तक इतजार करना होगा। मुझे आशा है कि मैं मगलवार को तुम्हारा लेख भेज सकूंगा ताकि तुम्हे बुधवार को मिल जाए।

श्री नांबियार ने तुम्हारे लिए दो सुझाव भेजे हैं जो अच्छे हैं, और मै भी इनसे सहमत हूं।

(1) पहला यह कि तुम्हारा हिंदू के लिए लेख महिला आंदोलन और सिनेमा समाचारो पर होना चाहिए। उनका कहना है कि हिंदू की इन विषयो में काफी दिलचस्पी है। इसलिए जब तक तुम्हारा बल्कान का पत्र व्यवहार निश्चित नहीं हो जाता तब तक तुम्हे प्रतीक्षा करनी चाहिए। ये सब बातें मै तुम्हे इस समय इसलिए लिख रहा हूं ताकि तुम इन्हें अपने दिमाग में बैठा लो। यदि 'हिंदू' तुम्हारे बल्कान पत्र व्यवहार से प्रसन्न हो जाते है तो फिर तुम उन्हें ये विषय (महिला एवं सिनेमा) सुझा सकती हो।

(2) तुम्हें भारत से कुछ आकर्षक फोटोग्राफ़ मंगाने चाहिए और उन्हें वीनर बिल्ड आदि जैसे चित्रात्मक पत्रिकाओ में प्रेषित करो। यह तो निश्चित ही है कि मुझे ऐसी व्यवस्था करनी होगी जिससे तुम्हे भारत से चित्र मिल सके। इस बीच तुम विएना और स्विस पत्रिकाओं से पत्रव्यवहार कर यह मालूम करो कि उन्हे भारत के चित्र प्रकाशित करने मे रुचि है अथवा नहीं, यदि वे भारतीय चित्र प्रकाशित करना स्वीकार कर लेते हैं तो कितना पारिश्रमिक देंगे। यदि हमें भारत से चित्र उपलब्ध हो जाते तो तुम्हें भारतीय विक्रेताओं की अपेक्षा आधी कीमत अदा करनी होगी।

शेष बाद में,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

10-3-36

टिप्पणियां-

(1) अंग्रेजी खराब है।

(2) द सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी कभी भी सरकार की नियंत्रक नहीं रही (कुछ सप्ताह के अतिरिक्त) उसका केवल विएना शहर पर अधिकार था। 1934 में उसे विएना म्यूनिसिपैलिटी से भी बाहर कर दिया गया था।

(3) आस्ट्रिया में कैथोलिक पार्टी को कभी भी केंद्रीय पार्टी नहीं कहा गया। वह क्रिश्चियन सोशल पार्टी कहलाती थी।

(4) यह कहना गलत है कि क्रोट्स और स्लोवंस पुनः आस्ट्रिया आना चाहेंगे। यह तुम्हें किसने बताया?

(5) तुम्हारा यह कहना गलत है कि इटली हैप्सबर्ग के पुनरुद्धार के विरुद्ध है। केवल जर्मनी विरोधी है न कि इटली।

बेहद खराब। बहुत निराशाजनक! अंग्रेजी भी बहुत खराब है।

सन 1945 मे ओटोमान तुर्कियों ने बोसफ़ोरस पार करके कांसटैनटिनपोल पर कब्जा कर लिया था। वही यूरोप में ओटोमन अथवा तुर्की साम्राज्य का अवसान था। 1918 मे संयुक्त राज्यों ने कांसटैनटिनपोल पर कब्जा कर लिया और सुल्तान को उसके ही महल मे बंदी बना दिया था। वही यूरोप में तुर्की साम्राज्य का अंत था। विलि तुर्क वासी अनातोलिया के पर्वतों में चले गए फिर उन्होंने अपने देश के अस्तित्व के लिए संघर्ष किया। उन्होने अनातोलिया की रक्षा की, कांस्टैनटिनपोल को वापिस अपने अधिकार मे लिया तथा थ्रास पर भी कब्जा किया। यह सन 1922 की बात है। किंतु यूरोप के नक्शे से तुर्की साम्राज्य हमेशा के लिए हट गया। लगभग 500 वर्ष तक यूरोप में बल्कान का इतिहास ही तुर्की इतिहास था।

सन 1453 मे जब कांस्टैनटिनपोल तुर्क से हार गया तो दो देशों में तुर्की राज्य पश्चिम व उत्तर पश्चिम की ओर फैलना शुरू हुआ। ग्रीस, बुल्गारिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, अल्बेनिया सभी तुर्की राज्य थे। फिर एक शुभ घड़ी ऐसी भी आई कि जब तुर्की सेनाओं का सामना विएना की दीवारों से हुआ। यदि विएना हार जाता तो तुर्क साम्राज्य पश्चिमी यूरोप तक फैल जाता। सन् 1683 में दो निराशाजनक आक्रमणों के पश्चात् तुर्कियों को वापिस भगा दिया गया और क्रिश्चियन यूरोप बच गया। तुर्की वापिस तो हो गया लेकिन जाने से पहले वह क्रिश्चियंस को काफ़ी पीना सिखा गया। 1683 के पश्चात् तुर्की साम्राज्य का पतन प्रारंभ हुआ, किंतु, लगभग 250 वर्ष तक तुर्कियों ने संघर्ष जारी रखा।

18वीं सदी के अंत में फ्रेंच विद्रोह के दौरान तुर्की साम्राज्य पर रोक लगी। तब तक यूरोप के लोग साम्राज्यों, जातियों व कुल जैसे विचारों से घिरे थे। फ्रांसीसी विद्रोह तथा नेपोलियन के नेतृत्व में हुए संग्राम के पश्चात् ही लोगों ने राष्ट्रीयता के विषय में सोचना प्रारंभ किया। पूरा बल्कान प्रायद्वीप एक राष्ट्रीय भावना से प्रभावित था। सर्ब, ग्रीक और रूमानिया में तुर्की राजाओं के विरुद्ध विद्रोह प्रारंभ हो गए।

किंतु तुर्क अभी भी बहुत शक्तिशाली थे और उनकी सेनाएं अद्भुत थीं। यदि बल्कानवासी अपनी शक्ति एवं संसाधनों पर ही निर्भर रहते तो तुर्क साम्राज्य को उखाड़ फेंकने में युग बीत जाते। किंतु बाह्य शक्तियों ने उनका साथ दिया। 1815 में नेपोलियन के पतन के पश्चात दो उपनिवेशिक शक्तियों–आस्ट्रिया और रशिया का अभ्युदय हुआ। अपने औपनिवेशवाद से प्रेरित होने के कारण तथा तुर्की राज्य के अधीन क्रिश्चियन जनसाधारण के प्रति सहानुभूति के कारण ही 19वीं सदी में आस्ट्रिया और रूस का मुख्य उद्देश्य तुर्की साम्राज्य को उखाड़ फेंकना बना। रूस सहानुभूति के कारण अधिक सक्रिय हुआ। बल्कान के अधिकांश लोग जैसे सर्ब और बुल्गार्स आदि क्योंकि स्वयं स्लाव जाति के थे इसलिए उनका झुकाव अपने जैसे रूसी लोगों की ओर हुआ और उन्होंने रूस को तथा वहां के वासियों को अपना माना तथा उन्हें ही रक्षक मान लिया। रूस ने भी इस भावना का पोषण किया और जान बूझकर पान-स्लाव आंदोलन को प्रोत्साहित किया, उन्हें आशा थी कि वे इस प्रकार बल्कान प्रायद्वीप में अपना अधिक से अधिक प्रभाव बना लेंगे।

तुर्की के आंतरिक विद्रोहों की अपेक्षा यूरोपीय बड़ी शक्तियों का दबाव अधिक था जिसके कारण ओटोमन राजाओं को बल्कान लोगों की राष्ट्रीय भावनाओं को अधिक छूट देनी पड़ी। पहली स्थिति यह आई जब तुर्की सुल्तान के अधिराज्य के अंतर्गत ही सर्बिया और ग्रीस को स्वायत्तता दी गई। किंतु जल्दी ही वह क्षीण सूत्र भी टूट गया जिसने इन्हें तुर्की राज्य से बांध रखा था। सन 1830 से 1880 के मध्य अधिकांश बल्कान देशों ने काफी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी और बल्कान लोगों को उन युद्धों से फायदा पहुंचा जो टर्की ने लड़े थे।

इस विषय में यह जान लेना चाहिए कि जैसे ही बल्कान में तुर्कियों ने हटना प्रारंभ किया, तो उस रिक्त स्थान पर स्वतंत्र बल्कान राज्यों के प्रवेश के साथ-साथ आस्ट्रियाई साम्राज्य ने भी अपनी घुसपैठ शुरु कर दी। उदाहरणार्थ आज के यूगोस्लाविया, जिसमें से सर्बिया को निकाल दिया जाए तो, को तुर्की के सुल्तान से आस्ट्रिआई राजा ने अपने हाथों में ले लिया। रूस चाहता था कि वह बल्कान में तुर्की साम्राज्य के हाथों मुक्त हुए प्रांतों को आस्ट्रिया के कब्जे से बचाए, किंतु वह ऐसा नहीं कर पाया क्योंकि यूरोपीय शक्तियां विशेषकर ब्रिटेन उसके विरुद्ध था। रूस और ग्रेट

ब्रिटेन के मध्य दो कारणो से मतभेद था। पहला–रूस और ब्रिटेन दोनों ही एशिया मे बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहे थे। दूसरे–ग्रेट ब्रिटेन को यह चिंता थी कि यदि तुर्की साम्राज्य का बिल्कुल अंत हो गया तो बोसफ़ोरस और डार्डनेल्स सीधे ही रूस के कब्जे मे आ जाएंगे और वह भूमध्य की शक्ति बन जाएगा और स्वेज़ कैनाल में उनके लिए समस्या बन जाएगी। ब्रिटेन के इस कार्य के परिणामस्वरूप तथा बाद में जर्मनी द्वारा रूस के विरोध के कारण रूस बल्कान मे तुर्की साम्राज्य पर अपना अधिकार नहीं जमा पाया।

(अस्पष्ट) जब 19वीं सदी में, आस्ट्रिया व रूस जैसी–बाह्य शक्तियां तुर्की साम्राज्य को उखाड़ फेकने की योजना बना रहीं थीं तब पश्चिमी यूरोपीय शक्तियां, जो रूस से आशंकित थीं, वे रूस को यूरोप मे तुर्की साम्राज्य पर अधिकार जमाने से रोकने में लगी थीं।

तुर्की साम्राज्य का तो अंततः पतन होना ही था किंतु प्रश्न यही था कि तुर्की साम्राज्य का स्थान अब कौन ले? क्या बल्कान प्रायद्वीप स्वतंत्र राज्यों का संगठन होगा या कोई अन्य औपनिवेशिक शक्ति उस प्रायद्वीप पर अपना अधिकार जमाएगी? इस प्रश्न का हल निकल आया, वह यह कि आस्ट्रिया ने प्रायद्वीप के अधिकांश भाग पर अपना कब्जा कर लिया था और उसका उसे छोड़ने का कोई विचार भी नहीं था। बाद में बुल्गारिया जब तुर्की से मुक्त हुआ, रूस की सहायता से, तो रूस चाहता था कि वह उस पर अपना आधिपत्य बना ले, किंतु अन्य शक्तियों के दबाव के कारण वह ऐसा नहीं कर पाया। इस प्रकार बुल्गारिया को अपनी आजादी रूस से उपहारस्वरूप प्राप्त हुई। इस तथ्य को आज भी बुल्गारिया के लोग स्वीकार करते है तथा अपनी राजधानी, सोफ़िया मे उन्होंने रूस के प्रति आभार प्रकट करने के लिए एक विशाल स्मारक बनाया है।

बल्कान प्रायद्वीप में रूस की औपनिवेशिक कुंठा और उसकी तुलना में आस्ट्रिया की सफलता ने दोनों देशो के मध्य तनाव पैदा कर दिया। वर्तमान सदी के अंत तक यह स्पष्ट हो गया है कि दोनो देश शीघ्र ही संघर्ष करके यह निर्णय कर लेंगे कि बल्कान प्रायद्वीप पर किसका आधिपत्य होगा। एंग्लो–जर्मन दुश्मनी की वजह से ही बल्कान युद्ध विश्वयुद्ध में परिवर्तित हो गया था। किंतु यदि जर्मनी साम्राज्य 1870 में अस्तित्व में न आया होता और 1914 मे विश्वयुद्ध न भी हुआ होता तो भी बल्कान मसले पर आस्ट्रिया और रूस के मध्य युद्ध अवश्य होता।

यदि हम विश्वयुद्ध के तात्कालिक कारणों पर विचार करें तो आश्वस्त हो जाएंगे कि यूरोप के इस हिस्से में संघर्ष अवश्यंभावी था। जून 1914 में आस्ट्रियाई साम्राज्य के अंतर्गत सराजोवों मे आस्ट्रियाई आर्कड्यूक की हत्या कर दी गई। हत्यारा एक सर्ब था और जांच पड़ताल से पता चला कि षड्यंत्रकारी लीग के लोग थे जो सर्ब सेना के अधिकारियों से मिले हुए थे और उन्हें हथियार आदि भी सप्लाई करते थे। प्रथम दृष्टा

केस से बना जिसमें यह सिद्ध हो गया कि इसके पीछे सर्वियन सरकार का हाथ था जिसके विरोध मे विएना से बैलग्रेड को एक सख्त अल्टीमेटम भी भेजा गया। यद्यपि वह अल्टीमेटम किसी भी सरकार के लिए किसी कड़वी गोली से कम न था, किंतु आस्ट्रिया की अपेक्षा सर्बिया एक बहुत ही छोटा देश था। यदि उसे किसी का सहारा नहीं मिलता कि वह हर हाल में हर शर्त मे आस्ट्रिया से समझौता कर लेता, किंतु चूकि प्रारंभ से ही रूस उसके (सर्विया) साथ था इसलिए उसने आस्ट्रियाई अल्टीमेटम था पालन करने से इंकार कर दिया। इसलिए सर्बिया से आस्ट्रिया ने युद्ध करने की घोषणा कर दी। रूस अपने शरण मे आए सर्बिया की सहायता करने को सामने आया, इससे युद्ध क्षेत्र विस्तृत होने लगा जिसके परिणामस्वरूप विश्वयुद्ध प्रारंभ हुआ। यदि इन घटनाओं पर ध्यान दे तो इसमें कोई संदेह नही रह जाता कि रूस ने ही सर्विया को प्रेरित किया कि वह आस्ट्रियाई सीमा क्षेत्र में रहने वाले सर्व तथा अन्य जाति के लोगों द्वारा वहां समस्या खड़ी करना रूस और सर्विया चाहते थे कि आस्ट्रियाई साम्राज्य से बल्कान में रह रही स्लाव जाति को छुटकारा मिल सके। सर्बिया राष्ट्रीय आधार पर इसका इच्छुक था जबकि रूस पैन-स्लाविक जाति के हित में तथा आस्ट्रिया के प्रति घृणा के कारण ऐसा चाहता था। विश्वयुद्ध के कारण बल्कान की स्थिति बिल्कुल बदल गई। 1918 तक तो बल्कान प्रायद्वीप औपनिवेशिक आक्रमणो का शिकार रहा। किंतु विश्वयुद्ध के पश्चात तीन महाशक्तियां -तुर्की, आस्ट्रिया और रूस बल्कान क्षेत्र से अलग हो गईं। आज हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अंततः बल्कान प्रायद्वीप को औपनिवेशिक ताकतो से छुटकारा मिला।

किंतु इसका क्या यह अर्थ था कि बल्कान समस्या सदा के लिए हल हो गई। नहीं। विश्वयुद्ध ने पुराने संकट हल किए तो कुछ नई समस्याएं भी पैदा कीं। आज हम बल्कान देशो को लाभ तथा अलाभकारी दो क्षेत्रो में बांट सकते हैं। लाभ में रहने वाले देश थे यूगोस्लाविया और रूमानिया। हानि मे रहने वाले देश बुल्गारिया और हंगरी, यदि हम इस देश को भी बल्कान क्षेत्र का मानें तो। हानि में रहने वाले देश अपनी सीमाओं का पुनर्मूल्यांकन करना चाहते थे। इसके इलावा यूगोस्लाविया में आंतरिक कलह भी शुरू हो गई उधर बुल्गारिया मे मैकेडोनियन प्रश्न जोर-शोर से उठ खडा हुआ, जो कि ग्रीस और यूगोस्लाविया मे पहले ही था।

नहीं, अभी भी बल्कान समस्या का सदा के लिए अंत नहीं हो पाया। बल्कान के लोग ऊपर से फिलहाल शांत है। किंतु ऊपरी सतह के नीचे की हलचल अभी भी सुनी जा सकती है। यद्यपि कुछ समय के लिए जर्मनी और आस्ट्रिया ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा किंतु बल्कान प्रायद्वीप यूरोप मे उठ रहे तूफ़ान का केंद्र था।

कुर्लहास हॉकलैंड
बैगस्टीन
11.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

(1) कुछ जर्मन सामग्री संलग्न है। कृपया इसका जल्दी से जल्दी अनुवाद करके मूल पाठ सहित मुझे भिजवाओ।

(2) मैंने तुम्हारे लिए यूरोपीय इतिहास का आर्डर बुक करवा दिया है। वह लंदन से सीधे तुम्हारे ही नाम से आएगी।

(3) आक्सफोर्ड डिक्शनरी मेरे नाम से कार्ल्सबाद होती हुई आएगी। क्या अभी तुम्हें मिली या नहीं?

(4) क्या तुमने किसी कैफे मे टाइम्स के बारे में पूछताछ की?

(5) कल मुझे तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला था। तुमने कहा था कि तुम मुझे कुछ कपड़े और पटेल के पत्र भिजवा रही हो। कैसे? मुझे उम्मीद है कि डाक द्वारा नहीं। मुझे अब उनकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि अब मौसम स्कीइंग के योग्य नहीं है और मैं नहीं चाहता कि तुम उन्हें भिजवाने में डाक खर्च करो। अपने पत्र में मैंने तुम्हें लिखा था कि तुम उन्हें तैयार रखना और जब मैं लिखूं तब भेजना। पिछले पत्र में भी मैंने लिखा था कि यदि माथुर या सेन बैगस्टीन आ रहे हों तो उनके हाथ में चीजे भिजवा सकती हो। किंतु मुझे डाक द्वारा ये चीजें नहीं चाहिए। इसलिए अब उन्हे डाक द्वारा मत भेजो।

आशा है तुम स्वस्थ हो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च. - क्या कास्यूलेट को सूचित कर दिया? उन्होने क्या कहा?

सुभाष चंद्र बोस

कुर्लहॉस हौकलैंड
बैगस्टीन
12.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा लेख ठीक करके साथ में भेज रहा हूं। तुम इसे तत्काल भेज सकती हो। कृपया अपने अगले पत्र में मुझे सूचित करो कि हिंदू के एक कॉलम मे कितने शब्द हैं।

हां, तुम्हें मेजर बासु की बात मान लेनी चाहिए। इसमें कोई शक नही। इंग्लैंड जाने का तुम्हारे लिए यह अच्छा मौका है। मुझे आशा है कि तुम्हारे माता-पिता तुम्हे जाने की आज्ञा दे देंगे।

यह पत्र मै जल्दी में लिख रहा हूं क्योंकि डाक मे तत्काल डालने की जल्दी मे हू।

मुझे सूचित करो कि क्या तुम्हे कैफे से टाइम्स उपलब्ध हो पाएगा अथवा नही। अन्यथा मुझे तत्काल लंदन पत्र लिखना होगा। लंदन से टाइम्स केवल 16 मार्च तक ही आएगा।

मैं ठीक-ठीक हूं। मेजर बासु की बात मान लो।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

कर्लहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
आस्ट्रिया
12.3.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

अभी-अभी मुझे तुम्हारा भेजा पार्सल मिला और मै तुम्हे बता नही सकता कि मै तुमसे कितना नाराज हूं। मै नहीं जानता किसके निर्देश पर तुमने यह सब भेजा है। ये सब व्यर्थ है क्योकि अब यहा बर्फ नही है। और फिर, जितना सामान मेरे पास है मै उससे अधिक सामान ले जा नही सकता इसलिए ये सब मुझे वापिस विएना भेजना होगा।

पिछले पत्र मे मैने तुम्हे लिखा था कि सब सामान तैयार रखना, ताकि आवश्यकता पडने पर मैं तुम्हें लिख सकूं कि मुझे भिजवा दो। हाल ही के पत्र में मैने लिखा था कि यदि माथुर या सेन में से कोई इधर आ रहा हो तो उसके हाथ भिजवा देना। किंतु तुमसे डाक द्वारा भेजने को किसने कहा।

कृपया मुझे बताने का कष्ट करो कि तुमने डाक मे इस पर कितना व्यय किया है।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम ऐसी ही मूर्खतापूर्ण बातों पर बहुत-सा पैसा व्यर्थ लुटाती हो।

मुझे उम्मीद थी कि तुम बहुत समझदार हो लेकिन अब पता चला कि तुम मूर्ख हो। मुझे बहुत दुख हुआ।

फिर तुम कपड़ों का पार्सल बनाकर भेज सकती थीं। सूटकेस में रखकर क्यो भेजे?

काश तुमने अपना दिमाग कम इस्तेमाल किया होता और मेरे निर्देशों पर अधिक ध्यान दिया होता।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च - पार्सल देखने से पता लगा कि एक्सप्रेस भेजने में तुमने और भी अधिक व्यय किया है। ऐसी क्या जल्दी थी - आश्चर्य है। तुमने इस बेकार की बात में व्यर्थ ही इतना पैसा खर्च किया।

सुभाष चंद्र बोस

कुर्लहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन
15.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

भारत सरकार से अधिकारिक तौर पर (विएना के कौंसिल द्वारा) मुझे सूचना मिली है कि जब मैं भारत में पहुचूंगा तो वे मुझे स्वतंत्र नहीं रहने देंगे। इसका अर्थ है कि मैं जैसे ही भारत पहुंचूंगा मुझे सीधे जेल जाना होगा।

अब मैं सोच रहा हूं कि मेरे इस सरकारी स्वागत के बावजूद मुझे भारत जाना चाहिए अथवा नहीं। संभवतः मैं जाऊंगा। फिर भी दो तीन दिन में मैं निर्णय ले लूंगा।

यदि मैं पानी के जहाज से गया तो मैं इटली की बंदरगाह के लिए 25 की सुबह बैगस्टीन से रवाना हो जाऊंगा और यदि वायुयान से गया तो 31 मार्च को बैगस्टीन से जाऊंगा। उम्मीद है कि मैं इटली के जहाज से ही जाऊंगा। यदि मुझे वहां जाना ही है तो कुछ आवश्यक कार्य है जो मुझे करना है-कुछ लेख लिखने हैं और अपनी पुस्तक का दूसरा संस्करण तैयार करना है। इसमें एक सप्ताह का कठिन परिश्रम चाहिए। क्या तुम एक सप्ताह के लिए यहां आ सकती हो? कृपया अपने माता-पिता से पूछ लो कि क्या वे तुम्हें एक सप्ताह घर से बाहर रहने की अनुमति दे देंगे।

यदि तुम्हारा यहां आना आवश्यक हुआ तो मैं तुम्हें पुनः लिखूंगा। मेरा अगला पत्र मिलने तक तुम्हें कुछ और नहीं करना केवल मेरी पुस्तक का परिशिष्ट ठीक करना है और इसी से संबंधित अन्य कार्य करने हैं।

यदि तुम आओगी तो मेरा ट्रैंच कोट तथा दूरबीन लेती आना। अपने साथ कम से कम सामान लाना ताकि अधिक बोझ न हो। तुम्हारी रेल यात्रा का खर्च मैं भेज दूंगा।

कृपया इस पूरी बात को गोपनीय रखना। अपने माता-पिता को भी बता देना कि किसी से इस विषय में चर्चा न करें। विएना में मैंने किसी को भारतीय सरकार की

धमकी के विषय में नहीं बताया है। इसलिए जब तक मैं अन्य मित्रों को सूचित नहीं करता तब तक इस बात को गुप्त रखना है।

यदि मैं अभी घर नहीं जाता तो तुम्हें भी फिलहाल यहां आने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं इस समय केवल इसलिए लिख रहा हू ताकि मेरे बुलाने पर तुम तत्काल आने को तैयार रहो।

माता-पिता को प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्चः - आशा है कि तुम अपना पहला लेख हिदू को भेज चुकी हो।

सुभाष चद्र बोस

कुर्लहास हॉकलैंड
बैगस्टीन
आस्ट्रिया
सोमवार, 16 3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

हां, मुझे घर अवश्य जाना होगा। इसलिए मुझे तत्काल सब तैयारियां करनी है। तुम्हारी यात्रा के खर्च के लिए मैं 40 शिलिंग भेज रहा हूं। कृपया मेरे लिए निम्नलिखित चीजें लेकर आना।

(1) ट्रैंच कोट (लंबाकोट)

(2) मीडर (कमर की पेटी) *यह किसी ट्रक में बंद है।*

कृपया हल्का वाला ओवरकोट (ग्रे रंग का) कास्मोपोलाइट की मालकिन के पास ही छोड़ देना ताकि जब मैं मंगवाऊं तो वह डाक द्वारा भिजवा सके या किसी आने-जाने *वाले के हाथ भिजवा दे। किंतु उसे अपने साथ लाने का कष्ट मत करना। केवल लंबा* कोट ही लाना।

कपड़ों के दोनों ट्रंक खोलकर देख लेना। यदि तुम्हें कोई वस्तु ऐसी लगे जो भारत में मेरे काम आ सकती है तो लेती आना। लेकिन भारतीय कपडे की सूती धोतियां मत लाना। मेरे पास एक जोड़ा और वे पर्याप्त हैं।

अपने उपयोग के लिए, जितना सभव हो कम से कम सामान लाना। ताकि अधिक बोझ न उठाना पड़े।

तुम्हें कपड़े आदि केवल एक सप्ताह के लिए लाने हैं। संभव है तुम्हें कुछ सामान अपने साथ वापिस ले जाना पड़े।

यदि तुम्हे मेरे कपड़ो मे सफेद टोपी (गाधी टोपी) मिल जाए तो ले आना।

आज सोमवार है, और तुम्हे यह पत्र शाम तक मिल जाएगा। क्या तुम कल (मंगल) चल सकोगी? यदि संभव हो तो मुझे यह तार दे देना।

बोस
कुर्लहॉस हॉकलैंड
बैगस्टीन

पहुंच रही हू 10 15 (अथवा 15 02 अथवा 22 10)

इतना ही काफ़ी है। तुम्हे अपना नाम लिखने की भी आवश्यकता नहीं है। यदि कल रवाना न हो पाओ तो कृपया एक्सप्रेस पत्र लिख देना वह समय पर पहुंच जाएगा। मुझे उम्मीद है कि तुम बुधवार को रवाना हो पाओगी।

विएना मे किसी को यह बताने की जरूरत नहीं कि तुम यहां आ रही हो अथवा वे मुझे जेल भिजवा देंगे।

तुम्हारा 14 तारीख का पत्र मुझे कल मिला। यह अच्छा ही है कि तुम्हारे पाठ खत्म हो चुके हैं वरना मुझे तुम्हारे कार्य मे बाधा डालनी पड़ती।

संभवतः मैं फिलहाल पर्याप्त राशि नहीं भेज पाऊंगा। कृपया कोई व्यवस्था कर लेना, जब तुम यहां आओगी तब तुम्हे दे दूंगा।

अपनी टिकट के लिए तुम्हें रिजर्वेशन ब्यूरो पर जाने की जरूरत नहीं। क्योंकि बैगस्टीन आस्ट्रिया में ही है इसलिए तुम रेलवे स्टेशन से सीधे टिकट खरीद सकती हो। मेरे विचार से 33 शिलिंग लगेंगे – थर्ड क्लास में। गाड़ी का निश्चित समय मुझे मालूम नहीं, वह तुम स्वयं ओटेरिकर वर्केशब्यूरो से टेलिफ़ोन करके पता कर लेना। किंतु मेरे विचार मे कोई सीधी गाड़ी नहीं है। तुम्हें सेल्ज़बर्ग अथवा शाजक स्टवेल पर गाड़ी बदलनी पड़ेगी।

जब यहां आओ तो टिकट अपने पास ही रखना। माता-पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

16 6.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रात: ही मैंने तुम्हें एक एक्सप्रेस पत्र लिखा है। तीन बाते मैं भूल गया था।

(1) 'इंडियन स्ट्रगल' तथा उस पर यदि तुमने कुछ नोट्स आदि बनवाए हैं तो वे अपने साथ लेती आना।

(2) अपना टाइपराइटर भी साथ लाना। कुछ टाइपिंग पेपर (लगभग 100) तथा कार्बन भी लाना।

(3) अपने साथ 50 डाक के लिफाफे, 25 पतले लिफाफे एयरमेल के तथा कुछ डाक पैड (50 कागज) भी लाना।

यदि तुम्हारे पास समय न हो तो स्टेशनरी (कागज आदि) की चिंता मत करना। किंतु अपना टाइपराइटर लाना मत भूलना, क्योंकि वह अति आवश्यक है।

पतले कागज यहां बहुत महगे हैं, अतः यदि तुम्हारे पास समय हो तो साथ लाना ही उचित रहेगा।

आशा है इसमे तुम्हे अधिक कष्ट नहीं होगा। मुझे मालूम है तुम्हें धनाभाव होगा, किंतु कोई व्यवस्था कर लेना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

हॉस हाकलैंड
बीजी 17.3.36 (मगलवार)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

संभवतः तुम्हें यह पत्र बहुत देर से मिलेगा। यदि समय पर मिल जाए तो कृपया एक चीज का ध्यान रखना। यहां एक महिला (हॉस फ्रा) के पास औरग्रा प्राइवेट (जर्मन) टाइपराइटर है और वह मुझे खुशी-खुशी वह टाइपराइटर दे भी देगी। वह भारी है - पोर्टेबल नहीं है। यदि तुम समझो कि तुम उस मशीन पर कार्य कर सकती हो तो अपना टाइपराइटर लाने की आवश्यकता नही है। जितना कम सामान हो उतना ही अच्छा है।

यदि समय हो तो मेरे चिकित्सा के सभी कागजात मेडिकल रिपोर्ट्स आदि ले आना। वे कास्मोपोलाइट में किसी ट्रंक मे है।

गाड़ियां इस प्रकार है –

विएना (पश्चिम)	~	8.0	12.20	13.45
बैगस्टीन	~	14.41	19 09	21.36

मेरे विचार से सभी गाड़ियां तुम्हें सैल्जबर्ग पर बदलनी पड़ेंगी। कुछ गाड़ियां श्वाक सेंट वेला पर भी बदलनी पड़ती है। एक और पत्र लिखने के लिए क्षमा चाहता हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

यदि तुम अपना टाइपराइटर नहीं ले कर आओ तो मेरे ट्रेंच कोट के साथ मेरा ग्रे रंग का ओवरकोट ला सकती हो।

विलेक
बैनहॉफ रेस्टोरेंट
26.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

अभी मैंने यह लेख पूरा किया है। पहला लेख जो मैंने बैगस्टीन से लिख कर भेजा था उसे फाड़ देना और इसे सोमवार को एयरमेल द्वारा भेज देना। इस लेख के साथ संपादक को एक पत्र भी लिखना जिसमें तुमने जो दो लेख लिखे थे उनके विषय में उनकी राय और भविष्य के लिए कुछ सुझाव आदि भी पूछ लेना।

भारत पहुंचने से पहले मैं तुम्हें तुम्हारे अगले लेख के लिए विचार भेजूंगा। आशा है तुम घर ठीक-ठाक पहुंच गईं। अब मैं अपनी गाड़ी के इंतजार में हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुन - मुझे मालूम नहीं हुआ कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। संभवतः वह यहीं हो, लेकिन मैं इतना व्यस्त हूं कि उस ओर ध्यान देने का भी समय नहीं है।

विएना
30.3.36

विश्वयुद्ध के पश्चात बल्कान
(हमारे बल्कान संवाददाता द्वारा)

विश्वयुद्ध समाप्त होने का अर्थ था आस्ट्रियाई और हंगरी साम्राज्य का विघटन तथा यूरोप से तुर्कियों का सफाया, उनके लिए केवल थ्रास का कुछ भाग तथा कांस्टैनटिनपोल शहर बचा जो विशाल ओटोमन साम्राज्य की यादगार मात्र था, जो किसी समय बोस्फोरस से लेकर विएना तक फैला हुआ था। बल्कान प्रायद्वीप में से छः राज्य यूगोस्लाविया, बुल्गारिया, अल्बानिया, रूमानिया, ग्रीस और यूरोप में तुर्की उभरे। हंगरी जो कि सामान्यतः बल्कान राज्य में सम्मिलित नहीं था, किंतु जिसने बल्कान प्रायद्वीप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, को भी बल्कान क्षेत्र में माना जा सकता है। इन छः राज्यों में

से बल्कान और तुर्की अपेक्षाकृत छोटे राज्य है और दोनो राज्य धर्म की दृष्टि से मुस्लिम देश है। विश्वयुद्ध के पश्चात जिन राज्यो ने अपने क्षेत्र का विस्तार किया वे है, यूगोस्लाविया और रूमानिया। अतः हम इन्हे लाभ में रहने वाले राज्य में गिन सकते है। यूगोस्लाविया (जिसका वास्तविक अर्थ दक्षिणी स्लाव राज्य) जैसा कि नाम से भी स्पष्ट है स्लाव जाति का राज्य है। यूगोस्लाविया की अन्य छोटी-छोटी जातियां है सर्ब, क्रोट्स तथा स्लोवन्स। ये सभी जातियां स्लाव भाषा बोलती है जो कि अन्य स्लाव भाषाओं चेक, पोलिश तथा रूसी भाषाओ की भांति स्लाव भाषा से अलग नहीं है। रूमानियावासी खत्म होती जा रही जाति है। संभवतः ये लोग प्राचीन रोमंस के वंशज है, रूमानिया की भाषा भी लैटिन तथा आधुनिक इटालियन से मिलती-जुलती है। ग्रीस को भी हम लाभ मे रहने वाले राज्यों मे गिन सकते हैं क्योंकि इसने भी बल्कान युद्ध 1912-1913 तथा विश्वयुद्ध के दौरान अपनी सीमाओं को विस्तृत किया यद्यपि इसकी उपलब्धि यूगोस्लाविया और रूमानिया की अपेक्षा कम थी। ग्रीस अब यथास्थिति बनाए रखने का इच्छुक है और उसे अपनी सीमाओं को विस्तृत करने की आकांक्षा भी नहीं है। छः बल्कान राज्यों में से बुल्गारिया ही ऐसा राज्य है जो सबसे अधिक हानि मे रहा। हालांकि टर्की ने यूरोप एवं एशिया मे दोनों ही जगह अपना साम्राज्य खो दिया किंतु उसने स्वयं को भाग्य के भरोसे छोड़ दिया और पुनर्निर्माण का विचार भी नही बनाया। उसके पास जितना क्षेत्र है वह उसी से संतुष्ट है, क्योंकि वहां केवल तुर्की निवास करते है और वह बल्कान क्षेत्र मे शांतिपूर्वक रहना चाहते है, यह निश्चय ही हानि मे रहने की स्थिति ही कहीं जा सकती है।

पिछले लेख मे मैंने उल्लेख किया था कि अभी बल्कान की समस्याओ का हल नही हुआ है। हालाकि बल्कान प्रायद्वीप से औपनिवेशिक शक्तियों का खात्मा हो गया। बल्कान क्षेत्र की विस्फोटक शक्तियां बुल्गारिया और हंगरी है - यूगोस्लाविया भी, यद्यपि कारण भिन्न-भिन्न हैं। मै विस्तार से बताती हूं।

बुल्गारिया का सदा से यह सपना रहा है कि वह एक शक्तिशाली स्लाव राज्य बने, किंतु किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया, उसके बल्कान पडोसियों ने ही उसे हानि पहुंचाई है। *उसने तुर्की के बलबूते पर अपना साम्राज्य बढ़ाया, किंतु बाद मे, जिस क्षेत्र* पर वह अपना अधिकार बताता था उसे उत्तर मे रूमानिया ने और दक्षिण मे ग्रीस ने अपने अधिकार में ले लिया। ऐसा 1912-13 के बल्कान युद्ध के दौरान हुआ।

विश्वयुद्ध के पश्चात, संभवतः पश्चिमी शक्तियो का विरोध करने का दोषी होने की वजह से बुल्गारिया के क्षेत्र पर यूगोस्लाविया का अधिकार भी हुआ। इस प्रकार उसे अपने पड़ोसियो से बहुत सी शिकायते थीं जिनमें रूमानिया, ग्रीस और यूगोस्लाविया तथा संभवतः तुर्की भी था। इसी कारण जब बल्कान क्षेत्र की चार महत्वपूर्ण शक्तियों ने

यानी रूमानिया, ग्रीस, यूगोस्लाविया और तुर्की ने बल्कान संगठन का फैसला किया ताकि बल्कान प्रायद्वीप में शांति और यथास्थिति कायम रखी जा सके तो बुल्गारिया ने मिलने से मना कर दिया। हंगरी की भांति ही बुल्गारिया भी अपनी सीमाओं का पुनर्निर्धारण चाहता था।

बुल्गारिया की अपेक्षा हंगरी के साथ और भी त्रासदी रही। युद्ध से पूर्व हंगरी की जनसंख्या 18 मिलियन थी। 1919 मे ट्रायनन समझौते से यह आधी रह गई। ऐसा इस तरह हुआ। आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य एक ही राजा – आस्ट्रियाई कैसर या राजा के अधीन था। इस साम्राज्य के एक हिस्से पर सीधा आस्ट्रिया का राज्य था जिसका मुख्यालय विएना में था जबकि दूसरे भाग पर हंगरी का राज्य था जिसका मुख्यालय बुडापेस्ट था। (आस्ट्रियाई लोग जाति से जर्मन हैं और उनकी बिल्कुल अलग भाषा है।) विश्वयुद्ध के दौरान जब पश्चिमी शक्तियां विजयी हुई तब उन्होने आस्ट्रियाई-हंगेरियन साम्राज्य को तोड़ने का निश्चय किया। ऐसा करने के लिए उन्हें केंद्रीय और दक्षिण पूर्वी यूरोप मे नए राज्य बनाने पड़े। इस प्रकार हंगरी की कीमत पर चेकोस्लोवाकिया एक स्वतंत्र और बड़े राज्य के रूप में अस्तित्व मे आया। सर्बिया, जिसकी जनसंख्या 4 मिलियन के लगभग थी, सर्ब, क्रोट्स और स्लावंस का विस्तृत राज्य बना जिसकी नींव आस्ट्रिया के कंधे पर रखी गई। इस पुनर्विभक्ति के कारण हंगरी से चेकोस्लोवाकिया ने अपना बड़ा हिस्सा वृहत सर्बिया को (इसे अब यूगोस्लाविया कहते है।) तथा रूमानिया को दिया जिस कारण उसकी (हंगरी की) सीमा और जनसंख्या आधी के लगभग हो गई। और जहां विश्वयुद्ध से पूर्व आस्ट्रो-हंगेरियन साम्राज्य की जनसंख्या 50 मिलियन के लगभग थी वहीं अब आस्ट्रिया एक छोटा सा राज्य बन गया जिसकी जनसंख्या केवल 6 1/2 मिलियन रह गई और जिसमें से विएना की ही जनसंख्या 2 मिलियन थी। किंतु आस्ट्रिया ने अपने भाग्य से समझौता कर लिया और अब आस्ट्रिया में ऐसा कोई आंदोलन नहीं हुआ जिससे उसकी पहली सीमाओं की प्राप्ति की इच्छा जाहिर होती हो। इसके विपरीत आस्ट्रियाई लोगो का एक बड़ा वर्ग जर्मनी में विलय का इच्छुक है, इन लोगों की जनसंख्या लगभग 65 मिलियन है। भला हो या बुरा लेकिन हंगरी अपने भाग्य से समझौता नहीं कर पाया इसी कारण आज हंगरी में जोरदार आंदोलन छिड़ा है जो चाहता है कि उस ट्रायनन समझौते का पुनर्गठन हो जिसके द्वारा हंगरी की वर्तमान सीमाएं निर्धारित की गई थीं।

पिछले युद्ध से सबसे अधिक लाभ की स्थिति में रहने वाले तीन राज्यों में बल्कान क्षेत्र के दो राज्य यूगोस्लाविया और रूमानिया तथा केंद्रीय यूरोपीय क्षेत्र के चेकोस्लोवाकिया – सामान्य हित की बातो के लिए समझौता तथा यथास्थिति कायम रखने के लिए सहयोग की भावना बनी। इस समझौते और सहयोग से लिटन एंटेंट का उद्भव हुआ। हंगरी इसे अपने विरुद्ध एक षड्यंत्र मानता है।

लिटल एंटेंट के परिणामस्वरुप चार राज्यों के बीच – यूगोस्लाविया, रूमानिया, ग्रीस और तुर्की – बल्कान एंटेंट बना। इसे बुल्गारिया अपने खिलाफ़ मानता था। अल्बानिया, जो कि बल्कान का ही एक राज्य था बल्कान एंटेंट मे शामिल नहीं हुआ क्योंकि उस पर इटली का प्रभाव अधिक था।

बल्कान एंटेंट और लिटन एंटेंट दोनों ही यूरोपीय समस्याओं के प्रति फ्रांस के पक्षधर हैं। केंद्रीय यूरोप मे फ्रांसीसी राजनीति सक्रिय है तथा बल्कान में फ्रांस का प्रभाव अधिक है। यूगोस्लाविया जैसे अलग-अलग राज्यो का झुकाव वैसे भी जर्मनी की ओर ही दिखाई देता है।

केंद्रीय यूरोप तथा बल्कान से फ्रांसीसी प्रभुत्व को खत्म कर अपना प्रभुत्व बनाने का प्रयास इटली बहुत पहले से करता आ रहा है। अल्बानिया काफी समय से पहले ही उसके प्रभाव में था तथा इटली, आस्ट्रिया और हंगरी के मध्य हुई तीन पक्षीय संधि ने तो इटली को केंद्रीय यूरोप की राजनीति के मध्य में ला खड़ा किया। जर्मनी के आक्रमण से बचने के लिए आस्ट्रिया इटली की तरफ बढ़ा और हंगरी इटली के पक्ष में झुका क्योंकि इटली ने उसके पुनर्निर्धारण के लक्ष्य को उकसाया था।

बल्कान प्रायद्वीप में बुल्गारिया और हगरी के इलावा दो अन्य स्रोत भी ऐसे थे जो भविष्य में परेशानी खड़ी कर सकते थे। पहला तो यूगोस्लाविया की आंतरिक स्थिति बहुत नाजुक थी। जिस समय युद्ध के पश्चात् सर्ब्स, क्रोट्स और स्लोवंस को मिलाकर एक साम्राज्य की स्थापना की गई तब क्रोट्स और स्लाव लोगों को आशा थी कि उन्हे संघ राज्य में स्वायत्तता प्राप्त होगी। किंतु 1929 में स्वर्गीय अलैक्ज़ेंडर ने डिक्टेटरशिप द्वारा देश को एकत्र करने का प्रयास किया तथा प्रत्येक प्रकार की प्रांतीयता को दबाने की हर संभव कोशिश की। उसने यूगोस्लाविया का पुनः नामकरण किया। हालांकि ऊपरी तौर पर विरोध दब गया, किंतु क्रोट्स और स्लाव जाति के लोगों में विद्रोह की भावना-बढ़ती गई। आज विरोधी पार्टियां पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हैं और सभी का मानना है कि यूगोस्लाविया की आंतरिक समस्या हल होने वाली नहीं।

दूसरी समस्या मेकडोनिया से संबंधित है। यहां के लोग ग्रीस, बुल्गारिया और यूगोस्लाविया में बंटे हैं और बुल्गारिया का सबसे अधिक प्रभाव है। कुछ समय पूर्व तक बुल्गारियाई सरकार की मैकेडोनियम स्वायत्तता और स्वतंत्रता के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण था। मेकडोनियंस अपने उद्देश्य के प्रति जागरूक एवं स्पष्ट नहीं थे। कुछ लोग वर्तमान राज्यों के मध्य ही स्थानीय स्वायत्तता पाने के इच्छुक थे तो कुछ लोग स्वतंत्र मेकडोनिया राज्य लेना चाहते थे। जो ग्रीस, यूगोस्लाविया, बुल्गारिया से बिल्कुल अलग हो। एक साल से, जबसे, बुल्गारिया में मेकडोनियाई आंदोलन को दबा दिया गया है तब

से मेकडोनिया की समस्या के विषय में अधिक शोर-शराबा नहीं है। किंतु इस बात में कोई शक नहीं है कि समस्या अभी बनी हुई है और हल नहीं हुई है।

इसी से जुड़ा एक प्रश्न है, वह यह कि यूगोस्लाविया और बुल्गारिया के संबंध आपस में कैसे हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान दोनों के मध्य बहुत गहरी दोस्ती हुई है। इसके लिए हमें यूगोस्लाविया के स्वर्गीय राजा एलेक्जेंडर का और बुल्गारिया के राजा बोरिस का आभारी होना चाहिए। किंतु इस समस्या का मूल प्रश्न यह है कि अंततः दक्षिणी स्लाव का नेतृत्व कौन संभालेगा। एक समय ऐसा था जब बुल्गारिया इसके सपने देखा करता था किंतु इन दिनों उसे एक किनारे करके यूगोस्लाविया ने दक्षिणी स्लाव राज्य में अपना प्रभाव बना लिया है। अब तो यूगोस्लाव का प्रभुत्व इतना बढ चुका है कि वे खुले आम यूगोस्लाविया और बुल्गारिया के एक होने की चर्चा करते है। यूगोस्लाविया इसमें एक बड़ी शक्ति है। यह विचार तो बहुत अच्छा है कि दक्षिणी स्लाव को मिला कर एक राज्य का दर्जा दे दिया जाए किंतु बुल्गारिया के राजा और उसकी राजगद्दी का क्या होगा। इन समस्याओ पर हम अपने आगामी लेख मे विस्तृत चर्चा करेंगे।

नपोली
28.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सुरक्षित यात्रा के पश्चात् मै आज प्रातः यहां पहुंच गया हूं और शीघ्र ही समुद्र के बीच होऊंगा। तुम्हारे लिए और तुम्हारी बहन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम। कृपया उन्हें सूचित कर देना कि जब मैं गैस्टीन में था तो मुझे उनका पत्र मिल गया था। विलाक से मैंने एक लेख 'युद्ध के पश्चात बल्कान' भेजा था जो तुम्हें अब तक मिल चुका होगा।

फिर मिलेंगे।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

'कांट वर्डे'
29.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

ऐसी बहुत सी बातें हैं जिनके विषय में मैं तुम्हें लिखना चाहता हूं – किंतु उन्हें व्यवस्थित रूप में नहीं लिख पाऊंगा – इसलिए कृपया इस पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ना। अभी हम लोग नेपल्स से एक दिन की यात्रा की दूरी पर हैं। समुद्र बहुत शांत है – भगवान का शुक्र है। अब क्योंकि मैं बूढ़ा हो रहा हूं इसलिए उपद्रवी समुद्र का सामना नहीं कर पाता जो कि सामान्यतः मैं जवानी के दिनों में कर लेता था। आजकल मौसम सुंदर और साफ़ है, धूप चमकती है, ऊपर नीला आकाश फैला है – हमारे चारों ओर गहरा नीला समुद्र है और हमारे सामने पानी का अनंत विस्तार है।

जब मैंने इटली की सीमा पार की तो कोई कठिनाई नहीं हुई। उन्होंने मुझे देखा अवश्य लेकिन मुझसे अपने ट्रंक तक खोलकर दिखाने को नहीं कहा। विलाक से मैं बाहनोफ़ रेस्तरां में तीन घंटे के लिए रुका था वहीं मैंने वह लेख पूरा किया जो तुम्हें डाक द्वारा भेजा था। मेरे विचार से उस जगह कोई व्यक्ति मेरा पीछा कर रहा था – किंतु मैंने परवाह नहीं की, क्योंकि मैं लिखने में व्यस्त था। यदि वह पत्र तुम्हें नहीं मिला तो निश्चित है कि उन्होने वह चुरा लिया होगा क्योंकि मैंने स्वयं वह डाक में डाला था। सीमा पार करने के बाद ऐसा कुछ नहीं है जिसके विषय में कुछ लिखा जाए। मैंने रजिस्टर्ड डाक द्वारा तुम्हें पेंसिल भेजी थी। डॉ० के० से मैंने तुम्हारी कटिंग्स की बात भी की थी। नेपल्स की यात्रा ठीक-ठाक रही। सांय तीन बजे हम लोग नेपल्स से रवाना हुए।

जहाज का जीवन, जहां तक पशुओं का संबंध है – आरामदायक है। बहुत सा

भोजन खाना पड़ता है-आवश्यकता से अधिक। सुबह बेड टी, फिर नाश्ता-बहुत सा, दोपहर एक बजे खाना, वह भी कम नहीं, रात का खाना सायं 7.30 बजे। फर्स्ट क्लास में खाना बढ़िया होता है नाश्ते और लंच के बीच वे सूप अथवा सैंडविच भी देते हैं। दोपहर में एक सम्मेलन होता है और रात में फिल्म दिखाई जाती है। रात हमने एक फिल्म देखी। दिन मे आप प्रतिदिन स्नान कर सकते हैं, जहाज में एक स्विमिंग पूल भी है जहां आप जा सकते स्विमिंग के लिए, यदि मौसम अच्छा हो तो। समय बिताने के लिए डेक पर खेलने के कई खेल हैं। आज निशानेबाजी की प्रतियोगिता थी जिसमें इटली के यात्रियों ने शानदार प्रदर्शन किया। वे लकड़ी के टुकड़े को निशाना बना रहे थे। जिसे एक स्वचालित मशीन ऊपर उछालती थी। फर्स्ट क्लास में एक जिमनास्टिक का कमरा भी है।

मेरे केबिन के साथियों में एक अफगान है और एक भारतीय है। पूरे जहाज पर कुल छः भारतीय हैं। पूरा जहाज इटली के यात्रियों से भरा है, मेरे विचार से यह मसावा पर खाली हो जाएगा। 30 या 31 तारीख को हम पोर्ट सईद पहुंचेगें, वहाँ से यह पत्र डाक में डालूंगा।

मैं प्रसन्न हूं कि समुद्र शांत है। सामान्यतः मध्य सागर सर्दियों में उछाल पर होता है और अरेबियन सागर गर्मियों में। केवल बसंत ऋतु में (मार्च, अप्रैल, मई) और पतझर के मौसम में (अक्तूबर और नवंबर) में दोनों ही समुद्र प्रायः शांत रहते हैं। लाल समुद्र प्रायः शांत होता है - जब तक कि उसमें तूफान न आया हो - किंतु वह बेहद गर्म होता है। आजकल कैसा होगा कह नहीं सकता। उन्होंने बिजली के पंखे ठीक करने शुरू कर दिए हैं, शायद लाल समुद्र की वजह से ही।

मुझे आशा है कि मैंने जो कार्य तुम्हें सौंपा था वह बिना किसी गड़बड़ के तुमने पूरा कर लिया होगा। बहुत सा काम था, मैं तुम्हें दोष नहीं दे सकता यदि तुमसे कुछ गलती हो भी जाए तो। दो मुख्य बातें थीं-प्रेस में मेरा बयान और डाक्टर का पत्र, सभी एयरमेल द्वारा भेजी जानी है।

यदि संभव हुआ तो मैं (दूसरे लिफ़ाफ़े मे) हिंदू के लिए तुम्हारे आगामी लेखों के लिए कुछ सामग्री भेजूंगा। यदि तुम्हें कुछ और सामग्री मिल जाए और तुम उन लेखों को पुनः लिख सको तो बेहतर होगा। प्राग के मित्र के संपर्क में रहने का प्रयत्न करो - वह पत्रकारिता में तुम्हें सहयोग देगा।

यदि कभी पूर्व की दिशा में यात्रा करनी पड़े तो बसंत ऋतु अथवा पतझर का मौसम ही चुनना। यदि बसंत ऋतु में यात्रा करो तो गर्मियों के कपड़े साथ रखना क्योंकि पोर्ट सईद के बाद उनकी आवश्यकता पड़ेगी। जहाज पर यूरोपीय महिलाएं डेक पर 'बीच पजामा' पहने ही घूमती रहती हैं।

आज प्रातः जहाज के वायरलेस अखबार (रोज़ाना अखबार) में विएना के विषय में एक वायरलेस खबर थी। कोई डॉ० आक्स्नर (?) जो फ़िनिक्स इंश्योरेंस कंपनी से संबंधित थे, डानुबे के किनारे मृत पाए गए। डॉ० विलेस के ज्यूरिख में हुए आंख के आपरेशन की भी चर्चा थी। तथा आज होने वाले जर्मन चुनाव की भविष्यवाणी भी थी।

मेरे पास कुछ अतिरिक्त लीरा बच गए हैं जो मैं तुम्हें इसी लिफाफे में भेज रहा हूं। मैंने सुना है कि यदि मैं इन्हें पोर्ट सईद अथवा बंबई में बेचूंगा तो बहुत कम दाम मिलेंगे। मैं तुम्हें पेपर नोट के रूप मे 100 या 150 लीरा भेजूंगा। यदि ये तुम्हें मिल जाएं तो तुम तत्काल इन्हें आस्ट्रियाई करेंसी में परिवर्तित करा लेना। संभवतः लीरा की कीमत गिरेगी इसलिए जल्दी से जल्दी परिवर्तित करा लेना।

मेरे विचार से मै टाइम्स के लिए टाइम्स बुक क्लब को एक माह अर्थात् अप्रैल के अंत तक के लिए राशि भेज देता हूं। तुम वह अखबार पढ़ने के बाद सप्ताह में एक बार मुझे भेज सकती हो। केवल अंदर के चार पृष्ठ भेजना, किंतु कृपया कटिंग्स मत काटना। यदि तुम्हारे उपयोग की कोई वस्तु हो तो नोट्स बना लेना। प्रत्येक बल्कान राज्य के लिए तुम्हें अलग-अलग नोट्स अथवा कटिंग्स तैयार करनी चाहिएं। इस प्रकार जब तुम लेख लिखना शुरू करोगी तो सही सामग्री के चुनाव मे कठिनाई नहीं होगी।

फिर, अपने स्वास्थ्य का अवश्य ध्यान रखो। गैस्टीन मे भोजन बहुत अच्छा नहीं था। आशा है अब घर पर तुम बेहतर महसूस कर रही होगी। अब बसंत ऋतु है, अतः तुम्हें सर्दी महसूस नहीं होनी चाहिए और आशा है अब तुम्हारा जुकाम भी ठीक हो जाएगा। आशा है गॉलब्लैडर की समस्या भी समाप्त हो जाएगी। मेरी तुमसे प्रार्थना है कि अपनी खुराक के विषय में सावधान रहो। यदि ध्यान दोगी तो संभवतः आपरेशन करवाने से भी बच सको। अन्यथा एक न एक दिन आपरेशन अवश्य होगा।

मेरे अंग्रेजी के पत्रों के विषय में यदि आवश्यक हो तो प्राग के मित्र की सम्मति ले सकती हो। तुम्हें मालूम है कि राजनैतिक विषयो में मैं उस पर विश्वास करता हूं। पटेल के पत्र संभाल कर रखना। उसमें यदि मेरा कोई पत्र हो तो उसे अलग रख लेना। यदि तुम्हें रिलीज आर्डर मिल जाए तो तत्काल उसे पंजीकृत डाक से मेरे भाई के पास भेज देना और उस पर प्रेषक का नाम मत लिखना। (बंगला पत्रों के विषय मे नीचे लिखी बातें ध्यान में रखना)

मैंने डॉ० के० से बात की थी और वे मेरे कुछ कपड़े भारत ले जाने को तैयार हो गए हैं। मेरे विचार से यह बेहतर होगा कि मेरे कपड़ों को तीन बक्सों में बांट दिया जाए दो छोटे बक्से और एक बड़ा (चमड़े का)। माथुर और कटयार संभवतः बिना किसी परेशानी के एक-एक बक्सा ले जा सकते हैं। अधिक महंगे और उपयोगी वस्त्र छोटे बक्सों में भरे जाने चाहिएं। यदि एक ही बक्से में आ जाए तो बहुत ही बढ़िया रहेगा।

यदि माथुर मान जाता है तो बेहतर रहेगा क्योंकि वह सीधा कलकत्ता ही आएगा। बंबई से कलकता तक का सामान का किराया और यूरोप का जो थोड़ा बहुत खर्च होगा वह मैं दूंगा ही। किंतु तुम्हें अपनी सामान्य बुद्धि से काम लेते हुए यह देखना होगा कि यातायात का खर्च अधिक न हो। यदि वह बहुत ज्यादा है तो उन्हें भारत भेजना व्यर्थ है। डॉ० के० ने मुझे बताया कि वह विएना से उन्हें बंदरगाह तक लाने की व्यवस्था कर सकता है, बिना किसी अतिरिक्त व्यय के। यूरोप अथवा बंबई को जो अतिरिक्त व्यय हो वह तुम्हें अदा करना चाहिए – कम से कम मेरी ओर से व्यय देने का प्रयत्न अवश्य करना। यदि डॉ० के० या माथुर मुझसे खर्चा नहीं लेते तो अलग बात है, किंतु मेरे विचार से मुझे उन्हें देने की कोशिश अवश्य करनी चाहिए, क्योंकि वे विद्यार्थी ही तो है।

मेरी पुस्तकों के विषय में, जो तुम्हें उचित जान पड़े, डॉ० बी० अथवा श्रीमती एफ० एम० से बात कर सकती हो। कृपया एक बार ये देख लेना कि कौन सी पुस्तकें उधार ली गई थीं, वे वापिस दे दी गईं हैं या नहीं।

अमेरिकन एक्सप्रेस के पास मेरे 5 डालर शेष हैं। मैं उन्हे सूचित कर दूंगा कि वे तुम्हें यह राशि पाउंड्स में दे दें। संभवतः वे अपना कमीशन लेंगे। कृपया कमीशन स्वयं देकर यह राशि पाउंड्स में ले लेना। इसमें से एक डालर तुम्हें न्यू लीडर को भेजना होगा। शेष चार डालर तुम अपने पास रख लेना। बेहतर होगा यदि तुम इस राशि को इंग्लिश करेंसी में ले लो, क्योंकि यदि कभी इंग्लैड जाओ तो इसका इस्तेमाल कर सकोगी। यदि परिवर्तित कराना चाहो तो डॉ० सेन से बात करना। संभवतः वे उचित कीमत दिलवा दें। यदि इंग्लैंड नहीं भी गईं तो भी यह पैसा काम आएगा।

अपने दूसरे पत्र के साथ मैं तुम्हें न्यू लीडर के लिए एक पत्र भी भेजूंगा। उस पत्र के साथ एक डालर रख कर एयरमेल से नांबियार के पास भिजवा देना। मैं भी नांबियार को पत्र लिख रहा हूं। नांबियार को यह पत्र एयरमेल द्वारा भेजने का विचार इसलिए है कि सामान्य पत्र की अपेक्षा एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र अधिक सुरक्षित रहता है। प्राग से पंजीकृत डाक से भेजने का विचार इसलिए है कि यह लंदन सुरक्षित पहुच जाएगा। (तुम जानती ही हो कि हम आस्ट्रिया से पंजीकृत डाक द्वारा पैसे नहीं भेज सकते किंतु चेकोस्लोवाकिया से भेजना संभव है।)

कृपया न्यू लीडर को पढ़ने के बाद भारत भेज देना। न्यू लीडर और टाइम्स दोनों ही मेरे घर के पते पर – 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता – बुक पोस्ट द्वारा भेज देना।

बंगला पत्रों के विषय में – अपनी उपस्थिति में वे डॉ० सेन से पढ़वा लेना और फिर बाद में उनका तत्काल अनुवाद कर लेना। उन्हें अशोक के पास मत भेजना। अनुवाद करने के पश्चात उन्हें फाड़ देना।

गाडी के डिब्बे मे बड़ा चमड़े का बक्सा ले जाना असंभव हैं। उसे 'गीपैक' के रूप में बुक करवाना पड़ेगा जो काफ़ी मंहगा पड़ेगा। इसलिए तुम्हें तब तक इंतजार करना पड़ेगा। जब तक कि कोई व्यक्ति उसे अपने खर्चे पर लाने को तत्पर नहीं हो जाता। यदि यातायात का व्यय अधिक न हो तो उस बक्से को यथासंभव खाली करके उस व्यक्ति को दे दो ताकि वह अपने कपड़े उसमें रखकर ला सके। मैं यह बक्सा अवश्य चाहूंगा क्योंकि वह बहुत उपयोगी है तथा मेरे भाई का है। उस बक्से की सफ़ेद सूती चीजें तुम किसी को भी दे सकती हो। खास भारतीय कमीजें, जो यूरोप मे उपयोग में नही आ सकतीं वे तुम कटयार अथवा माथुर के हाथों भिजवा सकती हो या फिर उन्हे नष्ट कर दो क्योकि उनका कोई विशेष उपयोग नहीं है। बड़े बक्से में से काम की चीजें निकाल कर अन्य दो बक्सों में भर दो ताकि कटयार या माथुर उन्हें अपने साथ ला सकें। कृपया स्केटिंग और स्कीइंग के जूते भिजवा देना क्योंकि यादगार के तौर पर मैं उन्हे अपने पास रखना चाहूंगा। एक पत्र में मैने काफ़ी कुछ लिख दिया है। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और बहन को मेरी शुभकामनाएं देना। तुम्हें मेरी शुभकामनाएं। कृपया अपने माता-पिता को बता देना कि मै उनसे प्रार्थना करता हूं कि वे तुम्हें पत्रकारिता जारी रखने की अनुमति दें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च. - यदि कुछ और लिखना होगा तो मैं पोर्ट सईद पहुचने से पहले एक और पत्र लिखूगा, किंतु अन्य पते पर।

सुभाष चंद्र बोस

'कांट वर्डे'
30.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कुछ मुद्दे जो मैं पिछले पत्र में लिखना भूल गया, इसलिए अनुलग्नक नोट भेज रहा हूं।

(1) यदि तुम्हें मौका मिले, तो इंग्लैंड अवश्य जाओ। यदि तुम वहां जाओ तो श्री प्यूलिन सील (17, एडिथ ग्रव, चेलसी, लंदन एस० डब्ल्यू०—10) से पत्र व्यवहार करना मत भूलना और स्वयं को मेरी सचिव के रूप में प्रस्तुत करना जैसा कि इंडियन स्ट्रगल में भी चर्चा की गई है। वे तुम्हारी सहायता करेंगे। फिलहाल उन्हें पत्र लिखने की अपेक्षा लंदन फोन करके बात कर सकती हो। यदि अशोक अभी भी वहां है तो तुम्हारे जाने पर वह भी तुम्हारा सहायक सिद्ध हो सकता है।

उसका पता है 33, कनॉट मैंशन, बाटरसी पार्क, लंदन, एस डब्ल्यू - 11. दोनों ही के पत्र पुलिस द्वारा सेंसर किए जाते हैं।

यदि तुम लंदन जाओ तो मार्ग में पेरिस भी अवश्य जाना। पेरिस देखने योग्य है। संभवतः श्रीमति वेटर तुम्हारा परिचय कुछ फ्रांसीसी महिलाओं से करवाएं। शायद तुम्हारा अध्यापक ही तुम्हें उन लोगों से मिलवाए।

(2) उन दो फ्रांसीसी महिलाओ को पत्र लिखो जिनसे श्रीमती और कुमारी वुड्स ने तुम्हारा परिचय कराया है। शायद वे तुम्हारे बारे मे उन महिलाओं से बात कर चुकी हों, लेकिन यदि तुमने उन्हें पत्र न लिखा तो वे तुम्हारे बारे में न जाने क्या सोचें।

(3) मुखर्जी को पुनः पत्र मत लिखना, यदि वह पत्र न लिखे तो। शायद उसे तुम्हारा पत्र लिखना पसंद न हो। उसे बंगला पुस्तकों के विषय में तुम्हारे पत्र का उत्तर देना चाहिए था। संभवतः उसे कोई शंका हो कि आखिर तुम बंगला क्यों सीखना चाहती हो।

(4) अपनी फ्रेंच की कक्षाएं जारी रखो। स्पेनिश का क्या हुआ?

(5) तुम सप्ताह मे दो बार जिमनास्टिक सीख सकती हो। उपकरणों के बिना प्रयास करो। यदि कोई लाभ न हो तो जिम (?) को ट्राई करो, जहां मै जाया करता था।

(6) मुझे उम्मीद है कि तुम जहां तक संभव होगा उतनी कंजूस बनोगी। यह पैसा मैं चाहता हू कि तुम तब इस्तेमाल करो जब कोई गंभीर समस्या आ खड़ी हो। अतः इसे महत्वहीन बातो पर व्यय मत करो। (गर्मियों के लिए तुम नई पोशाक अथवा नया कोट बनवा सकती हो।)

(7) कृपया चित्रात्मक पत्रिकाओं से संपर्क कर यह जानने का प्रयास करो कि वे भारतीय चित्रों को पुनः प्रकाशित करने के लिए पैसा खर्चने को तैयार है या नहीं।

(8) जब 'हिंदू' तुम्हे नियुक्त कर ले तो उन्हे सिनेमा समाचार अथवा महिला आंदोलनों के विषय में सामग्री भेजो। उन्हे भेजते समय पत्र में लिखना कि यदि उन्हें पसंद न आए तो बेशक प्रकाशित न करें, किंतु यदि वे प्रकाशित करते हैं तो वे उसका पारिश्रमिक अवश्य देंगे।

(9) तुम डॉ० फाल्टिस के माध्यम से आस्ट्रियाई वर्कर्सब्यूरो के संपर्क मे रह सकती हो और उनसे पूछ सकती हो कि क्या वे तुम्हारे द्वारा भारत मे अपना प्रचार कराना पसंद करेंगे। इस विषय में मैं डॉ० फाल्टिस को भी लिख रहा हूं। साथ में मैं यूनाइटेड प्रेस आफ इंडिया के लिए तुम्हारा परिचय पत्र भी भेज रहा हूं और उन्हें लिख रहा हूं कि वे तुम्हारे द्वारा भेजी गई सामग्री को प्रकाशित करने का प्रयास

करें। यदि तुम्हारी कुछ सामग्री प्रकाशित हो जाती है तो तुम हंगरी या आस्ट्रिया के वर्कर्स ब्यूरो को अपनी योग्यता का प्रमाण दे सकती हो। यदि शुरू-शुरू में वे तुम्हें कुछ नहीं भी देंगे तो भी भारतीय प्रेस में तुम्हारे प्रकाशन से वे धीरे-धीरे प्रभावित अवश्य होंगे। यदि तुम प्रकाशन हेतु कुछ सामग्री भेजो तो उन्हें यह अवश्य लिख दो कि वे अखबारों में प्रकाशित तुम्हारी सामग्री की कटिंग तुम्हें अवश्य भेजे।

जैसा कि श्री नांबियार ने तुम्हे सुझाव दिया है तुम्हें विएना मेला, बुडापेस्ट मेला आदि घटनाओं की रिपोर्ट भारतीय समाचार पत्रों को अवश्य भेजनी चाहिए। (हिंदू शंकर तथा पीचामुत्थु के भाषण के समाचार प्रकाशित करना पसंद करेगा।) विएना मेले की रिपोर्ट यूनाइटेड प्रेस को भेजो वे स्वयं सब अखबारों को भेज देंगे किंतु तुम्हें कुछ देंगे नहीं। '*हिंदू*' *तुम्हें राशि देगा किंतु उसकी दिलचस्पी केवल महिला आंदोलनों, सिनेमा* और कला समाचारों में होती है । बल्कान रिपोर्ट में तो उनकी रुचि है ही। संक्षेप में, हिंदू के लिए प्रेसे के लिए लिखो और यूनाइटेड प्रेस में विएना मे यह दिखाने के लिए कि तुम्हारे संबंध भारतीय प्रेस से भी हैं। पहला कदम यह उठाओ, कि मेरे परिचय पत्र के साथ तुम यूनाइटेड प्रेस को एक छोटा सा लेख '*डर लिट्जे फ्रोर्ट*' पर भेज दो। इस रिपोर्ट मे यह बताओ कि कहानी तो बंगाली और बोस्तानो में एक समान है किंतु पृष्ठभूमि अलग अलग है।

यदि तुम्हे यूनाइेटेड प्रेस से नियुक्ति पत्र मिल जाता है तो कृपया किसी को यह मत बताना कि यूनाइटेड प्रेस तुम्हे कोई परिश्रमिक नहीं देता, क्योंकि यूरोप में उन पत्रकारों का कोई विशेष महत्त्व नहीं है जिन्हें प्रेस पारिश्रमिक नहीं देता।

(10) मैं तुम्हे यह महसूस कराना चाहता हूं कि जहां तुम मेरे निर्देशों का पालन नहीं करतीं वहां कितने घपले करती हो। ताजा उदाहरण तो यह है कि तुमने डॉ० सेन को यह बताया कि फिलहाल मेरा भारत जाना स्थगित हो गया है। तुम्हारे साथ कठिनाई यह है कि तुम काम करने से पहले बिल्कुल भी सोचती नहीं हो। तुम्हें *यह आदत डालनी होगी कि कोई भी कार्य करने से पूर्व अवश्य सोचो। कुछ भी* करने से पहले कम से कम तीन बार सोचो। यदि तुम ऐसा करोगी तो कभी गलती नहीं करोगी।

(11) नेपल्स से मैंने तुम्हें एक छोटा सा पत्र लिखा था। आशा है तुम्हें मिल गया होगा।

(12) यूनाइटेड प्रेस को लिखते समय संपादक को औपचारिक संबोधन लिखना न कि श्री बी० सेन गुप्ता।

(13) हिंदू और यूनाइटेड प्रेस को लिखते समय यह ध्यान अवश्य रखना कि आलेख पुनः न भेज दो या एक ही आलेख दोनों को न भेज दिया जाए। यह घातक होगा। इसमें बचने के लिए, जो भी तुम भारत भेजो उसकी टाइप प्रति अपने पास अवश्य रख लो।

(14) यह पत्र समाप्त करने के पूर्व सिर्फ़ एक बात और। अपने जीवन में कभी स्वार्थ को लक्ष्य न बनाओ या उसकी उम्मीद न करो। मानव कल्याण की सोचो - जो सदा-सदा की भलाई है - जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है। निष्काम (बंगला में) भाव से कार्य करो। हार्दिक शुभकामनाएं। माता-पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी,
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - टाइम्स के लिए मैं अप्रैल के अंत तक का चंदा दे रहा हूं उसके बाद वह नहीं आएगा।

सुभाष चंद्र बोस

कांट वर्डे
स्वेज़ कैनाल
31.3.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल मैंने तुम्हारे घर के पते पर दो पत्र भेजे हैं। मैंने अमेरिकन एक्सप्रेस को लिख दिया है कि वे अंग्रेजी करेंसी में तुम्हें पांच डालर का भुगतान कर दें। कमीशन स्वयं दे देना और उनसे पूरी राशि ले लेना। मैंने तुम्हे लीरा नहीं भेजे, क्योंकि मुझे जहाज पर खर्चने को पैसे की आवश्यकता पड़ेगी।

आज मैं दुबारा इसलिए लिख रहा हूं क्योंकि कुछ दिलचस्प बातें हैं। हम लोग प्रातः 9.30 बजे पोर्ट सईद से रवाना हुए थे और इस समय स्वेज़ नहर पार कर रहे हैं। शाम तक हम स्वेज़ नहर के अंत में पहुंच जाएंगे।

जब प्रातः हम पोर्ट सईद पहुंचे तो मेरी खोज में पुलिस अधिकारी जहाज पर आए। मेरा पासपोर्ट छीन लिया गया और एक पुलिस वाले को मुझ पर पहरा देने के लिए बैठा दिया गया। जितनी देर जहाज पोर्ट सईद में रहा मुझ पर पहरा रहा। जब जहाज वहां से चला तो पुलिस वाला भी चला गया और मेरा पासपोर्ट परिचारक के पास छोड़ दिया गया। स्पष्ट है कि अंग्रेज नहीं चाहते थे कि मैं जहाज से उतरूं और किसी से मिलूं। (नहासपाशा से मैंने पहले ही मिल लिया था।) यदि तुम चाहो तो इस घटना का खूब प्रचार कर सकती हो। तुम इसकी सूचना डा० सेन, मैडम एफ० मिलर व अन्य लोगों को दे सकती हो। इस घटना से तुम अंदाजा लगा सकती हो कि भारत पहुंचने पर मेरा कैसा सरकारी स्वागत होगा।

हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - माता-पिता को मेरा प्रणाम। आशा है शाम को स्वेज़ से यह पत्र मैं डाक में डाल सकूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - फिलीस्तीनी पत्रकार ने तुम्हे लिखा था कि एक और नहर बनाई जाएगी-संभवत: अकाबा से हाइफ़ा तक। अथवा लाल समुद्र के दक्षिणी छोर पर (स्वेज़ की तरह) स्थित है और हाइफा मध्यसागर में फिलीस्तीन मे। यदि इस विषय मे विश्वस्त समाचार मिले तो हिंदू के लिए समाचार बना कर भेजो। यदि खबर सच्ची हुई तो एक पत्रकार के रूप में तुम्हें ख्याति मिलेगी।

सुभाष चंद्र बोस

आर्थर रोड जेल
बंबई, भारत
8.4.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

आज प्रात: मै यहां पहुंच गया था और यहां पहुंचने पर अपने ट्रंक खोलने पर मुझे पता चला कि मै अपने चिकित्सा के कागजात लाना भूल गया हूं। वे उसी बक्से में होंगे जो मैं वहीं मैडम वेसी के यहां छोड आया हूं। क्या तुम वहां जाकर मुझे मेरे चिकित्सा संबधी सभी कागजात लेकर सामान्य पंजीकृत डाक द्वारा भेजने का प्रयास करोगी? यह भी संभव है कि उन्हे मेरी भूल पता चल चुकी हो और वे उन कागजों को मेरे घर के पते पर भिजवा चुकी हो। यदि ऐसा हो तो तुम्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। कृपया मैडम वेटर और मैडम एफ मिलर तक मेरा प्रणाम पहुंचा देना, क्योंकि उन्हे मै अलग से पत्र नहीं लिख सकता। यदि वे कागजात मुझ तक भिजवाने हों तो इस पते पर भेजो-द्वारा, सुपरिंटेडेंट, आर्थर रोड जेल, बंबई। क्योंकि वह बड़ा सा ढेर है इसलिए उसे एयरमेल द्वारा भेजने की आवश्यकता नहीं है। आशा है कष्ट देने के लिए क्षमा करोगी। शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जेलर साहब यदि आप इसे सेंसर करके पास करने के बाद एयरमेल से भिजवा देंगे तो मैं आपका आभारी रहूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

यरवदा केंद्रीय जेल
पूना (बंबई प्रेसीडेंसी)
11.5.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पता नहीं तुम्हें मेरा 8 अप्रैल का पत्र, जो मैंने आर्थर रोड जेल, बंबई से लिखा वह मिला या नहीं। उसमें मैंने तुम्हे लिखा था कि कृपया मेरे वे चिकित्सा संबंधी कागज भिजवाने की व्यवस्था करो जो मैं वहां भूल आया था। अपनी भूल का अहसास मुझे बंबई पहुंचने से कुछ समय पूर्व ही हो गया था इसीलिए मैंने जल्दी से जल्दी यहां उतरते ही एयरमेल द्वारा तुम्हें पत्र लिखा था। मेरे चिकित्सा के कागज श्रीमती वेसी के पास रह गए होंगे, यदि तुम उन्हें मुझ तक पहुंचाने की व्यवस्था कर दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा। पिछला पत्र लिखने के बाद मुझे पूना जेल में स्थानातरित कर दिया गया है। इसलिए मुझे इस पते पर लिखो–द्वारा सुपरिटेंडेंट, यरवदा जेल, पूना। यदि तुम पहले ही आर्थर रोड जेल के पते पर मेरे कागजात भिजवा चुकी हो तो वे उन्हें यहां भिजवा देंगे और मुझे समय पर मिल जाएंगे।

संभव है तुम आजकल विएना अथवा देश से बाहर गई हो। यदि ऐसा है तो फिलहाल मेरे कागजों को लेकर चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। बाद में जब शहर मे लौटोगी तब भिजवा देना। इस बीच यदि मुझे बहुत आवश्यकता महसूस हुई तो मैं विएना में किसी और से संपर्क कर लूंगा–लेकिन मेरा विचार है कि मैं तुम्हारे विएना लौटने तक इंतजार कर सकता हूं।

सर्दियां अब खत्म हैं। आशा है तुम समुद्र के पास के बसंत और गर्मियों का आनंद ले रही होगी। यहां आजकल जून माह का सबसे गंदा मौसम है। 13 अप्रैल को बंबई से लौटने के बाद से ही यहां गर्मी बहुत तेज है। तुम अंदाजा भी नहीं लगा सकती कि यहां कितनी गर्मी है। अभी भी मैं अक्सर उस मोटी बर्फ को याद करता हूं जो उन दिनों बैगस्टीन में पड़ी थी जब मैंने यूरोप छोड़ा।

मेरे पत्र से तुम जान जाओगी कि मैं आजकल जेल में हूं, जैसे ही 8 अप्रैल को मैं बबई मे जहाज से उतरा तत्काल बंदी बना लिया गया। परिणामत: यहां से मैं तुम्हे कुछ भी लिखने की स्थिति में नहीं हूं। अभी तक मैं अपने किसी संबंधी से भी नहीं मिल पाया हू सिवाय अपने छोटे भाई व उसकी पत्नी के, जो लगभग दो सप्ताह पूर्व मुझसे मिलने आए थे। शायद तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता हो कि मुझे उसी जेल में उसी कमरे में रखा गया है जहां कुछ दिन पहले महात्मा गांधी को बंदी बनाया गया था।

इस कष्ट (चिकित्सा संबंधी कागज भिजवाने के लिए) के लिए क्षमा चाहता हूं, यह हिम्मत तभी जुटा पाया क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम इसे कष्ट नहीं समझोगी। मुझे प्रसन्नता है कि विएना से मेरी डाक निरंतर मुझे मिल रही है। विएना से भारत के पते पर भेजे गए कई पत्र और पत्रिकाएं मुझे मिल चुकी हैं।

अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें शुभकामनाएं। अपनी बहन को भी मेरी शुभकामनाएं। कृपया मुझे सूचित करो कि तुम सब लोग कैसे हो।

अभी मैं इलस्ट्रेटेड वीकली आफ इंडिया में एक इन्सबक लड़की के विषय में पढ़ रहा था जो केवल 15 वर्ष की है और शानदार चित्र बनाती है। उसे एक उच्च श्रेणी का कलाकार माना जा रहा है और उसने विएना के कलाक्षेत्र में सनसनी फैला रखी है। उसका नाम रोजूरिथा बिटरलिख है। क्या तुमने भी उसके विषय में कुछ पढ़ा है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग (बंगाल)
22.5.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

मेरे उन चिकित्सा के कागजों को मुझ तक पहुचाने का कष्ट उठाने के लिए धन्यवाद जिन्हें मैं भूल से वहीं विएना में छोड़ आया था। तुम्हारा अग्रेषित पत्र और ये कागज मुझे लगभग एक सप्ताह पूर्व मिल गए थे जब मै पूना में था। मै तभी तत्काल तुम्हें धन्यवाद का पत्र लिखता, किंतु उस समय तक मुझे इस स्थान पर स्थानातरण के आदेश मिल गए जो कि दर्जिलिंग के समीप है। मुझे पता है कि तुमने कभी इस स्थान के विषय मे कुछ सुना नहीं होगा कितु पढ़ा अवश्य होगा। फिर भी यह तो संभव है ही कि तुम उसे नक्शे में खोज सकती हो। यह बंगाल के उत्तर में स्थित है।

चिकित्सा संबंधी कागजों के देर से मिलने पर मैंने सोचा कि तुम गर्मियो मे गांव गई होगी। इसीलिए मैने पूना से पुनः तुम्हे पत्र लिखा था कि शहर लौटने तक तुम्हे इसकी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वह पत्र भेजते ही मुझे तुम्हारा पत्र और मेरे कागजात मिल गए।

आजकल मैं जेल में नहीं हूं। मुझे कैदी (पता नहीं तुम इसका अर्थ समझती हो या नहीं) बनाकर एक बंगले (एक छोटी विला) मे, जो मेरे भाई का है रखा गया है। यह बंगला दार्जिलिंग के रास्ते मे कुर्सियांग के निकट स्थित है। दार्जिलिग 7000 फीट की ऊंचाई, यानि लगभग 2300 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह स्थान 5000 फुट की ऊंचाई पर यानि कि 1600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यद्यपि अभी मैं स्वतंत्र नहीं हू लेकिन पूना की जेल से बेहतर हूं क्योंकि वहां अप्रैल और मई के महीनो मे भयानक गर्मी होती है। उसकी तुलना मे, यहां बहुत ठडा है और इस बगले से समतल भूमि का बहुत सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

कृपया प्राग और विएना के मित्रों को मेरा स्मरण कराना। कभी-कभी पत्र लिखती रहा करो, तुम्हारे बारे में जानकर प्रसन्नता होगी। तुम्हें और तुम्हारे माता-पिता को शुभकामनाएं और बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

गिद्ध पहाड़
कुर्सियांग
ज़िला दार्जिलिंग
22.5.36

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग, (बंगाल)
11 जून, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 26 मई के लंबे पत्र के लिए धन्यवाद, वह मुझे 9 तारीख को मिला। इसने मेरे जीवन की नीरसता को भंग करके मुझे एक बार फिर विएना पहुंचा दिया है। पिछले दिनों हमे हमारे समाचार पत्रों में बहुत सी अस्ट्रियाई खबरें पढ़ने को मिलीं-विशेष रूप से तुम्हारे चांसलर (केंजलर ?) और भूतपूर्व चांसलर के मध्य चल रहे युद्ध के विषय में। ये समाचार आस्ट्रियाई राजनीति से संबंधित है और मेरे विचार से तुम्हारी इसमें कोई विशेष दिलचस्पी नहीं है। यदि तुम्हे दिलचस्पी होती भी तब भी मैं तुम्हें राजनीति के विषय में कुछ भी लिखने में असमर्थ रहता।

'रूडोल्फनर हॉस' की नर्सों ने मेरा बेहद ध्यान रखा। यदि तुम्हारा कभी उनसे मिलना हो तो मेरी हार्दिक शुभकामनाएं उन्हें देना। बहन एल्वीरा की बीमारी के बारे में जानकर दुख हुआ। शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की मेरी कामनाएं उस तक पहुंचा देना। मुझे पहले भी यह महसूस होता था कि थोड़ा सा भी अधिक काम करने पर वह बहुत थकान महसूस करती थी। वह तब भी बहुत स्वस्थ नहीं दिखाई देती थी। मुझे तब भी यह आश्चर्य होता था कि वह एक संपन्न और धनिक परिवार से संबद्ध है लेकिन फिर भी नर्सिंग क्यों करती है। शायद यह उसका शौक हो या फिर उसे किसी की सहायता करके सुख का अनुभव होता हो। कुछ भी हो मैं हमेशा उसका आभारी रहूंगा।

सहानुभूति न रखने वाली नर्सों के विषय में तुमने जो लिखा है उसे मै अवश्य पढ़ना चाहूंगा। क्या यह, उसी वार्ड की, मोटी नर्स (आवरसवेस्टर ?) ही नहीं, जिस वार्ड मे मै था। मुझे अब बेहद दुख हो रहा है कि मै उस कलाकार लड़की रोज़ूरिथा बिटरलिख की पेटिंग्स की प्रदर्शनी नहीं देख पाया। क्या उसने कहीं प्रदर्शनी की, जिसकी सिस्टर एल्वीरा ने बहुत तारीफ की थी। क्या तुम स्वयं प्रदर्शनी देखने गईं?

इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं कि तुम्हे बुडापेस्ट पसंद आया। ऐसा शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो उसके सौंदर्य से प्रभावित न हुआ हो। यह वास्तव में ही 'डानुबे की महारानी' है। ग्रेट ब्रिटेन के पर्यटकों को बुडापेस्ट बहुत पसंद है। विएना भी है इसमे दो राय नहीं लेकिन यदि प्राग अथवा बूडापेस्ट से तुलना की जाय तो ऐसा महसूस होता है कि यह शहर वह है जहां कभी बहुत संपन्नता रही होगी। लेकिन बुडापेस्ट और प्राग अभी भी संपन्न और खुशहाल लगते हैं।

मेरे अपने विषय में लिखने को कुछ विशेष नहीं है। मुझे खेद है कि मेरी जर्मन भाषा भी बहुत प्रगति नहीं कर पाई है। कभी-कभी मै कुछ पृष्ठ पढ़ लेता हूं किंतु प्रति दिन इसके लिए कुछ समय निकाल पाने में आलस करता हूं। तुम्हें मालूम ही है कि अभी मुझे जर्मन व्याकरण सीखनी है जो कि बहुत ही नीरस विषय है। फिलहाल मै स्वयं कोई कठिन या गंभीर पुस्तक पढ नहीं पाता। जर्मन साहित्य मुझे भेजने के लिए तुम्हारा आभारी हूं, किंतु इस स्थिति में वह मेरे लिए अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं होगा। जब कोई अकेला होता है तब वह जर्मन व्याकरण की अपेक्षा कोई दिलचस्प चीज पढ़ना चाहता है।

फ्रेंच भाषा में तुम्हारी प्रगति से प्रसन्नता हुई। शीघ्र ही तुम अपनी भाषा के अतिरिक्त अन्य दो भाषाओं में की ज्ञाता बन जाओगी। तुम्हारी स्पेनिश का क्या हाल है?

आशा है शहर से जाने से पहले ही तुम्हें यह पत्र मिल जाएगा। जो भी हो, मैं यह एयरमेल द्वारा भेजूंगा। अधिकांश लोगों की डाक जब वे गर्मियो की छुट्टियों में कहीं जाते हैं तो उन तक पहुंचाई नहीं जाती। क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा ही है।

यह स्थान 1500 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और दार्जिलिंग के रास्ते में पड़ता है। यह हिमालय की पर्वत शृंखलाओं पर स्थित है। निचले स्थानो की अपेक्षा यहां की जलवायु ठंडी और सुहावनी है। कमरों मे तापमान 20° सेल्सियस होता है बिना हीटर लगाए। वर्ष के इस भाग में भारत में ऐसा तापमान मिलना बहुत अच्छा है। पूना मे तो यहां भी तापमान 43° सेल्सियस तक पहुंचता है।

एक प्रकार से यहां की जलवायु यूरोप के समान है, सिवाय इसके कि यहां कई माह तक लगातार तेज़ बारिश होती है। बारिश के अतिरिक्त यहां धुंध भी बनी रहती है

इसलिए हर क्षण मौसम परिवर्तित होता रहता है। कभी-कभी सूर्य चमकता है तब हम धूप का आनंद उठाते हैं, जैसा कि यूरोप में भी होता है। नीचे समतल स्थानों में दिन भर तपते सूरज की गर्मी रहती है, सिवाय बरसात के दिनों के। परिणामस्वरूप हम लोग यूरोपवासियो की भांति सूरज के शौकीन नहीं हैं। तुम जानती ही हो कि यहां धूप अधिक है और सर्दी कम है।

यहां मेरे भाई का एक छोटा सा घर है जिसमें मुझे बंदी बनाया गया है (पता नहीं तुम्हें इसका अर्थ मालूम है या नहीं) यद्यपि यहां भी बहुत से बंधन हैं लेकिन फिर भी जेल से तो बेहतर ही है। सबसे बुरी बात हर समय अकेला रहना है लेकिन व्यक्ति धीरे-धीरे आदी हो जाता है। कुछ दिन पहले मेरे बड़े भाई को सरकार द्वारा यह इजाजत मिली थी कि वह मेरे साथ यहां कुछ दिन बिता सके। वह परिवर्तन मेरे लिए बहुत अच्छा था। फ़िलहाल मुझे घूमने के लिए बाहर भी नहीं जाने दिया जाता, किंतु सरकार इस पर विचार कर रही है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम श्रीमती हार्ग्रोव से मिली। वास्तव मे, वह महिला बहुत सभ्य महिला है और लोगों व वस्तुओं के प्रति उनमें ठीक समझ भी है, तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण है। क्या तुम उनकी मित्र सुश्री ग्रीन, अमरीकी महिला से मिलीं। वह भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण की महिला है।

तो अभी तुम्हारा टिकट इकट्ठे करने का शौक जारी है। मैंने यूरोप कम से कम सेंट्रल यूरोप जैसा शौक कहीं नहीं देखा। होटल के बैरे, काम करने वाली, डाक क्लर्क, अस्पताल की नर्सें, रेल अधिकारी, उच्चवर्ग के लोग, विद्यार्थी, बुजुर्ग महिलाएं तक इसके शौकीन हैं। कभी-कभी बिल्कुल अनजान लोगों ने भी आकर मुझसे भारतीय टिकटें मांगी हैं। उन लोगों को कुछ टिकटें देकर उनकी प्रसन्नता अनुभव करना भी एक मजेदार दृश्य है। पुरकरडोर्फ़ सैनेटोरियम में एक वृद्ध विएना की महिला थी-एक मरीज, जिन्होंने पहले दिन मुझसे बात की थी उन्होंने भी कुछ टिकटें मांगी थी और जब मैंने उन्हें कुछ टिकटें दी तो उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी। बाद में तो लोगों को खुश करने की दृष्टि से मैं स्वयं ही टिकट इकट्ठी करने का शौकीन हो गया था। इस देश में अभी यह शौक नहीं फैला है, किंतु मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि समय के साथ यह अवश्य फैलेगा। यहां के युवाओं में आटोग्राफ़ लेने का शौक तो फैल गया है।

मुझे प्रसन्नता है कि गर्मियों के आगमन से तुम बेहतर अनुभव कर रही हो। यहां इसके विपरीत है। हम गर्मियों के जाने पर प्रसन्न होते हैं और सर्दियों की प्रतीक्षा करते हैं। कृपया अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना और बहन को शुभाशीष।

मैं तुमसे हर बार लंबे पत्र की आशा नहीं करता क्योंकि मेरे पास यहां जितना समय है उतना वहां तुम्हारे पास नहीं होगा। फिर भी जब भी समय मिले मुझे कुछ

पंक्तियां तो लिख ही सकती हो। आशा है तुम्हें इस लंबे और तुच्छ पत्र को पढ़ने का समय मिल जाएगा। सभी मित्रों को हार्दिक प्रेम और तुम्हे शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनः- लगभग एक सप्ताह तक यानी कि 3 से 10 अप्रैल तक मुझे टाइम्स नहीं मिला शायद विएना के पुराने पते से उसे मेरे नए पते पर नहीं भेजा गया। बाद की प्रतियां ठीक-ठाक मिली हैं।

यदि तुम कोई फ्रांसीसी पत्रिका पढ़नी चाहती हो तो वेड्रेडी पढ़ो। इसका वही स्थान है जो 'स्पैक्टेटर' और 'न्यू स्टेट्समैन' का इंग्लैंड में है।

सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग, बंगाल
भारत
22.6.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारा 9 जून का पत्र मुझे कल प्राप्त हुआ। तुमने मुझे पुनः लिखने को कहा है। यह मैं प्रसन्नतापूर्वक कर सकता हूं क्योंकि वर्तमान अवस्था में मुझे कोई कठिनाई नहीं है। सच्चाई तो यह है कि पत्र लेखन (एक सीमा के अंतर्गत) कभी-कभी मुझे समय बिताने में सहायक सिद्ध होता है, विशेषकर तब जब कि समय बीत न रहा हो। पत्र लिखना निश्चय ही किसी नीरस पुस्तक को पढ़ने से बेहतर है। किंतु तुम्हे मेरे पत्रों का उत्तर देने की चिंता करने की जरूरत नहीं जब तक कि तुम्हारे पास समय हो और पत्र लिखने की इच्छा भी हो। (मुझे पता नहीं कि तुम मेरी इतनी बुरी लेखनी पढ़ भी पाओगी या नहीं)

तुमने डाक टिकटों के विषय मे पूछा है। किंतु मेरा पत्राचार सीमित हो गया है और विदेशी पत्राचार तो प्रायः रुक ही गया है, इसलिए दिलचस्प डाक टिकट प्रायः नहीं ही मिलती। फिर भी मैं ध्यान रखूंगा कि तुम्हें टिकट इकट्ठे करने में दिलचस्पी है। जहां तक फ़ोटो का प्रश्न है, हालांकि आसपास के दृश्य बहुत सुंदर है किंतु मैंने अभी तक कोई चित्र नहीं खींचा है। मैं कुछ चित्र लेने की सोच रहा हूं, और यदि इस कार्य में सफल रहा तो तुम्हें अवश्य भेजूंगा। किंतु मुझे आशंका है कि क्या मैं सफल हो पाऊंगा। इस

बात के अलावा, कि मैं एक अच्छा फोटोग्राफ़र नहीं हूं, यहां का मौसम भी फ़ोटोग्राफी के लिए उपयुक्त नहीं है। यहां हमेशा धुंध छाई रहती है और बारिश भी बहुत होती है। कभी-कभी धूप चमकती है। पहाड़ों के चित्र लेना तब तक संभव नहीं है जब तक कि मौसम बिल्कुल साफ न हो। यह सब बातें तो तुम जानती ही हो क्योंकि तुम्हें खुद को भी फोटो खींचने का शौक है।

मैं उस कलाकार लड़की के कुछ चित्र (पुनः प्रस्तुति) अवश्य लेना चाहूंगा, यदि वे विएना मे बिक रहे हैं तो। किंतु तुमसे मेरी प्रार्थना है कि इस बात पर खर्च करने की कोई जरूरत नहीं यदि वे बहुत महंगीं हों तो।

तुम्हारे पत्र से यह जानकर मुझे बहुत खेद हुआ कि मेरे देश के एक व्यक्ति ने वहां ब्राटिस्लावा में अभद्र व्यवहार किया। क्या तुमने प्रेस रिपोर्ट में उसका नाम देखा?

मेने तुम्हारे पिछले एयरमेल पत्र का उत्तर एयरमेल द्वारा ही दिया था। इस बात को 15 दिन हो गए। उम्मीद है वह पत्र शीघ्र ही तुम तक पहुंच जाएगा।

तुमने अपने पत्र मे लिखा है कि आजकल तुम पढ़ाने का कार्य भी कर रही हो। तब फिर तो तुम योजनानुसार सीरिया नहीं जा पाओगी बल्कि तुम्हे शहर में ही रहना पडेगा। यदि मेरा यह पत्र मिलने पर यदि तुम शहर मे ही हो तो मेरा एक काम कर दोगी? मै विएना मे, जहां आखिरी दिनो मे रहा था - 22, अल्सेर स्ट्रासे, कुछ पुस्तके छोड आया हू। क्या तुम श्रीमती वेसी से यह पता लगा सकती हो कि उनमें कोई 'प्लांड इकॉनमी' नामक कोई पुस्तक है जो विश्वेश्वरैया ने लिखी है। यदि यह पुस्तक उनमें है तो वे कृपा कर मुझे वह पुस्तक बुकपोस्ट से भिजवा दें। इस पुस्तक की मुझे आजकल आवश्यकता है किंतु संभव है मैने वह पुस्तक यूरोप मे खरीदी हो, इसलिए मै उसे दुबारा खरीदना नहीं चाहूंगा।

इस पुस्तक को भेजने की कोई जल्दी नहीं है और यदि तुम विएना से बाहर हो तब तो बिल्कुल भी चिंता करने की जरूरत नहीं। मै इस विषय में श्रीमती वेसी को, यदि आवश्यक समझूंगा तो बाद मे लिखूंगा।

यहां के समाचार पत्रो का कहना है कि हर हाल में राजकुमार ओटो विएना लौटेगा। शीघ्र ही तुम्हें सम्राट मिल जाएगा और विएना के रिक्त स्थानो पर एक बार फिर जीवन झूम उठेगा।

वैसे अंग्रेजी में Kaffee के स्पैलिंग Cafe होते हैं। जो हम पीते हैं उसे अंग्रेजी में Coffee लिखा जाता है। आशा है इस प्रकार तुम्हारी गलतियां निकालने के लिए तुम मुझे क्षमा करोगी।

यदि तुमने 'मंडाले' अथवा 'दास लेट्ज़े फ़ोर्ट' (द लास्ट फ़ोर्ट) फ़िल्में देखी है तो कृपया मुझे बताओ कि वे तुम्हें कैसी लगीं। तकनीक की दृष्टि से तो बढ़िया रही होंगी।

सरकार ने मेरे दो भतीजों (भाई के बेटो) को दो सप्ताह तक मेरे पास रहने की अनुमति दे दी है। वे आजकल यहां है इसलिए मुझे साथ मिल गया है। इस माह के अंत में वे यहां से चले जाएंगे। मेरे बारे में यही समाचार था जो तुम्हें देना था।

आशा है तुम सब लोग पूर्ण स्वस्थ होंगे। प्राग और विएना के मित्रों को मेरी याद दिलाना, जब कभी भी तुम उन्हे मिलो। तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम और तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग, बंगाल
15 जुलाई, 1936

प्रिए सुश्री शेक्ल,

तुम्हारे 27 जून के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, यह मुझे 11 तारीख को मिला था। साथ मे उस कलाकार लडकी रोजूरिथा बिटरलिख के चित्र भी थे। उन्हें देखकर मुझे विएना में प्रोफेसर सिजेक के कला स्कूल में बच्चों द्वारा बनाई गई पेंटिंग्स की याद हो आई। पता नहीं तुम कभी वहां गई हो या नहीं। यदि अभी नहीं गईं तो वह देखने योग्य जगह है। श्रीमती हार्ग्रोव और श्रीमती वेटर दोनों की प्रोफेसर सिज़ेक के कला-स्कूल की प्रशंसक हैं। वे ही मुझे वहां ले गई थीं और उन्होने मुझे 70 वर्षीय प्रोफेसर से मिलवाया था। वह भद्र और वृद्ध पुरुष आज विश्वविख्यात हो चुका है। श्रीमती हारग्रोव ने मुझे प्रोफेसर की अंग्रेजी की पुस्तक 'चाइल्ड आर्ट' भी भेजी है जो अभी प्रकाशित हुई है।

तुम्हारे पत्र से यह आभास होता है कि तुम आध्यात्मिक चीजों में अधिक दिलचस्पी लेने लगी हो। क्या यह श्रीमती हारग्रोव का प्रभाव है? भारत में जब कोई युवा व्यक्ति आध्यात्मिक होने लगता है तो उसके परिवार के लोग चिंतित होने लगते हैं कि कहीं यह विश्व का त्याग कर सयासी, साधु न बन जाए।

आखिरकार वहां ग्रीष्म ऋतु शुरू हो ही गई। मुझे आशा है कि गांव में तुम्हें आनंद आएगा और वहां की स्थितियों में तुम घुलमिल जाओगी। तुम्हारे फेफड़े में आए कष्ट को सुन कर दुख हुआ। मेरे विचार से तुम इसमे अभी लापरवाही नहीं करोगी क्योंकि इस उम्र मे इलाज करवाना आसान है।

सामान्यत: पुरानी? अथवा लापरवाही के कारण ही फेफड़ों की टी० बी० हो जाती है। तुम्हें इस प्रकार चेतावनी देने की लिए मैं क्षमा चाहता हूं, किंतु मैं वही कर रहा हूं जो कोई भी चिकित्सक बताएगा। मैं भी इस कष्ट को भोग चुका हूं और थोड़ा बहुत इसके बारे में जानता हूं। विएना फेफड़ों की बीमारी से छुटकारा पाने के लिए सबसे बढ़िया जगह है और यदि तुम विएना मे रहते हुए लापरवाही के कारण बीमार पड़ जाओ तो इससे ज्यादा दुखद बात और क्या होगी। वहां फेफड़ों का इलाज करने के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति प्रोफ़ेसर न्यूमान है, जिससे मैने कई माह तक इलाज करवाया।

नहीं, मुझे श्रीमती वैटर की कोई चिट्ठी नहीं मिली है, हालांकि मैंने उन्हें अप्रैल में पूना से पत्र लिखा था, अभी दस दिन पहले भी मैने उन्हें एक पत्र लिखा है। आश्चर्य है कि वे पत्र का उत्तर क्यों नहीं दे रहीं। अब तुम्हारे पत्र से समझ मे आया कि उन्होंने आठ सप्ताह पूर्व पत्र लिखा था जो मुझे नहीं मिला। तुम्हारे पत्र से पता चला कि श्रीमती मिलर अभी विएना मे ही है। मैंने सोचा था कि वो अपनी पूर्व योजना के अनुसार लदन चली गई होंगी। क्या तुम उन्हें मेरा सादर प्रणाम कह दोगी?

मुझे लगता है भारत में विएना बहुत लोकप्रिय हो गया है, विशेष रूप से, चिकित्सा की दृष्टि से। मेरे विचार से विएना के लोगों को चाहिए कि वे विएना के महलो और संग्रहालयों के चित्रों सहित विएना और आस्ट्रिया के बारे मे लेख लिखें। बैगस्टीन जैसी जगह जो मुझे बेहद पसंद आई, भारतवासियों को आकर्षित करेगी यदि वे उसके विषय मे जानते होंगे तो। मेरी इच्छा थी कि मैं यहां के समाचार पत्रों में बैगस्टीन और वहां के स्नानोपचार के विषय में कुछ लिखूं, क्योंकि मुझे दो बार वहां जाने पर बहुत लाभ मिला। स्विटजरलैंड की भांति ही आस्ट्रिया भी पर्यटकों को आकर्षित करता है, इसलिए उसे भारत में भी अपना प्रचार करना चाहिए।

मुझे खेद है कि मैं यहां के दृश्यों का कोई अच्छा चित्र नहीं ले पाया हूं। आजकल यहां लगातार बरसात हो रही है और यदि बरिश नहीं हो तो धुंध छाई रहती है। कुछ चित्र जो हमने लिए वे अच्छे नहीं आए हैं। यहां निकट ही एक झरना है जिसे 'पगला झोरा' अथवा 'मैड वाटरफाल' कहते हैं। मैं उसका चित्र लेना चाहता हूं। यदि मैं कुछ अच्छे चित्र लेने में सफल हुआ तो तुम्हें अवश्य भेजूंगा। जो दृश्यावली तुम दार्जिलिंग मे देख सकते हो उसकी तुलना में यहां कुछ भी नहीं है। वहां से तुम्हे मध्य में आकाश को

छूती कंचनजंगा चोटी बर्फ से ढकी दिखाई देगी। यह अद्भुत और महान है और उस पर्वत से ढकी चोटी के समय खडा व्यक्ति बहुत क्षुब्ध दिखाई देता है। पता नहीं यहां दार्जिलिंग के चित्र मिलेंगे या नहीं, मै पूछूंगा।

आजकल मै फिर अकेला हूं। मेरे जिन दो भतीजों को मेरे पास रहने की स्वीकृति मिली थी - वे वापिस जा चुके हैं। अकेले रहना बुरा नहीं है किंतु कभी-कभी बहुत उकताहट होती है। मैंने अपना साथ देने के लिए एक ग्रामोफ़ोन रख लिया है। अब मुझे महसूस होता है कि मै पहले की अपेक्षा आजकल यूरोपीय संगीत मे अधिक आनंद लेता हूं। क्या तुम मुझे कुछ बढ़िया रिकार्ड्स के नाम भेज सकती हो। तब मै कलकत्ता से उन्हें मगवा लूगा। इतनी दूर से चुनाव कर पाना कठिन है इसलिए जिसने सुन रखे हों यदि वह उनकी प्रशंसा करे तो उचित रहता है।

लंदन से मुझे मेरे सामान्य अखबार और पत्रिकाएं लगातार प्राप्त हो रही हैं उनके द्वारा मैं विश्व के बाहरी हिस्से से जुडा रहता हूं। इसके अतिरिक्त मुझे भारतीय अखबार और पत्रिकाएं भी मिलती रहती है। बिना अखबारों के पता नहीं मेरा क्या हाल हो।

तुम्हारे पत्र के वे कुछ वाक्यांश, जो विशेष रूप से आस्ट्रियाई हैं, को मै ठीक कर सकता हूं? (1) तुमने कहा है कि '11 तारीख से तुम्हारा पत्र' यहां 'का' होना चाहिए। जर्मन भाषा मे तुम 'से' और 'का' के लिए एक ही शब्द 'वॉन' का प्रयोग करते हो। इसी वजह से यह गलती हुई है। (2) तुमने फिर लिखा है कि वह चिंता से आगे देख रही है यहां तुम्हारा अभिप्राय प्रसन्नता एवं उत्सुकता से है। क्योंकि चिंता तब होती है जब हम किसी बुरी चीज की चिंता मे होते हैं। (3) तुमने लिखा है 'on neglected catarrh' इसकी जगह 'a neglected chtarrh?' होना चाहिए था। यदि अगला शब्द 'वावेल' से प्रारंभ हो तो 'का' का प्रयोग होता है। किंतु यदि 'ए' हो तो 'ए' का ही प्रयोग होगा। सामान्यत: यही नियम है। लेकिन अपवाद भी मिलते हैं। '*neglected*' शब्द चूंकि Constent से शुरू होता है इसलिए उसके पहले 'का' के स्थान पर 'ए' प्रयुक्त होगा। मैं और अधिक आलोचना नहीं करूंगा क्योंकि वर्ना तुम बुरा मान जाओगी। दूसरे तुम्हारी अंग्रेज़ी बहुत अच्छी है यदि मुझे इतनी जर्मन आती जितनी तुम्हे अंग्रेजी आती है तो मैं अत्यधिक प्रसन्न होता।

इस लंबे पत्र को पढ़ते-पढ़ते तुम थक गई होगी। अत: मैं अब समाप्त करता हूं। तुम्हारे माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम और तुम्हे व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएं। तुम शहर कब लौट रही हो।

तुम्हारी शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
30 जुलाई, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 13 तारीख का पोलाऊ से लिखा लंबा और दिलचस्प पत्र मुझे 24 को मिला। आस्ट्रिया के नक्शे पर मुझे पोलाऊ नहीं मिल पाया, किंतु जिस रास्ते से तुम लोग गुज़रे -मोनिकिरचन- का मुझे ध्यान है, वहां सर्दियों में मैं भी घूमने गया था। तब वहां खूब बर्फ गिरी हुई थी और स्कीइंग करने वाले लोग व्यस्त थे। वह एक सुंदर स्थल है अत: यह पोलाऊ भी अवश्य ही सुंदर स्थल होगा। मुझे यह जानकर अच्छा लगा कि वहां तुम लोगों को अच्छी गर्मी मिल रही है। ऐसे भयानक सर्दी वाले देश में यह अति आवश्यक है।

आस्ट्रियाई मामलों के विषय में तुमने जो कुछ लिखा है वह हमें काफी देर से प्राप्त हुआ, रायटर का भला हो जिसके द्वारा हमें अगले ही दिन पूरा समाचार मिल गया था। ऐसे महत्वपूर्ण समाचार वायरलेस द्वारा एकदम भेजे जाते हैं - विश्व के हर हिस्से में। सामान्य घटनाएं या समाचार ही अन्य देशों तक नहीं भेजे जाते।

यहां का मौसम बहुत नमी वाला है और सितंबर के अंत से लेकर अक्तूबर के मध्य तक ऐसा ही रहेगा। कभी कभी यह बहुत बेमानी लगता है, किंतु व्यक्ति इसका आदी हो जाता है। अब मुझे अपने घर की एक मील की परिधि में घूमने की इजाजत मिल गई है यानी कि मैं अपने घर से एक मील की दूरी तक जा सकता हूं। यह तभी संभव है जब यहां का मौसम बिल्कुल साफ़ हो, जैसा कि प्राय: इस मौसम में संभव नहीं। यहां लोगों का मानना है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से यह मौसम सबसे खराब है। फिर भी गर्मी से तो राहत है जिसका मुझे बिल्कुल भी शौक नहीं।

मैं कुछ चित्र लेने की सोच रहा हूं और यदि वे बहुत बुरे न हुए तो मैं अगले पत्र के साथ तुम्हें भी भेजूंगा।

मैंने देखा कि टाइम्स सीधे लंदन से ही मेरे पास आ रहा है। जब मैंने टाइम्स बुक क्लब को चंदा भेजा था तब मैंने अपना नया पता उन्हें दे दिया था, उसी का उपयोग उन लोगों ने किया है।

यदि तुम्हें कोई भारतीय पत्रिका (अंग्रेज़ी की) पसंद हो तो मुझे लिखो मैं किसी से कहकर वह तुम्हें भिजवाने का प्रबंध कर दूंगा। चित्रात्मक साप्ताहिकों में 'द टाइम्स

आफ़ इंडिया इलस्ट्रेटेड वीकली' सबसे अच्छा है जो बंबई से प्रकाशित होता है। मासिक पत्रिकाओ में मार्डन रिव्यू, जो कलकत्ता से प्रकाशित होता है सबसे अच्छा है। मैं दोनो का शौकीन हूं और ये दोनों पत्रिकाएं मुझे निरंतर मिलती है।

क्या आजकल तुम अपनी अंग्रेजी को सुधारने की दृष्टि से कोई अंग्रेजी पत्रिका पढ़ रही हो या तुम सोचती हो कि इतना ही काफी है अब फ्रेंच सीखनी चाहिए?

'Uhr' शब्द का जर्मन भाषा में अर्थ है घड़ी (समय भी) और यह स्त्रीलिंग है। इसलिए तुम 'Vor emc Uhr' क्यों कहती हो जबकि 'Vor cine Uhr' कहना चाहिए (एक बजे से पहले)। यह मुझे जर्मन व्याकरण पढ़ने पर समक्ष में आया। यह छपा गलत है अथवा तुम लोग जर्मन भाषा में 'Vor ein Uhr' ही कहते हो।

रोम लांदा एक बहुत दिलचस्प और योग्य लेखक है। सामान्यतः वह जीवनियां लिखता है। मैने उसकी (उससे नहीं) एक पुस्तक, जो उसने पिलांदस्की पर लिखी, पढ़ी है। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि अब वह आध्यात्मिक विषयों पर भी लिख रहा है। पिलास्की की जीवनी मे मैंने देखा कि वह एक रहस्यमय व्यक्ति था। तुम्हें वह पुस्तक यहां भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आध्यात्मिक विषयों पर बहुत सी पुस्तकें हमारे यहां भारत मे उपलब्ध हैं।

मैं श्रीमती वेटर के लिए कुछ दार्जिलिंग चाय भिजवाने की सोच रहा हूं, क्योंकि वे भारतीय चाय की बहुत शौकीन है और दर्जिलिंग की चाय भारतीय चाय में सबसे उत्तम है। किंतु मुझे डर है कि कस्टम ड्यूटी बहुत अधिक होगी जिसके कारण से पार्सल लेना बहुत महंगा पड़ेगा। मुझे मालूम है कि आस्ट्रियाई कस्टम ने एक बार मुझसे .. (अस्पष्ट) आस्ट्रियाई शिलिंग प्रति पाउंड (1/2 किलोग्राम) ड्यूटी के रूप में लिए थे। क्या तुम, जब संभव हो तब, यह पता लगा सकती हो कि सेपल पोस्ट यानि 1/2 किलो अथवा एक किलो के पार्सल पर कितना खर्च होगा। रेस्तरां अथवा केफ़े के मालिक यह बता सकते हैं क्योंकि वे हमेशा चाय अथवा काफ़ी खरीदते रहते हैं। यह भी पता लगाओ कि आस्ट्रिया में चाय पर सामान्य ड्यूटी कितनी है। 'पर सैंपल पोस्ट' को जर्मन भाषा में क्या कहते हैं – बी मस्टर पस्ट – अथवा कुछ और?

मुझे खेद है कि इस विषय में मुझे तुम्हें ही कष्ट देना पड़ेगा क्योंकि इस विषय मे मैं श्रीमती वैटर को नहीं लिख सकता क्योंकि उन्हे ही चाय भेजना चाहता हूं।

हमारे यहां के महान संस्कृत कवि और नाटककार कलिदास ने एक 'शकुंतला' नामक नाटक लिखा है जो लगभग 1000 वर्ष पुरानी बात है। जर्मन कवि गेटे ने जब उसे पढ़ा तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसकी तारीफ़ में उसने एक कविता लिखी। मैं उसकी कुछ पंक्तियां (अंग्रेजी अनुवाद) भेज रहा हूं और यदि तुम उसे मूल जर्मन भाषा में मुझे भिजवा दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा।

यदि यह गेटे की कविता न हो तो किसी अन्य जर्मन कवि की हो सकती है - लेकिन यह गेटे की ही कविता होनी चाहिए।

कुल मिलाकर मैं ठीक हूं। आंतरिक कष्ट भी अभी थोड़ा बहुत है और गले में भी इन्फैक्शन है। गले के संक्रमण के लिए तो डॉ० आटो-वैक्सीन तैयार कर रहे है। क्या तुम जानती हो कि इसका क्या मतलब है? जर्मन भाषा मे इसे क्या कहते हैं मैं नहीं जानता। आशा है तुम सभी लोग स्वस्थ हो। माता-पिता को सादर प्रणाम और तुम्हें शुभकामनाएं।

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
3.8.36

प्रिय श्री बोस,

आपका 15 जुलाई का पत्र मुझे 29 जुलाई को मिला, धन्यवाद।

मुझे प्रसन्नता है कि आपको उस लड़की रोज़्विथ रिटरलिख के चित्र मिल गए। हां मैंने श्रीमती हार्ग्रोव से प्रो० सिजेब के स्कूल के विषय मे सुना था। जो पुस्तक उन्होंने आपको भेजी वह भी मुझे दिखाई थी। दुर्भाग्यवश मैं अभी उस स्कूल में नहीं जा पाई हूं, लेकिन विएना जाते ही वहां अवश्य जाऊंगी। श्रीमती हार्ग्रोव भी वापिस पहुंच चुकी है। फिर मैं जाकर स्कूल मे देने का प्रयास करूंगी।

आपको लगा कि मेरी आध्यात्मिक बातों में दिलचस्पी श्रीमती हारग्रोव के प्रभाव के कारण है। नहीं, ऐसा नहीं है। इन बातों मे तो मेरी दिलचस्पी तभी से है जब मेरी आयु मुश्किल से बारह या तेरह वर्ष थी। ऐसा भी नहीं कि मुझे लगा कि मैं इस विषय को और गहराई से जानूं, बल्कि पहले से ही मेरी इसमें दिलचस्पी थी। जिस व्यक्ति ने मेरे मन को इस ओर मोड़ा वे मेरे प्रथम गुरु (भारतीय संभवतः यही कहते हैं) हंस स्ट्रंडर थे जो मुझे जर्मन लेखकों में सबसे अधिक प्रिय थे। मेरे विचार से मैंने पहले भी आपसे उनके विषय में बात की थी। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं है कि मैं बिल्कुल संत बन जाऊंगी, या विश्व को त्याग कर अध्यात्म में इतनी खो जाऊंगी। पहली बात मेरा मानना है कि संसार त्याग देने में कोई भलाई नहीं है, क्योंकि व्यक्ति जीवन में कोई भला कार्य या उद्देश्य की प्राप्ति कर सकता है, जबकि संत या त्यागी बनकर कर उद्देश्यपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकता। विश्व अभी इतना परिपक्व नहीं हुआ है कि हम अधिक आध्यात्मिक क्षेत्र की ओर झांकने लगे।

हां, मौसम कुल मिलाकर बहुत अच्छा है। बीच में कुछ दिन तापमान गिर गया था लेकिन अधिक महसूस नहीं हुआ। जहां तक मेरे स्वास्थ्य का प्रश्न है मैं पहले से बेहतर महसूस कर रही हूं। कुछ दिन पूर्व मेरे गॉल ब्लैडर में दर्द हुआ करता था, खाना खाने के बाद। लेकिन मैंने उससे बचने के लिए यह किया कि मैंने खाना कम कर दिया और मीट खाना तो बिल्कुल ही बंद कर दिया। शराब मैं सामान्यतः नहीं पीती। कल मैंने थोड़ी सी ले ली थी, क्योंकि मेरे पिता की 60वीं वर्षगाठ थी और हमारा पूरा परिवार, बच्चे, बूढ़े यहां तक कि पादरी भी शराबघर में गया था। मैं कहना चाहूंगी कि कैथोलिक पादरी विशेष रूप से यहां के, बहुत व्यवहारिक लोग है। यहां का एक पादरी रात-रात भर शराबखानों और कैफ़ेटेरिया मे बैठा रहता है, यहां तक कि वह लड़कियों के साथ नृत्य भी करता है और पीता भी है। अन्य लोग इस प्रकार सबके सामने नृत्य नहीं करते, लेकिन वह बहुत मस्त व्यक्ति है। मजे की बात यह है दूसरा पादरी धर्म के विषय में बहुत सावधान और सख्त है। मैंने भी एक बार उससे थोड़ी सी बात की थी। हम लोग धर्म पर बात करते हैं और मैंने उसे बताया कि कई वर्षों से मैं चर्च नहीं गई। अब वह मुझे अपनी चर्च मे ले जाने की कोशिश करता है। लेकिन अपने इस उद्देश्य में वह सफल नहीं हो पाएगा। फिर भी मैं उससे इस बार बात करूंगी और उसे बताऊंगी कि इस विषय में मेरी क्या सोच है।

नहीं आपने मुझे डराया नहीं है क्योंकि आपने तो मेरे स्वास्थ्य के विषय में ही बात की है। मैं स्वयं बहुत स्पष्टवादी हूं और स्पष्ट बोलने वाले मित्र ही मुझे पसंद हैं। इसलिए घबराने की बात नहीं, आप कभी भी मुझे चेतावनी दे सकते हैं या विरोध कर सकते हैं।

बहुत दिनों से श्रीमती वैटर का कोई समाचार मुझे भी नहीं मिला। किंतु अब मैं उन्हें पुनः पत्र लिखूंगी और यह भी लिखूंगी कि उनका लिखा पत्र आप तक नहीं पहुंचा। श्रीमती मिलर लंदन मे हैं। उनके वापिस आने के बाद मेरा उनसे मिलना बहुत कम हुआ है। लेकिन उन्हें वह शहर और वहां के लोग बहुत पसंद आए। लगभग छः सप्ताह वे वहां रहीं और संभवतः उन्होंने मुझे बताया था कि उनकी अंग्रेजी मे बहुत सुधार हुआ है। उनके पति शायद आजकल अमरीका गए हुए हैं। उन्होंने मुझे बताया था कि वे गर्मियों में इटली या कहीं संभवतः अल्बानिया जाएंगी। लेकिन मुझे उनकी वास्तविक योजना का ज्ञान नहीं, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि मेरी कभी भी उनसे घनिष्ठता नहीं रही।

तो, भारत में विएना लोकप्रिय हो रहा है। ठीक है, मुझे प्रसन्नता हुई। आप तो जानते ही है कि मुझे आस्ट्रिया के प्रति उतना लगाव नहीं है जितना कि मुझे वहां अपना पूरा जीवन व्यतीत करने के कारण होना चाहिए था। प्रचार के विषय मे आपने जो कहा वह ठीक है, क्योंकि आस्ट्रिया ने कभी भी अपनी सुंदरता का उपयोग नहीं किया। अभी कुछ ही दिनों से आस्ट्रिया लोकप्रिय हुआ है विशेष रूप से इंग्लैंड में।

मैंने आसपास के स्थानों के कुछ चित्र खींचे हैं, लेकिन अभी निकलवाए नहीं हैं। शेष हमारे परिवार के हैं और मेरे विचार से आपकी उनमे अधिक दिलचस्पी भी नहीं होगी। मैं आपको एक अन्य लिफ़ाफे में साधारण डाक से कुछ फ़ोटो और यहां के चित्र फ़ोटो पोस्टकार्ड भेजूंगी। मेरे विचार से दार्जिलिंग के दृश्य अद्‌भुत होने चाहिए। कुछ दिन पूर्व मुझे अजीब स्वप्न आया कि मैं हिमालय पर्वत पर हूं। लेकिन वह दर्जिलिंग नहीं था। मैं सबसे ऊंची चोटी के आसपास कहीं थी और सुंदर दृश्य देखकर इतनी प्रसन्न थी कि जब मेरी आंख खुली और वे दृश्य गायब हो गए तो मुझे बहुत दुख हुआ। यहां के दृश्य अद्‌भुत और महान नहीं हैं लेकिन शांत, सुंदर और प्यारे हैं ठीक वैसे जैसे कोई सुंदरी सो रही हो। ऊंचे-ऊंचे पर्वत मुझे हमें उस युवा पुरुष की याद दिलाते हैं, जो आसमान को छूने को उत्सुक है।

यह अच्छी बात है कि आपने ग्रामोफ़ोन लिया है। विएना जाने पर मैं आपको रिकार्ड्स की सूची अवश्य भेजूंगी, क्योंकि वहीं मुझे सही नंबर पता चल पाएगा जो यहां से मिलना असंभव है। लेकिन आप मुझे यह अवश्य बता दें कि किस प्रकार का यूरोपीय संगीत आप पसंद करेंगे। मुझे डर है कि मैं संगीत के मामले में सही निर्णायक नहीं हूं। जैसा कि आप जानते हैं कि मुझे बोझिल संगीत पसंद नहीं, मैं उसे सुन नहीं सकती। उदाहरण के लिए मुझे कोई भी वागनर के संगीत द्वारा भगा सकता है। मुझे सुगम संगीत पसंद है विशेष रूप से विएना के गीत। किसानों के गीत, यहां तक कि जॉज म्यूज़िक भी मुझे पसंद है। फिर भी विएना लौटने के बाद मैं अच्छे गानों की एक सूची आपको अवश्य भेजूंगी।

क्या आपको 'माडर्न रिव्यू' की प्रति मिल रही है? यदि मिल रही है तो कृपया इस वर्ष के जुलाई अंक की प्रति मुझे भिजवा दें। मैंने बुडापेस्ट के विषय में एक छोटा सा लेख लिखा था जो छप गया था। मुझे उसकी प्रति भी मिली थी, लेकिन दुर्भाग्यवश वह प्रति ठीक नहीं है। क्योंकि उसमें कुछ पेज गायब और शेष पृष्ठ दो बार लगे हुए हैं। लेख वाले पृष्ठ ही गायब हैं। वह लेख छपा अवश्य है, क्योंकि आवरण पृष्ठ पर उसका जिक्र है। इसलिए यदि संभव हो तो कृपया मुझे उसकी प्रति अवश्य भिजवा दें।

मेरी गलतियों को सुधारने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। कृपया भविष्य में भी ऐसा करते रहें।

क्या आपने बर्लिन में ओलंपिक खेलों के विषय में कुछ सुना है? वे अवश्य ही भव्य होंगी। हम अखबारों और वायरलैस पर इसकी सूचनाएं भेजते रहते हैं। एक दिन बर्लिन के ओलंपिक स्टेडियम से प्रसारण हो रहा था जिसमें सभी प्रतियोगियों ने मार्च किया था, वह हमने सुना था। जब आस्ट्रिया के खिलाड़ी आए तो आपने सुना होगा कि लोग खुशी से कितना झूम व चिल्ला रहे थे।

श्वेस्टर एल्वीरा ने मुझे एक पत्र लिखा था और कहा था कि वह यहां मेरे पास एक दो दिन के लिए आएगी। यह बढ़िया रहेगा। यदि वह कार से आई तो मैं उसे अधिक घुमा सकूंगी। कल मैं इस युवा पादरी के साथ उसकी मोटर साइकिल पर घूमने जाऊंगी। यहां नजदीक ही पहाड़ है और मैं इसलिए जाऊंगी ताकि वहां आसपास के कुछ चित्र ले सकूं। यदि वे ठीक-ठाक आ गए तो आपको भी उनकी प्रति भेजूंगी।

इस माह के अंत में हम विएना वापिस लौटेंगे। कीमतों को देखते हुए यहां रहना उपयुक्त ही है। इतना सस्ता स्थान मैंने आज तक नहीं देखा। हम चारों मेरे पिता, माता, बहन और मैं सामान्यतः कुल मिलाकर चार शिलिंग से ज्यादा खर्च नहीं पाते। क्या यह सस्ता नहीं? यहां टैक्स कार्यालय, पुलिस तथा अन्य कार्यालयों के कुछ युवा लोग है, जो यहीं खाना खाते हैं जहां हम खाते हैं। मैंने उनसे भी पूछा कि वे कितना पैसा व्यय करते हैं। वे नाश्ते, दोपहर के खाने और रात के खाने पर दो आस्ट्रियाई शिलिंग खर्चते हैं और बिना नाश्ते के 1.80 शिलिंग (आस्ट्रियाई) खर्च करते है। रहने-खाने-पीने सभी चीजों की व्यवस्था तथा चारों वक्त के खाने सहित यहां केवल 4.50 शिलिंग खर्च होते हैं।

क्या आपको बाहर सैर करने की अनुमति मिल गई? आशा है मिल गई होगी। आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है संतोषजनक होगा। मेरे माता-पिता और मेरी बहन आपको शुभकामनाएं भेज रहे हैं।

आपके स्वास्थ्य की शुभकामनाओं सहित,

आपकी शुभाकांक्षी,
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ पुलिस
दार्जिलिंग
12 अगस्त, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आपके तीन तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे आज प्रातः ही मिला। आजकल यहां बादल और नमी है, इसलिए आजकल मैं घर की चारदीवारी में बंद हूं। समतल भूमि में रहने के आदी हम लोगों को जो खूब धूप सेकते है आजकल यहां यूरोप की ही भांति धूप कम मिल रही है।

यदि तुम मुझे कुछ ग्रामोफोन रिकार्ड्स के नाम अथवा नंबर भेज दोगी तो तुम्हारा आभारी रहूंगा। मुझे भी बोझिल एवं शास्त्रीय संगीत नहीं चाहिए, चाहे वह गायन हो या वाद्य संगीत। मुझे सुगम संगीत ही पसंद है जो रिकार्ड्स में उपलब्ध होगा। शास्त्रीय संगीत यदि सीखा गया हो तभी उसकी सराहना कर पाना संभव है। हमारे यहां के संगीत का भी यही है। सच कहूं तो मुझे अपने यहां का भी शास्त्रीय संगीत बिल्कुल भी पसंद नहीं। अब कुछ-कुछ समझने लगा हूं। जो संगीत हम लोगों को पसंद है उसे संगीत के विशेषज्ञ संगीत ही नहीं मानते। मेरे पास विएना का वाल्तज संगीत है, जो बहुत अच्छा है।

यदि तुम्हें दर्शन, विशेष रूप से भारतीय दर्शन में रुचि है तो तुम भगवद्गीता-हमारी बाइबल का जर्मन अनुवाद पढ़ो। शुरू में यह कठिन लगेगी किंतु इसके कुछ अंश तुम्हे अवश्य समझ मे आएंगे। उसके कुछ अंश ऐसे हैं जो मैं अभी तक समझ नहीं पाया हू। हालांकि मै भारतीय हू और दर्शन का छात्र भी रहा हूं। दूसरा अध्याय सबसे महत्वपूर्ण है जो कर्मयोग से सबद्ध है, यानि कर्म ही पूजा है।

कुछ दिन से मैं स्वस्थ महसूस नहीं कर रहा। संभवतः मेरा गला खराब हो गया है जिसकी वजह से मेरी तबियत खराब हो गई है। साधारण दवाई मुझ पर असर नहीं करती इसलिए मेरे लिए 'आटोवैक्सीन' तैयार की गई है, जिसके इंजेक्शन मैं लगवा रहा हूं। वे ऐसा ही करते है। वे गले से लार लेकर, लैबोरेटरी में उसका परीक्षण करते हैं और पता लगाते है कि उसमें कौन से कीटाणु हैं। इन्हीं कीटाणुओ से इंजेक्शन तैयार किया जाता है। चिकित्सकों की राय है कि गले के खराब होने पर यही इलाज कारगर है। इस चिकित्सा से मुझे कितना लाभ हुआ यह मै तुम्हें बाद मे बताऊंगा।

जुलाई का मार्डन रिव्यू तुम्हें भिजवाने का इतजाम कर रहा हूं। आशा है जल्दी ही वह तुम्हे मिल जाएगा। कृपया मुझे बताओ कि क्या तुम्हे कोई अन्य भारतीय पत्रिका पसंद है जो तुम लेना चाहोगी, मैं वह भिजवाने का भी प्रयास करूंगा।

अगले सप्ताह शायद तुम्हे साधारण डाक से कुछ चित्र भेजूंगा। उस दिन कुछ धूप चमकी थी तो, मैंने कुछ चित्र लिए थे जो आजकल डेवलप हो रहे हैं। यदि अच्छे हुए तभी भेजूंगा, अन्यथा नहीं। आज मेरा लेख बहुत ही खराब है, आशा है तुम किसी प्रकार इसे पढ़ पाओगी।

हां! यहां भी ओलंपिक खेलों की रिपोर्ट्स आ रही हैं। अन्य सभी खेलों में भारत का प्रदर्शन निराशाजनक रहा, लेकिन हमें आशा है कि वह हॉकी की चैंपियनशिप बरक़रार रख सकेगा। तुम जानती हो कि भारत में कोई वैज्ञानिक प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं है, धनाभाव भी एक मुख्य कारण है।

जब भी तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हो तो मेरा प्रणाम कहना।

कुछ छोटी-मोटी परेशानियों के अतिरिक्त मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। इस घर की एक मील की परिधि मे घूमने की मुझे इजाजत मिल गई है, किंतु आजकल का मौसम मुझे इजाजत नहीं देता।

आज अन्य ऐसा कुछ नहीं जिसके विषय मे तुम्हे कुछ लिखूं। आशा है तुम ठीक-ठाक हो। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हें व तुम्हारी बहन को मेरी शुभकामनाएं। वहां सभी मित्रों को मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
17 अगस्त, 1936

प्रिय श्री बोस,

आपका-(अस्पष्ट) तारीख का पत्र मुझे 12 तारीख को कुछ फटी हालत मे मिला। उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे खुशी है कि मेरे पत्र से आपको खुशी मिली। जब व्यक्ति को दिलचस्प अनुभव होगे तभी वह दिलचस्प बातें लिख सकेगा। मेरे पहले पत्रों से आप जान ही चुके है कि मेरा यहां का निवास कोई बहुत बढ़िया नहीं रहा। पिछले पंद्रह दिन से भी कुछ एकाएक बदलाव आया है। हमें बहुत अच्छे सहयोगी, युवा वर्ग के मिल गए हैं। हम सप्ताह में दो या तीन बार उसी रेस्तरां में मिलते हैं जहां हमारे ओलंपिक सत्र होते हैं। मूर्खता के तौर पर हमने एक अपनी ओलंपिक समिति का गठन किया है। दो बार हम बाहर घूमने भी गए है। एक सप्ताह पूर्व हम एक पर्वत पर चढ़े थे। इसके लिए हम लोग प्रात: 5.30 बजे निकल पड़े थे। असल में हमें अपने तीन मित्रों का इंतजार करना पड़ा जिस कारण हम 6 बजे से पहले प्रारंभ नहीं कर पाए। हम उस पर्वत पर प्रात: 8.15 पर पहुंच गए थे। चढ़ाई बहुत मजेदार थी। जैसे-जैसे हम लोग ऊपर और ऊपर चढ़ते गए ऐसे ही आस-पास का सौंदर्य हमे बांधता गया, वह एक अद्‌भुत दृश्य था। अंग्रेजी में इस सबकी व्याख्या कर आपको बताना मेरे लिए कठिन कार्य है, अपनी भाषा मे मैं अधिक स्पष्ट और विस्तृत रूप मे इसकी व्याख्या कर सकती हूं। चोटी पर हम लोगों ने कुछ घंटे व्यतीत किए, बड़ा मजा आया, ऊधम मचाया और सूर्य से त्वचा भी जल गई। सायं चार बजे हमें घर वापिस जाना था, किंतु रास्ते में कुछ देर के लिए

हमें रुकना पड़ा जिससे 7.30 बजे रात को घर पहुंचे। सूर्य की तेज़ी से जलकर मैं घर लौटी तो काली हो चुकी थी और मुझे अपने इस अद्‌भुत रंग पर अभिमान है।

दूसरी बार पर्वत की चढ़ाई हमने उसी दिन की जिस दिन आपका पत्र हमें मिला। तब हम लोग केवल चार ही थे, मेरी बहन, हमारी पार्टी की एक लडकी, वह पादरी और मै स्वय थी। इस बार हम दूसरी ओर गए थे और यह चढ़ाई भी बहुत मजेदार रही। मार्ग मे हमें बहुत से मशरूम मिले, जिसे हम सभी बहुत पसंद करते है। ऊपर हम लोगों ने अंदर कुछ घंटे बिताए, बारिश शुरू हो गई थी। किंतु इससे हम लोग दुखी नहीं हुए। हम लोगों के पास गिटार थे, हमने गाने-वाने गाए और मजे से समय व्यतीत किया।

आपने लिखा है कि आपके नक्शे में आपको पोलाऊ नहीं दिखा। यह स्थान बहुत बड़ा नहीं है इसलिए आस्ट्रिया के किसी विशेष नक्शे में ही यह दिख सकता है। यह प्राग से 60 किलोमीटर उत्तर की ओर है। दृश्यावली के हिसाब से पोलाऊ एक मनोरम स्थल है। मौसम बहुत बढ़िया नहीं है, लेकिन बहुत बुरा भी नहीं है। हर दिन आंधी तूफ़ान आता है। अभी भी बहुत तेज बारिश हो रही है और रह-रह कर बिजली कड़कती है। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि अब आपको सैर के लिए जाने की अनुमति मिल गई है। एक मील की परिधि में घूमना कोई बहुत बड़ी बात नहीं लेकिन कुछ न होने से तो बेहतर है।

यह अच्छा रहेगा यदि आप समय-समय पर मुझे कुछ भारतीय पत्र-पत्रिकाएं भेजते रहेंगे। मैं अभी भी अंग्रेजी सीख रही हूं, क्योंकि एक मात्र यही संभावना है जिसके द्वारा मेरी अंग्रेजी सुधर सकती है या जितनी सीखी है वह भूलने से बची रह सकती है। श्रीमती हारग्रोव ओमन से वापिस आ गई है। फ़िलहाल वे टायरोल में ठहरी हैं, वहां से उन्होने मुझे एक पत्र भी लिखा था। उन्होने मुझे कृष्णाजी की फोटो भी भेजी है। सदा की तरह उन्होंने लंबा पत्र लिखा है, लेकिन अधिकाश आध्यात्मिक है।

हां आपका कहना ठीक है। 'Die Uhr' स्त्रीलिंग हैं जिसका अर्थ घड़ी है इसी से समय भी बना है। लेकिन '*Vor eiu Uhr*' कहना बिल्कुल ठीक है। ऐसा क्यों है, मैं आपको नहीं बता सकती क्योंकि मैंने जर्मन व्याकरण नहीं सीखा है।

चाय के विषय में, और उस पर कितनी ड्यूटी लगेगी, यह पूछ कर मैं आपको लिखूंगी। लेकिन यह कार्य मैं विएना पहुंचने के बाद ही कर सकती हूं। लेकिन मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि चाय पर इतनी ज्यादा ड्यूटी देनी पड़ती है। यदि इतनी ड्यूटी की बात न होती तो मैं बहुत पहले आपको चाय का पार्सल भेजने के लिए लिख चुकी होती। यहां की चाय पीने योग्य नहीं है। यहां की चाय केवल हल्के पीले रंग का पानी होता है। बहरहाल मैं यहां चाय नहीं पीती, दूध या कॉफ़ी लेती हूं। सैंपल पोस्ट को जर्मन भाषा में 'मस्टर ओन वर्ट' कहते हैं।

शकुतला के विषय में जर्मन कविता का मूल पाठ मै आप को भिजवाऊंगी। किंतु यहां से कुछ नहीं कर सकती। जब विएना वापिस जाऊंगी तभी कुछ संभव होगा। यहां मेरे पास गेटे की कोई प्रति नहीं है, न ही किसी अन्य व्यक्ति के पास है। पादरी से पूछूगी हूं। यदि हुई तो, हालांकि मुझे डर है कि उसके पास भी नहीं होगी।

आज हमारा भारी नुकसान हुआ। हमारे साथ की एक ओलंपिक खिलाड़ी हमें छोड़ गई। जब वह गई तो वह रो रही थी और हम अपने रुमाल हिला रहे थे।

उस दिन मुझे जर्मन प्रकाशक से दो बढ़िया पुस्तके प्राप्त हुईं। एक तो नई है, जो इसी वर्ष प्रकाशित हुई है जो जेपलिन के विषय में है। दूसरी कुछ वर्ष पुरानी है जो बुद्ध के जीवन के विषय में है। यह मुझे अधिक अच्छी लगी। मुझे इन दोनों पुस्तकों की समालोचना करनी है इसलिए दोनों मुझे निःशुल्क प्राप्त हुई हैं (केवल आस्ट्रिया में पुस्तकों पर लगने वाला शुल्क, जो मात्र 85 ग्रोशेन था, मुझे देना पडा।) क्या आप मुझे सुझाव दे सकते है कि इन पुस्तकों की आलोचना मै किस भारतीय पत्र के पास भेजूं? कलकत्ता के किसी अखबार को या 'बांबे क्रॉनिकल' को?

आशा है आपके गले की तकलीफ़ अब ठीक हो गई होगी। कुल मिला कर हम सब लोग अच्छा महसूस कर रहे हैं। मेरी चचेरी बहन पिछले सप्ताह यहां आई थी लेकिन वह स्वस्थ नहीं है। कल दोपहर का खाना खाने के बाद वह बेहोश हो गई और मुझे काफ़ी कष्ट हुआ। एक नौकर की सहायता से उसे उठा कर बिस्तर पर लिटाया, उसके कपड़े बदले, और उसे होश में लाने का प्रयास किया। यह बहुत कठिन कार्य है।

इस सप्ताह या अगले सप्ताह मैं पादरी के साथ मोटर ड्राइव पर जाऊंगी। उसकी मोटर साइकिल बहुत बढ़िया है, हम लंबी यात्रा पर जाना चाहते हैं, फिर हम लोग पहाडों पर सैर-सपाटे के लिए जाएंगे। सुबह जल्दी निकलेंगे और रात देर से वापिस आएंगे। आशा है मौसम ठीक रहेगा, अधिक बरसात नहीं होगी, क्योंकि बरसात के मौसम में चलना बहुत बुरा लगता है।

कुछ दिन पहले श्रीमती वैटर ने मुझे एक पोस्टकार्ड लिखा था जिसमे उन्होंने लिखा था कि वे शीघ्र ही आपको एयरमेल से एक पत्र लिखेंगी। मेरे विचार से जब आपको मेरा पत्र मिलेगा, तब तक उन्हें उनका भी पत्र मिल जाएगा।

आज मैं अपना पत्र यहीं समाप्त करती हूं। इसके अतिरिक्त कुछ और आपको बताने को नहीं है। अगली साधारण डाक से मैं निश्चय ही कुछ अच्छे पोलाऊ के पोस्टकार्ड भेजूंगी। आशा है वे सही सलामत आप तक पहुंच जाएंगे। साथ में एक पौधा है (पता नहीं आप इंग्लिश में इसे क्या कहते हैं।)। इसे हम लोग ली कहते हैं और यदि इसके चार पत्ते हों तो उसे 'ग्लूकली' कहते हैं। इसे अपने पर्स में रखा लेना यह सौभाग्य

लाता है। यहां मान्यता है कि यदि कोई इसके चार पत्ते किसी को भेंट में दे तो भाग्यशाली होता है। लेकिन यह उसी व्यक्ति द्वारा खोजा गया हो जो उपहार दे रहा है। मैंने स्वयं उसे खोजा है, इसलिए मेरे लिए यह भाग्यशाली सिद्ध नहीं होगा अतः मैं यदि किसी को उपहार दे सकूं तो मुझे प्रसन्नता होगी। अतः आपके पास भेज रही हूं। आशा है यह आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा।

मेरे माता-पिता व बहन आपको शुभकामनाएं भेज रहे हैं।

आशा है आप पूर्णतः स्वस्थ होंगे। मेरी शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च. - मेरी गलतियों के लिए क्षमा करेंगे। लेकिन मैं कई रातो से सोई नहीं हूं (दिन में बहुत थक जाती हूं), सिर चकरा रहा है, इसलिए अंग्रेजी भूल सी गई हूं। यदि आप मेरी गलतियां ठीक कर देंगे तो आपकी आभारी रहूंगी।

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
18 अगस्त 1936

प्रियश्री बोस,

जब यह पत्र मिलेगा तब तक आप को मेरा 17 तारीख का पत्र भी मिल चुकेगा। सौभाग्य से मुझे मेरे मित्र पादरी के पास गेटे के कार्य की प्रति मिल गई। वह कृति मिल गई जो आप चाहते थे।

वह बहुत छोटी सी है। उसकी प्रति संलग्न है।

सकोंतला

मेरे विचार से आप अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से यह कविता समझ पाएंगे। गेटे ने शकुंतला को 'सकोंतला' कहा है।

मैं पोलाऊ के कुछ पोस्टकार्ड भिजवा रही हूं। और एक चित्र भी जो मैंने सायं 6 बजे खींचा था। यह दृश्य मुझे बहुत पसंद है। हमारे घर से केवल पांच मिनट की दूरी पर है। मुझे लगा कि यह फोटो अच्छा आया है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता। मेरे पास

बहुत से फ़ोटो है लेकिन उनमें कई लोग, हमारे मित्र अथवा परिवार के लोग हैं और मेरे विचार से उनमें आपकी विशेष रूचि भी नहीं होगी। किंतु यदि आप कहेंगे तो हम वे भी आपके पास भेज देंगे क्योंकि उनकी ग्राउंड बहुत अच्छी आई है।

आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं और आपको कार्ड पसंद आए होंगे।

हम सभी की ओर से आपकोसादर प्रणाम और आपके स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्च: - (अस्पष्ट) डैमल को भारत बुला लिया गया है। क्या आपने इस विषय में कुछ भारतीय पत्रो मे पढ़ा है?

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
29 अगस्त, 1936

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारे सत्रह तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद, जो मुझे कल मिला, जिसमें भाग्य वृद्धि का उपहार भी था। मेरे विचार से आस्ट्रिया के लोग भाग्योपहार के तौर पर पेड़, पत्ते आदि के बहुत शौकीन हैं। मुझे याद है जब श्रीमती वेटर गर्मियो की छुट्टियों में पर्वतो पर जाती थीं तो वे वहां से मुझे बहुत से पहाड़ी पौधों की पत्तियां भेजती थीं। उन्हें सफ़ेद पौधे एडिल विस का बहुत शौक था और शायद सभी आस्ट्रियावासी इसे पसंद करते हैं। यूरोप के अन्य हिस्सों मे मुझे कई और शकुन देखने को मिले, जैसे घोड़े की नाल, काली बिल्ली आदि। इन्हें वे शुभ शकुन समझते हैं। लेकिन आस्ट्रिया के लोग शायद प्रेम उपहार के लिए पौधे व पत्तियां ही पसंद करते हैं। हमारे भारत में अनेकों अंधविश्वास हैं, इसलिए मै इनमें विश्वास नहीं करता। वास्तव में मेरा मानना यह था कि भारत के बाहर लोग अंधविश्वासी नहीं होंगे, क्योंकि हमारे यहां इनका अपार भंडार है। बहरहाल यह जानकर मजा आया कि तुम लोगों में भी अंधविश्वास है। यदि मेरी इस बात से तुम्हारी भावनाओ को ठेस पहुंची तो मै क्षमा चाहता हूं, लेकिन मैंने जो महसूस किया वह तुम्हें बता दिया।

आजकल हमारे यहां के समाचार पत्रो मे एक सनसनीखेज समाचार छप रहा है जिसमें एक जज ने पिछले तीन वर्ष से चले आ रहे एक केस मे अपना निर्णय दिया है। इसके तथ्य इतने मजेदार हैं कि हम कह सकते हैं कि वास्तविकता कहानी से भी अजीब हो सकती है। मैं कुछ कटिंग्स भेज रहा हूं, जिनसे तुम्हें लेख लिखने के लिए सामग्री

मिल जाएगी। मेरे विचार से दास मैगजीन, वीनर मैगज़ीन, और शायद न्यू फ्री प्रैस का रविवारीय परिशिष्ट ऐसे लेख छापना चाहेंगे जिसमें उनके पाठकों की दिलचस्पी हो। मैं तुम्हें स्टेट्समैन, एडवांस, अमृत बाजार पत्रिका की कटिंग्स भेज रहा हूं। 'स्टेट्समैन' और 'एडवांस' को कटिंग में जहां मैंने लाल निशान लगाए हैं उससे तुम्हें कहानी मिलेगी और आनंद बाजार पत्रिका से तुम्हे जज के निर्णय का संक्षिप्त विवरण मिल जाएगा। कहानी को समझने के लिए निर्णय को पढ़ना आवश्यक नहीं है, लेकिन मैंने इसे केवल संदर्भ के लिए भेजा है। वास्तव में तो यह जजमेंट उस व्यक्ति को भ्रांत कर देगी जिसे पूरी कहानी का पता नहीं। मैं तुम्हे कुछ शब्दों के अर्थ भेज रहा हूं जो इसमें बार-बार आएंगे।

(1) भोवाल बंगाल में ढ़ाका ज़िले के एक स्थान का नाम है।

(2) कुमार राजा का पुत्र है।

(3) रानी, राजा या कुमार की पत्नी है।

(4) संन्यासी वह साधु है जो संसार त्याग चुका है।

(5) रुपया, भारतीय सिक्का है। R/3 1/2 लगभग 20 अस्ट्रियाई शिलिंग के बराबर है।

(6) मुद्दई, वह व्यक्ति है जो किसी व्यक्ति के विरुद्ध अदालत में शिकायत करता है।

(7) अभियुक्त वह व्यक्ति है जिस पर आरोप लगाया गया है और जो शिकायत के विरुद्ध अपनी सफ़ाई पेश करेगा।

(8) नागा, साधुओं की एक जाति है। भारत मे संन्यासियों की बहुत सी जातियां हैं, कई प्रकार की पूजा (योग ?) है।

(9) लाख का अर्थ है 100000

किसी भी प्रकार की भ्रांति से बचने के लिए पहले स्टेट्समैन पढ़ कर भलीभांति समझ लो। उसके बाद एडवांस का वह भाग पढो जिस पर लाल रंग से निशान लगाया है। निर्णय आनंद बाज़ार पत्रिका में प्रकाशित हुआ है, एडवांस की कटिंग के पीछे भी है, लेकिन तुम्हें इसे बिल्कुल भी पढ़ने की जरूरत नहीं हैं। पूरी घटना को स्पष्ट करने की दृष्टि से मैं कुछ और तथ्य तुम तक भिजवा रहा हूं।

मुद्दई इस केस को जीत चुका है, वह कहता है कि वह राजा राजेंद्र नारायण राय, भोवाल के राजा का द्वितीय पुत्र (कुमार) है। सन् 1909 में उसे दार्जिलिंग में जहर दे दिया गया था जिससे वह बेहोश हो गया। रात के समय उसे उसका संस्कार करने की दृष्टि से श्मशान घाट ले जाया गया। तभी तूफान आया और लोग आश्रय पाने के लिए वहां से भाग गए। कुछ घंटे बाद वे लोग वहां लौटे। इस बीच संन्यासियो ने उसके शरीर

को वहां से हटाकर उसमें पुनः जीवन फूंक दिया। किंतु रामेंद्र नारायण राय, द्वितीय राजकुमार को जब होश आया तो वह अपनी याददाश्त गंवा चुका था। परिणामतः उसे संन्यासियो के बीच रहना पडा। उसके घर मे उसके परिवार जनो ने किसी अन्य मृत देह लेकर दिन में जलूस निकालते हुए उसे श्मशान घाट ले जाकर उसका अंतिम संस्कार कर डाला। दूसरी ओर राजकुमार द्वितीय, याददाश्त गवा बैठने के कारण ग्यारह वर्ष तक संन्यासियो के साथ घूमता रहा। 1920 में उसकी याददाश्त वापिस आई तो वह ढाका लौट आया। तब भी वह संन्यासी था, धोती पहनता था, बाल बढे थे और शरीर पर राख मल रखी थी। उसके कुछ मित्रो व रिश्तेदारो ने उसे तत्काल पहचान लिया। 1921 से 1932 तक उसने अपना राज्य वापिस लेने का प्रयास किया किंतु उसे धोखेबाज बता दिया गया। अंततः 1933 मे उसमे अदालत में मुकदमा पेश किया जो वह अब जीत गया।

अभियुक्त का कहना है कि मुद्दई धोखेबाज है, यह सच्चाई है कि वास्तविक कुमार 1909 मे मर गया था। उसका तो यह भी कहना है कि मृत देह रात मे श्मशान घाट नहीं ले जाई गई थी बल्कि दिन मे ही ले जाई गई थी और बाकायदा उसका सस्कार भी किया गया था। संस्कार का सर्टिफिकेट भी अदालत में पेश किया गया था। अभियुक्त मुद्दई की अपनी पत्नी रानी विभावती देवी है, जो यह मानने से इन्कार करती है कि यह सन्यासी उसका पति है और भोवाल का द्वितीय राजकुमार है। न्यायाधीश के अनुसार रानी विभावती देवी एक कमजोर मस्तिष्क की महिला है जो अपने भाई सत्येंद्रनाथ बैनर्जी (राय बहादुर) के प्रभाव मे है। जज ने यह भी कहा है कि 1909 में द्वितीय राजकुमार के खो जाने के बाद से यह सत्येंद्रनाथ बैनर्जी अपनी बहन के माध्यम से अपने बहनोई के राज्य का आनंद लूट रहा है। उसे 1909 में विधवा करार दे दिया गया था। न्यायाधीश का कहना है कि सयासी कुमार तब तक अपना राज्य वापिस नहीं ले सकता था क्योकि सत्येद्रनाथ बैनर्जी पीछे से उसका विरोध कर रहा था। सत्येंद्र का दिमाग ही अभियुक्त के पीछे था जो अपनी बहन रानी विभावती देवी को उलझाए हुआ था।

राजा रामेंद्र नारायण राय के तीन बेटे हैं, मुद्दई द्वितीय राजकुमार है इसलिए वह पूरे राज्य की कुल आय, जो कि 8 लाख है, का एक तिहाई का हिस्सेदार होगा। इस प्रकार उसकी वार्षिक आय 5 लाख आस्ट्रियाई शिलिंग के लगभग होगी। तीन वर्ष तक मुकदमे पर जो उसने व्यय किया वह राशि भी उसे मिलेगी, जो कि एक बड़ी राशि होगी।

आशा है तुम्हें पूरी कहानी स्पष्ट हो गई होगी। पिछला पत्र मैंने तुम्हें 13 अगस्त को लिखा था लेकिन पता नहीं वह तुम्हे मिल पाएगा या नहीं क्योकि डाक लेकर जा रहा जहाज एथेंस के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया और अधिकांश डाक बच नहीं पाई।

यदि तुम एयरमेल का प्रयोग करो तो केवल इंपीरियल एयरवेज का ही प्रयोग करना। डच या फ्रासीसी एयरलाइस केवल कराची तक ही डाक लेकर आते है जबकि इंपीरियल एयरवेज कलकत्ता तक डाक लाता है। कराची से कलकत्ता तक डाक आने में कम से कम 3 या चार दिन लगते हैं।

अब मैं समाप्त करता हू, क्योंकि मेरा पत्र काफी लंबा हो चुका है। जब तुम विएना वापिस आओ तो श्रीमती वेसी से कहना कि मेरे ट्रक खोल कर देख ले और कपड़ों को थोडी हवा लगा दे, अन्यथा उनमे कीडे लग जाएगे तथा सीलन से वे कपड़े खराब हो जाएगें।

यदि तुम जर्मन पुस्तको की आलोचना लिखना चाहती हो तो बांबे क्रॉनिकल (बबई) अथवा मार्डन रिव्यू, या अमृत बाजार पत्रिका या एडवांस में लिख सकती हो। ये अखबार अग्रेजी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा की पुस्तक की आलोचना बहुत कम छापते है। इन सुप्रसिद्ध अखबारो में लिखने के लिए पूरा पता आवश्यक नही, केवल शहर का नाम लिखने से ही चलेगा। मद्रास से प्रकाशित हिंदू भी साहित्य की आलोचना सप्ताह में एक बार प्रकाशित करता है।

सादर,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग।

विएना
8.9.36

प्रिय श्री बोस,

5 तारीख को जब मैं विएना पहुंची तो मुझे आपका 12 अगस्त का पत्र मिला। किसी कारणवश वह देरी से मिला। 13 मार्च की दार्जिलिंग की डाक से वह रवाना हुआ था और 29 अगस्त को विएना पहुंच गया था। वह मेरे गांव के पते पर नहीं भेजा गया था, इसलिए देरी से मिला।

अब हम वापिस आ गए हैं, लेकिन स्वस्थ महसूस नहीं कर रहे। वहां के खुले दृश्य याद आ रहे हैं और यहां घरो के बीच में हम अपने को कैदी अनुभव कर रहे हैं। 9 सप्ताह तक हम लोग गांव के आदी हो गए थे, इसलिए शहर में मन नहीं लग रहा। फिर

आप तो जानते ही हैं कि विएना मे कितने भिखमगे है। गाव मे उतने भिखारी नही दिखाई देते जितने कि शहर मे दीखते हैं। हम सभी लोग अभी कुछ दिन और पोलाऊ मे रहना चाहते थे लेकिन 15 तारीख से स्कूल खुल रहे है और मेर पिता अभी यह निर्णय नहीं कर पाए कि मेरी वहन को कहा दाखिल करवाना हे और इसलिए हमें अन्य स्कूलो के विषय मे भी सूचना एकत्र करनी थी। अभी तक मेरी बहन रॉयल जिमनेजियम (हाई स्कूल) मे थी। लेकिन अब मेरे माता-पिता की राय ह कि उसे उस स्कूल से निकालकर घर संभालना सिखाने वाले स्कूल मे डालना चाहिए। इसके लिए ध्यान देना आवश्यक है।

यहा आने के बाद बहुत से कार्य करने थे इसलिए मुझे शहर जाकर ग्रामोफोन रिकार्ड्स की खोज खबर लेने का समय नहीं मिल पाया। सबसे पहले मैंने अखबारो का जो ढेर लग गया था उसे निकाला। अब मेरी अलमारी मे कुछ जगह हो गई हे जिसमे उसमे कुछ नया कूडा करकट भरा जा सकता है। मैं अपने सभी चित्रों को व्यवस्थित कर रही हू, ताकि उन्हे एलबम में लगा सकू। दो साल से ये ऐसे ही पडी थीं। इस वर्ष मैंने लगभग 60 फोटो खींचे हैं, जो बहुत अच्छे आए हैं।

यह जानकर खेद हुआ कि आपका स्वास्थ्य अभी तक ठीक नहीं हुआ है? क्या डॉक्टर अभी गला ठीक नहीं कर पाए हैं? सभवत: सीलन भर वातावरण के कारण ऐसा हो। क्योंकि मुझे पता है जब सर्दियों मे वातावरण नमी वाला होता है तो मेरा गला भी जल्दी खराब हो जाता है। किंतु पोलऊ मे जल्दी-जल्दी जलवायु मे परिवर्तन आने की वजह से मेरा गला बहुत खराब हो गया था। मै अभी भी पूर्णत: स्वस्थ नहीं हूं, लेकिन पहले से बेहतर हू।

मार्डन रिव्यू मुझे भिजवाने के लिए धन्यवाद। अभी मुझे मिला नहीं है। फिलहाल मुझे कोई अन्य भारतीय पत्रिका नहीं चाहिए। क्योंकि मुझे नहीं मालूम कौन सी सबसे अच्छी है। किंतु यदि किसी पुरानी पत्रिका की कोई प्रति फालतू हो, जो आपको महसूस हो कि मुझे रुचिकर लग सकती है तो कृपया वह मेरे पास अवश्य भेजे। मैं आपकी आभारी होऊंगी। जिन चित्रों के विषय मे आपने लिखा है क्या वे अच्छी आ गईं। मेरे विचार से यदि कैमरा अच्छा हो तो खराब मौसम मे भी अच्छे चित्र लिए जा सकते हैं। एक दूसरा कैमरा मैंने दुकान से उधार लेकर उससे कुछ फोटो खींचे वे बहुत अच्छे आए है। मैं अपना कैमरा बदल कर अब कोडेक लूंगी। क्योंकि उन्हे इस्तेमाल करना आसान है और सस्ते भी पडते हैं, क्योंकि उनकी फिल्म पैकफ़िल्म की अपेक्षा सस्ती भी है। (मेरे पास पैकफिल्म ही है।)

मैं अभी तक सिस्टर एलविरा से मिल नहीं पाई हूं। वे अपने एक मित्र के साथ साल्जबर्ग गई हैं और इस माह के मध्य तक वापिस लौटेंगी। अभी तक विएना मे किसी मित्र से भी नहीं मिल पाई हूं। किंतु आशा है कि अगले सप्ताह मिलूंगी। श्रीमती हारग्रोव

[1]विएना वापिस लौट आई हैं, लेकिन गोस्टीन में है। मैंने श्रीमती वैटर को फोन किया था किंतु उस समय उनके पति ही घर पर थे। श्रीमती मिलर भी आजकल घर पर नही है, क्योंकि उनसे भी संपर्क नहीं हो पाया। सेन सारे दिन बाहर रहते है। उनसे केवल एक बार फोन पर बात हुई थी।

जहा तक मुझे याद है, आपने मुझे बताया था कि आपने बंगला में दो पुस्तके लिखी हैं। उनके शीर्षक मुझे याद नहीं। क्या वे दार्शनिक विषयो से संबद्ध नही थी? मेरी राय है कि अब आपको उन्हे अंग्रेजी में अनुवाद करना चाहिए, ताकि बंगाल से बाहर के लोग भी उनका पढ सकें। मै भी उन दोनों पुस्तको को पढना चाहूंगी, लेकिन मुझे बंगला के केवल तीन शब्द आते है (आप कैसे है, शुभदिन, आपका नाम क्या है?) इसलिए मै कभी आपकी पुस्तके नहीं पढ पाऊंगी। यह समय बिताने के लिए भी एक कार्य हो सकता है। इस विषय मे आपको क्या राय है?

आजकल मेरे सामने एक बहुत कठिन कार्य है, नौकरी की तलाश। मां पूरा दिन मुझपर चिल्लाती रहती है, क्योंकि नौकरी न मिलने का कारण मै स्वयं हूं। जैसे कि आजकल सड़क पर नौकरिया पडी मिलती हैं। लेकिन आजकल मै शात हू, इसलिए नौकरी का युद्ध पुनः प्रारंभ किया जा सकता है। जिन दिनों हम पोलाऊ में थे तब मैं बहुत अशांत थी लेकिन ताजी हवा और धूप ने मुझे बहुत लाभ पहुंचाया।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस वर्ष मै पर्वतो पर घूमने भी गई। लेकिन इतना अवश्य बता दूं कि इस वर्ष पहाड़ों पर चढ़ने में मुझे थकान महसूस नहीं हुई। मेरा वजन कुछ कम हुआ है शायद इसीलिए चढ़ाई मे कठिनाई नहीं हुई।

अभी-अभी सिस्टर एल्वीरा ने मुझे फोन किया, वे आज प्रातः ही वापिस लौटी है। उन्होंने आपके लिए शुभकामनाए भेजी हैं और आपका गला खराब होने की खबर से उन्हें दुख पहुंचा।

पोलाऊ से मैंने अलग से साधारण डाक द्वारा कुछ पिक्चर पोस्टकार्ड और फ़ोटो भेजे थे, क्या वे मिल गए?

मुझे मेरी मित्र एला का पत्र मिला है, उसने भी आपके विषय में पूछा है और आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

अपने माता-पिता, अपनी छोटी बहन (जो अब बड़ी हो चुकी है) की ओर से आपको शुभकामनाएं भेजती हूं।

मेरी ओर से भी नमस्कार तथा स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनः- अपने अगले पत्र में मैं आपको चाय पर लगने वाली ड्यूटी और उस पुस्तक के विषय मे लिखूगी जिसके बारे मे आपने लिखा है। यदि मेरे लायक कोई और सेवा हो तो अवश्य बताए, मैं जहा तक सभव होगा करने की कोशिश करूगी।

एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेट आफ पुलिस
दार्जिलिग
12 सितबर, 1936

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

18 तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। उसमें दो चित्र और चार पिक्चर पोस्टकार्ड भी थे। पोस्टकार्ड और चित्र दोनो ही बढ़िया है। नौसिखिए की दृष्टि से तुम्हारे फोटो बहुत अच्छे है। मै भी चाहता हूं कि मै तुम्हे यहां के आस-पास के और दार्जिलिग के चित्र भेजूं। मेरे चित्र ठीक नही आए और उस पर मैंने कैमरे को खराब (यदि तोड़ा नहीं) कर दिया है। आवश्यकता पर कुछ काम नहीं आता। उस पर भी यहां का मौसम जितना खराब हो सकता है उतना खराब है। 12 दिन की लगातार बरसात के बाद तीन दिन सूरज चमका। ऐसी आशा है कि अब इस माह के अंत तक मौसम साफ रहेगा। इससे पहले ऐसी कोई आशा नही थी। यदि आजकल के दिनो मे मैं तुम्हे पोस्टकार्ड भेजता हू तो वे वहां मिलने वाले पोस्टकार्ड्स से भी खराब होंगे, क्योंकि फोटोग्राफी के क्षेत्र मे भारत ने अभी बहुत उन्नति नहीं की है।

गेटे ने शकुतला के विषय मे क्या कहा वह ढूढने मे तुमने जो कष्ट उठाया उसके लिए धन्यवाद। जर्मन भाषा का अग्रेजी अनुवाद बहुत बढ़िया है।

तुम्हारी इच्छानुसार मैंने तुम्हें मार्डन रिव्यू का जुलाई का अक भेज दिया था, रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजा है, शीघ्र ही मिल जाएगा। पता नही तुम्हे मेरा 12 तारीख (या 14) का एयरमेल का पत्र मिला अथवा नहीं। डाक ले जा रहा विमान ग्रीस के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ और बहुत सी डाक नष्ट हो गई। यदि वह पत्र भी उस नष्ट हुई डाक में रहा होगा तो तुम्हें नही मिल पाया होगा। अगला पत्र मैंने 29 अगस्त को साधारण डाक द्वारा भेजा था। उसमे मैंने एक मजेदार मुकदमे की कटिंग्स भेजी थीं जिसमे राजा का पुत्र 1909 में मरा हुआ जानकर जला दिया था, लेकिन अचानक 1921 में वह जीवित वहा प्रकट हो गया। उसने अपना राज्य मागा और अदालत ने तीन साल के मुकदमे के पश्चात यह निर्णय दिया कि यही वास्तविक राजकुमार है। वह धोखेबाज नही है।

जब तुम विएना पहुंच जाओ और तुम्हें समय मिले तो मुझे विएना के सुगम संगीत के कुछ रिकार्ड्स के नबर भेजना। तब मैं पता करवाऊंगा कि वे कलकत्ता में उपलब्ध हैं या नहीं।

मैंने अभी श्रीमती वेटर के पत्र का उत्तर नहीं दिया है और श्रीमती हारग्रोव के भी दो पत्रो का उत्तर नहीं दे पाया हूं। विएना में जब तुम्हें समय मिले तो कृपया चाय पर कस्टम ड्यूटी का पता करके लिखना, और क्या वे कुछ मात्रा कर मुक्त सैंपल के तौर पर भेजने देते हैं?

शेष कुछ विशेष लिखने को नहीं है। अतः यहीं समाप्त करता हूं। तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च. - क्या तुम मेरी ओर से श्रीमती वेसी से कह दोगी कि वे मेरे बक्सो मे से निकाल कर दो पुस्तकें मुझे भिजवा दें।

1 स्टेट्समैन, वार्षिकी

2 विश्वेश्वरैया, जप्लाड इकानमी

सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
26.9.36

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारा आठ तारीख का पत्र मुझे 22 तारीख को मिला। तुम्हें मेरा 12 अगस्त का पत्र मिल गया, कुछ देरी से ही सही। देरी इसलिए हुई, क्योंकि एथेंस के निकट वायुयान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और काफी डाक नष्ट हो गई। लेकिन डाक का बड़ा हिस्सा बाद में मिल गया, जिसे कठिनाई से छांटकर भेजा गया। अंग्रेजी की कहावत है कुछ नहीं से देर भली।

गेटे की कृति में से शकुंतला के लिए कुछ पंक्तियां भेजने के लिए धन्यवाद। तुमने ये अपने पिछले पत्र मे भेज दी थीं, किंतु मुझे याद नहीं कि मैंने प्राप्ति की सूचना दी थी या नहीं।

अब तक तुम्हें मेरा 29 तारीख का साधारण डाक से भेजा पत्र भी मिल गया होगा। 12 तारीख का एयरमेल द्वारा भेजा पत्र भी मिल चुका होगा। जुलाई का मार्डन रिव्यू भी सुपरिंटेंडेट आफ पुलिस द्वारा भिजवा दिया गया था वह भी शीघ्र ही मिल जाएगा।

एक दो सप्ताह में मैं तुम्हें दार्जिलिंग और कुर्सियाग के पिक्चर पोस्टकार्ड भिजवा दूंगा। वे साधारण डाक द्वारा ही भेजूंगा।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि गांव में तुमने अच्छा समय व्यतीत किया और आजकल तरोताजा महसूस कर रही हो।

अपनी सुविधानुसार तुम मुझे ग्रामोफोन रिकार्ड्स की सूची भेज सकती हो। कोई जल्दी नहीं है।

शायद मै पहले भी सूचित कर चुका हू कि पोलाऊ से तुमने जो पोस्टकार्ड (चार) और फोटो (दो) भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं।

सुश्री एला का समाचार जानकार प्रसन्नता हुई। (मैं उसका सरनेम भूल गया हूं लेकिन कृपया उसे मत बताना)। उसे और सिस्टर एलविरा को मेरी नमस्ते कहना। मेरे ख्याल से फ्रेन्जेनबाद के पश्चात् से उनका 'kua' ठीक हो गया होगा। यह एक छोटी लेकिन अच्छी जगह है हालांकि मैरीनबाद और कार्ल्सबाद जैसी फैशनेबल जगह नहीं है। यहां बहुत से गरम पानी के चश्मे हैं।

परसों मैं मेडिकल जांच-पडताल के लिए दार्जिलिंग गया था। दार्जिलिंग तक कार से जाने पर कुर्सियांग से डेढ घंटा लगता है और पहाड़ी गाड़ी में 2 1/2 घंटा लगता है। मनोरम दृश्यों का आनंद नहीं ले पाया क्योंकि धुध छाई थी। फिर भी परिवर्तन की दृष्टि से यात्रा ठीक थी। कई दिन से अस्वस्थ महसूस कर रहा हू, पिछले सप्ताह एंफ्लूएंजा हो गया था, जिसे तुम लोग जर्मन भाषा में 'ग्रिप' कहते हो।

इस वर्ष भारत मे नमी रही है। सामान्य से अधिक बरसात हुई है और मैदानी इलाको में तो दो या तीन प्रदेशो मे (बंगाल, बिहार और सयुक्त प्रांत) बाढ़ भी आ गई। आशा है कि अक्तूबर माह से हमे इन दुष्ट बादलो व बरसात से छुटकारा मिल जाएगा।

वहां सभी मित्रों को मेरा प्रणाम। तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम और तुम्हे व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

द्वारा द सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
9.11.36

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 1 अक्तूबर का पत्र मुझे 16 अक्तूबर को मिला, उसका उत्तर देर से देने के लिए क्षमा चाहता हूं। इसी बीच मुझे विएना से ग्रामोफोन रिकार्ड्स की सूची और स्टेट्समैन की वार्षिकी मिल गई है। कृपया इन्हें भिजवाने का प्रबंध करने के लिए मेरा धन्यवाद स्वीकार करें। मेरे अंतिम पत्र जो मैंने तुम्हें लिखे थे 27 सितंबर और 13 अक्तूबर के थे। मैंने साधारण डाक द्वारा तुम्हे कुछ दार्जिलिंग के पिक्चर पोस्टकार्ड और चित्र भिजवाए थे।

आजकल वहां काफी सर्दी पड़ रही होगी। ओह! मुझे बर्फ़ कितनी अच्छी लगती है। यहां सर्दियों में बर्फ नहीं पड़ती जब तक कि बहुत ऊंचाई पर न हो। लेकिन दूर के पहाड़ धीरे-धीरे बर्फ से ढक जाते हैं। दूरी से भी बर्फ देखना अच्छा लगता है।

श्रीमती वेटर को मैंने दोबारा लिखा था लेकिन उनका कोई उत्तर नहीं आया। तुम्हारे पत्र में सिस्टर एल्वीरा की लिखी कुछ पंक्तियां पढ़ कर अच्छा लगा। कृपया उन्हें मेरा हार्दिक धन्यवाद कह देना।

श्री पैनर की मृत्यु के विषय में जानकर दुख हुआ। अपने मित्र श्री फाल्टिस के द्वारा शोक संदेश भिजवाने पर विचार कर रहा हूं।

कुछ सप्ताह के लिए मेरे कुछ रिश्तेदारों को मेरे पास आकर रहने की आज्ञा मिल गई थी। अब वे सब लौट चुके हैं, केवल कुछ युवा रह गए हैं जो कि शीघ्र ही लौटने वाले हैं। मैं फिर अकेला हो जाऊंगा।

तुम्हारी फ्रेंच का क्या हाल है? आशा है अभी भी विएना के केफ़े में वही चुटकुले चल रहे हैं कि नहीं।

श्रीमती हारग्रोव प्राय: मुझे ताजा चुटकुला जो वे सुनती है के विषय में लिखकर भेजती रहती हैं।

कई दिन से मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। इस सर्दी में तुम्हारा क्या हाल है? क्या दुबारा खांसी हुई?

यदि तुम श्रीमती हारग्रोव से मिलो तो उन्हें बता देना कि मुझे उनकी अमरीकी

मित्र सुश्री ग्रीन का पत्र मिला था। उनके पत्र का शीघ्र ही उत्तर दूंगा। क्या तुम मेरे मित्र डॉ० सेन को 20/15, अल्सर स्ट्रास के पते पर टेलिफोन कर यह सूचना दे सकती हो कि मुझे उनका एयरमेल से भेजा पत्र मिल गया है।

हमारा सबसे बड़ा त्यौहार दुर्गापूजा अभी समाप्त हुआ है। इस त्यौहार के पश्चात अपने मित्रों व रिश्तेदारों को शुभकामनाएं भेजने का रिवाज है - इसका कारण यह है कि - देवी मां की पूजा अर्चना के पश्चात् उसके सभी बच्चों को आपस में प्रेम-प्यार से रहना चाहिए। इसलिए मैं तुम सबको विजया की शुभकामनाएं भेजता हूं। तुम सब लोगों का स्वास्थ्य कैसा है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस
दार्जिलिंग
विएना
4 12 36

प्रिय श्री बोस,

आपका 9 तारीख का पत्र मुझे 23 तारीख को मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं बहुत चिंतित थी क्योंकि बहुत दिनों से आपकी कोई सूचना नहीं मिली थी। मुझे पिक्चर पोस्टकार्ड और चार फोटो मिल गए हैं, धन्यवाद। वे बहुत बढ़िया हैं और मेरे लिए उन्हें देखना बहुत आनंददायक है क्योंकि मुझे कुछ पता चला कि भारत कैसा लगता है। हिमालय पर्वत शृंखला अद्भुत होगी। लेकिन दार्जिलिंग बिल्कुल आधुनिक और यूरोप जैसा दीखता है। आशा है वहां और भी बहुत सी भारतीय किस्म की इमारतें होंगी। लेकिन यूरोपीय प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

विएना का मौसम अचानक ही बदल गया है। चार दिन पहले कुछ बर्फ गिरी थी, लेकिन दुर्भाग्यवश वह अधिक देर टिकी नहीं। अन्यथा मौसम नमी और सर्दी का है, आप तो जानते ही हैं। हमेशा की भांति इस वर्ष भी मुझे जुकाम और खांसी हुआ और मुझे सर्दियों का कष्ट झेलना पड़ा। अन्यथा मैं पूर्णत: स्वस्थ महसूस करती हूं। मेरा गॉल ब्लैडर भी ठीक है, अब वह ज्यादा तकलीफ नहीं देता। अब मैं बिना दर्द के डर के जो चाहूं खा-पी सकती हूं। कम से कम यही इस कष्ट भरे जीवन में कुछ आराम है। आजकल मेरा वजन तेज़ी से घट रहा है। लेकिन मुझे उसकी चिंता नहीं, क्योंकि मैं मोटापे से तंग आ चुकी थी।

आजकल किसी मित्र से मुलाकात नहीं हो पा रही। केवल डॉ० सेन कभी-कभी मिल जाते हैं। क्योंकि मुझे क्रिसमस की बहुत सी तैयारी करनी है। सिस्टर एलविरा ने भी मुझे कुछ क्रिसमस के उपहार लाने को कहा है जो वे अपने मित्रों को देना चाहती है, अत: मेरे पास बहुत-सा काम इकट्ठा हो गया है। लेकिन इससे मेरी कुछ आय तो हो रही है, और फिर मुझे ऐसे काम पसंद भी हैं।

सिस्टर एलविरा को आपकी 'हार्दिक शुभकामनाएं' पाकर-बहुत प्रसन्नता हुई और वे आपको नमस्ते भेज रही हैं। जिस क्षण मै उनसे मिलने जा रही थी तभी आपका पत्र मिला, तो मैंने तत्काल उन्हें आपकी शुभकामनाएं पहुंचा दीं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके कुछ रिश्तेदारों को आपके साथ रहने की अनुमति मिल गई थी। इसलिए आप बिल्कुल अकेले नहीं थे। कोई बात करने वाला आपके साथ था। युवा वर्ग भी आपका कुछ समय व्यतीत करा देगा। शेष समय मे आप पढ़ते रहते होंगे।

दुर्भाग्यवश मुझे अपने फ्रेंच पाठ बीच मे ही छोड़ देने पड़े। आजकल मेरी बिल्कुल भी आय नहीं है और मुझे पाठ निःशुल्क उपलब्ध नहीं हो पाएंगे। यह दुखद स्थिति है किंतु इसमें मेरा कोई वश नहीं है। मैं अखबारों में छपे विज्ञापनों के उत्तर में ढेरों पत्र लिखती हूं, किंतु कोई उत्तर नहीं मिलता। एक बार उत्तर तो मिला लेकिन नौकरी नहीं मिल पाई। एक बार और उत्तर मिला लेकिन मैंने स्वयं नौकरी स्वीकार नहीं की क्योकि वह बेकार थी। मुझे एक सात वर्षीय बालक की देखभाल करनी थी और वे मुझे रहने खाना पीने की सुविधा के साथ केवल 25 शिलिंग प्रतिमाह देते। इसके अलावा मुझे अपना कमरा स्वयं साफ करना पड़ता और घर के कामकाज में भी हाथ बंटाना पड़ता। यह मैंने स्वीकार नहीं किया क्योंकि आखिरकार मैं कोई नौकरानी तो हूं नहीं।

आप कुछ चुटकुले जानना चाहते हैं। यह बहुत कठिन कार्य है क्योकि आजकल मैं कैफ़े में बहुत कम जाती हूं। जो एकमात्र चुटकुला मैंने सुना वह यह था -

"हम आस्ट्रिया के लिए नया शिलिंग बना रहे हैं जो रबड़ का होगा" (किसी ने पूछा क्यो?) ताकि आप उसे खींचकर बड़ा कर सकें और यदि गिर जाए तो आवाज न हो।' यह चुटकुला संभवतः इसलिए बना, क्योंकि शिलिंग की कीमत और गिरने की संभावना है।

मैंने डॉ० सेन तक आपकी शुभकामनाएं पहुंचा दी थीं। वे बहुत प्रसन्न थे और उन्होने भी अपनी शुभकामनाएं भिजवाई हैं।

अब एक समाचार आपको देना है शायद आपको अच्छा लगे। सेन ने दुबारा हिंदुस्तान एकेडेमियल एसोसिएशन का गठन किया है। फिलहाल विएना में 25-30

भारतीय है। कड़े संघर्ष के बाद गैरोला, जो कि अध्यक्ष बनना चाहता था, ने अपना सहयोग दिया। सेन ने उसका प्रतिरोध किया। अतः अली को पुनः अध्यक्ष बनाया गया और गैरोला को सचिव का पद देकर शांत किया गया। आजकल वे प्रतिदिन होटल द फ्रांस में मिलते हैं। अली काफ़ी दिलचस्पी ले रहा है। यद्यपि सेन समिति का सदस्य या कोई पदाधिकारी नहीं है, फिर भी वह इसे जमाने का पूरा प्रयास कर रहा है। फिलहाल यह आशा है कि यह सफलतापूर्वक चलेगी। त्रिवेदी ने अपनी सभी परीक्षाएं पास कर ली हैं, सेन उसे एक सक्रिय सदस्य के रूप मे ऐसोसिएशन में ले आए हैं। एक बार प्रोफ़ेसर ओल्ब्रिक ने एक बहुत दिलचस्प भाषण दिया कि वे कैसे किलिमंजारो पर्वत पर चढ़े थे। उस सम्मेलन मे 100 के लगभग लोग थे, हालाकि उस दिन मौसम अत्यधिक खराब था। हम लोगों ने 500 निमंत्रण भेजे थे।

मैं और मेरे माता-पिता आपकी विजया की शुभकामनाएं पाकर प्रसन्न हुए। हमारी ओर से भी शुभकामनाएं (यदि यह संभव हो तो कोई गैर-हिंदुस्तानी भी विजया की शुभकामनाएं भेज सकता है।)

हमारा सबसे बड़ा धार्मिक पर्व 24 तारीख को है। पिछले वर्ष आप विएना में ही थे और आपने देखा ही था कि यह कैसे मनाया जाता है। पिछले सप्ताह मैंने आप को सैंपल रजिस्टर्ड डाक द्वारा क्रिसमस का उपहार भेजा था। कृपया इसे मेरी, मेरे माता-पिता व मेरी बहन की ओर से हार्दिक शुभकामनाओं सहित स्वीकार करें।

आशा है आपका स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा ठीक होगा। कृपया पत्र का उत्तर जल्दी दें। मेरे परिवार व मेरी ओर से शुभकामनाए।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः- एक बात तो आपको बताना भूल ही गई, मैंने आपके सारे ट्रंक ठीक-ठाक कर दिए हैं और आपके कपडे अलग कर भेज दिए हैं। सभी को एक बडे बक्से मे बद करके एक इटली की संस्था (आपके भतीजे की सहायता से) द्वारा वह बक्सा भिजवा दिया है।

जो चीजें आपके उपयोग मे आने वाली नहीं थीं, वैसी अनावश्यक चीजो को मैंने विनजैग को (पेशन कास्मोपोलाइट के नौकर) उपहार मे दे दी। इसके इलावा आपके जूतो की भी एक जोड़ी (उसका ऊपरी भाग लगभग फट चुका था) भी उसे दे दी है क्योकि वह कह रहा था कि मुझे जूतों की अत्यधिक आवश्यकता है। आपके भतीजे से परामर्श करने के बाद मैंने आपके स्कीइंग के जूते सिंह के पास ही छोड़ दिए हैं। स्केट्स और स्केटिंग के जूते आपको भिजवा दिए हैं। बक्सों में मैंने तीन पुस्तकें भी रख दी हैं - (1) जर्मन व्याकरण और शब्दकोष (2) कैनटर विले घोस्ट (द्विभाषी शृंखला) तथा (3) इमरस्क (द्विभाषी शृंखला)।

अभी भी कुछ कपड़े मेरे पास रह गए हैं, जो आपके भतीजे ने आपके पास भिजवाने से मना कर दिए थे। अधिकांशतः गहरे रंग की बरसातियां हैं, जो आपको ठीक नहीं आती थीं। उनका मै क्या करूं? फिर एक अचकन, एक जोड़ी ब्रीच, एक यूरोपीय किस्म का कोट। ये सभी चीजें एक ही कपड़े की बनी हैं (भारतीय कपड़े की)। कृपया मुझे बताएं कि मैं इन कपड़ों का क्या करूं।

आपने यह नहीं बताया कि वह पत्र आपको मिल गया है जिसमें मैंने चाय पर लगने वाले कर के विषय में लिखा था। 4 पाऊंड (आधा किलो) के लिए 10 आस्ट्रियाई शिलिंग देने होंगे। 10 डेका (100 ग्राम) कर मुक्त है।

एक बार फिर शुभकामनाएं,
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

कृपया इस पते पर उत्तर दें
1, वुडबर्न पार्क
एल्गिन रोड, पोस्ट आफ़िस
कलकत्ता.

कुर्सियांग,
15 दिसंबर, 1936.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

4 तारीख के आपके पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे आज प्रातः ही मिला। मुझे लगता है कि तुम्हे मेरा 26 सितंबर का पत्र नहीं मिला - कम से कम तुमने उसका उत्तर नही दिया - जबकि तुमने मेरे उसके बाद वाले 9 नवंबर के पत्र का उत्तर दे दिया है। अक्तूबर मे (माह के मध्य मे) मैंने तुम्हे पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे जो तुम्हे समय पर मिल गए थे। तुम्हारी ओर से मिलने वाला अंतिम पत्र 16 अक्तूबर को मिला जो 1 अक्तूबर को लिखा गया था। दो माह से तुम्हारा कोई समाचार नहीं है, मुझे लगा शायद तुम बीमार हो। किंतु अब यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ऐसा नही था। मुझे खेद है कि तुम्हारे अंतिम पत्र का उत्तर देने मे मुझे एक माह की देरी हुई। मै स्वस्थ नहीं था और मौसम भी कोई बहुत अच्छा नही था। माह के अत मे मौसम मे कुछ सुधार हुआ है, तथा मेरे कुछ रिश्तेदार भी मेरे पास है जिसमे मै व्यस्त रहता हूं। मुझे हैरानी है कि मेरे 26 सितंबर के पत्र (एयरमेल) का क्या हुआ। वह दार्जिलिंग से समय पर डाक में डाला गया था, क्योंकि यदि सेंसर मेरा कोई पत्र पास नही करता है तो मुझे इसकी आधिकारिक तौर पर सूचना मिल जाती है।

इस पत्र का उत्तर पत्र के ऊपर लिखे मेरे घर के पते पर देना। मुझे स्थानांतरित किया जाना है और फ़िलहाल मैं नहीं जानता कि मुझे कहां भेजा जाएगा। इसलिए यदि तुम मेरे घर के पते पर पत्र लिखोगी तो वे उसे मुझ तक पहुंचा देंगे, चाहे मैं कहीं भी होऊंगा। लगभग दो माह पूर्व मैंने स्थानातरण के लिए कहा था, क्योंकि यहां की जलवायु मेरे उपयुक्त नहीं थी। एक दो दिन में मै यह स्थान छोड़ दूगा।

लगभग एक सप्ताह पूर्व मैंने तुम लोगों के लिए साधारण डाक द्वारा क्रिसमस कार्ड भेजा था किंतु मुझे नहीं मालूम कि क्या मैंने उसमे जर्मन लोकाचार के हिसाब से उपयुक्त संबोधन किया था या नहीं। यदि कोई गलती रह गई तो मेरी अज्ञानता समझ क्षमा कर देना। यह पत्र क्रिसमस के आसपास ही तुम्हे मिलेगा। क्रिसमस और मंगलमय नववर्ष के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाए स्वीकार करो। अपने परिवार के सभी सदस्यो को मेरी शुभकामनाएं देना और अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना। मुझे याद नहीं आ पा रहा कि पिछले वर्ष मै क्रिसमस के दिनों मे कहां था, और इस वर्ष कहां रहूंगा। मनुष्य का जीवन कितना परिवर्तनशील और अनिश्चित है।

यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हे खासी हो गई है। यद्यपि गॉल ब्लैडर की परेशानी से मुक्ति मिली। फिर भी उसे बिल्कुल भूल मत जाना। यह कभी ठीक नहीं होता और जब कभी खानपान मे अनियमितता होती हैं, तब यह परेशानी दुबारा हो जाती है। मेरा अपना यही अनुभव है। मेरी भाभी, अशोक की माता को भी यह बीमारी है, लेकिन वे इसके प्रति लापरवाही बरत रही है। जब वे अपने खानपान मे अनियमितता बरतती हैं वैसे ही पुन: परेशानी हो जाती है। मैं तो बहुत दिनों से उन्हे आपरेशन के लिए कह रहा हूं लेकिन बाकी सभी लोग इसके विरुद्ध हैं।

क्रिसमस सप्ताह मे तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से होगी। कृपया उसे भी मेरी क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाएं दे देना।

मेरे भाई ने लिखा है कि श्रीमती मिलर जो आजकल पूर्व के दौरे पर हैं, भारत पहुच गई है। उसने उन्हे अपने घर आने का निमंत्रण दिया है, जब वे कलकत्ता आएं तो।

मुझे चाय पर लगने वाले कर की सूचना मिल गई थी और तभी से मैंने मित्रों को चाय भेजने का विचार त्याग दिया है। एक पाउड चाय पर 10 शिलिंग ड्यूटी देना अच्छा नहीं है। वेसे वहा चाय की क्या कीमत है?

तुमने जो क्रिसमस उपहार भेजा है उसके लिए शुक्रिया। मैं उसके लिए तुम्हारा आभारी रहूगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जल्दबाजी मे जो कपड़ों का बक्सा मैं वहां विएना मे छोड आया था वह मुझे यहां भारत में भिजवाया जा रहा है। कृपया मुझे

बताओ कि किराया कितना लगा और किसने यह राशि खर्च की ताकि मैं उसे यह राशि भिजवा सकूं। शेष जो कपड़े वहां बचे हैं वे वहीं रहने दो। यदि मेरा कोई जानकार रास्ते मे विएना से गुजरा तो मैं उससे प्रार्थना करके उन्हें यहां मंगवा लूंगा। लेकिन इसकी जल्दी नहीं। मेरे ख्याल से मैंने पेंशन कास्मोपोलाइट में दो ओवरकोट छोड़े थे एक हल्के ग्रे रंग का और दूसरा गहरे (शायद काले) रंग का था। क्या हल्के ग्रे रंग का कोट बक्से मे भिजवाया है? गहरे रंग के कोट की मुझे जरूरत नहीं वह किसी गरीब व्यक्ति को दिया जा सकता है।

मेरा भतीजा पिछले कुछ माह से व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए जर्मनी मे था। पता नहीं वह विएना जा पाया अथवा नहीं।

एक बार फिर शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
विएना
1.1.37

प्रिय श्री बोस,

आपका पंद्रह दिसंबर 1936 का पत्र पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। वह मुझे 28 दिसंबर को दोपहर में मिल गया था। उसी दिन प्रातः आपका क्रिसमस और नववर्ष का कार्ड भी साधारण डाक से मिला था। मेरे सभी जानकार व संबंधी बेहद प्रसन्न थे और आपको धन्यवाद कह रहे थे।

पिछला साल बीत गया और नया वर्ष आ गया है। यह कैसा रहेगा? विश्व की स्थिति में कुछ सुधार होगा अथवा वह और रसातल की ओर जाएगी? कोई नही जानता।

हां, मुझे आपका 26 सितंबर का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र मिल गया था, मैंने उसका उत्तर भी दे दिया था। संभवतः मेरा पत्र रास्ते में कहीं इधर-उधर हो गया। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूं, सामान्य सर्दी-जुकाम है। ये दोनों मेरे विश्वस्त मित्र है। ये मुझे इतना प्यार करते है कि प्रतिवर्ष मुझसे मिलने आते हैं और पूरी सर्दियां मेरे पास रहते है। मुझे बुरा भी नहीं लगता। मुझे आशा है अब तक आप स्वस्थ हो चुके होगे और अब बेहतर महसूस करते होंगे।

नवबर और दिसंबर में मैं क्रिसमस उपहारों में अत्यधिक व्यस्त रही। प्रतिदिन सुबह से लेकर देर रात तक कार्य करती थी। किंतु यही अच्छा था कि मेरा कार्य पूरा हो सका।

क्या आपको किसी अन्य जगह स्थानांतरित किया गया है यदि हां तो कहां? कृपया मुझे इस नई जगह के विषय में अवश्य लिखें, आप तो जानते हैं कि मैं बेहद उत्सुक व्यक्ति हूं।

इस वर्ष क्रिसमस बहुत अच्छा रहा। मुझे मेरे परिवार से बहुत सी चीजें मिलीं अधिकांश उपयोगी थीं और मित्रों से कुछ एरवयं की चीजें मिलीं। आयरलैंड की मेरी मित्र ने मुझे एक बहुत बढ़िया पुस्तक दी है जिसका नाम वासन्स फलाइंग कॉलम है इसके लेखक इरविन हैं। क्या आप इसके विषय में जानते हैं? श्रीमती हार्ग्रोव ने भी मुझे एक पुस्तक भेजी है 'द मिनरल्स एंड देयर पेटर्स' इसमें अति प्राचीन जर्मन चित्र की 24 प्रस्तुतियां हैं। मुझे यह पुस्तक बेहद पसंद आई। इसमें कुछ जर्मन भाषा की कविताएं भी हैं। 26 दिसंबर को मास्टर और सेन मुझसे मिलने आए थे। मैंने एक और मित्र को आमंत्रित किया हुआ था, अतः हमें बहुत मजा आया। हमने क्राइस्ट लैंप जलाया और सेन ने पिआनो पर भारतीय संगीत बजाया। सेन कुछ माह के लिए कहीं जा रहा है, इसलिए उसे एक अतिरिक्त ट्रंक की जरूरत है। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं आपके ट्रंकों में से उसे दे सकती हूं? मैंने उसे काला ट्रंक देने की सोची है। आशा है आपको बुरा नहीं लगेगा। कल उसने मुझे बताया कि आपने उसे लिखा है कि यदि वह चाहे तो भारतीय रिकार्ड्स में से एक रिकार्ड भी ले सकता है। उसने दो रिकार्ड्स लिए हैं। कौन से यह मैं नहीं जानती क्योंकि बंगला लिपि मैं समझ नहीं सकती।

इस वर्ष सिल्वेस्टर की यात्रा बहुत बोरिंग रही। मैं अपने परिवार के साथ सर्कुना गई थी जहां से हम लोग 11 बजे वापिस लौटे। तब हमने चाय पी, आधी रात होने तक का इंतजार किया तब एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। इसके पश्चात मैं अपने पडोस में गई। वह महिला अपने दो बच्चों के साथ घर में अकेली थी। हमने एक दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। तभी मुझे 'ब्लीगेसीन' का मूर्खतापूर्ण विचार आया। यह इस प्रकार किया जाता है। आप एक चम्मच में कुछ धातु (सीसा) पिघलाते हैं और जब यह पिघल जाता है तो इसे ठंडे पानी में डाल दिया जाता है। शीघ्र ही यह सख्त हो जाता है और कोई आकार ग्रहण कर लेता है। इसी आकृति के आधार पर आप उस व्यक्ति के विषय में, जिसने वह पानी में डाला था, भविष्यवाणी कर सकते हैं। मेरी धातु की एक अजीब चीज बनी जो भारत का नक्शा जैसा दीख रहा था। रात को दो बजे मैं सोई और सुबह देर तक सोती रही।

सिस्टर एलविरा 15 दिसंबर को रडोलफनर हॉस छोड़ गई थीं। वे ऊपरी आस्ट्रिया

में अपने घर चली गई हैं। वे वहां लगभग तीन माह रहेंगी फिर शायद रुडोल्फनर हॉस लौटें या कुछ माह के लिए एक बार फिर इंग्लैंड चली जाएंगी। उन्होंने कहा था कि जब मैं आपको पत्र लिखूं तो उनकी शुभकामनाएं भी आप तक पहुंचा दूं। मेरी मित्र एला ने भी मुझे एक बहुत अच्छा पत्र लिखा था और आपके लिए वर्ष 1937 की शुभकामनाएं भी प्रेषित की है।

मुझे मालूम था कि श्रीमती फ्यूलप मिलर भारत जा रही हैं, किंतु मैंने आपको केवल इसलिए नहीं लिखा, क्योंकि उन्होंने किसी को भी बताने को मना किया था। इस महिला के पास बहुत धन है, तभी तो यह एशिया की यात्रा पर निकली है।

मेरे विचार में भी किसी को चाय भेजने का विचार व्यर्थ है क्योंकि ड्यूटी बहुत ज्यादा है। यहां चाय की कीमतें अलग-अलग हैं। प्रति 10 ग्राम 30 ग्रोशेन से लेकर 70 से 80 तक है। विशेष रूप से एम० ई० आई० एन० एल० नामक संस्था, जिसका अपनी पत्नी के द्वारा पूर्व से संबंध हैं, की चाय बहुत बढ़िया है। ड्यूटी का कारोबार बहुत भयानक है। मैंने अपनी मित्र को जर्मनी में एक हाथ का बना रात्रि गाउन भेजा। वह साधारण से सूती कपड़े का बना था और बल्कान विधि से बनाया गया था। उस गरीब को उस पर 4.50 मार्क्स ड्यूटी के देने पड़े। यह लगभग 9 आस्ट्रियाई शिलिंग के बराबर है। जब उसने मुझे यह लिखा तो मुझे बहुत दुख हुआ। क्या आपको भी उस क्रिसमस उपहार पर ड्यूटी देनी पड़ी जो मैंने आपको भेजा था।

विएना से भारत के लिए जो आपका सूटकेस भेजा गया है उसके लिए मैंने कोई किराया नहीं दिया है, आपके भतीजे अशोक ने ही इसकी व्यवस्था की थी, मैंने तो केवल उसे तैयार किया था। उसे मैंने बता दिया था कि जो चीजें अनुपयोगी थीं वे मैंने किसी को दे दी है। हल्के ग्रे रंग का कोट अन्य कपड़ों के साथ भिजवा दिया है। गहरे रंग का (बल्कि काला) कोट मेरे पास पड़ा है मैं यह उसे दे दूंगी जिसे इसकी आवश्यकता पड़ेगी। एक अन्य कोट (यूरोपीय ढंग था) मैंने उस व्यक्ति के हाथ भिजवा दिया है जो भारत जा रहा था। यह आपके भाई को दे दिया जाएगा। आपका भतीजा अभी जर्मनी में ही है। जिन दिनों आपकी चीजें भारत भेजने की व्यवस्था करनी थी तब उससे संपर्क हुआ था। किंतु वह विएना नहीं आ सका, हालांकि यदि वह आ जाता तो मुझे प्रसन्नता होती, क्योंकि मेरे लिए सब चीजों की व्यवस्था करना कठिन कार्य था। संभवतः बाद में वह विएना आए। बहुत दिनों से मुझे उसका कोई समाचार नहीं मिला है।

25 दिसंबर के बाद से यहां कुछ सर्दी बढ़ी है। 25 तारीख को बर्फीला तूफान भी आया था। किंतु बहुत बर्फ नहीं पड़ी। धुंध में पेड़, टेलिफोन की तारें आदि गिर कर जम गईं। पेड़ ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने उन पर पिसी हुई चीनी डाल दी हो। मुझे खेद है

कि मैं कोई पौधा तोड़कर आप तक नहीं भिजवा सकती। यह एक सुंदर दृश्य है।

अब तक मैं आपको सब कुछ बता चुकी हूं। अब मैं शहर जाकर बूरपाल्ट्ज़ के टेलिग्राफ़िक आफ़िस से यह पत्र डाक में डालूंगी और फिर कैफ़े बेस्ट्स जाऊंगी, क्योंकि वहां मुझे अपनी एक मित्र से मिलना है।

एक बार पुनः नववर्ष की शुभकामनाएं। मेरे परिवार की ओर से भी आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

ओह! इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, क्या आप कभी-कभी मुझे भारतीय समाचार पत्र भिजवा सकते हैं। कई महीने से मुझे ये पत्र नहीं मिले हैं। धन्यवाद!

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

आपकी शुभाकांक्षी,
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
10 जनवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें व तुम्हारे पूरे परिवार को मेरी ओर से नववर्ष की शुभकामनाएं।

तुम्हारा पहली जनवरी का पत्र मुझे कल मिला। मैंने पिछला पत्र कुर्सियांग से लिखा था, किंतु अब मुझे कलकत्ता ले आया गया है। आजकल मैं अस्पताल में 'बंदी' हूं। 17 दिसंबर को मैं यहां आया था तभी से यहां के उबटकों द्वारा मेरा परीक्षण जारी है। चिकित्सकीय सहायता तो मुझे यहां मिल ही रही है जो मेरे लिए सुखद है किंतु एक अन्य बात भी है जिसके कारण मैं यहां आकर बहुत प्रसन्न हूं। यहां का मौसम बहुत अच्छा है। सूर्य खूब तेजी से चमकता है, जिसका पहाड़ों पर अभाव था, फिर भी मौसम सर्द है। फिर सरकार ने भी मेरे रिश्तेदारों को प्रतिदिन मुझसे मिलने की अनुमति दे दी है।

अभी तक चिकित्स्कों ने बीमारी नहीं बताई है, केवल यही बताया है कि मुझे सैप्टि टांसिल है। उनकी शेष राय की मैं अभी इतजार में हूं।

मैं नहीं जानता कि यहां कितने दिन रहूंगा, न ही यह पता है यहां से मुझे कहां स्थानांतरित किया जाएगा। लेकिन यह पता है कि अधिक दिन यहां नहीं रह पाऊंगा।

इसलिए यदि तुम मुझे पत्र भेजो तो मेरे घर के पते – 1 वुडबर्न पार्क, एल्गिन रोड, पोस्ट आफ़िस कलकत्ता के पते पर ही लिखना, वह मुझे मेरे नये पते पर भेज दी जाएगी।

क्रिसमस उपहार के लिए धन्यवाद। फ़ोटो बहुत बढ़िया हैं और वे बढ़िया स्मारिकायें हैं। ये मुझे कुर्सियांग मे ही मिल गई थीं। मुझे कोई ड्यूटी नहीं देनी पड़ी। हमें आयातित माल पर यूरोपीय देशों की भांति अत्यधिक टैक्स नहीं देना पडता है।

पता नहीं एयरमेल के उन्होंने तुमसे 1 शिलिंग 70 ग्रोशेन क्यों लिए। सामान्यत: वे 1 शिलिंग 30 ग्रोशेन लेते हैं। संभव है हाल ही में उन्होंने दरें बढ़ा दी हों।

श्रीमती हार्ग्रोव ने मुझे क्रिसमस उपहार के तौर पर एक बढ़िया पुस्तक भेजी है जिसमें तरह-तरह के पौधों के चित्र हैं। किसी ने मुझे 1937 का कैलेंडर भेजा है जो पुस्तकाकार है जिसमें आस्ट्रियाई दृश्यो के सुंदर चित्र हैं। यह पुस्तक विएना बैंक वेरिन ने प्रकाशित की है।

तुम बर्फ का आनंद ले रही हो अतः मुझे तुमसे ईर्ष्या हो रही है। यहां के मैदानी इलाकों में तो हम स्वप्न में भी बर्फ नहीं देख सकते।

क्या तुम मुझे बताओगी कि तुमने क्रिसमस किस प्रकार मनाया? क्या आप लोग भी 24 और 25 दिसंबर को पेड़ पर रोशनी करते हो और उपहार बांटते हो? जहां तक मुझे याद है शायद 25 तारीख की रात मे। तो क्या 25 के बाद भी किसी रात पेड़ पर रोशनी करते हो? क्या 25 तारीख के बाद रोशनी को उतार देते हो? इंग्लैंड में 25 की शाम को क्रिसमस मनाई जाती है, यदि मेरी याददाश्त सही है तो।

कृपया सिस्टर एलविरा और सुश्री एला को मेरी ओर से नववर्ष की शुभकामनाएं देना, यदि अभी तक नहीं दी है तो।

कई माह बाद मैं शहर मे आया हूं, पहले-पहल यह परिवर्तन अच्छा लगा। किंतु यहां बहुत शोर है – अंदर भी, बाहर भी। बाहर बसों, ट्राम और अन्य यातायात के साधनों के कारण। अंदर उन मरीजों के कारण जो दर्द होने पर बेहद चीखते चिल्लाते हैं। यह भारत का सबसे बड़ा अस्पताल है। कलकत्ता का भी। कमरे जनरल वार्ड से ठीक प्रकार अलग नहीं बनाए गए हैं इसी कारण जब कोई मरीज दर्द से चिल्लाता है तो मुझे शोर सुनाई देता है। बहरहाल, बहुत दिन के अकेलेपन के बाद, मनुष्यों की निकटता, बेशक वे शोर ही मचाएं, भली लगती है।

शेष कुछ लिखने को नहीं है। आशा है सर्दी के बावजूद तुम्हारा जुकाम ठीक होगा।

डाक्टरों को आशा है कि वे उपचार द्वारा मेरा टांसिल ठीक कर सकते हैं, अन्यथा मुझे आपरेशन द्वारा उन्हें निकलवाना पड़ेगा।

विएना की श्रीमती मिलर आजकल कलकत्ता में हैं। सरकार ने उन्हें मुझसे मिलने की इजाजत दे दी है और मुझे भारत मे उनसे मिलना अच्छा लगा। उन्होंने बताया कि उन्हें अपनी यात्रा में आनंद आ रहा है।

तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

मेंडिकल कालेज हास्पिटल
कलकत्ता
26 जनवरी 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 14 जनवरी का पत्र मुझे 25 तारीख को मिला, धन्यवाद! मुझे विश्वास है अब तक तुम्हें मेरा 10 जनवरी का पत्र मिल चुका होगा। शुभकामानाओं के लिए धन्यवाद, घर में भी सभी को धन्यवाद।

कलकत्ता में सर्दी बहुत कम पड़ती है, इस वर्ष भी यही हाल है। भारत के कुछ हिस्से में शीतलहर चल रही है। कुर्सियांग में अधिक ठंड और धुंध थी। जिन दिनों मैं वहां था, वहां बेहद धुंधभरा मौसम था, इसलिए आजकल यहां का सूर्य अच्छा लग रहा है। किंतु जो लोग सदा यहीं रहते हैं उन्हें यह धूप अच्छी नहीं लगती। यह स्वाभाविक ही है।

अभी भी मैं कलकत्ता के अस्पताल में ही हूं। कुल मिलाकर पहले से कुछ बेहतर हूं। फिलहाल मेरे गले की तकलीफ का इलाज चल रहा है। लिवर में भी कुछ खराबी है। मुझे अपने स्थानांतरण का पहले पता नहीं चलता किंतु कभी भी कहीं भी भेजा जा सकता हैं। इसलिए तुम मुझे मेरे घर के पते पर ही पत्र लिखो जो इस प्रकार है – 1 वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। वे मेरे पत्र सेंसर अधिकारियों के पास भेज देंगे।

शेष ऐसा कुछ नहीं जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी हो। मेरे कलकत्ता आवास के दौरान मुझे सप्ताह में दो बार अपनी माताजी से मिलने की अनुमति मिल गई है। साथ में सिस्टर एलविरा के लिए पत्र भेज रहा हूं। तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम।

हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
विएना
28.1.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 10 तारीख का पत्र मुझे 19 तारीख को मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद! नव वर्ष की शुभकामनाओं के लिए मेरा व मेरे परिवार की ओर से धन्यवाद।

मैं आशा करती हूं कि वे पूरी होंगी। आपको भी शुभकामनाएं।

आपके स्वास्थ्य के विषय में जानकर दुख हुआ। मैं आशा करती हूं कि आप शीघ्र ही ठीक हो जाएंगे। बीमारी से बुरी कोई चीज नहीं है। और फिर अस्पताल में रहना तो और भी दुखद है। क्या आपको आपके स्वास्थ्य के विषय में कोई और सूचना नहीं मिली? कृपया मुझे भी सूचित करें।

भारत में पर्याप्त धूप निकलती है। यहां बिल्कुल भी नहीं है। एक सप्ताह पूर्व यहां भयानक सर्दी थी (10 डिग्री माइनस मे था) अत्यधिक बर्फ भी पड़ रही थी। वह तो अच्छी थी, किंतु सर्दी ठीक नहीं। तीन चार दिन मैं बाहर नहीं निकली। क्योंकि मुझे सर्दी से बचने के लिए बहुत सावधान रहना पड़ता है।

फोटो के विषय में आपने क्या लिखा है? क्रिसमस के उपहार मे तो मैंने आपको नीला कढ़ाई वाला बुक कवर भेजा था जो नीली सिल्क का बना था। क्या वह आपको नहीं मिला? बहरहाल! मैंने आपको चित्र नहीं भेजे थे। गलती हो गई होगी।

मेरे पिछले पत्र के संदर्भ में, उन्होंने मुझसे 1.30 शिलिंग ही लिए थे। डाकघर में ही किसी मूर्ख ने गलती से उसपर 1.70 शिलिंग लिख दिया होगा। मेरे ख्याल से वह सिल्वेस्टर से ही नशे में रहा होगा।

आप जानना चाहते हैं कि हम लोग यहां क्रिसमस कैसे मनाते हैं। पहले हम अपने रिश्तेदारों व मित्रों के लिए उपहार खरीदते हैं। 24 तारीख को क्रिसमस ट्री को (मिठाई, मोमबत्तियों और कांच की चीजें) सजाया जाता है। 24 की रात 7 या 8 बजे मोमबत्तियां जला दी जाती है। परिवार के सदस्यो द्वारा पुराना पारंपरिक गीत गाया जाता है। पेड़ के नीचे सभी उपहार रख दिए जाते हैं। तब प्रत्येक व्यक्ति अपना उपहार ले लेता है और अन्य लोगो को उसके लिए धन्यवाद देता है। जो अधिक धार्मिक लोग हैं – वे आधी रात को चर्च जाते हैं (मैं कभी नहीं जाती) 25 तारीख को छुट्टी रहती है। आप लोगों के पास आ जा सकते है, अथवा लोग आपके पास आ सकते है। 24 तारीख के बाद आप

जब भी चाहे क्रिसमस ट्री को रोशन कर सकते हैं। जब कोई मिलने वाला आए तो उसे दिखाने के लिए सामान्यतः यह जलाया जाता है। वह पेड़ या तो नए वर्ष पर या फिर 6 जनवरी को हटाया जाता है। किंतु इन दो दिनों का कोई विशेष नियम नहीं है।

कुछ दिन पहले सिस्टर एलविरा यहां आई थीं। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था, आशा है वह आपको मिल गया होगा। किंतु अब वे ऊपरी आस्ट्रिया के लिए रवाना हो चुकी हैं।

अब हमें रेडियो (वायरलेस) प्राप्त हो गया है। यह वास्तव में ही उपयोगी चीज़ है क्योंकि आप इस पर विएना, चेकोस्लोवाकिया, जर्मनी, इटली, पोलैंड, स्विट्जरलैंड, फ्रांस यहां तक कि इंग्लैंड भी सुन सकते हैं। इंग्लैंड के कार्यक्रम बहुत थका देने वाले और मुश्किल से समझ में आने वाले होते हैं। पिताश्री पूरे दिन डांटते-डपटते रहते हैं कि हमने परिवार की शांति भंग कर दी है। किंतु जितना हो वे चिल्लाते हैं उतना ही अधिक हम रेडियो सुनते हैं।

क्या आप जानते हैं कि श्रीमती मिलर वापिस कब लौट रही हैं? इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि उन्हें अपनी भारत की यात्रा पसंद आई।

विएना से जो चीजें मैंने आपको भिजवाई थीं क्या वे मिल गईं? (चमड़े का बड़ा सूटकेस और कपड़े आदि) क्या आप अभी भी जर्मन भाषा पढ़ते हैं? मैं दिनभर कोई काम नहीं करती सिवाय इसके कि अंधकारमय भविष्य के प्रति चिंतित रहती हूं। मैं एक संस्था से दूसरी संस्था तक पागलों की भांति घूमी हूं। मैंने अपना परिचय दिया है, पत्र आदि लिखे हैं। नतीजा कुछ नहीं निकला। मैं बता नहीं सकती यह सब कितना निराश करता है। कभी-कभी तो सोचती हूं कि मैं जी क्यों रही हूं। ऐसे व्यर्थ जिए जाने का क्या लाभ। किंतु व्यक्ति अपने जीवन का अंत करने से बहुत डरता है।

ऐसा लगता है कि हिंदुस्तान एकेडेमियल ऐसोसिएशन ने अपनी गतिविधियां रोक दी है। क्योंकि एक दिन मैं गैरोला को अखबार वापिस करने होटल द फ्रांस गई थी। वहां के मालिक ने बताया कि वे अब बहुत कम आपस में मिलते हैं। कोई सिस्टम नहीं रह गया है। एकमात्र व्यक्ति जो कुछ कर सकता था, सेन, वह आजकल कुछ माह के लिए विएना से गया हुआ है और बाकी के लोग कोई अधिक कार्य करने वाले नहीं हैं। आज मैं श्री टाइमर से मिली थी। उन्होंने आपको नमस्ते व अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं।

क्या आजकल आप कुछ दिलचस्प चीज पढ़ रहे हैं? मैं कुछ नहीं पढ पा रही क्योंकि मुझे सिस्टर एलविरा का कुछ काम करना है जो मुझे व्यस्त किए है। यह अच्छा ही है, क्योकि इससे व्यक्ति को अपने विषय मे सोचने का समय ही नहीं मिलता।

शेष कुछ लिखने को नहीं है। कोई खास घटना भी नहीं घटी। हम सभी अपेक्षाकृत

ठीक हैं। पता नहीं आपको कलकत्ता से कहीं ले जाया गया या अभी वहीं हैं। कृपया मुझे सूचित करें।

मेरा परिवार आपको शुभकामनाएं भेज रहा है। आपके जन्मदिन की भी शुभकामनाएं मेरी ओर से।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः - एक बात तो मैं भूल ही गई। मुझे श्री जेनी का पत्र मिला था वे आपका पता पूछ रहे थे और कोई अन्य जानकारी जो मुझे आपके विषय मे हो जानना चाहते थे। उन्होंने अपनी व जेनेवा के आपके अन्य मित्रों की शुभकामनाए आपको भिजवाई हैं।

एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज हास्पिटल
कलकत्ता
10 फ़रवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 28 जनवरी के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 8 तारीख को मिला। मेरे पते से आपको पता चल गया होगा कि मैं अभी अस्पताल में ही हूं। भविष्य में कहां जाऊंगा कुछ भी निश्चित नहीं है।

तुम्हारे पत्र से पता चला कि जो क्रिसमस उपहार तुमने मुझे भेजा था वह गलत जगह चला गया। क्या तुमने वह पंजीकृत डाक से भेजा था? मैंने दार्जिलिंग के सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस को लिखा है कि वह खोज खबर ले। पहले के अनुभवों से मुझे उम्मीद नहीं है कि वह मिलेगा। फिर भी मैं तुम्हें इसके लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

यहां मौसम अच्छा है हालांकि प्रातःकाल कुछ धुंध रहती है, लेकिन बाद में धूप चमकने लगती है। तुम जो वहां बर्फ का मज़ा ले रही हो उससे मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। यह खेद की बात है कि तुम सर्दियों के खेल खेलने नहीं जा पा रहीं– उसमें बहुत आनंद आता।

मेरे कपड़ों का सूटकेस कलकत्ता पहुंच चुका है, उसे भिजवाने की उस परेशानी के लिए तुम्हारा आभारी हूं।

तुम दोनों का पोस्टकार्ड मिल गया था मैंने उसका उत्तर एयरमेल द्वारा भिजवा दिया था।

पता नहीं मैंने तुम्हें लिखा था या नहीं कि विएना की श्रीमती मिलर यहां जनवरी मे आई थीं। कलकत्ता में वे दो सप्ताह ठहरीं, वे मेरे भाई की अतिथि थीं। मुझे अस्पताल में मिलने की इजाजत उन्हे मिल गई थी। आजकल वे घूम रही हैं और मार्च के अंतिम सप्ताह (अगले माह) वे बंबई से रवाना होंगी।

जिन दिनों मैं कुर्सियांग में था तो कभी-कभी जर्मन पुस्तक पढ़ लिया करता था। यहा आने के बाद ऐसा नहीं कर पाया। आज मैं श्री फाल्टिस को जर्मन में पत्र लिखने का प्रयास करूंगा। आशा है वे मेरी अशुद्ध जर्मन समझ जाएंगे, यदि मेरा पत्र उन तक पहुचा तो।

आशा है तुमने अच्छी खासी फ्रेंच पढ़नी शुरू कर दी होगी। तुमने उसे बीच में क्यों छोड दिया? बाद में वह लाभदायक सिद्ध हो सकती थी।

कलकत्ता आने के बाद से मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं। इसके अलावा सरकार ने मुझे कुछ छूट दी है जिससे मुझे बेहद आराम मिला है। एक सप्ताह में दो बार मैं अपनी माताजी से मिलने जा सकता हूं। आज से मैं उन्हें प्रतिदिन मिलने जा सकूंगा। प्रातःकाल मै पुलिस आफ़िसर के साथ कार में दूर तक घूमने जा सकता हूं। दोपहर में कभी-कभी मेरे वे रिश्तेदार मुझसे मिलने आ जाते हैं, जिन्हें मुझसे मिलने की इजाज़त मिली है। शेष समय पुस्तको, पत्रों और अखबारो के सहारे व्यतीत हो जाता है। यहां कलकत्ता में मेरे लिए समय बिताना कठिन कार्य नहीं है किंतु कुर्सियांग में समय बहुत लंबा और उदास लगता था।

श्री जेनी और श्री टाइमर को मिलो या पत्र लिखो तो मेरी नमस्ते कहना। अन्य मित्रो को भी मेरी नमस्ते कहना। मेरा पता वही पहले वाला है - 1, वुडबर्न पार्क, कलकत्ता। वे मेरी डाक मुझे भेज देंगे। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं और माता-पिता को सादर प्रणाम। तुम कैसी हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सेंसर द्वारा पारित

(अस्पष्ट)
12.2.37

प्रिय श्री बोस,

आपका 26 जनवरी का पत्र पाकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। वह मुझे तीन तारीख में मिला था। मैंने एलविरा का पत्र उसे भेज दिया था उसने तत्काल मुझे जवाब भी दे दिया है। वह अत्यधिक प्रसन्न थी और उसने सादर प्रणाम व हार्दिक शुभकामनाएं भेजी हैं। वह अभी आपको पत्र नहीं लिख सकती क्योंकि वह बहुत व्यस्त है। जब समय मिलेगा तो आपको पत्र का उत्तर अवश्य देगी।

एक दिन मैंने फोन पर श्रीमती वेटर से बात की थी। उन्होंने भी आपके लिए हार्दिक शुभकामनाएं भेजी हैं। वे आपको एक लंबा पत्र लिखतीं, किंतु उनकी बेटी लगभग एक माह से बीमार है, इसलिए नहीं लिख पाईं।

अब मेरे विषय में एक समाचार। 2 तारीख से मुझे एक छोटी सी नौकरी मिल गई है। आजकल दोपहर में मैं एक भारतीय बच्चे की देखभाल करती हूं। क्या यह मजाक नहीं लगता? आप जानते ही हैं कि मुझे बच्चे बहुत पसंद नहीं हालांकि बच्चे मुझसे चिपटे रहते है। और अब मुझे एक बच्चे की देखभाल करनी है। बच्चा 17 माह का है और बहुत अच्छा है। जब उसके माता-पिता नहीं होते तो वह खासतौर पर भद्र हो जाता है। अपने माता-पिता को देखते ही वह शरारतें शुरू कर देता है क्योकि वह जानता है कि उनके साथ वह कुछ भी कर सकता है। यह उनका पहला बच्चा है और मां अनुभवी नहीं है, इस बात को वह स्वयं भी स्वीकार करती है। वे काश्मीर के भले लोग हैं। अब क्योंकि मेरी आमदनी शुरू हो गई है इसलिए मैंने अपने फ्रेंच के पाठ पढ़ने पुनः शुरू कर दिए हैं। हालांकि मैंने कई माह फ्रैंच नहीं पढ़ी फिर भी मैं कुछ भूली नहीं हूं। मुझे स्वयं अपने आप पर आश्चर्य हो रहा है।

ओह! तो अब आपको धूप अच्छी लगने लगी है। मुझे याद है कि जब मैं सर्दियों में धूप के लिए कहती थी तो आप मेरा मजाक उड़ाया करते थे। आजकल यहां अधिक धूप नहीं है। पिछले कुछ दिन से यहां का सर्दियों का मौसम बहुत अच्छा था किंतु शीघ्र ही बर्फ़ पिघलने लगेगी और यहां का सौंदर्य समाप्त हो जाएगा। आजकल बाहर नमी और कीचड़ है। किंतु कुछ दिन से कुछ धूप निकलनी शुरू हुई है। कल मैं बच्चे को लेकर पार्क में गई थी। आपके देखने लायक था कि लोग अपने-अपने घरों से कैसे बाहर निकल आए थे। जैसे बारिश के बाद केंचुए। सभी धूप में बैठे थे और सूर्य के सामने रहना चाहते थे।

आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है बेहतर होगा। दार्जिलिंग की सीलन भरी जलवायु के कारण ही अधिक टौंसिल्स खराब हुए होंगे। मैं बताना चाहूंगी कि इन सर्दियों में मैं बहुत अधिक स्वस्थ महसूस कर रही हूं। कई सप्ताह बीत गए मुझे खांसी जुकाम नहीं हुआ। केवल जब बहुत अधिक सर्दी होती है तब मेरे बाईं ओर के फेफड़े में दर्द महसूस होता है। किंतु यह सहनीय है। मैंने डाक्टर से बात की थी उसने मुझे बताया कि मुझे सर्दी से बचना चाहिए और धुंध में बाहर नहीं निकलना चाहिए तथा जहां तक संभव हो धूप सेकनी चाहिए।

आपकी लिवर की समस्या अब कैसी है? क्या वह ठीक हो सकती है? यदि भारत में नहीं हो सकती तो कृपया यूरोप आकर कार्ल्सबाद में कोशिश करें। आप तो जानते ही हैं कि यहां कितना लाभ हो सकता है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि कलकत्ता में आपको अपनी माताजी से मिलने की इजाज़त मिल गई थी। इससे आपको तथा आपकी माताजी को राहत महसूस हुई होगी क्योंकि मां हमेशा अपने बच्चे से मिलने को बेचैन रहती है। आप भी अपनी माताजी से मिलकर प्रसन्न होंगे। क्या आपका भतीजा पहुंच गया है? उसने मुझे लिखा था कि वह फ़रवरी के प्रारंभ मे लौटेगा। मैं उसे पत्र लिखना भूल गई क्योंकि मैं बहुत व्यस्त थी।

श्रीमती हारग्रोव का कुछ समाचार है? यद्यपि हम दोनों एक ही शहर में रहते हैं लेकिन फिर भी पिछले क्रिसमस से मैं उनसे नहीं मिल पाई हूं। मैं बाहर बहुत कम जाती हूं। इसके अलावा बहुत से लोग विएना छोडकर जा चुके हैं। सेन इंग्लैंड में हैं। एक बार उन्होंने मुझे लिखा था कि वे अस्पताल में बहुत व्यस्त रहते हैं। मास्टर अभी भी जर्मनी में है। बाकी लोगों से मैं मिल नहीं पाई। इसलिए किसी से संपर्क नहीं है। कल यूनिवर्सिटी में सीलोन के विषय मे एक भाषण था। मैं वहां नहीं जा पाई क्योंकि वह सायं छः बजे प्रारंभ होना था। मैं शाम 7 बजे तक व्यस्त रहती हूं। मेरे माता-पिता वहां गए थे। वह काफ़ी दिलचस्प भाषण था।

अब मैं आपको आपके द्वारा जर्मन भाषा मे लिखे पत्र के लिए बधाई देती हूं। बहुत बढ़िया लिखा गया था। क्या मैं आपकी अशुद्धियां ठीक कर सकती हूं। इसके लिए आपको मुझे कुछ अनुवाद कर भेजना होगा या फिर जर्मनी में पत्र लिखना होगा। तब मैं आपकी गलतियां ठीक करके भेज सकूंगी।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम और मेरी ओर से शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
26 फ़रवरी, 1937

प्रिय सुश्री शेक्ल,

12 तारीख के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 23 तारीख को मिला। तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिखने के बाद मैंने श्री फ़ल्टिस को भी लिखा था। आशा है वे मेरी अशुद्ध जर्मन भाषा समझ सकेंगे।

यूरोप से प्राप्त पत्रो से पता चलता है कि इस वर्ष वहां अधिक सर्दी नहीं पड़ी। कलकत्ता में बल्कि सारे भारत में ही सर्दी अधिक नहीं पड़ती, इस वर्ष भी ऐसा ही रहा। जिंदगी मे पहली बार मुझे सर्दी से दूर रहने पर प्रसन्नता हुई, जबकि मैं सर्दी और धुंध का शौकीन हूं।

ऊपर के पते से तुम जान गई होगी कि मैं अभी कलकत्ता में ही हूं। यहां आशा से अधिक रह चुका हूं। जब मैं यहां आया था तो मुझ यहां पंद्रह दिन से अधिक रहने की आशा नहीं थी। लेकिन अब लगभग 2 1/2 माह हो गए हैं। यह पक्का है कि शीघ्र ही मैं कहीं अन्य स्थान पर जाऊंगा – किंतु पता नहीं कहां। इसलिए बेहतर यही है कि मुझे मेरे घर के पते पर पत्र लिखो – 1 वुडबर्न पार्क।

मेरी जर्मन भाषा शुद्ध करने के लिए धन्यवाद। बुरा मानने की जगह मैं तुम्हारा आभारी हूं कि तुमने इतना कष्ट उठाया।

अन्य कुछ ऐसा नहीं है जिसमें तुम्हे रुचि हो। श्रीमती मिलर आजकल देश का भ्रमण कर रही हैं। मार्च में वे बंबई से रवाना होगी। मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि एक दिन वे महात्मा गांधी से भी मिली थीं। मेरा एक भतीजा जो जर्मनी में पढ़ने गया था कई वर्ष बाद वापिस लौट आया है। दूसरा भतीजा शीघ्र ही उच्चशिक्षा के लिए इंग्लैंड के लिए रवाना होगा।

हां! मुझे माताजी से मिलने की इजाजत मिल गई है। यह सुविधा हम दोनों को सुखद लगी। जब कलकत्ता से दूर चला जाऊंगा तो इसकी कमी खलेगी।

कुल मिलाकर मेरा स्वास्थ्य ठीक है किंतु अभी कुछ लक्षण मौजूद हैं। मेरे चिकित्सकों की राय है कि अस्पताल मे रहना आवश्यक नहीं, इलाज कहीं भी रह कर हो सकता है।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं व तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
26.2.37

प्रिय श्री बोस,

आपके 10 तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद! वह मुझे 19 तारीख को मिला।

मैंने आपको क्रिसमस उपहार पंजीकृत सैंपल डाक द्वारा भेजा था। सौभाग्य से मेरे पास रसीद है। तब तक उसे संभाल कर रखूंगी जब तक कि आपसे कोई सूचना नहीं मिल जाएगी। मैं भी यहां पूछताछ करूंगी। आखिर चीज़ कहां गई यह पता करूंगी।

यहां का मौसम दुबारा सर्द, गंदा, धुंधभरा और बरसाती हो गया है। मैं बहुत परेशान हूं। मुझे आपके यहां के धूप भरे मौसम से ईर्ष्या हो रही है। हम दोनों जगह बदल लेते हैं। आप विएना आ जाइए मैं भारत चली जाऊंगी।

आपने श्रीमती मिलर की कलकत्ता यात्रा के विषय में पहले भी लिखा था। अब तो वे वापिस आने वाली होंगी। यहां आकर वे काफ़ी परेशान होंगी। जब वे विएना आएंगी तो मैं उनसे मिलूंगी। मेरे पास उनकी एक पुस्तक है जो मुझे उन्हें लौटानी है।

यह बुरी बात है कि आपने जर्मन सीखना दुबारा छोड़ दिया है। एलविरा को लिखे पत्र से मुझे आभास हुआ था कि आपने कितनी उन्नति कर ली है। यदि डॉ० फ़ाल्टिस को लिखा पत्र भी ऐसा ही लिखा गया है तो आपने बहुत अच्छा कार्य किया है। पिछले एयरमेल द्वारा भेजे पत्र में मैंने आपकी गलतियां ठीक करके भेजीं थीं आशा है वह आपको मिल गया होगा।

मैंने दुबारा फ्रेंच पढ़ना प्रारंभ कर दिया है क्योंकि मुझे एक छोटी सी नौकरी मिल गई है। मैं बहुत खुश हू। सच में अब मेरे पास घर के काम करने को भी बहुत कम समय मिल पाता है।

पिछले रविवार को मैं श्रीमती हार्ग्रोव से मिली थी। उन्होने सादर प्रणाम भिजवाया है। वे स्वयं भी बहुत व्यस्त हैं। सुश्री ग्रीम कृष्णाजी से मिलने इटली गई थीं, वहां एक मीटिंग थी। वे भी आपको पत्र लिखेंगी।

यह अच्छा है कि अब आप रोज अपनी माताजी से मिल सकते है। आपकी माताजी को यह बहुत अच्छा लगेगा क्योंकि वे बूढ़ी और एकाकी हैं और आपके निकट रहने की इच्छुक भी होंगी। आपका स्वास्थ्य कैसा है? आशा है पहले से बेहतर ही होगा। क्या डाक्टर आपके टॉसिल्स बचा पाएंगे? आपके लिवर की क्या स्थिति है? गॉल ब्लैडर के घाव का क्या हाल है? आशा है कि अब आपको आपरेशन के बाद की परेशानियां नहीं होंगी। आजकल मेरा गॉल ब्लैडर परेशान नहीं कर रहा। नवंबर 1936 के अंत में मुझे अटैक हुआ था। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ। आज मुझे फ्रॉ लोवी का पत्र मिला उसने भी आपको अपनी नमस्ते भेजी है।

क्या आप मुझे एक बार 'माडर्न रिव्यू' की प्रति भिजवा सकते है। अथवा कोई अन्य पत्र या पत्रिका। आजकल इस नौकरी की वजह से मेरा मित्रों से संपर्क नहीं हो पाता। परिवार से रोज़ मिल लेती हूं। बस यही सब चल रहा है।

इस सप्ताह विएना में बहुत शोर था। जर्मनी के विदेशा मंत्री वी० न्यूरेटन सोमवार को विएना आए थे। प्रातः उनके आने से लेकर शाम तक यहूदी शहर में चिल्लाते रहे और जनमत संग्रह की मांग करते रहे। मैं वहां नहीं गई थी, क्योंकि मैं भीड़-भाड़ से बचती हूं। हम लोग बेवजह मुसीबत में पड़ जाते हैं।

इस छोटी सी नौकरी के बावजूद मैं अभी ठीक-ठाक नौकरी की तलाश में हूं। किंतु कोई आशा नहीं है। आप नहीं जानते यहां आस्ट्रिया में स्थिति कितनी खराब है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे देश जाना चाहता है क्योंकि आस्ट्रिया 6.5 मिलियन लोगों को नौकरी देने में अक्षम है। धीरे-धीरे स्थिति और बिगड़ेगी। इसी कारण जन्मदर में भी कमी आती जा रही है। इसका अर्थ है दो या तीन साल के अदर आस्ट्रिया के कुछ हिस्सों में स्कूलों की कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाएगी। शिक्षक भी बेरोजगार हो जाएंगे। विएना के तो कई स्कूल बंद हो भी चुके हैं क्योंकि वहां पर्याप्त मात्रा में बच्चे नहीं थे।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

सेंसर द्वारा पारित

मेडिकल कालेज अस्पताल
कलकत्ता
15 मार्च, 1937

प्रिय सुश्री शेक्ल,

26 फरवरी के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे 11 तारीख को मिला।

पिछला पत्र लिखने के बाद मुझे सुपरिंटेंडेंट आफ़ पुलिस ने बताया कि उसके कार्यालय मे मेरे लिए कोई पार्सल नहीं आया। वास्तव में शिकायत करते समय ही मेरे पुराने अनुभवों के आधार पर मुझे मालूम था कि पार्सल नहीं मिल पाएगा। फिर भी यदि तुम मुझे रसीद भेज दो तो मै डाक विभाग से पूछताछ कर सकता हूं। तुम भी वहां डाक विभाग में शिकायत दर्ज करा सकती हो। यदि तुम ऐसा करो तो कृपया रसीद शिकायत के साथ मत भेजना केवल संख्या और दिनांक का जिक्र कर देना। यदि तुम रसीद यहां भेज दोगी तो यहां डाक विभाग पार्सल की खोजबीन का प्रयास कर सकता है।

ऊपर के पते से तुम जान जाओगी कि मैं अभी भी कलकत्ता के अस्पताल में ही हूं। मुझे यहां तीन महीने हो गए हालांकि जब दिसंबर में मैं यहां आया था तो मुझे उम्मीद थी कि दो या तीन सप्ताह से अधिक यहां नहीं रहूंगा। आजकल तेजी से गर्मी बढ़ रही है। दिन मे बहुत गर्मी होती है हालांकि रातें ठीक हैं। पिछले साल मार्च के अंत में जब मैं बैगस्टीन से चला था तो वहां अभी भी कुछ बर्फ शेष थी। यहां सपने में भी बर्फ नहीं दीख सकती क्योंकि जागते मे ही हमने कभी बर्फ़ नहीं देखी। हिमालय पर्वत पर पड़ी बर्फ़ को दूर से देखने पर मन पर कोई प्रभाव नहीं पडता।

मुझे प्रसन्नता है कि तुमने फिर से फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है। मेरे विचार से अन्य भाषाओं का ज्ञान लाभदायक है। इससे व्यक्ति के मन और बुद्धि का विकास होता है। इस अस्पताल से निकलकर कहीं और जाने पर मैं जर्मन सीखना दुबाना शुरू कर दूगा। यहां रहकर पढ़ाई करना कठिन है, यहां बहुत शोर-शराबा है। फिर शाम को घर जाता हूं और सुबह गाड़ी में दूर तक घूमने जाता हूं (साथ में पुलिस अधिकारी रहता है। मैं स्वतंत्र व्यक्ति नहीं हूं।)

विशेषज्ञों की राय है कि मेरी तबीयत की खराबी का कारण टांसिल नहीं है। गॉल ब्लैडर ठीक है उसकी ओर से कोई कष्ट नहीं है। चिकित्सको की राय अलग अलग है। शिकायत संभवत: लिवर में, फेफड़ों में या फिर कहीं और है। डॉ॰ लेफ्टिनेंट कर्नल वेर होज, जो यहां मेरा इलाज कर रहे हैं। उनकी राय है कि लिवर में खराबी है न कि

फेफड़ों में। मेरे विचार से उनका कहना ही ठीक है क्योंकि दर्द अपेक्षाकृत कम है, यदि कोई अन्य कारण होता तो कष्ट अधिक रहता।

क्या तुम्हारा परिवार इन गर्मियों में गांव जा रहा है? क्या तुम्हारे गांव में यहां की अपेक्षा गर्मी देर से आती है।

यदि श्रीमती लोवी को पत्र लिखो तो मेरा स्मरण दिलाना। जो अखबार तुमने चाहे हैं - वे तुम्हारे लिए मनोरंजक सिद्ध होंगे - साप्ताहिक, मासिक आदि। बहरहाल जब मैं कोई निर्णय कर लूंगा तो तुम्हे अखबार भेजने लगूंगा। मेरे विचार से मार्डन रिव्यू तुम्हे पसंद नहीं आएगा क्योंकि उसमें केवल लेख प्रकाशित होते हैं - शायद इलस्ट्रेटेड वीकली में चित्र रहते हैं, वह तुम्हें पसंद आएगी।

आशा है तुम स्वस्थ हो। माता-पिता को प्रणाम व तुम्हें शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
18.3.37

प्रियश्री बोस,

आपका 26 तारीख का पत्र मुझे 8 तारीख में मिला। उसके लिए धन्यवाद। यह अच्छा है कि आपने श्री फाल्टिस को जर्मनी भाषा में पत्र लिखा। आशा है वे उसे आसानी से पढ़ गए होंगे। अब मेरी उनसे मुलाकात नहीं होती क्योकि व्यस्तता के कारण मैं कई-कई सप्ताह शहर नहीं जा पाती।

यहां इस वर्ष सर्दी बहुत कम पड़ी किंतु मौसम की भविष्यवाणी करने वालों का कहना था कि सर्दी बहुत तेज पड़ेगी। किंतु वे जो कुछ बताते हैं उसका उल्टा सोचकर चलना ही ठीक है। अब धीरे-धीरे बसंत ऋतु का आगमन हो रहा है। कभी-कभी मौसम बहुत सुहावना हो जाता है कुछ फूल भी खिलने शुरू हो गए हैं। हालांकि अभी पेड़-पौधों पर फूल नहीं आए हैं। इसमे अभी कम से कम एक महीना और लगेगा। आजकल मैं बच्चे की देखभाल कर रही हूं, इसलिए मुझे प्रतिदिन उसके साथ सैर को जाना पड़ता है। यह बच्चे के साथ साथ मेरे लिए भी हितकर है क्योंकि जब तक कोई मुझे मजबूर न करे तब तक मैं सैर करने नहीं निकलती।

एक दिन मैं ने कलकत्ता के एक अखबार में रवींद्रनाथ टैगोर के साथ श्रीमती मिलर का चित्र देखा था। क्या आपने भी देखा था? वह 21 फरवरी के 'द ओरिएंट' में भी छपा था। वे इस चित्र में बहुत कमजोर लग रही थीं इसलिए मुझे बहुत दुख हुआ। विएना में वे ऐसी नहीं लगती थीं।

पता नहीं अभी भी आप कलकत्ता में ही है या नहीं? मेरे विचार से वहां का मौसम आपके लिए उपयुक्त नहीं होगा आपको पर्वतो पर चले जाना चाहिए। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके स्वास्थ्य में सुधार है। मुझे आशा है आपका स्वास्थ्य और बेहतर होगा अत: इसलिए पूर्ण स्वास्थ्य की कामना करते हुए शुभकामनाएं भेज रही हूं।

जो बुक कवर खो गया उसका कोई समाचार मिला? यदि नहीं तो कृपया मुझे सूचित करें ताकि मैं यहां पूछताछ करूं और मुझे उम्मीद है कि यहां विएना में मैं उसका अता-पता लगाने में सफल हो जाऊंगी। यदि ऐसा नहीं हो पाया तो डाक विभाग मुझे जुर्माना अदा करेगा।

सिस्टर एलविरा पुन: विएना मे आ गई हैं। एक दिन मैं उनसे मिलने रूडोल्फहॉस गई थीं। पहले की अपेक्षा अब वे बेहतर लग रही और क्योंकि काफी दिन आराम कर चुकी हैं। किंतु शीघ्र ही अस्पताल की हवा उन्हें फिर बीमार कर देगी। उन्होंने अपनी शुभकामनाएं भिजवाई हैं। वे स्वयं आपको पत्र लिखकर आपके पत्र के प्रति आभार व्यक्त करतीं, किंतु आजकल वे अस्पताल में अत्यधिक व्यस्त हैं क्योंकि सभी कमरे भरे पड़े हैं जिसका अर्थ है नर्सों के लिए अधिक [illegible]"

पता नहीं मैंने पहले आपको यह लिखा था या नहीं कि विएना के 'होहनस्ट्रासे' का द्वितीय भाग समाप्त हो चुका है। शायद आपको याद हो कि एक बार हमने इसे देखा था। हम लोग ट्राम नं० 38 के टर्मिनल स्टाप से काल्हनबर्ग को ओर गए थे। वहां से हम काल्हनबर्ग की जाने वाली नई बनी सड़क पर गए थे। अब उन्होंने वह सड़क लियोपोल्ड्सबर्ग तक बना दी है। मैं स्वयं तो वहां नहीं गई किंतु मैंने अखबारों में इस विषय में पढ़ा है और चित्र देखे हैं। हमारी सरकार का यह कार्यक्रम है कि वह नई सड़कें बनाएगी और पुरानी सड़कों की मरम्मत करेगी। यह अच्छी बात है क्योंकि आस्ट्रिया की सड़कों को अच्छी सड़कें नहीं कहा जा सकता। तिपाहिया व दुपहिया वाहनों की दृष्टि से तो ये बहुत ही खराब हैं। आजकल आस्ट्रिया में बहुत से विदेशी अपनी गाड़ियों में आते हैं इसलिए सड़को की मरम्मत करना आवश्यक हो गया है।

क्या आपकी थोड़ी बहुत जर्मन जारी है? आपके लिए यह बहुत फायदेमंद रहेगी। मैंने दुबारा फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है और मैं खुश हूं कि मैं ऐसा कर पा रही हूं। दुर्भाग्यवश मेरे फ्रेंच अध्यापक को मई के आरंभ मे गर्मियो की छुट्टियों में कहीं जाना है। किंतु मुझे उम्मीद हो कि वर्षा ऋतु में मैं पुन: पढ़ सकूंगी। आजकल मैंने काफी प्रगति की है इसलिए यदि बीच में रुकना पड़ा तो मुझे बहुत दुख होगा।

जब आपके पास समय हो और आपकी इच्छा हो तो कृपया मुझे पत्र अवश्य लिखें। अब यहीं समाप्त करती हूं क्योंकि मुझे दोपहर के कार्य के लिए जाना है। आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

मैं,

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः - मेरे माता-पिता व बहन की ओर से आपको शुभकामनाएं।

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
18.3.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें सूचित कर दूं कि अचानक कल रात मुझे रिहा कर दिया गया। रात दस बजे मैं अस्पताल से घर आ गया।

फ़िलहाल मैं अत्यधिक व्यस्त हूं, किंतु अगले सप्ताह तुम्हें लंबा पत्र लिखूंगा। मैं आज़ादी से इधर-उधर घूम सकता हूं और मेरी डाक भी अधिकारियों द्वारा सेंसर नहीं होगी, हालांकि चोरी छुपे यह सदा सेंसर की जाती रहेगी।

आशा है आप सब लोग पूर्णतः स्वस्थ है। यह समाचार वहां सभी मित्रों को दे देना। शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

24.3.37

प्रिय श्री बोस,

कुछ दिन पहले मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि आप आज़ाद कर दिए गए हैं। मेरी बधाई स्वीकार करें। सिस्टर एलविरा और मैं आपके स्वास्थ के लिए आज रात शराब पिएंगी। हार्दिक बधाई और ईस्टर की शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल
(सिस्टर एलविरा के साथ कार्ड)

38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
25.3.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले सप्ताह, 18 तारीख को मैंने जल्दबाजी में तुम्हें एयरमेल से एक पत्र लिखा था, जो शायद अब तक तुम्हें मिल चुका होगा। रिहाई के बाद से मैं अपनी माताजी के पास रह रहा हूं। यह घर मेरे भाई के घर के बिल्कुल साथ है। रात-दिन मिलने वालों का तांता लगा रहता है, जिससे मैं व्यस्त रहता हूं और थक भी जाता हूं। मैं कलकत्ता छोड़कर किसी स्वास्थ्य केंद्र में परिवर्तन के लिए जाना चाहता हूं। आज मैं साधारण डाक द्वारा कुछ समाचार पत्र भिजवा रहा हूं जिनमे मेरी रिहाई की खबर छपी है। इसके साथ एक छोटी सी कटिंग और भेज रहा हूं। मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मेरी रिहाई की हमे किसी को भी आशा नहीं थी। भविष्य में मैं तुम्हें प्रति सप्ताह साधारण डाक से पत्र लिखने की कोशिश करूंगा। अब मैं हर प्रकार आज़ाद हूं, हालांकि मेरे पत्र अभी भी पुलिस द्वारा सेंसर किए जाते रहेंगे।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? श्रीमती मिलर ने बंबई से तार दिया है कि वे 25 तारीख (आज) को बंबई से रवाना होंगीं। उन्होंने मुझसे पूछा है कि विएना के मित्रों को कोई संदेश भेजना है। मैंने उन्हे बता दिया कि कोई विशेष संदेश तो नहीं हैं लेकिन वहां सभी को मेरी नमस्ते कहिएगा।

तुमने कुछ भारतीय समाचार पत्रों के लिए लिखा है। मैं तुम्हें साप्ताहिक इलेस्ट्रेटेड भिजवाने का प्रबंध कर रहा हूं। क्या तुम्हें दैनिक या साप्ताहिक अखबार भी चाहिए? यदि चाहिए तो मैं आसानी से इन्हें भिजवाने का प्रबंध कर सकता हूं। किंतु मुझे डर है कि तुम्हारे पास दैनिक अखबार पढ़ने का समय नहीं होगा। और रोज़ाना अखबारों की भारतीय खबरें तुम्हारी समझ से भी परे होंगी। तुम क्या चाहती हो मुझे बताओ। श्रीमती वेटर कैसी हैं? वे मुझे निरंतर पत्र नहीं लिखतीं। क्या तुम कोई भारतीय भाषा पढ़ रही हो? किसी एक को सीखने की कोशिश क्यों नहीं करतीं? माता-पिता को प्रणाम, तुम्हें व तुम्हारी बहन को हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

26.3.37

प्रिय श्री बोस,

आपके दो पत्र (15 और 18 तारीख का) कल रात एक साथ मिले। बहुत-बहुत धन्यवाद। वास्तव में मै आपकी रिहाई की खबर सोमवार से ही जान चुकी थी। आप अंदाजा लगा सकते है कि इस खुशखबरी से हमें कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने सभी मित्रों को सूचित कर दिया था। आजकल मै अत्यधिक व्यस्त हूं इसलिए प्रत्येक मित्र को पत्र नहीं लिख सकी लेकिन शीघ्र ही लिख दूंगी।

इस अवसर पर मेरे परिवार की व मेरी बधाई स्वीकार करें। ईश्वर करे कि अब आप सदा आजाद रहें।

खो गए पार्सल के विषय में, इस पत्र को डाक में डालने से पूर्व पोस्ट आफ़िस से पूछताछ करूंगी और यदि आवश्यक हुआ तो शिकायत के साथ रसीद भी भेज दूंगी, अत: इसे भारत भेज नहीं पाऊंगी।

मै समझ सकती हूं कि आपको बहुत से काम हैं। आपका अधिकांश समय मिलने-जुलने में व पत्र लिखने मे ही बीतता होगा। इसके बावजूद आप इतनी जल्दी मुझे पत्र लिख लेते हैं इसके लिए मैं आपकी आभारी हूं। आपके लिए आज़ाद होना हितकर है, क्योंकि गर्मियां आ रही हैं, अत: आप अपने को इस गर्मी से आसानी से बचा सकते हैं। विएना में अभी बहुत गर्मी नहीं पड़ी है। दो या तीन बार वह भी सिर्फ़ एक दिन के लिए। अगले दिन फिर बरसात और सर्दी हो जाती है। आज मौसम अच्छा है। दुर्भाग्यवश मुझे दोपहर बाद नीचे शहर में जाना होगा उस बच्चे की देखभाल के लिए जिसकी देखभाल मैं उसकी मां के साथ करती हूं। बच्चे की नाक बह रही है उसे डाक्टर के पास ले जाना है। बहुत खराब नौकरी है, क्योंकि बच्चा बहुत बीमार है, वह चीखता चिल्लाता है जिससे मेरा मन घबराता है। ईस्टर पर हमें बुडापेस्ट जाना था किंतु बच्चे की बीमारी की वजह से संभव नहीं।

फ्रेंच में मैने काफी प्रगति की है। मैं बहुत प्रसन्न हूं, क्योंकि इस विषय में मुझे बहुत दिलचस्पी है। यदि मेरे पास और पैसा और समय होता तो मैं और भाषाएं भी अवश्य सीखती।

कल शाम मैं सिस्टर एलविरा के साथ आपके स्वास्थ्य के लिए जाम पीने गई थी। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था। आशा है आपको मिल जाएगा।

आप मुझे अखबार भिजवाने की सोच रहे है, इसके लिए धन्यवाद। जो आपको अच्छा लगे वही चुन ले। आजकल मेरे पास पढ़ने के लिए समय का आभाव है किंतु मैं किसी न किसी प्रकार समय निकालूंगी क्योंकि पढ़े बिना रहना मेरे लिए असंभव है।

यदि आप विस्तार से मुझे पत्र लिख सकें तो बेहतर होगा। किंतु जब आपके पास समय हो तब। मैं स्वयं लंबा पत्र नहीं लिख पाती क्योंकि समय कम रहता है और मुझे पत्र को आज की डाक में डालने की जल्दी रहती है।

मेरा विश्वास है कि आपकी परेशानी लिवर के कारण ही है। मेरे लायक कोई सेवा हो तो अवश्य बताएं।

मेरे परिवार की ओर से शुभकामनाएं। मेरी भी शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

मैं रसीद भेज रही हूं, यदि पार्सल न मिल पाए तो कृपया रसीद मुझे वापिस भेज दें। मैं यहां विएना में कोशिश करूंगी। मुझे बताया गया है कि रसीद के बिना सब व्यर्थ है।

सादर
एमिली शेंक्ल

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
5 अप्रैल 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि पिछले सप्ताह मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख सका इसलिए इस सप्ताह एयरमेल से पत्र भेज रहा हूं। भविष्य में साधारण डाक से ही पत्र भेजूंगा। मेरा स्वास्थ्य संतोषजनक नहीं है इसलिए शीघ्र ही मैं परिवर्तन की दृष्टि से कलकत्ता छोड़ दूंगा। हां मैं अब पूर्णतया स्वतंत्र हूं किंतु मेरी डाक अभी भी चोरी छुपे सेसर की जा रही है। पंद्रह दिन पहले मैंने अखबारों मे छपी अपनी रिहाई की खबरों की कटिंग्स तुम्हे भेजी थीं। कल मेरा जनता द्वारा स्वागत किया जाएगा, जहां बड़ी संख्या में लोग एकत्र होगे। डाक्टरों ने मुझे केवल एक स्वागत समारोह में उपस्थित रहने की इजाजत दी है इसलिए उसके बाद मैं परिवर्तन के लिए कहीं चला जाऊंगा और तब तक किसी जन समारोह का निमंत्रण स्वीकार नहीं करूंगा जब तक कि पर्वत से लौटकर नहीं आ जाता। कृपया अपने स्वास्थ्य के विषय में विस्तृत सूचना दो।

18 मार्च और 6 मार्च के तुम्हारे एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्रों के लिए धन्यवाद। श्री फ़ाल्टिस तथा बर्लिन के अन्य मित्रों को मेरी रिहाई की सूचना दे देना। श्रीमती किट्टी कुर्टी का पता है, मोम्सन स्ट्रीट, 69, बर्लिन चार्लट्नबर्ग। आशा है तकलीफ के लिए क्षमा करोगी।

कलकत्ता के एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'अमृत बाजार पत्रिका' को तुम्हें भिजवाने का प्रबंध कर दिया है। कृपया मुझे सूचित करो कि क्या कलकत्ता से प्रकाशित एक अन्य चित्रमय पत्र ओरिएंट क्या तुम्हें प्राप्त हो रहा है।

डाक रसीद के लिए धन्यवाद। मैं खो गए पार्सल के विषय में डाक विभाग को लिखूंगा। यदि असफल रहा तो रसीद तुम्हें वापिस लौटा दूंगा।

वहां सभी मित्रों, विशेष रूप से सिस्टर एलविरा को मेरी नमस्ते।

यह जानकर अच्छा लगा कि तुम फ्रेंच सीखने में प्रगति पर हो।

जर्मन भाषा में तुम लोग 'फैमिली' का उच्चारण कैसे करते हो। फ़ामीली कहते हो अथवा फ़ैमिली।

तुमने और सिस्टर एल्वीरा ने जो पोस्टकार्ड मुझे लिखा था वह अभी नहीं मिला है। आशा है अगले सप्ताह तक मिल जाएगा। मेरे विषय में चिंता करने के लिए धन्यवाद। मुझे कोई नया पार्सल मत भेजना क्योंकि वे मुझ तक नहीं पहुंचते, पिछले पार्सल की भांति।

तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम देना। तुम्हारी बहन व तुम्हें शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

5.4.37

प्रिय श्री बोस,

25 तारीख के एयरमेल पत्र के लिए धन्यवाद। वह मुझे पहली तारीख को मिला। आपके पिछले पत्र के अनुसार आपकी रिहाई की सूचना मैंने विएना के लगभग सभी मित्रों को दे दी थी। किंतु विएना के बाहर के मित्रों को नहीं लिख पाई। मैं बहुत व्यस्त हूं। किंतु इस सप्ताह अवश्य लिख दूंगी।

मुझे पता है कि आने-जाने वाले आपको रात-दिन व्यस्त रखते होंगे। व्यक्ति को सांस लेने की भी फुर्सत नहीं मिलती, क्योंकि लोग दूसरों के समय और शक्ति का सदुपयोग करना जानते हैं। मेरे विचार से यदि आपको स्वास्थ्य केंद्र जाने का अवसर मिले तो अवश्य जाएं। पहले ठीक हो जाए तभी आने-जाने वालों से मिलना शुरू करें। वैसे अब वास्तव में आपको क्या शिकायत है? आशा है लिवर की समस्या होगी न कि फेफड़ों की। क्योंकि मेरे विचार से यह अधिक देर तक रहने वाली समस्या है। किंतु आप बहादुरी से इसका मुकाबला करने में सफल रहेंगे। अब तो आपके लिए इसका

मुकाबला करना और भी आसान है क्योंकि अब आप आजाद हैं। क्योंकि मेरा विश्वास है कि यह विचार कि व्यक्ति स्वतंत्र नहीं हैं और अपनी इच्छा से कहीं आ जा नहीं सकता स्वास्थ्य को खराब करने में सहायक है।

यह आपका उपकार होगा कि आप कुछ साप्ताहिक पत्र मुझ तक पहुंचाने की व्यवस्था कर देंगे। यही ठीक रहेगा कि साप्ताहिक अखबार मुझ तक पहुंचें क्योंकि दैनिक पत्र पढ़ने के लिए मेरे पास समय नहीं है। सुबह से शाम तक व्यस्त रहती हूं। जब घर लौटती हूं तो बहुत थकी हुई होती हूं, लेकिन मुझे बुरा नहीं लगता क्योंकि मैं जितना अधिक कार्य और जिम्मेदारी संभालती हूं उतनी ही शक्ति और ऊर्जा मुझमें पैदा हो जाती है। मेरा स्वास्थ्य ठीक-ठीक है, किंतु मेरे पास इतना समय नहीं कि मैं इसकी विशेष देखभाल करूं और स्वयं पर दया करती रहूं। इसलिए मुझे सामान्यतः पीड़ा नहीं होती। पिछले कुछ दिन से मेरे गॉल ब्लैडर मे दर्द है, जिसकी मैं उपेक्षा नहीं कर सकती। इसके कारण मेरा वजन भी घटा है। किंतु इससे कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। अन्यथा मैं स्वस्थ हूं और प्रसन्न एवं ऊर्जा से भरपूर हूं।

विएना का मौसम बहुत खराब है। ईस्टर के दिन से ही बारिश ही बारिश हो रही है। बाहर जा नहीं सकते जिससे बहुत तकलीफ़ होती है क्योंकि हर समय घर में घुसे रहना अच्छा नहीं लगता।

मेरे विचार से श्रीमती मिलर इस माह के मध्य तक विएना पहुंच जाएंगी। पता नहीं वे मुझे फ़ोन करेंगी या नहीं। जितने दिन वे भारत में रहीं उन्होने मुझे एक पंक्ति भी नहीं लिखी। हालांकि मुझसे वादा किया था। कैसे किसी औरत पर विश्वास किया जा सकता है।

जिस दिन आपका पत्र मिला उसी दिन मैंने श्रीमती वेटर को फोन कर आपकी नमस्ते उन तक पहुंचा ही थी। वे आपके विषय में सुनकर बहुत प्रसन्न हुईं। वे भी बहुत व्यस्त रहती हैं इसलिए निरंतर अंतराल पर पत्र नहीं लिख पातीं। उन्होने मुझे कहा है कि मैं आप तक उनकी हार्दिक शुभकामनाएं पहुंचा दूं। श्रीमती हारग्रोव का भी पत्र आया था। उन्होंने भी आपको शुभकामनाएं भेजी है। वे भी बहुत व्यस्त हैं और आजकल योग कर रही है ताकि आगामी अगस्त तक हालैंड के उपयुक्त बन सकें। इस वर्ष फिर कृष्णामूर्ति का कैंप लगेगा जिसमें वे जाना चाहेंगी। एक बार उन्होंने मुझे भी वहां ले चलने की बात की थी। मेरे विचार से वैसा वातावरण मेरे उपयुक्त नहीं क्योंकि फ़िलहाल मुझे ध्यान की और दर्शन या धर्म पर भाषण सुनने की आवश्यकता नहीं है। यह काम करने का समय है। बुढ़ापे में ध्यान करूंगी। फ़िलहाल मैं काम करना चाहती हूं।

नहीं, फ़िलहाल मैं कोई भारतीय भाषा नहीं सीख रही। फ़िलहाल यह असंभव है। किंतु मेरी फ्रेंच की पढ़ाई जारी है जो मुझे बहुत पसंद है। बड़ी तेजी से प्रगति कर रही

हूं। केवल बोलचाल में भाषा प्रयोग की कमी है। आशा है अब मुझे पाठ मिल जाएंगे। मुझे जर्मन भाषा पढ़ानी होगी। किंतु अभी पक्का नहीं है। अब मेरे पास केवल रविवार का दिन खाली होता है। उस दिन भी कोई मिलने वाला आ जाता है या मैं अपनी मित्र से मिलने चली जाती हूं। उस समय भी हम खाली नहीं बैठते, कुछ कढ़ाई आदि करते हैं या मैं उसे गिटार बजाना सिखाती हूं।

आजकल गर्मी की चिंता सता रही है। हम पुनः पोलाऊ जाएंगे, वह बहुत प्यारी जगह है और इसके इलाका वहां हमारे बहुत से मित्र हैं जिससे बहुत मजा आएगा।

मेरे ख्याल से मैंने अपने बारे में बहुत कुछ बता दिया अब कुछ आपके विषय में पूछना चाहिए। आजकल आप क्या कर रहे हैं? क्या कोई नई पुस्तक लिखने का विचार है? खो चुके पार्सल की रसीद आपको मिली? यदि आपको सफलता न मिले तो कृपया यह मुझे लौटा दें तब मैं इस ओर से पूछताछ करूंगा, संभवतः कुछ सफलता मिले।

कुछ दिन पहले मेरी डायरेक्टर फ़ाल्टिस से फ़ोन पर बात हुई थी, तब उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें आप का जर्मन भाषा में लिखा पत्र मिल गया है वे बहुत हैरान थे। बहुत बढ़िया लिखा था और कोई गलती भी नहीं थी। आपको यह भाषा सीखनी जारी रखनी चाहिए, यह दुख की बात है यदि आप इसे छोड़ देंगे तो। आपने बहुत प्रगति कर ली है। संभव है आपको फिर कभी यूरोप आने का अवसर मिले तब आपको प्रसन्नता होंगी कि आप यह भाषा जानते हैं। मेरे लायक कोई सेवा हो तो कृपया अवश्य लिखें। मुझे प्रसन्नता होंगी।

मेरे माता-पिता व मेरी बहन आप को शुभकामनाएं भेज रहे हैं। मेरी भी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल

पुनश्चः - आपकी आभारी हूं कि आप मुझे प्रायः पत्र लिखते रहते हैं। मैं भी जहां तक संभव होगा तत्काल उत्तर देने का प्रयास करूंगी। अतः मैं भी प्रति सप्ताह साधारण डाक द्वारा आपको पत्र लिखूंगी। यदि कुछ महत्वपूर्ण हुआ तभी एयरमेल से भेजूंगी।

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
8.4.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

क्या तुम साथ वाला पत्र श्री गैरोला के पास भेज दोगी? पता नहीं वे अभी भी अल्सर स्ट्रीट, 20/15 में ही रह रहे हैं या नहीं। यदि नहीं तो कृपया उनका पता लगाओ। संभवतः होटल द फ्रांस के लोग उनका पता जानते हों। गैरोला से कहना कि वे वही करें जो मैंने पत्र में लिखा है। यदि गैरोला विएना में न हो तो सिंह या किसी अन्य भारतीय विद्यार्थी से आवश्यक कार्रवाई करने को कहना—जैसा मैंने गैरोला के पत्र में सुझाव दिया है।

यहां 6 तारीख को हुए जन समारोह की खबर की कुछ कटिंग्स भेज रहा हूं। क्या पिछले साल बंगला शब्दकोष मिल गया था?

तुम्हारा स्वास्थ्य आजकल कैसा है? शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता
15 अप्रैल 1937.

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारा 18 और 26 मार्च का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र और तुम्हारा और एलविरा का कार्ड मिला। इन सबके लिए शुक्रिया।

आजकल यहां बहुत गर्मी पड़ रही है। एक सप्ताह मैं उत्तर की ओर पहाड़ों के लिए निकलूंगा।

कृपया सिस्टर एलविरा को मेरी शुभकामनाएं दे देना। मैं अलग से उन्हें नहीं लिख रहा हूं।

नहीं, आजकल मेरे पास जर्मन के लिए समय नहीं है। जब कलकत्ता से दूर चला जाऊंगा तब कोशिश करूंगा।

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। आजाद व्यक्ति के रूप में बहुत प्रसन्न हूं, किंतु बहुत से मिलने आने वालों के कारण बहुत थकान महसूस करता हूं। आशा है पहाड़ों पर अच्छा समय व्यतीत होगा।

आशा है तुम्हारी फ्रेंच ठीक चल रही है। इसे हर हाल में जारी रखो।

तुम्हारे गॉल ब्लैडर के दर्द की सुनकर चिंता हुई। अपने खान-पान के बारे में सावधानी बरतो।

तुम्हारे एक पत्र के साथ पार्सल की रसीद भी मिल गई थी, किंतु अभी कुछ नहीं कर पाया हूं।

तुम्हारा 5 तारीख (अप्रैल) का एयरमेल का पत्र मिला। तुम गांव कब जा रही हो? (पोलाऊ)

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। मेरे गले, लिवर या फेफड़े में तकलीफ़ है। किंतु मुझे आशा है कि यदि मुझे 6 माह का आराम मिल जाए या वातावरण में परिवर्तन हो जाए तो मैं ठीक हो सकता हूं। यही बात डाक्टर भी कहते हैं।

आप सब का क्या हाल है? तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम और तुम्हारी बहन व तुम्हें शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क,
38/2 एल्गिन रोड
कलकत्ता
22 अप्रैल, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं जल्दी में केवल कुछ पंक्तियां ही लिख रहा हूं। एक सप्ताह के अंदर-अंदर मैं पहाड़ों के लिए रवाना हो जाऊंगा। यदि पत्र लिखो तो इस पते पर लिखना-

द्वारा डॉ० एन० आर० धर्मवीर
डलहौजी, पंजाब, भारत।

तुम कैसी हो? मेरा स्वास्थ्य पहले जैसा ही है। यहां बहुत गर्मी है, जिससे मुझे थकान महसूस होने लगती है। तुम गांव कब जा रही हो? तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो इस विषय में लिखना। क्या फ्रेंच सीख रही हो? क्या तुम्हारी मुलाकात श्रीमती मिलर से हुई?

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

लाहौर
शनिवार, 1.5.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 14 तारीख का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र मुझे कलकत्ता में ही मिल गया था। 25 तारीख को मैं कलकत्ता से रवाना हुआ था और कांग्रेस पार्टी की एक बैठक के लिए 4 दिन के लिए इलाहाबाद में ठहरा था। आज प्रातः ही यहां पहुंचा हूं। शीघ्र ही पहाड़ के लिए रवाना हो जाऊंगा। मेरा वहां का पता रहेगा–द्वारा डॉ० एन०आर० धर्मवीर, डलहौजी (पंजाब)। मैं कुछ महीने डलहौजी में ही रहना चाहूंगा (यह लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर है।)

कृपया मुझे सूचित करो कि क्या तुम्हें चित्रमय 'ओरिएंट' और साप्ताहिक अमृत बाजार पत्रिका प्राप्त हो रही है?

श्रीमती फ़िलिप से तुम्हारे बारे में मेरी कोई बात नहीं हुई। उन्होंने मुझसे वहां के मित्रों को संदेश भिजवाने की बात की थी और मैंने कह दिया था कि सभी को मेरी नमस्ते कहिएगा।

इस सप्ताह मैं तुम्हें साधारण डाक से पत्र नहीं लिख सका, इसलिए एयरमेल द्वारा लिख रहा हूं।

यह जानकर दुख हुआ कि पेंशन कास्मोपोलाइट बिक चुका है। कृपया मुझे श्रीमती वेसी का पता लिखो। मेरे बक्सो का क्या हुआ?

तुमसे किसने कहा कि मेरी जर्मन अच्छी हो गई है? अपने खान-पान के प्रति सावधानी बरतो। मुझे यह जानकर परेशानी हुई कि तुम्हें दुबारा दर्द शुरू हो गया है। निश्चय ही यह खान-पान की वजह से है।

सेन आजकल कहां है? माथुर कहां है?

मैं पहले भी लिख चुका हूं कि अब मेरे लिए दुबारा यूरोप आना संभव नहीं है। मुझे आशा है कि डलहौजी का परिवर्तन मुझे ठीक कर देगा। मुझे खुशी है कि तुम्हारी राय मुझसे मिलती है।

मैंने पुरी जाने का विचार त्याग दिया–(यह समुद्र के किनारे है।) क्योंकि आजकल पहाड़ों पर मौसम अच्छा होगा।

एक दो सप्ताह में तुम्हे कुछ चित्र भेजूंगा।

तुम्हारे लंबे पत्र के लिए धन्यवाद। यद्यपि मैं लंबा पत्र नहीं लिख पाता। तुम जानती हो कि मै अपने मित्रों को कभी नहीं भूलता और उनके समाचार पाकर प्रसन्न होता हूं।

कृपया संक्षेप में मुझे लिखो कि तुम्हारे पास कब वक्त होता है और तुमने पिछला वर्ष कैसे बिताया। पता नहीं मैं यहां से तुम्हें चूड़ियां भेज पाऊंगा या नहीं, किंतु तुम यूरोप से ही क्यों नहीं खरीद लेतीं? तुम्हें किस प्रकार की चाहिएं? सभी चूड़ियां चेकोस्लोवाकिया अथवा जापान से आयात की जाती हैं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
4.5.37

प्रिय श्री बोस,

आपके दो पत्र (15 अप्रैल का साधारण डाक से और 22 तारीख का एयरमेल से) समय पर मिल गए थे, उनके लिए धन्यवाद।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप परिवर्तन के लिए पंजाब जा रहे हैं। आशा है शीघ्र ही आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। डलहौजी में शायद इतनी गर्मी नहीं होगी। यहां अप्रैल में बहुत गंदा मौसम रहा। रोज बारिश और सर्दी। पहली तारीख से कुछ बदला है और आजकल बहुत अच्छा है। पेड़ पौधे हरे-भरे हैं और फूलों से लदे हैं। सुंदर दृश्य है।

मेरी फ्रेंच काफ़ी सुधरी है। किंतु घर पर अभ्यास करने के लिए बहुत कम समय मिलता है। सुबह घर के काम में और दोपहर बाद उस बच्चे की देखभाल में व्यस्त रहती हूं। शाम को और बहुत से काम करने होते हैं। पढ़ाई तो मेरे लिए सुख का साधन मात्र बनकर रह गया है। फिर मुझे अपनी अलमारी की देखभाल करनी होती है, आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे पास कितना खाली समय रहता है, वास्तव में बिल्कुल भी नहीं। किंतु अब मैं कुछ ग्रोशन कमा लेती हूं, जिससे अपने पाठ की कीमत अदा कर सकती हूं, कुछ कपड़े खरीद सकती हूं और पत्राचार कर सकती हूं। बचत कुछ नहीं हो पाती। मैंने पैसा बचाने की काफ़ी कोशिश की लेकिन असंभव कार्य है।

मेरा स्वास्थ्य वैसा ही है। प्रायः गॉल ब्लैडर में दर्द हो जाता है। भोजन के प्रति सावधान रहती हूं, किंतु हर समय यह संभव नहीं, क्योंकि हमारे यहां प्रायः मीट बनता है। मैं केवल काल्ब्सफ़िश ले सकती हूं, लेकिन यह उन्हें पसंद नहीं। रिंडफ़िश और स्वानफिश मेरे लिए ठीक नहीं हैं। मैं मां से नहीं कह सकती कि मेरे लिए अलग पकाए, क्योंकि इसमें पैसा भी व्यय होगा और समय भी अधिक लगेगा। मां वैसे ही जल्दी थक जाती है। वह बूढ़ी हो चुकी है और काम इतना अधिक है कि जवान व्यक्ति भी नहीं कर सकता।

शायद 5 जुलाई को हम गांव के लिए रवाना होंगे। तभी स्कूल बंद होंगे। मेरी बहन अभी स्कूल में पढ़ रही है। इसलिए हमें उसकी छुट्टियों की इंतजार करना पड़ेगा।

पिछले दो सप्ताह से मुझे पत्रिका का साप्ताहिक अंक मिल रहा है। किंतु 'ओरिएंट' नहीं मिल पाया।

हां मैं श्रीमती मिलर से कई बार मिल चुकी हूं। वे अभी तक भारत की सुंदरता से प्रभावित हैं और विएना से अप्रसन्न हैं। कुछ दिन पहले मैं पेरान कास्मोपोलाइट से वस्त्र ले आई थी। श्रीमती वेसी ने पेरान बेच दिया था। पहले पत्र में भी मैंने यह लिखा था।

डलहौजी में कृपया आप कुछ चित्र खींचने का प्रयास करें। मैं भी पोलाक में यह कोशिश करूंगी। यदि रील महंगी न हुई तो।

श्रीमती हारग्रीव से बहुत दिनों से कोई संपर्क नहीं हो पाया। आजकल वे ध्यान में व्यस्त हैं, उन्होंने मुझे पत्र लिखा था। बाद में वे मुझे कुछ टाइपिंग का काम सौंपेंगी।

शेष विएना ज्यों का त्यों है। सभी मित्र ठीक-ठाक हैं और आपको शुभकामनाएं भिजवा रहे हैं। एक दिन श्रीमती कुर्टी का बहुत प्यारा पत्र मिला था। वे आपकी रिहाई की खबर सुनकर काफी प्रसन्न थीं।

क्षमा करें, अब मैं यहीं समाप्त करती हूं। आज प्रातः से मैं बहुत व्यस्त हूं। मैं घर में अकेली हूं, माता-पिता बाग में गए हैं और बहन स्कूल गई है। अब मुझे अपना भोजन तैयार करना होगा, यानी एक कप कॉफी। मैं अपने लिए खाना बनाने में बहुत आलस करती हूं। मैं पत्रों के उत्तर देकर लगे हुए ढेर को कम करना चाहूंगी। पता नहीं इतना ढेर कैसे लग गया।

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

लाहौर
6.5.37, बृहस्पतिवार

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले शनिवार मैंने तुम्हें यहां से एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था। पहली तारीख को मैं इलाहाबाद से यहां पहुंच गया था। वहां मैं चार दिन के लिए रुका था। क्या तुम ये जगहें नक्शे में देख सकोगी? 4 या 5 दिन बाद मैं डलहौजी पर्वत के लिए रवाना हो जाऊंगा। मुझे इस पते पर पत्र लिखनाः-

द्वारा डॉ० एन०आर० धर्मवीर
डलहौजी (पंजाब)

आज कुछ और लिखने को नहीं है। जब मैं यहां आया था तब मौसम बहुत अच्छा था, लेकिन अब गर्मी पड़ने लगी है।

तुम्हारे पिछले पत्र से यह पता चला कि तुम पपरिका आदि खाने लगी हो जो बुरी बात है। इसी से दर्द पैदा होता है। तुम अपने खान-पान का ध्यान क्यों नहीं रखतीं, जबकि तुम्हे पता है कि यही तुम्हारे कष्ट का मुख्य कारण है? मुझे आशंका है कि तुम शक्ति से अधिक कार्य कर रही हो, क्या नहीं? अपने अगले पत्र में मुझे यह समाचार देना कि तुमने अपना ध्यान रखना शुरू कर दिया है। इस डाक द्वारा तुम्हें कुछ पैसे भिजवाने की व्यवस्था कर रहा हूं।

कुछ माह डलहौजी रहने की योजना है। तुम गांव कब जा रही हो?

कृपया अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें शुभकामनाएं। लोती को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

लाहौर
11.5.37.

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारा 4 मई का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र आज प्रातः मिला जो डलहौजी से यहां भिजवाया गया है। अभी तक मैंने लाहौर नहीं छोड़ा है, किंतु आज रात डलहौजी के लिए रवाना हो रहा हूं। कल प्रातः वहां पहुंच जाऊंगा।

"मुझे अपनी कार्डरोब भी देखनी है?" से तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

मुझे यह जानकर दुख हुआ कि इन दिनों प्रायः तुम्हें दर्द हो जाता है।

तुम्हारी बहन आजकल क्या पढ़ रही है? मेरा विचार था कि वह मैट्रिक पास कर चुकी है।

ज्यादा कॉफ़ी मत पीना। यदि पीनी ही हो ज्यादा दूध डाल कर पियो और खाली पेट कभी मत लो। काफ़ी खाली पेट ली जाए तो गॉल ब्लैडर में अवश्य दर्द पैदा करती है।

आज कुछ और लिखने को नहीं है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखो। जो भारतीय पत्र मैंने अपनी रिहाई के संबंध में भिजवाए थे (18 मार्च) तथा कलकत्ता की बैठक (7 अप्रैल) के विषय में, वे तुम्हें मिले? माथुर या सेन का कोई समाचार?



1. बैगस्टीन, मार्च 1936



2 बैगस्टीन, दिसम्बर 1937
ए.सी. एन नाम्बियार, हैडी फुलोप-मिलर, नेताजी, एमिली और एमिया नाथ बोस



3 बैगस्टीन, दिसम्बर 1937



4 एमिली और अनिता, वियना, नवम्बर 1948



5 परिवार के साथ, वियना, नवम्बर 1948
बैठे हुए विभावती, शिशिर कुमार, अनिता, शरत चन्द्र
खडे हुए रोमा, एमिली, चित्रा

CENSORED AND PASSED
FOR D.C.S.B.

38/2 Elgin Road or
Woodburn Park
Calcutta
7. 12. 34

Dear Fl. Schenkl,

I arrived here on the 4th December without any trouble on the way. But I was too late. My father left this mortal world on the 2nd December — that is, about 40 hours before I reached Calcutta. My mother is utterly disconsolate, though we, brothers and sisters, are trying our best to console her. For a Westerner, it is difficult to understand our mentality. A Hindu wife's life is so bound up with that of her husband that life is unbearable to her in his absence. Nevertheless, we are hoping that she will be able to stand the bereavement. Recently, there have been many other ~~calamities~~ bereavements in our family and all these have had a cumulative effect on my parents.

I do not know if I shall be able to write to you in future. But in case I cannot, please do not misunderstand me. At present I am living like a prisoner in our house. This order of "home-internment" was served on me as soon as I landed in Calcutta. For the present, Government have allowed me to stay with my mother

LLOYD TRIESTINO

PIROSCAFO "Conte Verde"

29. 3. 36

P.S. If there is anything else to write, I shall write another letter before reaching Port Said — to same address. S.B.

Dear Miss Schenkl,

There are many things that I want to write to you about — but I shall write in a disconnected way — so please read the letter carefully. We are now one day's journey from Naples. The sea is fairly calm — thank God! As I am now old, I cannot stand a rough sea, which I could do, when I was a young man. It is beautiful and sunny — the blue sky above — the darker blue of the ocean all around us and in front of us — an unending expanse of water.

When I crossed the Italian frontier, there was no trouble at all. They looked at me and did not even ask me to open my boxes. At Villach, I stopped at the Bahnhof Restaurant for three hours and there finished the article which I posted to you. I think there was somebody watching me there — but I did not care, as I was busy writing. If that letter did not reach you, then they must have stolen it, because I posted it myself in the station postbox. There is not much to report about, after I crossed the frontier. I posted the pencil for you and registered it. And I spoke to A.K. about your

38/2, Elgin Road
Calcutta, 25. 3. 37

Dear Frl. Schenkl,

Last week, on the 18th, I hurriedly wrote you an air mail letter which you must have received by now. Since my release, I have been living with my mother in our old house which is a stone's throw from my brother's house. Day and night, I have a stream of visitors which keeps me busy and makes me tired. However, I am trying to leave Calcutta for change in some health resort. Today I am sending by ordinary post some papers giving news of my release. I am enclosing another small cutting with this. My health is not well. My release was somewhat unexpected for all of us. In future, I shall write to you by ordinary post and shall try to write a few lines every week. I am now quite free in every way, though my letters will always be secretly examined by the police censor.

How is your health please? And how is the weather there now? Here it is quite warm now. Mrs Kitty Miller has sent a telegram from Bombay saying that she is sailing from Bombay on the 25th (today). She asked me if I had any message for Vienna friends. I told her that I had no special message, but that she should give my greetings to all friends there.

You asked for some Indian paper. I am arranging to send you a weekly illustrated paper. Do you want a weekly or daily newspaper as well? I can arrange to send you either of them, if you want it. But I doubt if you will have time to read a daily newspaper and the Indian news in daily papers will not be understandable to you probably. Please let me know

Vienna, 26.5 87

Dear Mr Rose,

Many thanks for your kind letter of the 6th inst. which was to hand on the 24th inst. The same day American Express rang me up informing me about the money. Please let me thank you heartily for sending it. I shall put it in the bank and keep it in case you want me something to buy or arrange for you. In case I am in trouble myself I may also take your money. Anyway I will save it. I got a very good rate, $26·20 per £. If you remember, last year or rather two years ago, it was already down once to 25 $

By now you will be in Dalhousie and probably have already rested from the strain you must have had in Lahore. Of course, I can spot the very place on the map. But a map can never give you an idea about the place itself. How is Dalhousie? What sort of [illegible] there? Probably the climate will be heavenly for you. The weather in Vienna this [illegible] may not [illegible] just that is what I like. I am simply happy when it is very hot and also feeling well.

Yes, I promise herewith that I shall be very careful about eating and will keep as strict a diet as possible. Re overwork, there will soon be no possibility for overworking myself as the Indian family is leaving Vienna within a week. I am most sorry for this because I shall miss the child so much.

We will go into the country about the 8th of July. My address will be:

E SCHENKL,
MÄRZGASSE 112,
POLLAU b/HARTBERG,
(Ost Steiermark) (Austria)

I HAVE BEEN LONGING TO WRITE TO YOU FOR SOME TIME PAST - BUT YOU CAN EASILY UNDERSTAND HOW DIFFICULT IT WAS TO WRITE TO YOU ABOUT MY FEELINGS. I JUST WANT TO LET YOU KNOW NOW THAT I AM EXACTLY WHAT I WAS BEFORE, WHEN YOU KNEW ME. NOT A SINGLE DAY PASSES THAT I DO NOT THINK OF YOU. YOU ARE WITH ME ALL THE TIME. I CANNOT POSSIBLY THINK OF ANYBODY ELSE IN THIS WORLD. I AM ANXIOUS TO KNOW ABOUT YOUR THOUGHTS. PLEASE WRITE TO ME SOON IN YOUR OWN LANGUAGE (SIMPLE STYLE) BY AIR MAIL — SO THAT I MAY KNOW. I DO NOT KNOW WHAT I SHOULD DO IN FUTURE. (I AM NOT ABLE TO DECIDE.) I CANNOT TELL YOU HOW LONELY I HAVE BEEN FEELING ALL THESE MONTHS AND HOW SORROWFUL. ONLY ONE THING COULD MAKE ME HAPPY — BUT I DO NOT KNOW IF THAT IS POSSIBLE. HOWEVER, I AM THINKING OF IT DAY AND NIGHT AND PRAYING TO GOD TO SHOW ME THE RIGHT PATH. EVERY TIME I HEAR THAT YOU ARE NOT WELL, I FEEL SO UNHAPPY. DO TAKE CARE OF YOUR HEALTH SO THAT I MAY FEEL SOMEWHAT RELIEVED. EVER YOURS WITH MY HEART & SOUL.



Wien XVIII

OFFICE BEARERS FOR 1938
President:
SUBHAS CHANDRA BOSE
Treasurer:
JAMNALAL BAJAJ
General Secretary:
J B KRIPALANI

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
स्वराज भवन, इलाहाबाद
آل انڈیا کانگریس کمیٹی
سوراج بھون الہ آباد
ALL INDIA CONGRESS COMMITTEE
SWARAJ BHAWAN ALLAHABAD
TELEPHONE 341 TELEGRAM CONGRESS

President's Calcutta Address
38-2 Elgin Road, Calcutta
Telephone Park 59
Telegram "SUVASBOS"

Wardha, 27 7 38

Dear Frl. Schenkl,

My letter of the 8th inst. reached you on the 14th, while your letter of the 15th inst. reached me on the 19th. I left Calcutta on the 21st to attend a meeting of the Working Committee. I am going back to Calcutta tomorrow morning, reaching there after 24 hours. We had a busy and anxious time here — a ministerial crisis. You will read about it in the papers. I am sorry to know that you are as careless as ever and have not been to the doctor yet. Until you write to me that you have been to the doctor and have placed yourself under his treatment, I shall not write to you again. The time you waste in writing letters, you can usefully spend at the doctor's. Has Anne been there? I have not written to him for a long time. I shall send you the Indian Sages with great pleasure — but only when I hear from you that you have started your treatment. I am all right now — except that I have more work than I can manage. I have written to my uncle asking him to correspond with the gentleman in Germany for stamps. Have you heard from von Hans yet? I hope you are getting both the papers regularly now. How are you spending your time now — when Lotte is away? You must be feeling lonely. Your mother must be glad and also proud of you that you are working now. What is the German for friend — isn't it Liebling? I had been to see Gandhiji at his ashrama this afternoon. There was an Englishman who has become a monk. Then there was a German lady too. His English disciple — Miss Slade or Mirabehn was of course there. There is nothing more to write today — so I shall end. Auf Wiedersehen mein Kleines Liebling!

Yours sincerely
Subhas C Bose

P.S. In case you cannot manage the expenses of one week's trip to Berlin, I will be able to bear the money for the journey and as to [illegible] any restrictions regarding travelling [illegible] by [illegible] [illegible] conditions. S.C.B.

Berlin, 3. 4. '41

Dear Frl. Schenkl,

You will be surprised to get this letter from me and even more surprised to know that I am writing this from Berlin. I arrived in Berlin yesterday afternoon and would have written to you at once — but I was kept busy till evening. Most of the hotels are full and with difficulty a room could be found for me. I am shifting to another hotel today — "Nurnberger Hof".

My future programme is not settled — but in all probability, Berlin will be my headquarters. I do not know if I shall be able to come to Vienna. So you must come to Berlin to meet me. Can you come? You can understand how glad I would be to meet you.

It is possible that I may require a Secretary here. If so, can you come? Will your mother and sister agree to it?

My passport is not in my name but in the name of Orlando Mazzotta. So when you write, you will have to address me as Orlando Mazzotta. Please treat as

तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम। कुछ महीने तक मेरा पता यही रहेगा-द्वारा डॉ एन० आर० धर्मवीर, डलहौजी, पंजाब।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

विएना
20.5.37

प्रिय श्री बोस,

आपका पहली तारीख का पत्र मुझे पिछले हफ्ते में मिल गया था। किंतु खेद है मै तत्काल जवाब नहीं दे पाई।

आशा है आजकल आप डलहौजी मे होंगे। वहां कैसा लग रहा है? क्या आपके स्वास्थ्य मे सुधार हुआ है? आशा है कि हुआ होगा।

आपके इलाहाबाद आवास का समाचार मैंने पत्रिका में पढा था जो इसी सप्ताह मुझे प्राप्त हुई। मैंने पढा कि आप महात्माजी से मिले। अच्छी मुलाकात रही होगी। पत्रिका निरंतर मिल रही है किंतु चित्रात्मक 'ओरिएट' नहीं मिल रहा। मैं आपकी आभारी हूं कि कम से कम एक पत्र तो मिल रहा है, जिससे व्यक्ति को यह ज्ञान रहता है कि विश्व के अन्य भागो मे क्या हो रहा है।

अभी तक मुझे श्रीमती वेसी का नया पता नहीं मिला है। किंतु उन्होंने मुझे आश्वासन दिया है कि जैसे ही वे कहीं स्थायी तौर पर रहने लगेंगी, वे मुझे सूचित करेंगी। आजकल वे यात्रा पर रहती है। आपके बक्से अन्य ठिकाने पर पहुंचा दिए गए हैं। मैंने यह व्यवस्था कर दी थी। आपको जब भी किसी चीज की आवश्यकता हो तो कृपया मुझे लिखे, मैं वे चीजे (पुस्तके) आप तक पहुंचाने की व्यवस्था कर दूंगी। मैंने आपके भतीजे को पुस्तको की पूरी सूची दी थी, जिन दिनो वह यूरोप में था, वह आपको मिल गई होगी।

मैं अपने भोजन का यथासंभव ध्यान रखती हूं, किंतु फिर भी कभी-कभी दर्द होता है। किंतु उतना भयानक दर्द नहीं होता जितना उन दिनों हुआ था, जब आप यहां थे।

सेन आजकल एडिनबर्ग मे है और माथुर कहीं जर्मनी में। किंतु कहां मुझे मालूम नहीं। उनसे कोई संपर्क नहीं है। केवल कटयार सच्चा मित्र है वह अक्सर पत्र लिखता रहता है, हालांकि मैं उसे उत्तर के लिए काफी इंतजार करवाती हूं। वह कुछ दिनो मे अपने घर लौटने वाला है और उसने पत्र में लिखा था कि आजकल वह दिन घंटे और मिनट गिन रहा है कि कब अपनी मातृ-भूमि में पहुंचेगा।

आप सक्षेप में जानना चाहते हैं कि मैंने पिछला वर्ष कैसे बिताया। आप जानते हैं कि मेरे पास नौकरी नहीं थी, इसलिए मुझे घर पर ही रहना पड़ा। सुबह घर का काम, दोपहर में फ्रेंच पढ़ना, पढना और लिखना। जून में मुझे फ्रेंच पढना रोकना पडा, क्योंकि -(1) मै गांव चली गई थी। (2) पैसा खत्म हो गया था और जेब खर्च के रूप में 5 शिलिंग से मैं कुछ नहीं कर सकती थी। कभी-कभी कैफे जाती, मित्रों से मिलती और कभी कभी फ़िल्म देखती। (एक टिकट 90 ग्रोशेन की) सर्दियों के आरंभ में मैंने अपने लोगो के लिए क्रिसमस की कुछ कढाई शुरू की कुछ सिस्टर एलविरा के लिए भी किया, जिसका उन्होंने मुझे पैसा दिया। इससे मैं अपने परिवार व अपने मित्रों को उपहार दे पाई। पहली जनवरी से मैं एक भारतीय बालक की देखभाल कर रही हूं। इस महीने के अंत में वह परिवार भी चला गया और मैं फिर बेकार हो गई हूं। इसके अलावा पिछले साल मैंने कई जगह आवेदन पत्र भेजे, किंतु कोई सफलता नहीं मिली। आजकल मै खाली वक्त में पोशाकें, बैग और पेटियां बनाती हूं। बस कुल मिला कर यही है।

मैने यहां चूड़ियों के विषय में पूछा था किंतु यहां नहीं मिल पाईं। यदि आप भिजवा नहीं सकते तो चिंता की कोई बात नहीं। मैं साधारण कांच की अलग-अलग रंगों की चूड़ियां चाहती हूं।

आज मेरी श्रीमती वैटर से बात हुई थी उन्होने शिकायत की कि आप उन्हें पत्र नहीं लिखते हैं। श्रीमती मिलर से तीन सप्ताह से संपर्क नहीं हो पाया। आजकल फिर मेरी फ्रेंच की पढ़ाई बंद है, क्योंकि मेरी अध्यापक गर्मियों की छुट्टियो में चली गई हैं। किंतु मैं अनुवाद कार्य और उनके दो पत्रो का फ्रांसीसी अनुवाद पढ़ रही हूं। वे मुझे मेरी अशुद्धियां निकाल कर भेजेंगी। पिछले सप्ताह मेरे एक मित्र ने मुझे एक बढ़िया पुस्तक दी-लेबर इन आयरिश हिस्टरी, यह जेम्स कोनोली ने लिखी है। इसे पाकर मुझे खुशी हुई और कुछ ही दिनों में इसे पढ़ना प्रारंभ कर दूंगी।

कृपया मुझे बताएं कि आपका क्या हाल है। जब चित्र खींचें तो मुझे भी अवश्य भिजवाएं। मेरे माता-पिता व मेरी बहन आपको सादर प्रणाम भेज रहे हैं। मेरी मित्र एला ने भी अपने एक पत्र में आपको नमस्ते लिखने को कहा है। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

डॉ० धर्मवीर आपके मित्र हैं या एक प्रकार का सैनेटोरियम चलाते हैं ?

विएना
26.5.37

प्रिय श्री बोस,

आपके 6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 26 तारीख में मिला। आज ही अमेरिकन एक्सप्रेस ने भी मुझे फ़ोन करके पैसे की सूचना दी। इसे भेजने के लिए हार्दिक धन्यवाद। मैं इसे बैंक मे रख दूंगी और जब आप मुझे कुछ खरीदने या भिजवाने को कहेंगे तब इसका इस्तेमाल करूंगी। यदि मुझे आवश्यकता पड़ी तो मैं भी कुछ पैसा ले सकती हूं। बहरहाल, मैं इसे बचा कर रखूंगी। आजकल प्रति पाऊंड का रेट 26.20 शिलिंग है। शायद आपको याद हो पिछले या उससे पिछले वर्ष यह दर 25 शिलिंग थी।

अब तक आप डलहौजी पहुंच चुके होगे और लाहौर में हुई थकान से कुछ राहत भी महसूस कर रहे होंगे। हां मैं नक्शे मे हर जगह खोज लेती हूं। किंतु नक्शे से यह आभास नही होता कि वह जगह कैसी है। डलहौजी कैसी जगह है? वहां किस प्रकार के पेड़ उगते है? आशा है वहां की जलवायु आपके उपयुक्त होगी। यहा विएना मे आजकल बहुत गर्मी है। लेकिन इतनी गर्मी मुझे पसंद है। जब गर्मी होती है तो मैं प्रसन्न और स्वस्थ रहती हूं।

हा, मै वादा करती हूं कि भविष्य मे अपने खान-पान पर ध्यान दूंगी और यथासंभव उचित भोजन ही करूगी। जहां तक अतिरिक्त श्रम का प्रश्न है तो वह अब नही रहेगा, क्योंकि वह भारतीय परिवार, जिनके बच्चे की देखभाल मैं करती थी, शीघ्र ही विएना से जा रहा है। मुझे इस बात का दुख है क्योंकि मुझे बच्चा याद आएगा।

8 जुलाई को हम गांव जाएगे। मेरा पता होगा-

एमिली शेक्ल
मार्जगासे 112
पोलाऊ बी/हार्टबर्ग
(आस्ट्रिया)

वैसे आप मुझे पत्र विएना के पते पर भी लिख सकते है, वहा से सारी डाक मुझे भेज दी जाएगी। हम लोग 6 या 8 सप्ताह पोलाऊ मे रहेंगे। आशा है वहा अच्छी गर्मी होगी और हमारा समय अच्छा बीतेगा। तब मै पूरा दिन घास मे लेट कर बिता दूंगी और धूप मे भुन जाऊगी। मैं कुछ पुस्तके ले जाऊंगी जो वहां पढ़ूंगी। कुल मिलाकर मैं वहां एक आलसी की जिंदगी व्यतीत करूगी और केवल अपनी ही देखभाल करूंगी।

कल मै श्रीमती मिलर से मिली थी। उन्होंने मुझे बताया कि वे बहुत परेशान हैं। जिन लोगो के पास अधिक काम नहीं होता उनके साथ यही होता है। यदि इस महिला

के दो या तीन बच्चे हो जाएं तो इसके पास परेशान होने का समय ही नहीं बचेगा। संभव है नौकरी छूटने के बाद मैं भी परेशान हो जाऊं। जब मुझे आसपास ऐसे सब लोग परेशान दिखाई देते हैं तो मुझे लगता है कि मैं इस समाज के लिए उपयुक्त व्यक्ति हूं।

एक दिन श्रीमती वेटर आपके विषय में पूछ रही थीं। उन्होंने बताया कि कई दिन से उन्हें आपका कोई पत्र नहीं मिला। मैंने उन्हें आपका डलहौजी का पता दे दिया है। संभवतः वे आपको वहां पत्र लिखेंगी।

फ्रेंच सीखना फिलहाल बंद है क्योंकि मेरी अध्यापक गांव गई है। किंतु मैं गर्मियों मे उन्हें पत्र लिखूंगी और उनके पास कुछ काम भेजूंगी जिसे वे ठीक कर लौटाएंगी।

शेष अन्य कुछ लिखने को नहीं है। मेरे माता-पिता और लोती (जो मुझसे लंबी और मोटी है) अपनी शुभकामनाएं भिजवा रहे हैं।

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं और धन्यवाद!

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनश्चः - मैंने अभी अपटोन सिंक्लेयर द्वारा 'द मनी चेंजर्स' पढ़ी। क्या आप इस पुस्तक के विषय में कुछ जानते हैं। हालांकि यह पुस्तक पूरी तरह बैंक के विषय में थी और मुझे पूरी तरह समझ में भी नहीं आई, किंतु यह बहुत दिलचस्प पुस्तक है।

द्वारा डॉ० एन०आर० धर्मवीर
डलहौज़ी
पंजाब
27.5.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 20 तारीख के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे कल मिला। दो सप्ताह से तुम्हारी कोई सूचना नहीं मिली इसलिए मैं चिंतित था। अब तक तुम जान चुकी होओगी कि मै वहा 12 मई को पहुंच गया था। श्री एवं श्रीमती धर्मवीर मेरे मित्र हैं इसीलिए यहां मैं उनका अतिथि हूं। भारत में यह सामान्य बात है, किंतु यूरोप में ऐसा संभव नहीं है।

प्रोफ़ेसर डेयेल ने मुझे पत्र मे लिखा था कि उन्होंने मेरी रिहाई की खबर आज अखबार में पढ़ी। क्या तुमने उन्हें 22 मार्च को ही सूचित नहीं किया था।

यदि तुम हर सप्ताह मुझे कुछ पंक्तिया लिख दिया करो तो अच्छा रहेगा। यदि व्यस्त हो तो लंबा पत्र न सही, किंतु कुछ पंक्तियां तो लिख ही सकती हो।

मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूं, लेकिन बहुत अच्छा नहीं। यह 2000 मीटर की ऊंचाई पर शांत पहाड़ी इलाका है। एक ओर हिमालय की बर्फ़ से लदी पहाड़ी शृखला दीखती है तो दूसरी ओर मैदानी इलाका और नदियां। यहां की हवा ताज़ी और स्वास्थ्यवर्धक है।

मैने तुम्हारे लिए 'ओरिएंट' भिजवाने की भी व्यवस्था कर दी है। पहले उन्होंने बताया था कि मुझे कोई दाम नहीं देना पड़ेगा, किंतु वास्तव में वे उसका दाम चाहते थे। अब मैने पैसा जमा करा दिया है, तुम्हे लगातार अखबार मिलेगा।

तुम्हारी भेजी पुस्तकों की सूची मुझे समय पर मिल गई थी।

यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें सलाह दे सकता हूं कि तुम अगले महीने से अपना समय कैसे व्यतीत करो। पता नहीं इस राय का महत्व है या नहीं। (जर्मन भाषा के वाक्यों का अनुवाद—क्या तुम मुझे भूल गई हो? इतने दिन में पत्र क्यों लिखती हो? क्या तुम नहीं जानती कि मैं तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करता हूं?-संपादक) हर हाल में अपने फ्रेंच भाषा के पाठ जारी रखो। फ्रेंच बोलना भी शुरू करो।

क्या तुम्हे पता है आजकल लोवी कहां है? हां मैं श्रीमती वेटर को लगातार पत्र नहीं लिख पाता। और वे बहुत ज्यादा संवेदनशील हैं।

जब भी तुम्हें समय मिले तो मेरी जो पुस्तकें वहां पड़ी है, उन्हें पढ़ो। वे तुम्हें दिलचस्प लगेगी। क्या आजकल तुम पोस्ट आफिस जाती हो?

एला को मेरी नमस्ते कहना। अपने माता-पिता को और लोती को मेरा प्रणाम कहना।

साथ में एक चित्र भेज रहा हूं जो तब खींचा गया था जब मैं डलहौज़ी पहुंचा था। यदि चाहो तो बेशक किसी को मत दिखाना। पता नहीं मुझे बंगाली वेशभूषा में पहचान भी पाओगी या नहीं।

क्या अभी भी तुम्हारे फेफड़े या गले में तकलीफ़ है? सिस्टर एलविरा को मेरा प्रणाम कहना। क्या आजकल तुम अपने छोटे मित्र से मिलती हो?

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च: - मेरे पुराने मित्रों में से शर्मा मुझे कलकत्ता में मिलने आया था। वह पंजाब से मुझे मिलने आया जिसके लिए मैं उसका आभारी हूं।

सुभाष चंद्र बोस

30.5.37

प्रिय श्री बोस,

रविवार की गर्म और धूप भरी दोपहरी। मैं और श्रीमती मिलर काबेजल होटल की बालकनी में बैठे है, वही जगह जो विएना मे आपको बेहद पसंद थी।

आशा है आप पूर्णत: स्वस्थ हैं, शुभकामनाओं सहित,

शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

[श्रीमती मिलर व शेंक्ल का सयुक्त कार्ड]
[इस पत्र पर तारीख नहीं हैं, किंतु सदर्भ मे पता चलता है कि यह पत्र सुभाषचद्र बोस ने अपनी रिहाई के बाद मार्च 1937 में या शायद अप्रैल या मई 1937 मे बडे अक्षरो मे लिखा होगा। पहला पत्र कार्ल्सबाद से 1 जून 1937 मे फ्रॉ लोवी द्वारा डाक मे डाला गया था]

कई दिन से तुम्हें पत्र लिखना चाहता था। समय बीतता गया और तुम समझ सकती हो कि अपनी भावनाओं के विषय मे लिखना मेरे लिए कितना कठिन कार्य था। मै तुम्हे यह बताना चाहता हूं कि मैं आज भी वही हू, जैसा तुम मुझे पहले जानती समझती थीं। एक दिन भी ऐसा नहीं बीता जब मैंने तुम्हारे विषय मे सोचा न हो। तुम हर समय मेरे पास रहती हो। इस दुनिया मे मै किसी अन्य के विषय मे शायद सोच भी नही सकता। मैं तुम्हारे विचार जानने को उत्सुक हूं। कृपया मुझे साधारण रूप से एयरमेल डाक द्वारा अपनी भाषा मे अपने विचार लिख भेजो। ताकि मै तुम्हारे विचार जान सकू। मै नहीं जानता भविष्य मे मुझे क्या करना चाहिए। मे निर्णय लेने की स्थिति मे नही हू। मैं तुम्हें बता नहीं सकता इन पिछले कुछ महीनों मे मैने स्वय को कितना अकेला और दुखी पाया है। केवल एक ही बात मुझे प्रसन्न कर सकती है, किंतु मै नही जानता वह सभव है या नहीं। बहरहाल मैं रात दिन इसी विषय मे सोचता रहता हू और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वे मेरा मार्गदर्शन करे। जब भी तुम्हारी बीमारी की सुनता हू तो बहुत परेशान होता हू। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो ताकि मै चिंतामुक्त हो सकू। मै हृदय और आत्मा से तुम्हारा हूं।

पिछले सप्ताह मैने लोवी के पते पर तुम्हे पत्र लिखा था। क्या तुम्हे वह पत्र मिला? मैने यात्रा के दौरान जो पत्र तुम्हें लिखा था वह मिला? मैने पोर्ट सईद के बाद लिखा था और मसावा से डाक में डाला था।

वहां से चलने के बाद, मैने अमेरिकन एक्सप्रेस को निर्देश दे दिया था कि वह तुम्हें पांच पाउंड दे दें। शायद पिछले वर्ष। क्या तुम्हे पैसा मिला? आशा है वह तुम्हार कुछ काम आया होगा।

पिछले बारह माह में तुम्हारे साथ (तुम्हारे परिवार के लोगों और बाहर वालों का) व्यवहार कैसा रहा? कृपया मुझे सूचित करो।

मुझे दुख है कि तुम अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान नहीं रखती और तुम्हारा दर्द पुनः शुरू हो गया है। क्या तुम नहीं जानतीं कि मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य की कितनी चिंता है और मैं तुम्हारे बारे में कितना सोचता हूं?

क्या तुमने वह सारी राशि खर्च कर दी जो तुम्हारे पास थी?

आजकल तुम क्या सोचती रहती हो? क्या तुम्हें तुम्हारे पुराने मित्र याद हैं?

आजकल तुम ईश्वर से क्या मांगती हो? भविष्य में तुम्हें क्या आशा है?

कृपया एयरमेल द्वारा सीधे-सादे तरीके से अपनी भाषा में शीघ्र उत्तर दो। मैं समझ जाऊंगा। मेरे नए कुरोरल के पते पर ही लिखना। मेरे घर के स्थायी पते पर नहीं। अपना नाम मत लिखना।

तुम मेरे स्वास्थ्य के विषय में जानना चाहती हो? पहले से बेहतर हूं। काफ़ी दिन मुझे एग्जीमा रहा और कोई भी डाक्टर मेरा इलाज नहीं कर पाया। किंतु मैंने अपना स्वयं इस प्रकार इलाज कर लिया। मैंने एग्जीमे की खाल को नोच डाला फिर उस पर आयोडीन डाल दिया। पहले बहुत जलन हुई, लेकिन बाद में कुछ दिन बाद वह ठीक हो गया। यदि कभी तुम्हें एग्जीमा हो जाए तो मेरी दवाई आजमाना। क्या अभी भी तुम्हें खांसी है?

अप्रैल में मैं तुम्हारी मित्र एम० (हॉपास्टडट) से मिला था। लेकिन उनकी पत्नी से मुलाकात नहीं हो पाई। उसे सावधानी से पत्र लिखना, क्योंकि वह बहुत भयभीत है। जब मुझे पत्र लिखो तो याद रखना मेरे मित्र मेरे पत्र पढ़ते हैं। फ्रॉ एफ०एम० क्या कहते हैं?

विएना
1.6.37.

प्रिय श्री बोस,

आपका 11 मई का पत्र आज प्रातः मिला। धन्यवाद!

30 मई को मैं कोबेंज़ल में श्रीमती मिलर के साथ थी। हमने आपको एक पोस्टकार्ड लिखा था और आशा है इस पत्र के साथ ही वह भी आपको मिल जाएगा। वह बहुत प्यारी दोपहर थी, धूपभरी! और हम उस जगह बैठे थे, जहां से पूरे विएना का दृश्य नजर आता है। आपको भी यह जगह बहुत पसंद थी। बाद में वहां थोड़ी ठंड हो गई इसलिए हम होटल में जाकर सैलून में बैठ गए। वहां सभी लोगों को देखने में बड़ा आनंद आ रहा था। हमने वहां इजीप्ट के राजदूत को देखा, कुछ फ़िल्मी कलाकारों को और विदेशियों को देखा। फ्रॉहिडी ने मुझे अपनी भारत की यात्रा के विषय में बताया इसलिए समय बहुत तेजी से बीत गया।

आज से मैं फिर बेरोजगार हो गई हूं, क्योंकि वह परिवार विएना से इटली चला गया है। बच्चे की बहुत याद आती है तो मन खराब हो जाता है। मुझे नहीं पता था कि बच्चे से इतना लगाव हो जाएगा और बाद में मुझे दुख होगा।

अपनी वार्डरोब देखने से अभिप्राय है कि मुझे अपने कपड़े ठीक-ठाक कर रखने हैं, फटे कपड़े सीने हैं और प्रेस करने हैं। मैं आजकल बहुत कंजूस हो गई हूं और पूरा प्रयत्न करती हूं कि कपड़ों पर पैसा व्यर्थ खर्च न करूं।

मेरी बहन ने अभी हाईस्कूल नहीं किया है। वह वहां केवल पांच वर्ष गई है (हाईस्कूल में आठ वर्ष लगते हैं।) मेरे माता-पिता इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि उसका मैट्रिक पास कर लेना भी फ़ायदेमंद नहीं होगा, क्योंकि आजकल नौकरी मिलती नहीं चाहे आपके पास यूनिवर्सिटी की डिग्री ही क्यों न हो। फिर उसे लैटिन और गणित नहीं आता। इसलिए उन्होंने उसे पिछले वर्ष स्कूल से निकाल लिया, तभी से वह घर का काम सिखाने वाले स्कूल में है। वहां वह खाना पकाना, सिलाई, कपड़े धोना, कपड़े प्रेस करना आदि वे सभी काम सीखती है, जो घर चलाने के लिए आवश्यक है। यह कोर्स जुलाई में समाप्त होगा। उसके बाद वे उसका क्या करेंगे अभी निश्चित नहीं है शायद उसे टाइपिंग और शार्टहैंड सिखाएं। उसके साथ परेशानी यह है कि वह कोई विदेशी भाषा सीखना नहीं चाहती। एक साल उसने अंग्रेजी सीखी, किंतु वह अंग्रेजी में बात नहीं कर सकती। उसका दिमाग बिल्कुल बेकार है, इसलिए वह कई बार मुझसे पिटी भी है।

मेरा स्वास्थ्य अब बेहतर है। कई दिन से दर्द भी नहीं है। यथासंभव मैं सावधान रहती हूं। किंतु बहुत से दूध में कॉफ़ी पीना, यह मैं नहीं कर सकती। इसकी जगह मैं कॉफ़ी पीना बिल्कुल छोड़ सकती हूं।

अपनी रिहाई के बाद जो भारतीय अखबार आपने भेजे थे वे मुझे मिल गए थे। हर हफ़्ते मुझे साप्ताहिक आनंद बाज़ार पत्रिका मिल जाती है। पिछली, कल ही मिली थी। मैंने पढ़ा कि आप पहले से स्वस्थ हुए हैं। यह सुनकर प्रसन्नता हुई और मुझे आशा है कि अब आप तेजी से स्वस्थ होंगे। कृपया पूर्ण विश्राम करें और अपनी आदत के अनुसार सुबह तीन बजे तक पढ़ना छोड़ दें। जब आप पूर्ण स्वस्थ हो जाएं तो पुनः कार्य शुरू कर सकते हैं। फिर भी आपको अपनी सेहत का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि जितना आप अधिक सचेत रहेंगे उतना ही अधिक कार्य कर पाएंगे।

मास्टर व सेन का कोई समाचार नहीं है। दोनों ही पत्र लिखने में आलसी हैं।

कल श्रीमती वेटर ने मुझसे आपके विषय में पूछा था और बताया कि उन्हें आपका कोई पत्र नहीं मिला है। कृपया उन्हें कुछ पंक्तियां अवश्य लिख दें। वे खुश हो जाएंगी।

पिछले सप्ताह मैंने साधारण डाक से आपको पत्र लिखा था, आशा है आपको मिल गया होगा।

क्या आपने डलहौज़ी में कुछ चित्र लिए? वह कैसी जगह है? डॉ० धर्मवीर शायद वही सज्जन हैं, जिनकी धर्मपत्नी जर्मनी की हैं? मुझे याद है आपने एक बार मुझे एक पंजाबी डाक्टर व उनकी पत्नी का चित्र दिखाया था, जिनकी पत्नी जर्मनी की महिला थीं, और पंजाबी पोशाक पहने एक बच्चा गोद में लिए थीं। क्या यह वही परिवार है?

मेरे परिवार की ओर से सादर प्रणाम।

मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी

एमिली शेंक्ल

साथ में उस बच्चे का चित्र है जिसकी देखभाल मैंने पिछले चार माह की थी। कितना प्यारा है? मुझे उसके माता-पिता से ईर्ष्या होती है।

द्वारा डॉ० एन०आर० धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
3.6.37.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हें मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। हालांकि मुझे उनका उत्तर लगातार नहीं मिल रहा है।

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें एक चित्र भेजा था जो तब खींचा गया था जब मैं यहां पहुंचा था।

इस पत्र के साथ कुछ टिकट भेज रहा हूं। क्या तुम अभी भी टिकट एकत्र करती हो? यदि हां, तो मैं कुछ और भेज सकता हूं। क्या तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हुई? उनका स्वास्थ्य अब कैसा है? तुम्हारी बहन आजकल क्या कर रही है? क्या वह मैट्रिक की परीक्षा देगी?

कृपया सिंह से कहना कि वह कभी-कभी मुझे पत्र लिखता रहे। उसका पता है- बेनोगाझे 9/5, या शायद (बी 45-1-73 यू)

तुम सब लोग गांव कब जा रहे हो? यदि तुम्हारे पास तुम्हारे अपने कुछ चित्र हैं तो कृपया कुछ मुझे भेज दो। क्या लोवी का कोई समाचार मिला?

मेरा विचार है कि तुम्हें अपनी फ्रेंच भाषा में बोलचाल जारी रखनी चाहिए। फ्रेंच स्पीकिंग कलब में भर्ती क्यों नहीं हो जातीं? पिछले वर्ष जो पैसा तुमने कमाया क्या वह सब खर्च कर दिया? तुम्हारा स्वास्थ्य अब कैसा है? आशा है इस गर्मी के मौसम में तुम्हें फेफड़े की परेशानी नहीं होगी? तुम्हारा एग्जीमा कैसा है? क्या अभी भी वह तुम्हें परेशान करता है? पिछली गर्मियों (1936) मे यानी अप्रैल, मई और जून में तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा रहा?

मेरा गला फिर खराब हो गया था और मैं लगभग 10 दिन बीमार रहा, किंतु कोई गंभीर बात नहीं थी। अब मैं पहले से बेहतर महसूस कर रहा हूं।

पिछले कई माह मैं जर्मन नहीं पढ़ पाया, किंतु मैं इसे पुनः प्रारंभ करना चाहता हूं।

[अनुवाद-महान युवती, भविष्य में क्या करने की योजना है?—सम्पादक] क्या तुम्हारा फ्रांसीसी भाषा में पत्राचार जारी है? आज कुछ अन्य लिखने को नहीं है अतः अब बंद करता हूं।]

हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ० एन०आर० धर्मवीर
डलहौज़ी
पंजाब
10.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हे मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। मैं हर सप्ताह पत्र लिखता हूं। इस सप्ताह एयरमेल से पत्र भेज रहा हूं।

मेरा स्वास्थ्य पहले से बेहतर है। पंद्रह दिन पहले मेरा गला खराब हो गया था। अब ठीक है और मैं बाहर आ-जा सकता हूं। यदि मैं कुछ माह यहीं रहा-जैसा कि मैं चाहता भी हूं तो आशा है मैं शीघ्र स्वस्थ हो जाऊगा और पुनः काम में लग जाऊंगा।

वह कौन आदमी था जिसके साथ तुम काम करती थी? क्या भारत का उसका पता और नाम तुम्हें मालूम है?

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें सुझाव दिया था कि तुम्हे फ्रेंच बोलचाल प्रारंभ रखनी चाहिए। इस पर विचार करना, भविष्य में लाभदायक सिद्ध होगी। यदि तुम्हारे पास इस पर खर्च करने को पैसा है तो उसका उपयोग अवश्य करो। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें सुझाव दे सकता हूं कि भविष्य में तुम अपने समय का सदुपयोग कैसे कर सकती हो। यदि आजकल तुम्हारे पास कोई नौकरी नहीं हैं तो तुम मेरा सुझाव मान लो।

क्या तुम आजकल पोस्ट आफ़िस जाती हो?

अचानक मुझे सेन का पत्र मिला। आजकल वह इंग्लैंड में है। अपनी डिग्री की पढ़ाई कर रहा है। जुलाई में अपने इम्तहान खत्म होने के बाद वह आगे की पढ़ाई के लिए शायद विएना जाएगा। वैसे क्या तुम्हे उसके मित्र ट्रूड वेस के विषय में कुछ जानकारी है?

श्रीमती वेटर ने कुछ सप्ताह पहले मुझे पत्र लिखा था और लिखा कि विएना में आजकल यहूदी अपने भविष्य के प्रति असशंकित हैं और अमरीका जाने की सोच रहे हैं।

तुम अपने स्वास्थ्य के लिए क्या कर रही हो?-[अनुवाद-कल मुझे तुम्हारा पत्र मिला और मुझे सब कुछ समझ आ गया।-संपादक] क्योकि मैं स्वयं आधा डाक्टर बन चुका हूं, इसलिए तुम्हे मेरे सुझाव मान लेने चाहिए। क्या अभी भी तुम्हें फेफड़े के पीछे दर्द महसूस होता है? क्या गॉल ब्लैडर से कोई परेशानी है? क्या बिजली के हीटर का इस्तेमाल करती हो?-[अनुवाद-तुम्हारा पत्र पाकर मै कितना प्रसन्न हुआ। तुम्हें बता नहीं सकता] यदि तुम्हें एग्जीमा जैसा कोई त्वचा रोग हो तो तुम मुझे लिख सकती हो। मेरे पास सरल किंतु प्रभावी इलाज है, जो मैने स्वयं पर आजमाया भी था।

क्या हाल ही में तुम्हारी मुलाकात सिस्टर एलविरा से हुई? यदि मिलो तो मेरी नमस्ते कहना। अब इलाज के बाद उनका स्वास्थ्य कैसा है?-[अनुवाद-मुझे प्रसन्नता है कि तुम आशावादी बनी हो।-संपादक] क्या आजकल एला से संपर्क हुआ है? उसे मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारी बहन आजकल क्या कर रही है? अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और बहन को नमस्ते। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - यदि तुम्हें मालूम हो तो कृपया मुझे श्रीमती वेसी का पता लिखो। साथ में श्री फाल्टिस के लिए पत्र है।

विएना

15.6.37

प्रिय श्री बोस,

कल मुझे प्रातः आपका 27 तारीख का पत्र और कुछ चित्र प्राप्त हुए। दोनों चीज़ों के लिए धन्यवाद। मैं आपको पहचान नहीं पाई, पोशाक के कारण नहीं, बल्कि आप बेहद कमज़ोर लग रहे थे। बहुत शर्म की बात है, अब आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा, खुराक बढ़ाइए ताकि आपका कुछ वज़न बढ़े, अन्यथा मुझे बहुत दुख होगा।

अब मैं हर सप्ताह आपको पत्र लिखूंगी। कम से कम कुछ पंक्तियां तो जरूर, यदि अधिक नहीं लिख पाई तो। पिछले सप्ताह मैं बहुत व्यस्त थी, इसलिए आपको लिख नहीं पाई। आशा है आप क्षमा कर देंगे।

मैंने आपकी रिहाई की सूचना डेमेल को निजी तौर पर नहीं दी थी, लड़कों ने बताया होगा।

आपको मालूम ही है कि डा० बी० सी० राय आजकल विएना में ही हैं। वे अपनी भाभी और भतीजी को साथ ले आए हैं। उनके साथ एक वृद्ध यहूदी महिला सुश्री हरमन, कलकत्ता की रहने वाली, तथा एक भारतीय युवा लड़की, सुश्री हुवीसिंह (या ऐसा ही कुछ नाम) भी है। गैरोला ने यह प्रबंध किया है कि मैं उन्हें विएना की सैर करा दूं। और जब आवश्यकता होती है तो मैं श्री राय की मदद भी कर देती हूं। कल सारा दिन मैं उनके लिए अनुवाद और टाइपिंग का कार्य करती रही। वे सभी लोग बहुत अच्छे है। डॉ० राय ने कल मुझे बताया कि प्रोफ़ेसर डेमेल उन्हें विभिन्न क्लिनिक दिखाने में लगे है। डॉ० राय ने मुझे लौंग और इलायची का पूरा टिन दिया है, जो मैं आजकल

खाने में लगी हुई हूं। आप जानते हैं ये मुझे कितनी पसंद हैं और यहां ये चीजें मिलती नहीं हैं। रेणु (सुश्री राय) और मैं आज प्रातः घूमने गए थे और दोनों को बहुत मज़ा आया। उसके बाद हम घर गए और दोपहर का भोजन एक साथ किया। वह विएना के व्यंजन बनाना सीखना चाहती हैं। किंतु वे कुछ ही दिन में वहां से चले जाएंगे।

भगवान का शुक्र है कि अब आप पहले से बेहतर महसूस कर रहे हैं। ताज़ी हवा से आपको बहुत लाभ होगा। वहां पर फ़ोटो अवश्य खींचना, क्योंकि आप जानते ही हैं कि मुझे इनका कितना शौक है।

अब मुझे 'ओरिएंट' और पत्रिका दोनों ही मिल रहे हैं। आपकी आभारी हूं, किंतु कृपया मुझे इनकी कीमत अवश्य लिख भेजें, क्योंकि आप इसकी कीमत क्यों अदा करें।

इस महीने के लिए आपके सुझावों के लिए धन्यवाद। जहां तक संभव होगा मैं ऐसा ही करूंगी। केवल फ्रेंच के संबंध में एक कठिनाई है, क्योंकि ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिससे फ्रेंच में बात की जाए, और मेरा स्वयं से बात करना ठीक नही है।

हां मुझे लोवी का पत्र मिला था। मैं पोस्ट आफिस जाती हूं। आज मैं श्रीमती वेटर से मिली और उन्होंने मुझे बताया कि आपने उन्हें पत्र लिखा है।

जब मैं गांव जाऊंगी तो कुछ पुस्तकें अवश्य पढ़ूंगी। किंतु अभी यह असंभव है। कल मैं रात एक बजे तक बैठी अनुवाद करती रही। उसके बाद कुछ पढ़ना संभव नहीं था, क्योंकि मुझे प्रातः सात बजे उठना भी था।

आजकल सिस्टर एलविरा से मेरा संबंध कोई बहुत अच्छा नहीं है। पता नहीं क्यों, आजकल वे मुझसे बचने के अजीब तरीके खोजती हैं। और मैं कभी भी स्वयं को उन पर लादूंगी नहीं।

कई महीने बाद मेरे छोटे से मित्र से मुलाकात हुई। वह आपको नमस्ते भिजवा रही है। एला को इस माह पत्र लिखूंगी। कई सप्ताह पहले ही मुझे लिखना चाहिए था।

फिलहाल मेरा गला, गॉल ब्लैडर और फेफड़ा सब ठीक-ठाक हैं। आजकल तंग नहीं कर रहे।

क्या आप उस जगह के आसपास है, जहां शर्मा ठहरा है? यदि उससे मुलाकात हो तो मेरी नमस्ते कहिएगा। कटयार का पत्र आया था उसने लिखा है कि संभवतः वह जुलाई के अंतिम सप्ताह में यहां आएगा, लेकिन यदि मै यहां होऊंगी तभी। पुराने लोग फिर भी अच्छे हैं।

आज रात मैं गैरोला और एक भारतीय महिला के साथ 'ह्यूरिगर' जाऊंगी। आपके स्वास्थ्य के लिए एक जाम पिऊंगी।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

पुनः-मेरे माता-पिता और लोती (जो मुझसे लंबी और मोटी है) आपको नमस्ते भेज रहे हैं। आपने जो चित्र मुझे भेजे थे मेरी मां को बहुत पसंद आए कि मैं वे उन्हें दे दूंगी ताकि वे उसे फ्रेम कर सकें। किंतु मुझे एक बात कहनी है। इस गाउन जैसी कमीज की बाहें बहुत लंबी हैं। इन्हें छोटी करवा लेना। श्रीमती धर्मवीर आपको सुझाव दे सकेंगी - आशा है मेरी इस टिप्पणी से आपको बुरा नहीं लगेगा? लेकिन आप जानते हैं कि मैं स्पष्टवादी हूं।

16.6.37

यह पत्र भेजने से पहले मैं आपको बताना चाहती हूं कि हम 'हियूरिंगर' गए थे। वहां हमें बहुत मज़ा आया। वहां बहुत से भारतीय और विएना की महिलाएं थीं। वहां हमने सबकी सलामती के लिए जाम पिया। सुश्री हुवीसिंह ने दो भारतीय गीत सुनाए, दो महिलाओं ने इटली का गीत गाया और मैंने विएना के गीत गाए। जल्दी ही हम लोग घर वापिस आ गए। आज मैं बिल्कुल थक जाऊंगी, क्योंकि आज मुझे श्रीमती व सुश्री राय के साथ बेलवेडरे जाना पड़ा। कई घंटे पिक्चर गैलरी में बिता कर आदमी कितना थक जाता है। डेढ़ बजे मैं घर वापिस आई, जल्दी से खाना खाया और जल्दी ही डॉ० राय का टाइपिंग का काम करना शुरू कर दिया। वहां से मैं काटेज सैनेटोरियम गई और अब यह पत्र लिख रही हूं। रात का खाना खाते ही मैं तत्काल सो जाऊंगी।

हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी शुभाकांक्षी
एमिली शेंक्ल

17.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 26 मई का पत्र मुझे 13 जून को मिला, प्रसन्नता हुई। तुम्हें अब तक मेरे डलहौजी से भेजे पत्र मिल चुके होंगे। यह जगह 2000 मीटर की, या शायद ज्यादा, ऊंचाई पर स्थित है। यहां एक ओर दूर बर्फ़ से ढके पहाड़ दिखाई देते हैं तो दूसरी ओर दूर तक फैले मैदान और नदियां। यह एक शांत पहाड़ी इलाका है, जैसा मुझे पसंद है। क्योंकि यहां मिलने आने वाले मुझे तंग नहीं करते। गर्मी से भी दूर है, इसलिए भी खुश हूं।

आशा है गांव में तुम्हारा समय अच्छा व्यतीत होगा। ऐसा लगता है कि गर्म शहर ही तुम्हें रास आएगा वैसे भी तुम धूप की बहुत शौकीन हो। खैर जो भी हो। मुझे आशा है वहां तुम फ्रेंच सीखोगी और समय का सदुपयोग करोगी। हमारा जीवन इतना क्षुद्र है कि हमें बिल्कुल भी समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। हमेशा कुछ उपयोगी चीजें सीखनी चाहिए।

श्रीमती मिलर के संबंध में, जब लोग ये कहे कि वे बहुत घबरा रहे हैं तो कभी उनकी बात पर विश्वास मत करो। कुछ लोग प्रदर्शन भी करते है। वह परेशान होने का दिखावा भी ऐसे करते है मानो सुंदर पोशाक पहनी हो। वैसे यूरोपीय महिलाओं में घबराहट ज्यादा रहती है, क्योंकि वे धूम्रपान और शराब का सेवन करती हैं। और रात में ठीक से सोनी भी नहीं हैं। फिर एक वक्त ऐसा भी आता है कि वे चाहें भी तो सो नहीं सकतीं। जब ऐसा होता है तो घबराहट ही होती है। वैसे तुम अपने वादे के मुताबिक सिगरेट पीना कब छोड़ोगी? एक दिन मे कितनी सिगरेट पीती हो?

पोलाऊ मे तुम्हे संगीत का भी अभ्यास करना चाहिए। इससे तुम्हें समय बिताने में आसानी हो जाएगी, क्योकि वहां तुम्हारे साथी नहीं होगे। यदि हर सप्ताह मुझे पत्र लिखो तो एयरमेल से भेजने की आवश्यकता नहीं है।

मैं पूछूगा कि इस जगह के पिक्चर पोस्टकार्ड मिलेगे या नहीं। यदि मिले तो भेजूगा और साथ ही अपने मेजमानों के साथ अपनी फ़ोटो भी भेजूंगा। यदि मिल जाए तो अगली डाक से ही भेज दूगा।

भविष्य के लिए मेरी तुम्हें सलाह है कि (1) अपने शरीर को ठीक रखो, प्रतिदिन अभ्यास करो। विएना मे तुम किसी जिमनास्टिक स्कूल में दाखिला ले सकती हो। (2) घरेलू सफाई और मितव्ययिता के पाठ सीखो। ताकि भविष्य मे जीवन सुखमय हो सके। (3) एक योग्य सेक्रेटरी बनने का प्रशिक्षण लो जिसके लिए बुक कीपिंग, एकाउंटेंसी तथा फाइलो को सुव्यवस्थित ढंग से रखना आना आवश्यक है। (4) संगीत सीखो - कोई वाद्य बजाना सीखो ताकि तुम स्वयं का और अपने परिवार का मनोरंजन कर सको। (5) अधिक से अधिक भाषाएं सीखो। इन्हें बोलना आना आवश्यक है। (6) थोड़ी बहुत कढ़ाई-सिलाई भी आनी चाहिए, बुनाई-कढ़ाई आदि। (7) जो विषय तुम पढ़ना चाहती हो ध्यान रहे भविष्य में तुम्हारे लिए उपयोगी हो सके। इस सबके अतिरिक्त तुम्हें दर्शन भी पढना चाहिए।

आशा है मुझे इस अनुपयोगी सलाह देने के लिए क्षमा कर दोगी। शायद जो बातें मैंने सुझाई हैं, वे तुम भलीभांति जानती ही हो। असलियत यह है कि आज प्रात: मेरा मन कर रहा था कि मैं बिन मांगी राय किसी को दूं। आजकल यहां से बृहस्पतिवार और सोमवार को एयरमेल रवाना होती है। वहां से किस दिन होती है? साधारण डाक हमें वृहस्पतिवार को डालनी होती है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हे उसके बदले में अच्छी दर मिल गई है। तुम यह राशि जैसे भी चाहो खर्च कर सकती हो।

क्या पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी घूमने जाना चाहती हो। पिछले साल शायद तुम सिस्टर एलविरा के साथ घूमने गई थीं। आशा है कि अभी तुम्हारी उनसे मैत्री ज्यो की त्यों होगी या फिर तुम्हारे नाम की किसी चेकोस्लोवाकिया की लड़की से? क्या आजकल तुम बहुत खर्च करती हो? पिछले वर्ष तुमने जो कमाया वह सब खर्च दिया या कुछ जोड़ा भी है? आशा है पोलाऊ में आजकल मौसम बहुत शानदार होगा। कभी-कभी मेरी इच्छा होती है कि मैं जर्मन भाषा में कुछ लिखूं, किंतु मुझे गलतियों से डर लगता है। क्या मुझे....

(अस्पष्ट)

डलहौजी
24.6.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

1.6.37 के तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। उसके साथ चित्र भी थे। तुम्हारा कोबेंत्सल होटल से लिखा पोस्टकार्ड भी मुझे मिल गया है। अप्रैल के अंत में मैंने श्रीमती वेटर को पत्र लिखा था और आज भी लिख रहा हूं। जब मैं उनके अलावा अन्य लोगों को पत्र लिखता हूं तो उन्हे बुरा लगता है। असली बात यह है।

मैं डुक्सा-इन्शरबेन द्वारा इस जगह के कुछ पिक्चर पोस्टकार्ड भेज रहा हूं - अलग लिफ़ाफे में। ये तुम्हें इस पत्र के साथ ही मिल जानी चाहिए।

जब तुम्हें समय मिल तो भगवद्गीता (जर्मन) अवश्य पढ़ना और गार्नर की अंग्रेजी पुस्तक। इससे तुम्हारा बौद्धिक विकास होगा। पिछले सप्ताह (एयरमेल) के पत्र में मैंने तुम्हें बहुत सी सलाहें दी थीं, इसलिए मुझसे नाराज मत होना। जब मैं लिखता हूं तो इससे बेहतर कुछ नहीं लिख पाता।

फोटो से तो ऐसा नहीं लगता कि तुम्हारा वजन कम हुआ है। आजकल तुम्हारा वजन कितना है?

नहीं, ये डॉ० धर्मवीर वे नहीं हैं जिनका चित्र तुमने देखा था। इनकी पत्नी अंग्रेज महिला है - बहुत बढ़िया। मेरा इनसे पुराना परिचय है।

आशा है तुम स्वस्थ हो। मैं भी बेहतर हूं। हार्दिक शुभकामनाएं। तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
1 7 37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम्हें मेरे पत्र लगातार मिल रहे होंगे। पिछले सप्ताह मैने डूकाशे द्वारा तुम्हें यहां के कुछ पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे। आशा है शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएंगे। कृपया अपने दो चार चित्र तथा जिन स्थानो पर तुम घूमी हो वहा के चित्र भेजना।

इस सप्ताह कुछ विशेष नहीं है। मैं आजकल ठीक-ठाक हूं - पहले से बहुत बेहतर। किंतु प्रगति बहुत धीमी है।

तुम्हारा स्वास्थ्य आजकल कैसा है? अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना। तुम्हे और तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस
द्वारा डॉ० एन० आर० धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
8.7.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 15 जून का पत्र मुझे 4 जुलाई को मिला। धन्यवाद! संभवतः आजकल तुम पोलाऊ मे हो।

मैं आजकल पतला हो रहा हूं। मैं मोटा होना भी नहीं चाहता। किंतु स्वस्थ रहना चाहिए। आजकल तुम्हारा वज़न कितना है?

तुम फ्रेंच पत्राचार क्यों नहीं करती? जब तक तुम्हारे पास पते नहीं थे, तब तक तो तुम बहुत उत्सुक थी। अब तुम्हें कुछ फ्रांसीसी पते मिल गए हैं तो तुम पत्र नहीं लिख रही।

श्रीमती वेटर को जब यह पता चलता है कि मैं अन्य लोगों को पत्र लिखता हूं, लेकिन उन्हें नहीं लिखता, तो वे नाराज़ हो जाती हैं। यह बात सदा याद रखना।

तुम्हें सिस्टर एलविरा के व्यवहार में आया परिवर्तन पहले-पहल कब पता चला? क्या तुम कारण का अनुमान लगा सकती हो? संभवतः यह महिला का सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव ही है।

शर्मा यहां से बहुत दूर है, किंतु उसने मुझे लिखा है कि वह मुझसे मिलने अवश्य आएगा। जब मैं घर लौटा था तब वह कलकत्ता में भी मुझसे मिलने आया था। मेरे विचार से कटयार वापिस लौटना नहीं चाहता।

मेरी कमीज की बांहें छोटी नहीं की जा सकतीं, क्योंकि भारतीय शैली यही है। यह कमीज कोट के अंदर पहनने के लिए नहीं है। यह कुर्ता है।

डॉ० राय के लिए तुम क्या काम कर रही हो? क्या इस कार्य के वह तुम्हें पैसे देता है?

कॉटेज सैनेटोरियम में कौन है? क्या डॉ० राय के लोगों में से कोई?

आशा है तुम स्वस्थ हो। मैं बिल्कुल ठीक-ठाक हूं। तुम्हें व तुम्हारे माता-पिता को शुभकामनाएं।

साथ में कुछ टिकट हैं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ० एन० आर०
धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
भारत
15 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 23 जून का पत्र मुझे 11 जुलाई को मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं देख रहा हूं कि आजकल तुमने अपने पत्र टाइप करने छोड़ दिए हैं। क्या तुम्हारा टाइपराइटर खराब हो गया है?

तुमने जो चित्र भेजे थे वे मुझे कुछ दिन पहले मिले। बच्चे के चित्र सहित। किंतु मैं समझ नहीं पाया। मुझे लगता है कि तुम्हें इस बात का कष्ट हुआ कि बच्चे के माता-पिता चले गए हैं।

क्या डॉ० फल्टिस का कोई समाचार है। क्या तुम जानती हो कि उनका सैलशाफ्ट कैसा चल रहा है।

यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें कुछ और चित्र भिजवा सकता हूं। पिछले सप्ताह कुछ

आशा है अब तक तुम्हे वे पिक्चर पोस्टकार्ड मिल गए होंगे जो मैंने भेजे थे (डलहौजी के दृश्य)

क्या डॉ० राय को जर्मन भाषा आती है? या वे बिल्कुल भी नहीं जानते?

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अब स्वस्थ हो। मैं पहले से बेहतर हूं। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना और अपनी बहन को शुभाशीष देना।

अभी-अभी मुझे श्री फाल्टिस का पत्र प्राप्त हुआ है।

शुभाकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

द्वारा डॉ० एन० आर० धर्मवीर
डलहौजी
पंजाब
22 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

वर्निस से तुम्हारा भेजा पोस्टकार्ड पाकर प्रसन्नता हुई। तथा जेनेवा से लिखा तुम्हारा पत्र भी मिला। आज मैं तुम्हें लंबा पत्र नहीं लिख पाऊंगा क्योंकि मुझे देर हो गई है और यह पत्र डाक में डालना है, इसलिए कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं। मैं पूर्णतः स्वस्थ हूं। तुम कैसी हो? आजकल गांव में ही होगी। जेनेवा में किससे मुलाकात हुई? अपनी यात्रा के विषय में विस्तार से लिखो – यदि अभी तक नहीं लिखा है तो।

शुभकामनाओं सहित। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
भारत
29 जुलाई, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 6 जुलाई का पत्र मुझे 25 तारीख में मिला। जब तुम्हें पत्र देरी से मिले तो कृपया उसका लिफ़ाफ़ा मुझे भेज दिया करो। मुझे आश्चर्य है कि मेरे द्वारा एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र तुम्हें साधारण डाक से मिल रहे हैं। मैं डाक विभाग से शिकायत करूंगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारा स्वास्थ्य अब ठीक है। कटयार शायद तुम्हारे फेफड़ों की जाँच करना चाहता था। खुशी है कि उनमें कोई खराबी नहीं है। कृपया गॉल ब्लैडर की देखभाल करना मत छोड़ना। यदि भोजन के प्रति सावधान रहोगी तो स्वस्थ रहोगी।

मैं पहले से बेहतर हूं, किंतु कभी-कभी पेट में दर्द हो जाता है। संभवतः धीरे-धीरे ठीक होगा। मैं चाहता था कि बैगस्टीन में एक माह इलाज करवा पाता। किंतु यह संभव नहीं है। मुझे प्रसन्नता है कि आपने सिगरेट पीना कुछ कम कर दिया है। किंतु तुम चाहो तो और भी कम कर सकती हो। एकदम मत करो, किंतु धीरे-धीरे कर सकती हो। तभी तुम्हें सफलता मिलेगी।

मेरे विचार से तुम्हें अधिक से अधिक चीज़ें सीखने का प्रयत्न करना चाहिए। पुरुष अथवा स्त्री जितना ही अधिक शिक्षित होगा उतना ही उसे भविष्य में फ़ायदा होगा।

मुझे आश्चर्य है कि गैरोला परीक्षा मे उत्तीर्ण कैसे हो गया। उसे तो चिकित्सा के संबंध में कुछ भी ज्ञात नहीं है।

अगले सप्ताह मैं तुम्हे जर्मन भाषा में पत्र लिखने का प्रयास करुगां।

संभवतः कुछ और पिक्चर पोस्टकार्ड भी भेजूंगा। किंतु मुझे यह विश्वास हो जाए कि जो चित्र मैंने पहले तुम्हें भेजे थे वे तुम तक पहुंच चुके हैं।

हा, तुमने जो फ़ोटो भेजे थे वे मुझे कुछ सप्ताह पूर्व मिल गए थे। अब तुम्हारा वजन कितना है।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
5.8.1937

प्रिय फ्रॉलिन,

मुझे तुम्हारे वेनिस, जेनेवा और पोलाऊ से लिखे (दिनांक 6, और 13 जुलाई) पत्र मिले, प्रसन्नता हुई। मैं यह जानना चाहता हूं कि तुम्हारी जेनेवा यात्रा का प्रबंध किसने किया? मेरे विचार से कोई भारतीय होगा - क्या ऐसा ही है? क्या तुम विएना वापिस आते में वेनिस गईं थीं। तुमने वेनिस में क्या खरीदा? वह व्यक्ति कौन था, जिसके लिए तुमने विएना में कुछ माह कार्य किया? श्री कटियार क्या कहते हैं? वह इस बात से प्रसन्न हैं या परेशान कि भारत वापिस लौटना पड़ रहा है। इतने दिन रोम में उन्होंने क्या किया?

मुझे प्रसन्नता है कि तुम बेहतर महसूस कर रही हो। तुम्हें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि तुम्हें गाल ब्लैडर की परेशानी है इसलिए तुम्हे हमेशा सावधान रहना चाहिए।

बंगाल डाक कार्यालय से मुझे पता चला कि तुम्हारा पार्सल व अन्य पत्र आदि रास्ते में ट्रेन मे जल गए।

मुझे यह जानकर आश्चर्य हो रहा है कि मेरे दो पत्र जो मैंने एयरमेल द्वारा भेजे थे वे तुम्हें साधारण डाक से मिले। यदि मेरा पत्र विएना में बहुत दिन बाद मिला करे तो कृपया लिफ़ाफ़ा मुझे वापिस भेज दिया करो, ताकि मै यहां शिकायत लिखूं, वैसे तुम भी चाहो तो विएना में शिकायत दर्ज करा सकती हो।

.... (अस्पष्ट) यहूदी? क्या अन्य लोगो की भांति उन्हे भी ईश्वर ने ही नहीं बनाया है। क्या फ्रेजीवेस विएना में पढ़ रही है या लंदन में? सेन ने मुझे लिखा था कि वह विएना जाएगा। शायद आजकल विएना में ही हो। वह कुछ माह वहा रहकर पढाई भी करेगा और नौकरी भी करेगा। क्या श्रीमती वेसी अभी भी पेशन कोस्मोपोलाइट में ही रह रही है? शायद उनका पेंशन तो बंद हो चुका है।

यह अच्छी बात नहीं है कि तुम सिगरेट पीती हो। 'जर्मन महिलाए तो धूम्रपान नहीं करतीं।' मुझे विश्वास है कि यदि तुम चाहो तो सिगरेट के बिना भी जिंदा रह सकती हो। तुम्हें चिंतित होने की जरूरत नहीं - शात रहो और धैर्य रखो तो तुम्हे सिगरेट की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आजकल तुम क्या कर रही हो? यदि भविष्य के जीवन की तैयारी करो तो बेहतर होगा। व्यक्ति को सदैव कार्य करते रहना चाहिए।

क्या तुम जर्मन भाषा मे भगवद्‌गीता पढ़ना नहीं चाहोगी? यह तुम्हारे लिए मुश्किल काम नहीं है।

पता नहीं गैरोला की सभी परीक्षाएं कैसी रहीं। क्या तुम कुछ जानती हो?

गार्नर अथवा गैटल (ठीक से मालूम नहीं), तुम्हारे पास विएना में है। यह पुस्तक राजनीति पर है। जब मैं विएना आया था तो यह पुस्तक तुम्हारे लिए भारत से खरीद कर ले गया था। शायद तुम यह भूल चुकी हो।

54.5 किलो वज़न कम है। तुम्हारा वजन तो काफ़ी कम हो चुका है। कम से कम 57 किलो वजन होना चाहिए। (1 किलो = 2.2 पाउड)

यदि तुम्हारा जन्म 1910 में हुआ था तब तो तुम अभी बहुत छोटी हो। मैं तो बहुत बड़ा हूं, क्योंकि मैं पिछली सदी में पैदा हुआ था।

आजकल मैं पहले से बेहतर महसूस करता हूं, लेकिन पूरी तरहा अभी ठीक नहीं हुआ हूं। हालांकि यहां प्रायः बारिश होती है, किंतु फिर भी मौसम अच्छा है। यहां का तापमान 20 या 21° रहता है। रात-दिन में खाता-पीता, सोता और पढ़ता रहता हूं, कभी-कभी सैर करने भी जाता हूं, किंतु जर्मन बहुत कम पढ़ पाता हूं।

आशा है आजकल पोलाऊ मे मौसम अच्छा होगा और तुम बाहर मौजमस्ती के लिए जा सकती हो। पैदल कितनी दूर तक चलती हो?

अपने माता-पिता को मेरा सादर प्रणाम कहना। लोती कैसी है, उसे मेरा शुभाशीष।

हार्दिक शुभकामनाओं साहित

सदैव तुम्हारा

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - मेरी गलतियो के लिए मुझे क्षमा कर देना।

डलहौजी
12.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 20 जुलाई का पत्र मुझे 8 तारीख में मिला। तुमने लिखा है कि उस सप्ताह के दौरान तुम्हें मेरा पत्र नहीं मिला - किंतु मैं प्रत्येक सप्ताह लगातार तुम्हें पत्र लिखता हूं। यदि पत्र तुम्हें देर से मिले या एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र तुम्हें साधारण डाक से मिले तो उनके लिफ़ाफ़े मुझे भेज देना मैं यहां डाक विभाग मे शिकायत दर्ज करुंगा। एयरमेल के पत्र साधारण डाक द्वारा भेजे जाने की शिकायत तो मैं यहां कर भी चुका हूं। वे लिफ़ाफ़े मांग रहे थे और मैं वे उन्हें उपलब्ध नहीं करा सका। श्रीमती वेटर को भी यही शिकायत है कि उन्हें मेरे पत्र देरी से मिलते हैं। तुम उन्हें भी कह देना कि वे भी लिफ़ाफ़े मुझे भेज दें ताकि मैं शिकायत कर सकूं। उन्हें बता देना कि मैं अगले सप्ताह उन्हें पत्र लिखूंगा। अंग्रेज़ी में 'boil tea or cook tea' नहीं कहना चाहिए बल्कि केवल यह कहना चाहिए कि 'Make tea' और 'Prepare tea' चावल उबालते है, चाय नहीं। क्योंकि चाय आप तब डालते है जब पानी नीचे उतार लेते हैं।

यहां अन्य कुछ लिखने को नहीं हैं। आजकल बरसात हो रही है, इसलिए हम लोग बाहर आ जा नहीं पाते। इस माह के अंत तक बरसात समाप्त हो जाएगी।

पिछले सप्ताह मैंने तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिखा था। आशा है वह समय पर मिल जाएगा।

'मीराबेन' महात्मा गांधी की अंग्रेज शिष्या सुश्री स्लेड हैं, जो आजकल यहां आई हुई हैं। जब वे यहां आईं तो उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था और उन्हें मलेरिया बुखार हो रहा था। अब वे स्वस्थ हैं और शीघ्र ही महात्मा गांधी के पास लौट जाएंगी। मैं कोशिश करूंगा कि यहां खींचा गया संयुक्त फ़ोटो तुम्हें भिजवा सकूं।

मेरा गला बेहतर है, किंतु लिवर और पाचन क्रिया अभी ठीक नहीं हो पाई है। मैं बूढ़ा भी तो होता जा रहा हूं।

तुमने भारत के विषय में कुछ पुस्तकों की जानकारी चाही है, किंतु मेरे विचार से उन्हें भेजने का कोई लाभ नहीं हैं। क्योंकि तुम्हारे पास जो पुस्तकें हैं, तुम उन्हें ही नहीं पढ़ती। जब तक गंभीर मनःस्थिति में नहीं आओगी तब तक पढ़ाई मे मन नहीं लग पाएगा। वियना में तुम्हारे पास ढेरों पुस्तकें हैं, विभिन्न विषयों पर, किंतु मैं नहीं जानता कभी तुमने उन्हे देखा भी हो तो।

आशा है तुम्हारा समय अच्छा बीत रहा होगा, स्वास्थ्य की देखभाल कर रही होगी। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

तुम्हें और तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम व लोती को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
19.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 27 जुलाई का पत्र 15 तारीख में पाकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। पता नहीं मेरा एक पत्र (1, जुलाई) डाक में इधर-उधर कैसे हो गया? कृपया मेरे सभी पत्र जो तुम्हें देर से मिले और एयरमेल द्वारा भिजवाए गए, जो पत्र साधारण डाक से मिले उन सभी के लिफ़ाफ़े मेरे पास भेज दो। मैंने यहां स्थानीय डाकघर में शिकायत की थी। वे लिफाफे मांग रहे थे। यदि फिर भविष्य में कभी ऐसी शिकायत हो तो मुझे उनके लिफ़ाफे अवश्य भिजवा देना। मैं उसी समय शिकायत कर दूंगा। अब मुझे तुम्हारे पत्र लगातार मिल रहे हैं।

इस माह के अंत में संभवत: बरसात समाप्त हो जाएगी और तब मौसम अच्छा हो जाएगा। वैसे कुल मिला कर यहां दार्जिलिंग जैसी नमी नहीं है। मेरा वजन 154 पाउंड है। (1 किलो = 2.2 पाउंड) इस प्रकार मेरा वज़न 20 पाउंड के आसपास घटा है। यह वजन जब मैंने यूरोप छोड़ा था, उसकी तुलना में कम है। किंतु अब मुझे वज़न की इतनी चिंता नहीं, किंतु ताकत होनी जरूरी है।

इस स्थान के विषय में कुछ लिखने को विशेष नहीं है। अधिक लोगों से मिलना जुलना हो नहीं पाता। मेरे मेज़बान बहुत सख्त हैं और वे जब तक कोई विशेष कार्य न हो तब तक किसी को मुझसे मिलने नहीं देते। यहां भारत में जब कोई व्यक्ति प्रसिद्ध हो जाता है बहुत से लोग केवल श्रद्धा जताने की दृष्टि से भी उससे मिलने आने लगते हैं। किंतु इसका अभिप्राय यही है कि मेरा समय व्यर्थ बर्बाद हो। वैसे ऐसे मिलने वाले यहां कम हैं, क्योंकि यह जगह कुछ अलग-थलग पड़ती है। डॉ० शर्मा पिछले सप्ताह मुझसे मिलने आए थे और डॉ० कटयार संभवत: अगले सप्ताह आएंगे।

पिछली डाक से आयरिश समाचार पत्र मिला, जो तुमने भिजवाया है।

निरंतर जिमनास्टिक करना अच्छा है, इससे मांसपेशियों में दर्द नहीं होता। आजकल तुम सिलाई का क्या काम कर रही हो। क्या पिआनो या वायलिन बजाती हो? वैसे तुम वायलिन बजाना क्यों नहीं सीख लेतीं?

मुझे यह जानकर खेद हुआ कि अस्त-व्यस्त रूप में भोजन लेने के कारण तुम पुनः बीमार हो गई हो।

मैं तुम्हें जर्मन भाषा में पत्र लिख सकता हूं, किंतु उसमें मेरा बहुत सा समय बर्बाद हो जाता है। किंतु तुम सीधी-सादी जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। मैंने प्रो० डेमेल को हाल में जर्मन भाषा मे पत्र लिखा था जिसका उन्होंने उत्तर भी जर्मन भाषा मे ही दिया।

तुम्हारे माता-पिता को प्रणाम। तुम्हें व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

मैं, तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
27.8.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 13 अगस्त का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई, जो मुझे 22 तारीख को मिला था। चित्रों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। अच्छे आए है। मैं तुम्हे एन्शटीबेन द्वारा एक फोटो भिजवा रहा हूं जो सुश्री स्लेड (मीराबेन) जब यहां आई थी तब खींचा था। वे गांधीजी की शिष्या हैं (अंग्रेज) दो महीने यहां बिताने के बाद वे आश्रम मे चली गई जहां गांधी जी रहते हैं। वे सदा भारतीय वेशभूषा पहनती है और भारतीय नाम भी रख लिया है। चित्र मे उन्होंने पंजाब की स्थानीय वेशभूषा पहन रखी है, जिसमें ढीली-ढाली सलवार, ढीला कुर्ता और एक दुपट्टा होता है।

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि तुमने दुबारा फ्रेंच सीखनी शुरू कर दी है। कृपया मुझे साधारण जर्मन भाषा मे पत्र लिखना। मैं समझ जाऊंगा। किंतु मुझे जर्मन भाषा में पत्र लिखने में बहुत समय लगता है।

तुम्हारा जिमनास्टिक कैसा चल रहा है? तुम्हे यह रोज करना चाहिए वरना तुम्हारी मांसपेशियों मे दर्द होगा और वे कठोर हो जाएंगी।

यदि तुम श्री जेनी को पत्र लिखो तो उन्हें लिख देना कि मुझे उनका पत्र मिल गया है और मैं शीघ्र ही उसका उत्तर भी दूंगा। क्या तुम्हारी मुलाकात मैडम होरव से हुई, जिन दिनों वे विएना में थीं या तुम केवल उन्हें पत्राचार के माध्यम से ही जानती हो।

मैं लगातार तुम्हे पत्र लिख रहा हूं। कृपया मुझे यह अवश्य सूचित किया करो कि मेरा किस तारीख का पत्र तुम्हें किस दिन मिला। साधारण डाक से 18 दिन लगते हैं, जबकि एयरमेल में 7 दिन। यदि पत्र देर से मिले तो उसका लिफ़ाफा संभाल कर रख लो और मुझे भिजवा दो ताकि मैं शिकायत दर्ज करा सकूं।

मैं तब तक तुम्हें कोई पुस्तक भेजना नहीं चाहता जब तक कि तुम पढ़ने के लिए बेहद उत्सुक न हो जाओ।

जो पहला चित्र तुमने मुझे भेजा था वह उतना अच्छा नहीं था। बच्चे का फ़ोटो अच्छा आया था.... (जर्मन भाषा)

[अनुवाद - किंतु तुम्हारी फोटो अच्छी नहीं आई - संपादक]

क्या डॉ० सेलिंग नन बन गई हैं? नहीं तो वे ननों के आवास में क्या करने गई हैं?

यदि दूध तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं तो तुम दही क्यों नहीं लेती? यह हल्का भी होता है और आसानी से घर पर ही तैयार किया जा सकता है। वैसे क्या तुम्हें दही जमाना आता है - नहीं तो मैं तुम्हें सिखा सकता हूं। थोड़ा सा (बहुत कम मात्रा में) दही लेकर इसे हल्के गर्म दूध में मिला दो और रातभर रखा रहने दो। सुबह दही तैयार मिलेगा। यदि बहुत सर्दी हो तो रातभर रसोई में ही पड़ा रहने दो।

मैं स्वस्थ होता जा रहा हूं। शायद सितंबर के अंत तक यहां रहूंगा। यदि तुम चाहो तो मुझे हमेशा जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। मैं इच्छानुसार उत्तर दूंगा। तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम। तुम्हें व तुम्हारी बहन को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

2 सितम्बर, 1937
(जर्मन भाषा के पत्र का
अनुवाद)

प्रिय महोदया,

तुम्हारे 10 तारीख के पत्र (साथ में लेख भी था) के लिए धन्यवाद। इस सप्ताह मैं एयरमेल द्वारा पत्र भेज रहा हूं। तुम मुझे हमेशा जर्मन भाषा में पत्र लिख सकती हो। साथ में मैं डॉ० सेन के लिए पत्र भेज रहा हूं जो आजकल फिर विएना में ही है। मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं कि वे कहां ठहरे है, किंतु मेरे विचार से वे अल्सर्स्ट्रासे में ठहरे है और शायद उनका नंबर 18/15 या 20/15 है। उन्होंने मुझे लिखा था कि वे 18/15 मे ठहरेंगे, किंतु मेरे विचार से वेस परिवार वहां ठहरा हुआ है।

कृपया पहले पक्का पता कर लेना कि वे कहा ठहरे हैं। उसके बाद ही उन्हे यह पत्र भेजना। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ग्राज मे तुम घूमने गई थी। मैंने सुन रखा है कि ग्राज बहुत खूबसूरत शहर है। दुर्भाग्यवश मेरा वहा जाना नहीं हो पाया। अभी तक मुझे ग्राज के चित्र भी नहीं मिले हैं। (जो तुमने मुझे भेजे थे।)

तुम वापिस विएना कब जा रही हो?

पोलाऊ में आजकल मौसम कैसा है – तुमने अब तक कितनी मक्खियां मारी हैं? क्या रात में तुम्हें शांतिपूर्ण नींद आ जाती है?

मुझे बहुत से पत्रों के उत्तर देने होते है और कई लेख आदि लिखने होते है। आजकल मैं कुछ पुस्तकें भी पढ़ रहा हूं। यहां पहाड़ों पर मेरा कोई सचिव नहीं है। मेरी मेजबान जो बहुत अच्छी है, कभी-कभी मेरा टाइप का काम कर देती है।

.... (अस्पष्ट) इसलिए, तुम्हें भी नन बन जाना चाहिए। पता नहीं मेरे इस लेख का क्या होगा। शायद मुझे संपादक से (इंटरसाम्टे ब्लाट) शिकायत करनी पड़े। क्या तुम्हें मालूम है कि मंजूरुद्दीन अहमद का लेखक कौन है? यह लेख किस अंक में और किस तारीख को प्रकाशित हुआ था। तुम्हें हमेशा अंक की संख्या और तिथि भी लिखनी चाहिए।

मुझे विश्वास है कि अब तक तुम विएना पहुंच चुकी होगी? अब वहां क्या करने का विचार है? श्री फ़ाल्टिस और प्रोफ़ेसर डेमेल को मिलो और दोनों को मेरी नमस्ते कहना। बहुत दिनों से श्रीमती हार्प्रोव का कोई समाचार नहीं मिला। कृपया सूचित करो कि वे कैसी हैं? विएना से अपना कोई अच्छा सा चित्र भेजो। अर्लस्ट्रासे 23 मे एक अच्छा फ़ोटोग्राफ़र है (मैं उसका नाम भूल रहा हू), उसके पास एक बार मैं गया था।

यदि चाहो तो वहां जा सकती हो। क्या तुमने यह सुना है कि प्रो. डेमेल 30 अगस्त को भारत की यात्रा पर जाएंगे।

पिछले सप्ताह मैं घूमने गया था। हम लोग लगभग 18 किलोमीटर चले। अब मैं पहले की अपेक्षा बेहतर महसूस कर रहा हूं, किंतु लिवर और पाचन क्रिया पूरी तरह ठीक नहीं हो पाई है। कृपया मुझे लिखो कि विएना में तुम आजकल क्या कर रही हो। क्या तुम श्री सेन से हमारी भाषा सीखना नहीं चाहतीं? अपने माता-पिता को मेरी सादर नमस्ते कहना और तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
9.9.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 17 अगस्त का पोस्टकार्ड मुझे 5 तारीख में मिला। पता नहीं तुम्हें मेरा पत्र क्यों नहीं मिल रहा। मैंने अपनी डायरी में देखा तो पता चला कि मैंने तुम्हें पत्र लिखा है। वैसे मेरी डाक कभी इधर-उधर नहीं होती। यदि ऐसा हो जाए, तो मैं अगले ही पत्र में तुम्हें इसकी सूचना दे देता हूं। यदि मेरा कोई पत्र तुम्हें देर से मिले तो कृपया मुझे उसका लिफ़ाफ़ा अवश्य भेजो ताकि मैं शिकायत दर्ज करा सकूं। पत्र खोलने में सावधानी बरतना कि डाकघर के निशान नष्ट न हो। क्योंकि उन्हीं के द्वारा डाकघर में कार्यवाही होगी।

शायद तुम वापिस विएना में पहुंच गई हो। गांव से लौटने के बाद कैसा महसूस हो रहा है? .... [अनुवाद – मैं अभी अगले दो महीने और यहीं रहूंगा] अक्तूबर सितंबर में यहां खुश्की और गर्मी पड़ने लगती है। हालांकि इस वर्ष अभी यहां बारिश ही हो रही है। .... [अनुवाद - तुम्हारा वज़न अब कितना है? - संपादक] 26 तारीख को मैंने तुम्हें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा था। अब तक मैं तुम्हें दो पत्र जर्मन भाषा में लिख चुका हूं। मैं सुनना चाहता हूं कि तुम्हें मेरी जर्मन भाषा कैसी लगी। परेशानी यह है कि मुझे जर्मन शब्दों के लिए बहुत देर तक सोचना पड़ता है और फिर उन्हें व्याकरण की दृष्टि से ठीक करना पड़ता है, जबकि अंग्रेजी में मैं फटाफट लिख सकता हूं। क्या अभी भी तुम टिकटें एकत्र करती हो। मैं पत्र के साथ कुछ भेज रहा हूं – क्योंकि मैं इन्हें एकत्र नहीं करता बल्कि यूं ही फेंक देता हूं।

तुमने मुझे ग्राज़ से पत्र नहीं लिखा – किंतु पोलाऊ से लिखा जो 10 तारीख का है। तुमने ग्राज से जो पिक्चर पोस्टकार्ड भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं। बहुत बहुत धन्यवाद –

वे बहुत सुंदर हैं। जिस कागज में तुमने फोटो लपेटे थे, 20 चित्र लिखा था। मुझे 20 ही चित्र ठीक-ठाक मिल गए हैं। किंतु लिफाफा कोई नहीं था। क्या उसमें कोई पत्र भी था? यदि था तो वह चुरा लिया गया होगा। मुझे तत्काल लिखो ताकि मैं इसकी शिकायत कर सकूं। ऐसा लगता है कि तुम्हारे पत्रों पर विशेष नजर रखी जा रही है, किंतु अपने जीवन में मैं यह समझ नहीं पा रहा कि ऐसा क्यों हो रहा है।

..

[अनुवाद - जब फोटो आदि भेजो तो मुझे जर्मन भाषा में ही पत्र लिखो। विएना में तुम हमारी भाषा नहीं सीख सकती? - संपादक]

कुल मिलाकर मेरा स्वास्थ्य ठीक है। .

[अनुवाद - तुम्हारी सैर बढ़िया रही] जब विएना जाओ तो अपने मित्रों को मेरी नमस्ते कहना।

तुम्हारे माता-पिता को सादर प्रणाम और तुम्हे नमस्कार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
पंजाब
16.9.37

प्रिय फ्रॉलिन,

तुम्हारे 25 अगस्त के पत्र के लिए शुक्रिया जो मुझे 12 सितंबर को प्राप्त हुआ। यहां सितंबर के पूरे महीने में बहुत तेज बारिश होती रही, इसलिए इस वर्ष यह महीना अच्छा नहीं रहा। डाक्टरों की राय है कि मैं अभी पूरी तरह स्वस्थ नहीं हूं, इसलिए अभी मुझे कलकत्ता से दूर यहां दो महीने और रहना पड़ेगा। यदि तुम्हारे पास विएना में पर्याप्त समय हो, और संभव हो तो एक अध्यापक की व्यवस्था कर हमारी भाषा अवश्य सीख लो। क्या तुम्हारे पास गेटल (गार्नर नहीं) की पुस्तक, जो मैंने तुम्हें दी थी 'द आर्ट आफ गवर्नेंस' है? यदि है तो अब तुम उसे पढ़ सकती हो।

मैं प्रत्येक सप्ताह तुम्हें पत्र लिखता हूं। यदि तुम्हे हर सप्ताह मेरा पत्र नहीं मिलता है तो, या देर से मिलता है तो कृपया मुझे लिखो और लिफ़ाफा भी साथ भेजो।

तुम्हारे चित्रों के लिए धन्यवाद, किंतु वे बहुत अच्छे नहीं हैं।

इंडियन एसोसिएशन आजकल क्या कर रही है? विएना में तुम्हें फ्रेंच बोलनी तो सीख ही लेनी चाहिए।

मुझे खुशी है कि तुम्हें चर्खा चलाना पसंद आया। क्या तुम्हारे पास चर्खा है? तुम्हें कहां से मिला? यहां डॉक्टर और उसकी पत्नी प्रतिदिन सूत कातते हैं। मुझे तुम्हारा भेजा सूत (पत्र के साथ) मिला। यह सूत हमारे यहां की रूई जैसा नहीं है।

आजकल तुम्हारा वज़न 57 किलो के लगभग होना चाहिए और तुम्हें पहले से शक्तिशाली भी महसूस करना चाहिए, क्या ऐसा नहीं है?

क्या तुम्हें लगता है कि यूरोप की अपेक्षा अब मैं अच्छी जर्मन लिख लेता हूं। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम और लोती को नमस्ते। तुम्हें शुभकामनाएं। मैं सदा तुम्हारा रहूंगा।

सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी

सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च: – मैं अपने एक मित्र को रकसैक उपहार में देना चाहता हूं। कृपया मुझे सूचित करो कि एक अच्छा रकसैक कितने रुपये का आएगा? क्या तुम मुझे प्रो० डेमेल या सेन के हाथ भिजवा दोगी। डेमेल 30 अक्तूबर को विएना से चलेगा। क्या तुम जानती हो कि सेन कब चलेगा?

सुभाष चंद्र बोस

22 सितंबर, 1937

प्रिय सुश्री शेंक्ल

तुम्हारे 31 अगस्त के पत्र के लिए शुक्रिया जो मुझे 19 सितंबर को मिला। तुम्हारा मित्र कटयार कुछ दिन पहले यहां था और कल ही घर वापिस लौटा है। मैं उसे नौकरी दिलाने का प्रयास कर रहा हूं।

यूरोप में यहूदियों ने बहुत उन्नति की है, क्योंकि वे योग्य हैं। आर्य लोग मूर्ख हैं, वरना, यूरोप में विदेशी इतनी उन्नति कैसे कर पाते?

29 जुलाई का जो पत्र तुम्हें 31 अगस्त को मिला वह जर्मन भाषा में था या अंग्रेजी मे?

तुम इतनी परेशान क्यों हो? तुम इतनी युवा हो। जब तुम मेरी भांति 40 वर्ष की हो जाओगी तो क्या बनना चाहोगी।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि आजकल तुम बहुत काम कर रही हो या बहुत पढ़ाई कर रही हो। तुम एच० ए० के विषय में कौन सा लेख लिख रही हो और किसके लिए?

तुमने लिखा है कि तुम बहुत छोटी हो। तुम ऐसा क्यों सोचती हो? तुम्हारी वास्तविक लंबाई कितनी है? यह बात मैं मानता हूं कि व्यक्ति जब मोटा हो जाता है तो आलसी हो जाता है। इसीलिए मैं पतला बना रहना चाहता हूं।

यदि संभव हो तो कृपया जर्मन भाषा में ही उत्तर देना।

मुझे खुशी है कि अब तुम स्वस्थ हो। किंतु तुम्हें नींद ठीक से आनी चाहिए। मेरे विचार से तुम बहुत सोचती और चिंतित रहती हो। क्या यह बात ठीक नहीं है? यदि तुम नौकरी की तलाश मे भी हो तब भी तुम्हें शांत रहना चाहिए।

आजकल यहां का मौसम बहुत अच्छा और धूप वाला है। हम शीघ्र ही ट्रैकिंग पर जाएंगे।

मेरे भोजन के विषय में तुमने जो कहा वह गलत है। मैं वही खाता हूं जो मुझे मेरे डाक्टर (मेजबान) खाने की अनुमति देता है। वह इस विषय मे बहुत सख्त है।

यह अच्छी बात है यदि तुम सूत कातना जानती हो तो। क्या अभी भी सूत कातती हो? तुम्हारा सूत कैसा है? यहां तो प्रायः रुई से सूत काता जाता है।

क्या तुम अन्य भारतीयों को भी मिलीं। अंदाजन वहां कितने भारतीय हैं। उनमें से कितने एसोसिएशन में आते हैं?

तीन बार तुमने मुझे चित्र भेजे हैं और मुझे वे सभी मिल गई है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

भारत में 40 वर्षीय पुरुष बूढ़ा हो जाता है – क्या तुम्हे मालूम है? पता नहीं अभी कब तक और यहां रहूंगा। डॉक्टर का विचार है कि मुझे 15 नवंबर तक पहाड़ों में ही रहना चाहिए चाहे यहां रहूं या कहीं और। फ़िलहाल मैं अपने रिश्तेदारों से बात कर रहा हूं उसके बाद ही कुछ निर्णय लूंगा।

श्री टाइमर को तथा अन्य मित्रों को मेरा प्रणाम कहना।

कृपया मुझे सूचित करो कि तुम्हारे सपने किस प्रकार के हैं। मैं शायद उनकी भविष्यवाणी कर सकूं, क्योंकि मैंने थोड़ा सा सपनों का मनोविज्ञान पढ़ रखा है।

पिछले दिसंबर में तुमने जो पार्सल भेजा था उसकी रसीद मेरे पास नहीं है।

अपने माता-पिता को मेरा हार्दिक प्रणाम कहना।

शुभकामनाओं सहित,

सदैव तुम्हारा
सुभाष चंद्र बोस

डलहौजी
30 सितंबर, 1937

मेरी प्रिय मित्र,

तुम्हारे 8 सितंबर के पत्र के लिए शुक्रिया, जो मुझे 27 सितंबर को मिला। अशुद्धियां निकालने के लिए भी धन्यवाद। तुम्हारा मित्र कटयार हाल ही में यहीं था। वह बहुत अच्छा दिख रहा था। अभी उसने कोई निर्णय नहीं किया है कि वह क्या करेगा और मैं उसे नौकरी दिलवाने में उसकी सहायता कर रहा हूं।

संभवत: एक सप्ताह बाद मैं घर लौट जाऊंगा, किंतु ठीक-ठीक मालूम नहीं। इसलिए तुम मुझे मेरे घर के पते पर पत्र लिख सकती हो। अक्तूबर में यहां का मौसम अच्छा रहता है, किंतु दुर्भाग्यवश मैं और अधिक यहां नहीं रह सकता। मेरे मेजबान और उनकी पत्नी को लाहौर जाना है, अत: मैं घर लौटना ही पसंद करूंगा।

मैंने सुना है कि एसोसिएशन में लोग हमेशा झगड़ा ही करते रहते हैं। मेरे विचार से गैरोला आत्म-केंद्रित व्यक्ति है तथा लालची भी है। (कृपया उससे मत कहना) वैसे वह काफ़ी मेहनती है। सेन साहसी और विशाल हृदय व्यक्ति है। लेकिन वह गैरोला जितना कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि वह पढ़ाई भी कर रहा है। यही अच्छा होगा कि तुम बैठकों में जाना बंद कर दो।

पिछले पत्र में मैंने लिखा था तुम्हें चिंता नहीं करनी चाहिए।

जब तुम मेरी अशुद्धियां निकालो तो केवल शब्द ही लिख भेजा करो।

क्या तुम्हें गैटल की पुस्तक 'द आर्ट आफ गवर्नेंस' मिली? क्या तुम इसे पढ़ना नहीं चाहोगी?

तुम कैसी हो? मैं ठीक हूं।

कृपया अपने माता-पिता को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं देना।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

मैं, सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च: – सदा जर्मन भाषा में पत्र लिखो। जब लिफ़ाफ़ा वापिस भेजो तो इसे टिकट सहित भेजना। साथ में मैं कुछ टिकट भेज रहा हूं।

सुभाष चंद्र बोस

विएना
30.9.1937

प्रिय श्री बोस,

बुधवार को जब मैंने साधारण डाक से आपको पत्र लिखा तो एक खास बात के विषय में पूछना भूल गई थी, ऐसोसिएशन के विषय में, हालांकि मैंने वादा किया था। इसलिए मुझे यह पत्र एयरमेल द्वारा भेजना पड़ा और यदि संभव हो तो कृपया एयरमेल द्वारा ही उत्तर भी देना।

हम राष्ट्रीय झंडे के कायदे-कानून जानना चाहते हैं।

झंडे के रेखा चित्र

सही झंडा कौन सा है? समाचार पत्रों के अनुसार 'ए' ठीक है। किंतु यहां विएना में एक भारतीय झंडा है जिसमें चर्खा 'बी' की भांति बना है। वे चाहते हैं कि मैं उनके लिए झंडा पेंट कर दूं, लेकिन यहां कोई नहीं जानता कि सही कौन सा है। वे इसके विषय मे काफी चिंतित हैं (मैं समझ नहीं पा रही कि इसमें चिंता की क्या बात है।)

कृपया मुझे बताएं, अन्यथा ये लोग मेरा जीना दूभर कर देंगे। जैसे कि मुझे झंडा सिलने और पेंट करने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं है।

एक और बात। हालांकि मैं जानती हूं कि यह अनुचित है, किंतु फिर भी मैं आपसे निवेदन करती हू कि एसोसिएशन के लिए कुछ चंदा दें। संभव है आपके कुछ मित्र भी चंदा दे सकें। आप जानते हैं कि बहुत से काम करने को है, लेकिन हाथ में पैसा उतना नहीं है। उदाहरण के तौर पर डॉ० बी० सी० राय ने 6 महीने तक क्लर्क रखने के लिए पैसा दिया है। किंतु मुझे मालूम है कि ये लड़के टेंट अथवा कमरे तथा कागजों के लिए पैसा देने पर भी खर्च करेंगे। उनकी आपसे मांगने की हिम्मत नहीं है, इसलिए यह दुरूह कार्य मुझे उन्हें बताए बिना करना पड़ रहा है। कृपया उन्हें दो या तीन पुस्तकें लाइब्रेरी के लिए भी भेज दे, ताकि वे लाइब्रेरी की शुरुआत कर सकें।

अब आप समझ ही गए होंगे कि मुझे कितनी बातें चिंतित किए रहती हैं। यदि आपको एसोसिएशन को आगे बढ़ाने के संबंध मे विचार देने हैं तो कृपया अवश्य लिखे।

मुझे आशा है कि आप मुझे इस कष्ट के लिए क्षमा कर देंगे, यद्यपि मुझे मालूम है कि आप इन दिनों बहुत व्यस्त हैं। किंतु इन लोगों को सहायता की बहुत आवश्यकता है।

इस सप्ताह पत्रिका में मैंने आपका बहुत लंबा लेख पढ़ा जो आपने भविष्य में यूरोप की स्थिति क्या होगी उसके विषय में लिखा है। इतने लंबे लेख कोई कैसे लिख सकता है। यह लेख काफी दिलचस्प है, हालांकि मुझे राजनीति बिल्कुल समझ में नहीं

आती। मुझे इसे पढ़ने में 2 घंटे लगे। अब मैं वह पुस्तक पढ़ने की कोशिश करूंगी जो आपने मुझे मेरे जन्मदिन पर सन 1935 में उपहार स्वरूप दी थी। के० हैनशोफ़र की 'वेल्ट पोलिटिक वॉन हूटे'। यह पुस्तक बहुत अच्छी तरह लिखी गई है, किंतु उनकी शैली बहुत भयानक है। पहले मैं समझी कि मैं मूर्ख हूं और मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा। किंतु आज मेरे पिता ने यह पुस्तक पढ़ी तो उन्होंने भी यही कहा। उन्हें भी यह समझने के लिए कि वह क्या कहना चाहता है इसे दो तीन बार पढ़ना पड़ा।

आपका स्वास्थ्य कैसा है? क्या अभी भी आपका लिवर आपको परेशान करता है? मुझे बुरी तरह जुकाम हो गया है, किंतु लगता है कि शीघ्र ही वह ठीक हो जाएगा। मेरी माता ने पिछले सप्ताह एक्सरे कराया था - जिसमें गॉल ब्लैडर की सूजन आई है। इस प्रकार मैं अकेली ही नहीं हूं। भगवान का शुक्र है कि आजकल मुझे अधिक दर्द नहीं होता।

मैं एक पत्रकार के साथ मिलकर भारत पर कुछ लेख लिखना चाहती हूं और उन्हें आस्ट्रियाई अखबारों में छपवाना चाहती हूं। क्या आप सुझाव दे सकते हैं कि आवश्यक सूचना कहां से मिल सकती है।

मैं पारिवारिक जीवन, शादी-ब्याह आदि के अवसरों के विषय में लिखना चाहती हूं।

अभी मुझे ध्यान आया कि पूजा का त्यौहार तो अब तक समाप्त हो चुका होगा। विजया की शुभकामनाएं स्वीकार करें।

मैं आपकी और क्या सेवा कर सकती हूं? यदि कोई सेवा है तो लिखने में झिझकिएगा नहीं। यथाशक्ति मैं उसे अवश्य पूरा करूंगी।

वियना में आपकी जो पुस्तकें पड़ी हैं उनमें से कोई पुस्तक आपको चाहिए? अब क्योंकि आपने पुनः कार्य शुरू कर दिया है, इसलिए आपको इनकी आवश्यकता पड़ सकती है। मैं ये आपके पास भेज दूंगी। किंतु मैं ये पुस्तकें किसी व्यक्ति के हाथ नहीं भेजूंगी - डाक से ही भेजूंगी, क्योंकि आप तो जानते ही हैं कि इस विषय में बहुत कम लोग ऐसे हैं जिनपर विश्वास किया जा सकता है। पुस्तकों के विषय में वे प्रायः भूल जाते हैं।

एक बार पुनः कष्ट के लिए क्षमा चाहती हूं।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपकी शुभकामनाएं
एमिली शेंक्ल

7.10.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले सप्ताह मुझे तुम्हारा पत्र मिला। अब मैं कलकत्ता जा रहा हूं और ट्रेन में बैठा हूं। एक दो दिन वहां रहने के बाद मैं कुर्सियांग के लिए (दार्जिलिंग के निकट) रवाना हो जाऊंगा। इसलिए कृपया मुझे कलकत्ता के पते पर ही पत्र लिखना।

डलहौजी से मैंने बुक पोस्ट द्वारा एक पत्रिका 'एशिया' और रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा - दो पुस्तकें भेजी थीं। आशा है वे शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएंगी। मैं बिल्कुल ठीक हूं। आशा है वहां सब ठीक ठाक होगा।

शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कुर्सियांग, डी० एच० राय
बंगाल
13.10.37

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 21 सितंबर और 30 सितंबर का एयरमेल द्वारा भेजा पत्र मिला। 5 तारीख को मुझे डलहौजी अचानक छोड़ना पड़ा। कलकत्ता होता हुआ यहां पहुंचा हूं, जहां मैं अपनी माता और अन्य रिश्तेदारों से भी मिला। अब मैं कुर्सियांग में अपने भाई के पास रह रहा हूं। पिछले सप्ताह मैंने ट्रेन में तुम्हें एक पत्र लिखा था। आशा है समय पर तुम्हें मिल जाएगा।

साथ में मै प्रोफ़ेसर डेमेल के लिए एक पत्र भेज रहा हूं, कृपया उन तक पहुंचा देना। कृपया उन्हें फोन कर बता दे कि यदि वे चाहेंगे तो तुम पत्र का अनुवाद कर दोगी।

यह पत्र मैं जल्दबाजी में लिख रहा हूं। साधारण डाक से। साथ में सही झंडा और रंग आदि भेज रहा हूं। ब्रिस्टल हॉस्टल में जो झंडा था, वह क्या हुआ?

मुझे खेद है कि जब तक मुझे यह पता नहीं लग जाएगा कि एसोसिएशन क्या कर रही है तब तक मैं चंदा नहीं भेज सकता। अभी तक उन्होंने मुझे निराश ही किया है। मुझे नहीं लगता कि तुम्हारा वहां अपना समय और शक्ति बर्बाद करने का कोई लाभ है। मैं कुछ छोड़ देना नहीं चाहता [इस पत्र की कुछ पंक्तियां मिल नहीं पाईं।]

[यह पत्र सुभाष चंद्र बोस ने जर्मन भाषा मे बड़े अक्षरों में लिखा है पत्र के अंत मे कोने मे लिखे शब्दों से व पत्र के संदर्भ से यह आभास होता है कि 4 नवंबर 1937 में लिखा गया है। - संपादक]

प्रिय महोदया,

संभवतः मैं नवंबर के मध्य में यूरोप की यात्रा पर आऊंगा। किंतु अभी निश्चित नहीं है। इस विषय में वास्तविक स्थिति के बारे में मैं अगले पत्र में लिखूंगा। मैं बैगस्टीन में चार पांच सप्ताह तक रहना चाहूंगा। दिसंबर के मध्य में मैं वापिस लौट आऊंगा। कृपया कुर्हास हॉकलैंड, बैगस्टीन आदि के बारे में पूछताछ कर पता कर लें कि क्या मैं (और तुम) वहां ठहर सकता हूं। वहां 1934 की भांति मैं एक माह रहकर पुस्तक लिखना चाहता हूं। सुश्री रिकार्ट अब श्रीमती हेलमिंग बन गई है। कृपया उन्हें लिख कर पता कर लें कि मुझे कितने पैसे देने होंगे। 1936 में मैंने स्वास्थ्य कर के और आवास आदि की व्यवस्था के करों सहित दस शिलिंग दिए थे। संभवतः मैं वायुयान द्वारा यात्रा करूंगा। मेरे पत्र पर निर्भर मत रहना। यदि मैं आया तो तुम्हें तार द्वारा सूचित करूंगा कि नेपल्स कब पहुंच रहा हूं। नेपल्स से एक दिन में मैं बैगस्टीन पहुंच जाऊंगा। तुम्हें बैगस्टीन मुझसे पहले पहुंचना होगा और मुझे रेलवे स्टेशन लेने आना होगा। रास्ते से मैं तुम्हें टेलिग्राम दे दूंगा, कि बैगस्टीन कब पहुंच जाऊंगा।

इस संदेश के विषय में अपने माता-पिता के अतिरिक्त अन्य किसी को न बताना।

मुझे उत्तर मत देना और मेरे अगले एयरमेल पत्र (या तार) की प्रतीक्षा करो। अभी भी मुझे मेरी यात्रा के विषय में पक्का पता नहीं है। 4.11.37

तार दिनांक 16.11.37.

रेडियोग्राम

जी०एल०पी/के० 1150.

डब्ल्यू 10, कलकत्ता, 31.15.1125

डी०एल०टी० शेंक्ल, फ़ैरोगासे 24.18. विएना

वायुयान द्वारा 22 तारीख को बैगस्टीन पहुंचूंगा। आवास की व्यवस्था कर देना और मुझे स्टेशन पर मिलना। 21 तारीख को तुम्हे बैगस्टीन से तार दूंगा कि बैगस्टीन पहुंचने का समय क्या रहेगा—बोस.

[रोम से 21.11.37 को भेजा गया तार]

तार

शेंक्ल

पोस्टरेस्टान्टे

विलाख सोमवार को पहुचूंगा, 14/26 अगली गाड़ी पकड़ूंगा।

बोस

8.1.38.

यहां म्यूनिख स्टेशन पर कुछ भारतीय मित्रों के साथ कॉफ़ी पी रहा हूं। शेष कुशल है।

सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। माता-पिता को सादर प्रणाम।

सुभाष चंद्र बोस

एंटवर्प

10.1.38, प्रात: 8 बजे

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

केवल तुम्हें यह सूचित करने के लिए पत्र लिख रहा हूं कि मैं लंदन के लिए रवाना हो रहा हूं। मैं ओस्टेंड ट्रेन से नहीं जा रहा हूं। अपने मित्रों के साथ कार में जा रहा हूं। इसलिए यहां से देर से चलूंगा-वरना मुझे बहुत जल्दी निकलना पड़ता।

म्यूनिख से जिस ट्रेन में आया उसमें बहुत भीड़ थी। अधिकांश अंग्रेज़ यात्री थे। मैं बिल्कुल ठीक हूं।

यदि वहां आयरलैंड पर बनी फ़िल्म पारनैल देखने के मिले तो अवश्य देखना। बहुत अच्छी फ़िल्म है। हमने कल रात देखी थी। आशा है सब ठीक-ठाक है। प्रणाम और शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

आर्टिलरी मैंशन,
3 एम फ्लैट,
विक्टोरिया स्ट्रीट,
लंदन एस डब्ल्यू-1 ।
सोमवार-11 बजे अपराह्न
(11-1-38 संपादक)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

सांय 5.20 पर मैं यहां पहुंच गया था और स्टेशन पर मेरा भव्य स्वागत हुआ। समुद्र शांत ही था। आज सायं प्रेस वालों के साथ एक सम्मेलन है। जब तक यहां रहूंगा अत्यधिक व्यस्त रहूंगा। साल्ज़बर्ग से म्यूनिख तक की यात्रा बहुत अच्छी रही। म्यूनिख से ब्रसेल्स तक की यात्रा में भीड़भाड़ अधिक होने के कारण मैं ठीक से सो नहीं पाया। एंटवर्प में मेरे दोस्तों के साथ अच्छा समय बीता और वे लोग मुझे ओस्टेंड तक अपनी कार में ले आए थे। उसके बाद से मैं यहां हूं। तुम कैसी हो? मुझे नहीं लगता कि मैं विएना में रुकूंगा, लेकिन तुम्हें यह बात किसी को बताने की जरूरत नहीं है। इस बुरे लेख के लिए क्षमा करना। क्या पढ़ सकोगी?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

आर्टिलरी मैंशन,
विक्टोरिया स्ट्रीट,
लंदन, एस० डब्ल्यू-1 ।
16 1 38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

इन दिनों अत्यधिक व्यस्तता के कारण मैं पत्र नहीं लिख पाया। मुझे तुम्हारे दो पत्र मिल गए हैं-धन्यवाद।

कृपया दो स्टील की घड़ियां जिनके बारे में तुमने पूछताछ की थी-द डिप्लोमैट न० सी०के० 124, और डाक्टर की घड़ी सं० 65। चौकोर, दोनों ओमेगा खरीद लेना। महिलाओं की घड़ी मैं जानता हूं, वहां नहीं मिल पाएगी। कल एयरमेल द्वारा पैसे भिजवा दूंगा। कृपया अमेरिकन एक्सप्रेस से पैसा ले लेना और घड़ियां खरीदकर हवाई अड्डे पर पहुंच जाना। मैं प्रात: 8.40 पर विएना पहुंचूंगा और वहां से 11.30 या 11.00 बजे रवाना होऊंगा। किसी और को नहीं लिख रहा हूं। मैं 19 तारीख को प्राग पहुंचूंगा। वहां एक रात बिताऊंगा। 20 तारीख को मैं वापिस लौट जाऊंगा।

[इस पत्र का अंतिम भाग खो गया है।]

[प्राग से 19.1.38 को तार]

तार

शैंक्ल

फ़ैरोगासे,

24. विएना ।

दो घड़ियां खरीद कर हवाई अड्डे पर मिलो।

होटल क्विरीनेल
रोम
20.1.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

नेपल्स से तुम्हें पत्र लिखने के लिए मेरे पास वक्त नहीं होगा, इसीलिए यहीं से कुछ पंक्तियां लिख रहा हूं। मैं यहां सुरक्षित पहुंच गया। हम लोग वेनिस में नहीं रुके लेकिन किसी अन्य हवाई अड्डे पर रुके जहां दोपहर के भोजन की व्यवस्था ही नहीं थी। बस यही असुविधा हुई। यह सब ठीक है। मैं नेपल्स के लिए रवाना होने ही वाला हूं। मैं बहुत थका हुआ हूं, वर्ना, बिल्कुल स्वस्थ हूं।

आशा है तुम भी स्वस्थ होगी। अपने माता-पिता को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

होटल ग्रांड बर्टागने,
ले पेटिट पेरिस,
एथेंस।
21.1.38 रात्रि।

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

रोम से मैंने तुम्हें एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था, अब तक तुम्हें वह मिल जाना चाहिए। अब मैं अपनी यात्रा पर हूं जैसा कि तुम्हें इस पत्र के ऊपर लिखे पते से आभास हो ही गया होगा। नेपल्स और एथेंस के बीच मौसम बहुत खराब था। हवा हमारे विपरीत दिशा में बह रही थी। यहां हम लोग देर से पहुंचे, इसलिए अलैग्जैंड्रिया के लिए रवाना नहीं हो पाए, जैसा कि हमारा कार्यक्रम था। कैप्टन का विचार है कि इससे हमारे भारत पहुंचने के समय में कोई अंतर नहीं पड़ेगा। वह समय पूरा कर लेगा। मैं यह पत्र तुम्हें इसलिए लिख रहा हूं, क्योंकि अभी मेरे पास समय है और भारत पहुंचने के बाद मेरे पास बिल्कुल भी वक्त नहीं रहेगा। मुझे आशा है कि यदि भविष्य में मैं तुम्हें लगातार पत्र नहीं लिख पाया तो तुम बुरा नहीं मानोगी। काल्पनिक बातों में डूब कर चिंता करनी छोड़ो और अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो।

हार्दिक शुभकामनाएं–तुम्हारे माता-पिता को भी।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

कल 22 तारीख को बसरा (इराक)–23 की रात जोधपुर 24 की सुबह (दोपहर) कलकत्ता।

श्री फाल्टिस को मेरा संदेश दे देना और बुरा... .[अस्पष्ट] ब्यूरो। आशा है अब तक तुम सुश्री होलमे को सूचित कर चुकी होगी।

सुभाष चंद्र बोस

तुम्हें सदा लोगों को यह नहीं बताना चाहिए कि तुम मेरे संपर्क में हो।

सुभाष चंद्र बोस

[कलकत्ता से 24.1.38 का तार]

रेडियोग्राम

40, कलकत्ता, 6/5 24 1505 ई०एम०पी०एम०सी०आई०एल०सी=शेंक्ल फ्रांस होटल विएना=

सुरक्षित+

[कलकत्ता से 24.1.38 को तार]

रेडियोग्राम

117 कलकत्ता 8/7 24 1740 ई०एम०पी० एल सी० शेंक्ल फ्रांस होटल विएना

हार्दिक संवेदनाएं–बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
अथवा 1, वुडबर्न पार्क,
कलकत्ता।
.25.1.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल मैं यहां सुरक्षित पहुच गया था और फिर व्यस्त हो गया। कल ही तुम्हें वायरलैस संदेश भेजा है–सुरक्षित। इसके बाद ही एक और वायरलैस संदेश था–'हार्दिक संवेदनाएं'।

तुम्हारे पिताजी की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर बहुत कष्ट हुआ। कृपया मुझे विस्तार से बताओ कि यह सब कैसे हुआ? एकदम अचानक। इतना दुखद समाचार। यह कोई दुर्घटना थी या वे अचानक बीमार हो गए थे। कृपया मेरी हार्दिक संवेदनाएं स्वीकार करो और घर में सभी सदस्यों को मेरी ओर से ढाढ़स बंधाना।

मैं साथ में कुछ इटली की करेंसी भेज रहा हूं। इसे अस्ट्रियाई करेंसी में परिवर्तित करा लेना और इस्तेमाल में लाना। मैं तुम्हे एल 1/- भी भेज रहा हूं।

जल्दी में हूं किंतु हृदय से तुम्हारे दुख में दुखी हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

1, वुडबर्न पार्क,
अथवा
38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
8.2.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं 24 जनवरी को कलकत्ता पहुंच गया था और तभी से अत्यधिक व्यस्त हूं। मैं बता नहीं सकता कि तुम्हारे प्रिय पिताजी की मृत्यु के समाचार से मुझे कितना आघात लगा। मैं हैरान हूं कि इतनी जल्दी यह सब कैसे हो गया। मैं सोच रहा था कि तुम मुझे विस्तार से सब लिखोगी, किंतु तुमने ऐसा नहीं किया। कृपया मुझे जल्दी बताओ कि यह दुखद घटना कैसे हुई। शायद तुम बहुत व्यस्त हो, इसीलिए मुझे पत्र नहीं लिख पा रहीं।

मुझे 28 तारीख को प्रांतीय सम्मेलन के लिए कलकत्ता से बाहर जाना पड़ा। 31 तारीख को वापिस आया और 1 फ़रवरी को वर्धा में कार्यकारिणी की बैठक में जाना

पड़ा। वहां से मैं कल ही वापिस लौटा हूं। वर्धा में मेरी मुलाकात महात्मा गांधी, पंडित नेहरू एवं अन्य बड़े-बड़े नेताओं से हुई। 11 तारीख को मुझे हरिपुरा कांग्रेस के लिए जाना है। अब मैं अपना भाषण लिखने का समय निकालूंगा।

24 जनवरी को मैंने तुम्हें दो तार भेजे थे-एक अपने पहुंचने का और दूसरा तुम्हारे पिताजी की मृत्यु का। फिर 25 तारीख (शायद 27) जनवरी मे तुम्हे एक रजिस्टर्ड पत्र लिखा था। क्या वह पत्र तुम्हें सही सलामत मिल गया? मुझे एयरमेल द्वारा तुरंत सूचित करो।

कृपया यह भी लिखो कि आजकल तुम क्या कर रही हो।

आशा है तुम्हें पत्रिका लगातार मिल रही होगी। मैं समय पर उसकी सदस्यता का नवीनीकरण करा दूंगा। क्या तुम्हें ओरिएंट चाहिए?

13 से 22 तारीख तक मैं कांग्रेस मे व्यस्त रहूंगा। वहां से बंबई जाऊंगा और इस माह के अंत तक कलकत्ता वापिस लौटूंगा।

कृपया मुझे निरंतर पत्र लिखती रहना। तुम कैसी हो? तुम्हें व तुम्हारी माताजी को प्रणाम, लोती को प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - बंबई में मेरा पता रहेगा-द्वारा बंबई प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी, बंबई। लंदन के रास्ते में कुछ पैसा भेजूंगा।

सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता।
हरिपुरा कांग्रेस
16.2.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें बताने के लिए यह पत्र लिख रहा हूं कि आजकल मैं हरिपुरा कांग्रेस में अत्यधिक व्यस्त हूं। आशा है तुम ठीक हो। अब तक मुझे तुमसे केवल एक एयरमेल पत्र मिला है--एयरमेल द्वारा भेजा पोस्टकार्ड नहीं मिला-पता नहीं क्यों।

फ़रवरी के मार्डन रिव्यू में तुम्हारा बैगस्टीन पर लेख प्रकाशित हुआ है। तुम्हें मिलाया नहीं मुझे सूचित करो। 23 तारीख को मैं यहां से बंबई के लिए रवाना हो जाऊंगा। एक सप्ताह बाद वहां से कलकत्ता चला जाऊंगा। हार्दिक शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

वर्धा
6 3.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 4/2 और 18/2 के पत्र के लिए धन्यवाद। 23 फरवरी को मैं हरिपुरा से रवाना हो गया था। बंबई में बहुत व्यस्त रहा। बंबई मे मेरा भव्य स्वागत हुआ। कल बंबई से चल पड़ा था और अब कलकत्ता के मार्ग मे हू। कलकत्ता मे तीन सप्ताह रहूंगा फिर यात्रा पर निकलूंगा। तुम्हारा 18 फरवरी का पत्र मुझे बंबई में मिला।

मुझे अभी तक तुम्हारा एयरमेल कार्ड और साधारण डाक द्वारा भेजा गया 26 तारीख का पत्र नही मिला है। पहला शायद खो गया और दूसरा संभवतः कलकत्ता मे होगा। वहां से मेरी डाक मुझ तक नहीं पहुच पाई है।

कृपया मुझे बताओ कि तुम्हारी माताजी को पेंशन मिलेगी अथवा नहीं। यदि मिलेगी तो क्या उतनी जितनी तुम्हारे पिताजी को मिल रही थी।

कलकत्ता से मैं तुम्हें विस्तृत पत्र लिखूंगा। इस वक्त बहुत जल्दी मे लिख रहा हूं। अब मुझे महात्मा गाधी से मिलने जाना है जो पास के गांव सोगोन मे रहते है जो शहर से 7 मील की दूरी पर स्थित है।

तुम्हारे परिवार के प्रति मेरा हृदय दुख से भरा है। अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना। लोती और तुम्हे शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च - तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? गॉल ब्लैडर मे दर्द तो नहीं?

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता
(अथवा वुडबर्न पार्क, कलकत्ता)
28.3.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे बहुत दुख है कि जब से मैं वर्धा से कलकत्ता आया हूं, तुम्हे पत्र नहीं लिख सका। हालांकि हमेशा सोचता रहा। जबसे यहां आया हूं, बहुत व्यस्त हूं-किंतु अब लगातार तुम्हें पत्र लिखूंगा। आजकल यूरोप से एयरमेल सप्ताह मे 4 बार आती है। आशा करता हूं कि तुम्हारी माताजी शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जाएंगी, उनको कष्ट सहने की

शक्ति मिलेगी और आपरेशन के बाद हमेशा के लिए इस कष्ट से छूट जाएंगी। इस सप्ताह मैं तुम्हें लंबा पत्र लिखने का प्रयास करूंगा।–[अनुवाद–मैं तुम्हारे 8 पाउंड एक दिन बाद एयरमेल से भेज दूंगा और आशा करता हूं कि एक ही दिन में वे तुम्हें मिल जाएंगे।–संपादक] मैं फिर जर्मन भाषा भूलने लगा हूं।

आशा है तुम अपने स्वास्थ्य का यथासभव ध्यान रखोगी। आशा है तुम डाक्टरों की राय लेकर अपना स्वास्थ्य ठीक करोगी। तुमने मुझसे ऐसा वादा किया था। अब तुम्हारी माताजी घर लौट आई है अतः अब तुम्हें अपने स्वास्थ्य को देखने का भी कुछ समय मिल जाएगा। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी होती है हालांकि मेरे पास उत्तर देने को समय नहीं रहता। मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि श्रीमती वेटर तुमसे इतनी नाराज हैं। अभी तक मुझे वह ऐयरमेल द्वारा भेजा गया कार्ड नहीं मिला है जो तुमने अपने पिताजी की मृत्यु के तुरंत बाद लिखा था। दूसरा पत्र मुझे मिल गया है। अगले पत्र में मैं उसकी सूची तुम्हें भेज दूंगा। तुम्हारे पत्र में अन्कूलस के बाद विएना की स्थिति का छोटा सा वर्णन झलकता है। अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हें व लोती को शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता
5.4.38 (मंगलवार)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है मेरा 28 तारीख का पत्र तुम्हें मिल गया होगा। पिछली जनवरी मे घर लौटते ही मैंने तुम्हें जो लीरा और पाउंड भिजवाए थे, वे तुम्हें मिले?

आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूं, क्योंकि 1 अप्रैल से कार्यकारिणी की बैठक है। आजकल हम सुबह से रात तक कार्य करते है। मैं ठीक हूं, किंतु कार्य बहुत ज्यादा है।–[अनुवाद–पिछले सप्ताह मैंने 8 पाउंड भिजवाए थे क्या तुम्हे मिले।–स०]

तुम्हारी माताजी का व तुम्हारा क्या हाल है? क्या वे ठीक है? उन्हे मेरा प्रणाम कहना और लोती व तुम्हें मेरा प्यार। –[अनुवाद–मैं रात दिन तुम्हारे विषय मे सोचता रहता हूं।–सं०] आशा है तुम स्वस्थ हो। हार्दिक शुभकामनाओ सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

सुभाष चंद्र बोस,
अध्यक्ष,
अखिल भारतीय कांग्रेस
कमेटी
38/2, एल्गिन रोड,
(1, वुडबर्न पार्क)
कलकत्ता
9.4.38

प्रिय मित्र,

मैं तुम्हारा अपने मित्र श्री सील (लंदन के) से परिचय करा दूं, जो इंग्लैंड से भारत लौट रहे हैं। उनके हाथ मैं ये चार चीजें भेज रहा हूं-हाथी दांत की माला, एक जोड़ी जूते, एक ब्रोच और एक छोटा सा बक्सा (चंदन की लकड़ी और हाथी दांत का बना) भेज रहा हूं। श्री सील सुदर विएना देखना चाहते हैं। कृपया इनकी मदद करना। तुम्हारी माताजी को प्रणाम तुम्हें व लोती को प्यार।

मैं, सदैव तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
बंबई जाते समय गाड़ी में
9.5.38

मैं अब बंबई जा रहा हूं जहां लगभग 10-15 दिन रहूंगा। कृपया एयरमेल से इस पते पर उत्तर देना-द्वारा, डी०एन० पारीख, 26, मेरीन ड्राइव, बैकबे रिक्लामेशन, बंबई। 15 दिन बाद मैं बंबई छोड़ दूंगा। तब तुम मुझे मेरे कलकत्ता के पते पर-38/2, एल्गिन रोड, पोस्ट आफ़िस कलकत्ता-पत्र लिख सकती हो जहां मैं अपनी मां के पास रहूंगा। मेरा टेलिग्राफिक पता है-सुवास बोस, कलकत्ता। मुझे बंबई में कुछ जरूरी काम हैं- (1) श्री जिन्ना से हिंदू मुस्लिम के लिए सुझाव पर विचार-विमर्श। (2) सात प्रदेशों के प्रधान मंत्रियों के सम्मेलन की अध्यक्षता। (3) कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता।

मैंने पिछला पत्र तुम्हें 9 अप्रैल को लिखा था जिसमें अपने मित्र जो यूरोप जा रहे थे के हाथ कुछ पंक्तियां लिख कर भिजवाई थीं। तब से मैं तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया।

मुझे क्षमा करना। मैं बहुत व्यस्त था। भविष्य में लगातार पत्र लिखूंगा। तुम्हारी ओरिएंट की सदस्यता 6 माह के लिए नवीकरण करवा दी है। क्या तुम्हें 'पत्रिका' चाहिए? यदि तुम्हे उसे पढ़ने का समय हो तो मैं हर्षपूर्वक उसकी सदस्यता का भी नवीनीकरण करवा दूंगा।

आशा है तुम्हारी माताजी अब स्वस्थ होंगी। अब जबकि हमेशा के लिए कष्ट से छुटकारा हो गया तो वे आपरेशन के बारे में क्या सोचती हैं? मेरी भाभी का पिछले वर्ष आपरेशन हुआ था, गॉल ब्लैडर निकाल दिए जाने के बाद से रोज़-रोज़ होने वाले दर्द से उन्हें छुटकारा मिल गया है। चलती गाड़ी में लिख पाना कठिन है, अतः लेख खराब है।

–[अनुवाद–जूते तुम्हें पूरे आए? क्या चंदन की लकड़ी की खुश्बू अच्छी है?–स०] पता नहीं मेरी जर्मन तुम्हे समझ आ रही है या नहीं?

खेद का विषय है कि घर लौटने के बाद से पुस्तक लेखन में कोई प्रगति नहीं हुई है।–[अनुवाद–कृपया लगातार मुझे पत्र लिखो। तुम्हारे पत्र पढ़ने में मुझे आनंद आता है। हालांकि मैं तुम्हें प्रत्येक सप्ताह पत्र नहीं लिख पाता। इसके लिए मुझे क्षमा करना।] तुम्हारा 28 तारीख का पत्र मुझे 4 मई को मिला।

विएना के अखबारों में जो कांग्रेस के झंडे को लेकर हुए विवाद की खबर छपी है वह मैसूर राज्य की बात है।

तुम्हारे टेलिग्राफ़ आफ़िस के आवेदन का क्या हुआ? जब तुम्हें पता चले तो मुझे भी सूचित करना।

वहां के अपने मित्रों के विषय में लिखना। खेद है पत्राचार रोकना पड़ेगा। समय नहीं है। फ़ाल्टिस ने लिखा है कि वे नए साम्राज्य के प्रति अत्यधिक उत्साहपूर्ण हैं।

यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। यहां हम लोग गर्मी से परेशान हैं और बारिश की प्रतीक्षा में हैं, ताकि सूखी पृथ्वी को कुछ ठंड मिल सके। अपने वादे के अनुसार क्या तुम डाक्टर के पास गई थीं। अब तुम कैसी हो? तुम्हें अपना ध्यान रखना चाहिए।

पिछले दो माह मैं काफ़ी घूमा हूं, किंतु केवल बंगाल प्रांत में। अब देश के एक कोने से दूसरे कोने में जाऊंगा।

तुमने जो जर्मन पत्रिकाएं भिजवाई हैं, उनके लिए धन्यवाद। फ़ोटो देखने में मज़ा आया, किंतु अभी पढ़ा कुछ नहीं है। कृपया बताओ कि उसमें कौन-कौन सा लेख पढ़ने योग्य है, यदि है तो किस पत्रिका में।

तुम्हारे व तुम्हारी मित्रों के संयुक्त हस्ताक्षरों वाला पोस्टकार्ड मिला। मैं तुम्हें यह

बताना भूल गया कि तुम्हारा 24 जनवरी का विस्तृत पत्र मुझे मिल गया था जिसमें तुमने अपने पिताजी की मृत्यु का विस्तृत चर्चा किया था। वह कही इधर-उधर हो गया था, किंतु अंततः मुझे मिल ही गया। फिर मुझे तुम्हारा 29 मार्च का पत्र मिला। क्या तुम मार्च-अप्रैल में बादपिस्टयार गई थी? अब एक महीने की छुट्टी में वहां क्यों नहीं चली जाती? या कम से कम पंद्रह दिन के लिए?

क्या बादपिस्टयार के निदेशक ने तुम्हें तुम्हारे लेख का कुछ पारिश्रमिक दिया?

मार्डन रिव्यू में मैंने तुम्हारा पिस्टयार के विषय में लेख देखा था किंतु ओरिएंट में नहीं। मैं शीघ्र ही वोन हेच को पत्र लिखूंगा। तुम भी उसे पत्र लिखती रहो। क्या तुम्हें तुम्हारे लेख वाली प्रतियां मिलीं? मेरा स्वास्थ्य कुल मिला कर ठीक है-किंतु मुझे अपनी शक्ति से अधिक कार्य करना पड़ता है।

मुझे इन्टरेन्सान्टे ब्लाट की प्रति मिली, जिसमें महात्मा गांधी के साथ मेरा चित्र प्रकाशित हुआ है। मुझे तुम्हारा 15 अप्रैल का पत्र भी मिला। अब मुझे यह पत्र डाक में डालना है-इसलिए यहीं समाप्त करता हूं। तुम सब लोग कैसे हो?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बंबई
20.5.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 12 तारीख का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र 18 तारीख को कलकत्ता पहुंच गया था, जो मुझे भिजवाया गया अंतः आज ही मिला है। उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे दुख है कि मैं कई दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। फिर भी 9 तारीख को मैंने ट्रेन में तुम्हें पत्र लिखा था। तब मैं बंबई आ रहा था। यहां मैं बहुत व्यस्त हूं। मैंने पिछले सप्ताह तुम्हें साधारण डाक द्वारा और इस सप्ताह भी कुछ कागज़ भिजवाए हैं। कलकत्ता में मैंने ओरिएंट तुम्हें भिजवाने की व्यवस्था कर दी है। मुझे अपना रोज़मर्रा का कार्यक्रम लिखो। अब तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? क्या डाक्टर से राय ली और उसका बताया उपचार किया? क्या वह तुम्हें स्वस्थ कर पाया? मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हारी माताजी अब पहले से बेहतर हैं। कृपया उन्हें मेरा प्रणाम कहना। मैं स्वस्थ हूं, हालांकि कार्य की अधिकता है।-[अनुवाद-मैं रात दिन तुम्हारे ही विषय में सोचता रहता हूं।] आज रात पूना जा रहा हूं और 23 तारीख को बंबई वापिस जाऊंगा। तब 24 या 25 मे बंबई से कलकत्ता के लिए रवाना होऊंगा। पूना यहां से 4 घंटे की यात्रा की दूरी पर है।-[अनुवाद-क्या कुछ पैसा तुम्हें भेजूं?] इस पत्र का उत्तर कलकत्ता के पते पर ही देना।

कृपया मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

अध्यक्ष
सुभाष चंद्र बोस
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
तार-सुवास बोस-कलकत्ता
टेलि०-पार्क, 59, कलकत्ता
26, मैरीनड्राइव, बंबई
24.5.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारे 15 व 17 तारीख के पत्रों के लिए धन्यवाद जो मुझे बंबई में 22 तारीख को मिले। तुम्हारा पहला पत्र 12 तारीख का मुझे 20 तारीख में मिला और मैं तुम्हें उत्तर भी दे चुका हूं। कुछ दिन पूना में बिताने के बाद मैं बंबई आ गया हूं और आज रात कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूं। कृपया मुझे उसी पते पर उत्तर देना।-[अनुवाद-टेलिग्राफ ऑफ़िस से तुम्हें कितना पैसा मिलता है।-सं०] कलकत्ता जाकर तुम्हें पत्रिका भिजवाने की व्यवस्था करूंगा।

मैं वोन हैव को भी पत्र लिख रहा हूं। यदि तुम्हारे पास उसका पता हो तो तुम भी पत्र लिख सकती हो।

जब तुम आस्ट्रियाई टिकट लगाती हो तो, मैंने देखा है कि तुम 1 शिलिंग 8 ग्रोशेन के टिकट लगाती हो और जब जर्मन टिकट इस्तेमाल करती हो तो 70 ग्रोशेन और 25 फैंनिग के। इसका क्या कारण है? 25 फैंनिग तो 50 ग्रोशेन के बराबर ही होने चाहिएं।

मेरे विचार से तुम्हें श्री फ़ाल्टिस से एक बार मिल लेना चाहिए और मेरी नमस्ते भी कह देना।

क्या विएना में बेरोजगारी की समस्या कुछ सुधरी?

यह जानकर दुख हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। मुझे शंका है कि तुम अपने स्वास्थ्य की ठीक देखभाल नहीं कर रहीं। तुम ऐसा कब करोगी? काम अत्यधिक है—वैसे मैं बिल्कुल ठीक हूं। सादर प्रणाम।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - सलग्न पत्र कृपया वोनहेव को भेज देना। मैं उनका पता भूल गया हू।

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
(ट्रेन मे)
26.5.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बंबई से मैंने तुम्हें एक बंबई पत्र लिखा था। संभवतः मैं कुछ दिन तुम्हें पत्र न लिख पाऊं, इसीलिए गाड़ी में पत्र लिख रहा हूं। बंबई से कलकत्ता की यात्रा 36 घंटे की है। तुम्हारे पिछले पत्र से यह जानकर, कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता, बहुत दुख हुआ। मुझे डर है कि तुम अपने स्वास्थ्य की उचित देखभाल नहीं कर रही। मैं समझ सकता हूं कि अपने पिता की मृत्यु के पश्चात तुमने घर की जिम्मेदारी का बोझ उठा लिया है। मुझे आशा है कि अब तुम डॉक्टर के पास जाकर ठीक से अपनी सभी बीमारियों का इलाज करवाओगी। एक सप्ताह (या दो सप्ताह) की छुट्टी क्यों नहीं ले लेती? आराम करो। मेरी ओर से वोन हेव को पत्र लिखो। मुझे लगता है मैं उसका पता कहीं भूल आया हूं। क्या तुम मुझे भिजवा दोगी? .... [अनुवाद-घर से मैं कुछ पैसा तुम्हें भिजवाऊंगा-जो केवल तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए होंगे। तुम डॉक्टर के पास क्यों नहीं जाती? अब तुम कैसी हो? टेलिग्राफ़ ऑफ़िस के तुम्हें कितनी आय होती है। - सं०]

जब मैं बंबई में था तो मैंने तुम्हें कुछ बंबई के समाचार पत्र भिजवाए थे। क्या अमिय का मित्र विएना आया था? ... [अनुवाद - तुम घर वापिस कब आओगी? - सं०]

मैंने 'ओरिएंट' की तुम्हारी सदस्यता बनवा दी है और 'पत्रिका' भिजवाने की भी व्यवस्था करूंगा। आजकल तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो? आजकल तुम्हारी बहन क्या कर रही है। जो पेंशन तुम्हारी माताजी को मिल रही है वह किसी परिवार के लिए पर्याप्त नहीं है। कृपया मुझे श्रीमती मिलर और श्रीमती वेटर की सूचना दो। कुछ दिन पहले तुमने लिखा था श्रीमती वेटर का व्यवहार पुनः तुम्हारे साथ बहुत अच्छा हो गया है और मैत्री हो गई है। किंतु पिछले पत्र में तुमने दूसरी ही कहानी लिखी है। तुम उनसे मैत्री क्यों नहीं कर लेतीं? श्रीमती फ़ाल्टिस व श्री फ़ाल्टिस को मेरा प्रणाम कहना। लड़कों की एसोसिएशन कैसी चल रही है? यदि तुम्हारे पास फालतू समय हो तो मुझे बताओ। तब मैं तुम्हें कुछ सुझाव दे सकूंगा कि तुम भविष्य की क्या योजना बनाओ ताकि तुम्हारी तरक्की जल्दी हो सके। कृपया मेरे टेलिग्राफ़िक को नोट कर लो। सुवास

बोस – कलकत्ता। जून में मुझे पुन: बंबई आना होगा। ..... [अनुवाद – मैं हमेशा तुम्हारे विषय में ही सोचता रहता हूं। –सं०] मैं बिल्कुल ठीक हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता,
8.6.38

तुम्हारा 30 मई का एयरमेल द्वारा भेजा गया पत्र मुझे 14 जून को मिला, बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे प्रसन्नता है कि तुमने अपनी परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है। तुम्हें ब्यूरो में प्रतिदिन कितने घंटे कार्य करना पड़ता है? मैं 8 मई को कलकत्ता से बंबई के लिए रवाना हो गया था और रास्ते में बहुत से स्थानों पर रुकता-रुकता 29 मई को वापिस पहुंचा। अब मैं पूर्वी बंगाल के जिलों की यात्रा के लिए कलकत्ता से बाहर जाऊंगा। 18 जून को वापिस घर लौटूंगा फिर शायद दो तीन दिन के लिए कलकत्ता से बाहर रहूं। मेरे इस पत्र का उत्तर भी कलकत्ता के पते पर ही देना, जहां मैं अपनी माताजी के साथ रहता हूं – 38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता (टेलिग्राम – सुवास बोस, कलकत्ता)

हां, आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूं। बहुत से कार्य करने होते हैं इसलिए मुझे पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। आजकल यहां अक्सर बारिश हो जाती है इसलिए अधिक गर्मी नहीं है। तुम्हारी माताजी के लिए – बढ़िया रहे यदि वे, कभी-कभी – पंद्रह दिन में एक बार या दो बार, उपवास रखें।

मैं जल्दी में हूं अतः यहीं पत्र समाप्त करता हूं। .... [अनुवाद – आज मैंने तुम्हारे लिए कुछ भेजा है, जिसे तुम स्वयं इस्तेमाल करना। – सं०]

आशा है सब सकुशल है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

26.6.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

एक लंबे अर्से से मैं तुम्हारे पत्रों का उत्तर नहीं दे पाया हूं। मैं 8 से 20 जून तक बंगाल के अंदर के क्षेत्रों को देखने गया था। एक दिन बड़ा मजा आया जब हमारे जुलूस पर पत्थर और ईंटों की बौछार की गई। मुझे हल्की सी चोट आई थी, किंतु अब मैं प्रायः ठीक हूं। मैं कलकत्ता से (वर्धा के निकट सीगोन में गांधी से मिलने के लिए) 22 जून

को रवाना हुआ था और अब कलकत्ता लौट रहा हूं। यह पत्र मैं गाड़ी में ही लिख रहा हूं। वर्धा से कलकत्ता तक की ट्रेन की यात्रा 24 घंटे की है। लगातार यात्रा के बावजूद भी मैं बिल्कुल ठीक हूं और मेरा वजन भी बढ़ गया है? यही बात मुझे पसंद नहीं है। 8 जुलाई का मुझे फिर वर्धा लौटना पड़ेगा क्योंकि कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक है।

तुम्हारे 31 मई के साधारण डाक द्वारा भेजे गए पत्र के लिए आया तथा 15 जून के एयरमेल द्वारा भेजे गए पत्र के लिए शुक्रिया। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हें शीघ्र ही वेतनवृद्धि की उम्मीद है। आज के भारतीय समाचार पत्रों में समाचार है कि आस्ट्रिया की सरकार ने सभी यहूदी कर्मचारियो को फैक्टरी की नौकरी से निकाल देने के आदेश दिए है। यदि ऐसा हुआ तो विएना में थोड़े से यहूदी रह जाएंगे।

कृपया मुझे बताओ कि श्री हैव ने तुम्हें क्या उत्तर दिया। यदि वे तुम्हें भुगतान नहीं करते हैं तो मैं औपचारिक रूप से तुम्हारे नाम पर स्थानांतरण कर दूंगा। क्या तुम्हारे पास के पत्र हैं, जिसमें श्री हैव ने मुझे पैसा देने की चर्चा की थी? वे पत्र आवश्यक है।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर रही है। हालांकि पहले पत्र में तुमने कुछ और ही कहा था। उसमे तुमने कहा था कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। जो छोटा चित्र तुमने मुझे भेजा वह मुझे बहुत पसंद आया – अब तक के सभी चित्रों में से सबसे अच्छा। यदि तुमने यही चित्र कुछ दूरी पर से लिया होता तो और भी अच्छा आता। तुमने मुझे एक अच्छा चित्र भेजने का वादा किया था। पोस्टकार्ड साइज का फ़ोटो चलेगा।

यदि तुम अधिक व्यस्तता और थकान महसूस करती हो तो तुम्हें हैल्सीकोल लेनी चाहिए। यह एक अच्छा टॉनिक है। यहां कलकत्ता में भी यह उपलब्ध है इसलिए आजकल मैं इसे ले रहा हूं। हां आपको डॉक्टर के पास जाकर ठीक से अपना इलाज करवाना चाहिए। इस बार तुम बैगस्टीन मे 'कुर' क्यो नहीं लेतीं? उससे तुम्हें लाभ होगा।

कलकत्ता पहुंचते ही मैं अत्यधिक व्यस्त हो जाऊंगा और पत्र व्यवहार के लिए मेरे पास समय नहीं रहेगा। इसलिए ट्रेन मे पत्र लिख रहा हूं। वर्ष भर मे मुझे बहुत सी यात्रा भी करनी है। कृपया मुझे समय-समय पर पत्र लिखती रहना, बेशक मैं तुम्हें पत्र लिखूं या नहीं। मुझे एक सचिव मिल गया है जिसे जर्मन भाषा आती है। यदि तुम्हारे पास फालतू वक्त हो तो कृपया मुझे बताओ। सभव है मैं तुम्हे समय के सदुपयोग के संबंध मे कुछ राय दे सकूं। क्या तुम अंग्रेजी और जर्मन भाषा की शार्टहैंड भूल गई हो? अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और तुम्हे भी शुभाशीष। तुम्हारी बहन को शुभकामनाएं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

27.6.38

कलकत्ता पहुंचने पर मुझे तुम्हारा 20 तारीख का पत्र (जर्मन) मिला। मुझे दुःख है कि तुम्हें एक पाउंड के 12.30 मार्क्स या 18.45 शिलिंग ही मिल पाए। इसका अर्थ है अब तुम नुकसान में रहीं, क्योंकि पहले तुम्हें 25 या 26 शिलिंग मिल जाते। यदि मार्क्स में हिसाब लगाया जाए तो शिलिंग की अपेक्षा कीमतों में क्या अंतर है? भारतीय विद्यार्थियों को अच्छी कीमत मिल जाएगी, क्योंकि उन्हें पंजीकृत मार्क्स मिलेंगे। आशा है तुम अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर रही हो। क्या तुम अंग्रेजी और जर्मन शार्टहैंड याद है?

सादर
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
8.7.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

बहुत दिनों से तुम्हारा कोई समाचार नहीं, वैसे गलती मेरी ही थी कि तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया। इस बीच मैं यात्रा में ही रहा। 4 तारीख सोमवार को मुझे एंफ्लुएंजा ने घेर लिया, जिसने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा है। बहुत से मिलने-जुलने वाले आते रहते हैं फिर भी कुछ थोड़ा बहुत वक्त निकाल ही लेता हूं।

मैंने तुम्हारी आनंद बाजार पत्रिका की सदस्यता का नवीनीकरण करवा दिया है। तुम्हारी सदस्यता सं० - *1805* है। *15.3.38* से *14.9.38* तक तुम इसकी सदस्य है। 15.3.38 के बाद के समाचार पत्र मिल रहे हैं या नहीं?

तुम कैसी हो? तुमने लिखा था कि डाक्टर के पास जाओगी, क्या गई? मेरे विचार से आस्ट्रिया में विदेशी नागरिकों को कष्ट उठाना पड़ेगा, क्योंकि शिलिंग की अपेक्षा मार्क्स में उन्हें कम पैसा मिलेगा। कम से कम तुम्हारे साथ तो यही हुआ है, जो मैंने अनुभव किया।

यहां के समाचार पत्रों का कहना है कि आस्ट्रियावासी नई सरकार से संतुष्ट नहीं हैं। यह झूठ होना चाहिए – क्योंकि सब कुछ तो शांत है। बैगस्टीन में मेरे मेज़बान की कोई खबर? किसी अन्य मित्र का कोई समाचार?

जब समय हो तो पत्र अवश्य लिखना। क्या जर्मन और अंग्रेजी का शार्टहैंड याद है?

सादर,
तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

38/2, एल्गिन रोड,
कलकत्ता
14.7.38

प्रिय सुश्री शेक्ल,

तुम्हारे 6 तारीख के पत्र के लिए शुक्रिया। वह मुझे 11 तारीख में मिला। एक सप्ताह मैं एंफ्लुएंजा से पीड़ित रहा, किंतु अब बेहतर महसूस कर रहा हूं।

21 तारीख को मैं कलकत्ता से रवाना होऊंगा, ताकि कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में उपस्थित रह सकूं। एक सप्ताह बाद वापिस लौटूंगा। मेरा जर्मन भाषा जानने वाला सचिव चला गया है और उसके स्थान पर अभी किसी अन्य को नहीं रखा है। वह परिश्रमी व्यक्ति नहीं था। क्या वॉन हाव ने तुम्हें कोई उत्तर दिया? वैसे क्या तुम्हें मालूम है कि विएना में भारतीय उसी प्रकार रजिस्टर्ड मार्क्स ले सकते हैं, जैसे कि जर्मनी में? भारतीय विद्यार्थियों के लिए यह बात सहायक होगी वर्ना आस्ट्रिया में उनका रहना बहुत महंगा हो जाएगा। पत्रिका कार्यालय की रसीद भेज रहा हूं। कुछ महीने तुम्हें ओरिएंट और पत्रिका दोनों ही मिलेगी। जब नवीकरण का समय पास आ जाए तो मुझे पहले ही बता देना ताकि मैं व्यवस्था कर दूं। अमि के पिता ने मुझे बताया था कि वे पुस्तकें लेने विएना आना चाहते है, किंतु उनका विचार है कि आस्ट्रिया जाना सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं, इसलिए उन्होंने अपने विएना के मित्रों को पत्र लिखे है कि वे पुस्तके उस तक भिजवा दें। तुम्हारे देश के विषय में लोगों का क्या विचार है सुनना मजेदार लगता है। यदि तुम मेरा कुछ काम कर दोगी तो मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा। एक प्रकाशक मेरे भाषणों व लेखों के संकलन की एक पुस्तक प्रकाशित करना चाहता है। मेरा विचार है कि यूरोप में मैंने जितने भी लेख लिखे थे सब संभाल कर रखे है। क्या तुम उन्हें एकत्रित करके पंजीकृत डाक द्वारा मेरे पास भिजवा दोगी? तुम्हें कष्ट तो होगा किंतु मेरी सच्ची सहायता होगी। प्रकाशक वे लेख और भाषण चाहता है। तुमने एक बार मुझे लिखा था कि तुम्हारे पिताजी ने भी मेरे संबंध में अपनी डायरी में (26 जनवरी) कुछ लिखा है। मैं जानना चाहूंगा कि उन्होंने क्या लिखा है। आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो। तुम्हारा माताजी

को व तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। लोती को शुभाशीष। तुम्हार स्वास्थ्य के विषय में डाक्टर की क्या राय है?

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

.... [अनुवाद तुमने सफेद कोट खरीदा है। यह तुम्हें बहुत अच्छा लग रहा है। यह कितने में खरीदा, शेष फिर]

सुभाष चद्र बोस

अध्यक्ष
सुभाष चंद्र बोस
अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी
वर्धा
27.7.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरा 8 तारीख का पत्र तुम्हे 14 तारीख में मिला। जबकि तुम्हारा 15 तारीख का पत्र मुझे 19 में मिल गया था। मै कलकत्ता से 21 तारीख को, कार्यकारिणी की बैठक के लिए वर्धा के लिए रवाना हुआ था। कल प्रातः कलकत्ता वापिस जा रहा हूं। 24 घंटे बाद वहा पहुंच जाऊंगा। यहां मंत्रियों को लेकर समस्या खड़ी थी। इस विषय में समाचार पत्रो में समाचार पढ़ोगी ही। मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि तुम अत्यधिक लापरवाह हो और अभी तक डाक्टर के पास नहीं गई हो। अब जब तक तुम मुझे यह नहीं लिखोगी कि तुम डाक्टर के पास गई थी और उससे इलाज करवा रही हो तब तक मैं तुम्हें पत्र नहीं लिखूंगा। जो समय पत्र लिखने में लगाती हो उसी का सदुपयोग डाक्टर के पास जाकर कर सकती हो। क्या अमि वहां आया था? बहुत दिन से मैंने उसे भी पत्र नहीं लिखा। मैं तुम्हें भारतीय लोक कथाएं अवश्य भिजवा दूंगा लेकिन केवल तभी जब आश्वस्त हो जाऊंगा कि तुमने अपना इलाज शुरू कर दिया है। मैं प्रायः ठीक हूं, किंतु व्यस्तता (कार्य) गलती से अधिक है। मैंने अपने चाचा को पत्र लिखा कि वे जर्मनी के सज्जन से टिकटों के विषय मे पत्राचार करें। नॉन हाव से कोई उत्तर मिला? आशा है अब दोनों पत्र लगातार मिल रहे होगे। जब लोती नहीं होती तब तुम अपना समय कैसे व्यतीत करती हो? अकेलापन महसूस करती होंगी। तुम्हारी माताजी को तुम पर अभिमान होगा कि तुम अब कार्य कर रही हो। मित्र को जर्मन में क्या कहते है–क्या लाइबलिंग? आज दोपहर मै गांधीजी से मिलने आश्रम गया था। वहां एक अंग्रेज व्यक्ति था। जो साधु

बन गया है। एक जर्मन महिला भी थी। उनकी अंग्रेज शिष्या सुश्री-स्लाड मीराबेन भी वहीं थीं। शेष कुछ लिखने को नहीं है अत: समाप्त करता हू।-[अनुवाद-फिर मिलेंगे। मेरी प्रेयसी।-सं०]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चद्र बोस

गार्डा से
3 9 38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मेरा विचार है कि जो थोड़ी बहुत जर्मन भाषा मुझे आती थी मै भूल गया हू, इसलिए आज कुछ पंक्तियां लिखने का प्रयास करूंगा।

मेरे पास हॉव का घर का पता नहीं है। वह प्राय: घर बदलता रहता था और बाद में उसने मुझे केवल पत्राचार का पता ही दिया था। मै क्या करू? तुम बर्लिन मे दूतावास को उसके पते के लिए क्यो नहीं लिखती? उसका पुराना वोहग का पता तुम्हें भेजने का क्या लाभ होगा? अब वह वहां होगा भी कि नहीं पता नहीं।

लेखों व समाचार पत्रो की कटिंग्स के लिए धन्यवाद। तुम्हे काफी कष्ट हुआ होगा।

जर्मन जानने वाला सचिव होना आवश्यक नहीं हैं, किंतु यह सुयोग था कि उसे जर्मन भाषा भी आती थी।

बर्लिन से लोती का अंग्रेजी मे लिखा पत्र मिला। मैं हैरान हू कि वह किसने लिखा। क्या उसने?

तुम्हारे पिताजी की डायरी का अंश भेजने के लिए धन्यवाद। अब-------

[जर्मन भाषा का अनुवाद]

मुझे तुम्हारे 25 जुलाई, 10 अगस्त और 25 अगस्त के पत्र मिले, धन्यवाद। पहले मैंने सोचा-अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत असावधान। केवल यही पत्र लिख रहा हू। यदि तुम डाक्टर से नहीं मिली तो कभी पत्र नहीं लिखूंगा। अगर डाक्टर से मिल ली तो सदा की तरह खुशी-खुशी पत्र लिखता रहूंगा। मुझे दुख है कि तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, जबकि मैंने तुम्हे अनेक बार यही कहा है कि अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो और डाक्टर से संपर्क करो।

आजकल मैं अत्यधिक व्यस्त हूं और पत्राचार के लिए भी मेरे पास वक्त नहीं है।

इस समय मै वर्धा के रास्ते मे हू और यह पत्र गाडी मे ही लिख रहा हूं। 6 सितंबर तक कलकत्ता वापिस लौट आने की उम्मीद है। उसके बाद मद्रास की लंबी यात्रा पर निकलूंगा।

मुझे खुशी है कि अब तुम्हारी आय होने लगी है। कृपया मुझे लिखना यदि किसी चीज की आवश्यकता हो तो।

कृपया एम० परिवार के सभी सदस्यों को मेरी नमस्ते कहना (कार्लोवी वरी मे) क्या श्री एम० आजकल हृदय रोग से गभीर रूप मे बीमार है--

सुभाष चंद्र बोस

बंबई
13.10.38.

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 16 सितंबर का पत्र तीन अक्तूबर को पाकर प्रसन्नता हुई। यह देरी भी इसलिए हुई कि मै उन दिनों दिल्ली में था। 23 तारीख को मै कलकत्ता से दिल्ली के लिए वायुयान से रवाना हुआ था। बीच मे कानपुर रुकना पडा, जहां मै बीमार हो गया। वहां से, ठीक होने के बाद मै 26 सितंबर को दिल्ली के लिए रवाना हुआ। वहां बहुत व्यस्त रहा और 5 अक्तूबर को बंबई के लिए रवाना हुआ। यहा मलेरिया रोग से ग्रस्त हो गया। तीन दिन बाद बुखार उतरा अभी कमजोरी है। तुम्हारा पत्र रजिस्टर्ड था। फोटो के लिए धन्यवाद-हालांकि मै यह कहे बिना नही रह सकता कि पहले वाली अधिक अच्छी थी।

पता नहीं मैंने लोती को उत्तर दिया या नही। क्या दिया था? कृपया मुझे बताना।

कानपुर में तुम्हारे मित्र कटयार से मुलाकात हुई। आजकल वह काम भी कर रहा है और अच्छा पैसा कमा रहा है। दिल्ली मे सिह से भी मुलाकात हुई। वह वापिस घर लौट आया है।

यह जानकर हर्ष हुआ कि तुम्हारी माताजी पहले से स्वस्थ है। मुझे विश्वास है कि पहले की अपेक्षा अब विएना मे रहना महंगा है। प्राय: यहां के समाचार पत्रों मे आस्ट्रिया के समाचार छपते रहते है, किंतु वर्तमान शासन के पक्ष मे नहीं।

दक्षिण भारत की मेरी यात्रा स्थगित हो गई है। उसके बजाय मुझे शिलांग (आसाम-पूर्वोत्तर में) और फिर वहां से दिल्ली जाना होगा। बंबई से मैं 15 तारीख को नागपुर होता हुआ कलकत्ता लौटा। कलकत्ता से शिलांग जाऊंगा और फिर दक्षिण भारत में।

सड़क पार करने मे सावधानी बरता करो। तुम बहुत लापरवाह हो।

यह जानकर दुख हुआ कि मेजर की विएना मे मृत्यु हो गई।

यदि श्रीमती वेटर का कोई समाचार हो तो देना। मेरे विचार से एच० अकैडिमियल एसोसिएशन होटल द फ्रास से मोरव्यू ग्रास मे चली गई है। इसीलिए तुम उस होटल में अब नहीं जाती।

विएना पहले जैसा ही है या कुछ जीवत हुआ है?

कृपया अपनी माताजी को मेरा प्रणाम कहना और बहन को शुभकामनाएं देना।-

[अनुवाद-प्रियवर-तुम्हें मेरी हार्दिक शुभकामनाए]

तुम्हारा शुभाकाक्षी
सुभाष चद्र बोस

पुनश्च - मैं बिल्कुल ठीक हू, हालाकि कुछ कमजोरी है। कुछ दिन मे यह भी ठीक हो जाएगी।
सुभाष चद्र बोस

वर्धा
17 10.38

प्रिय सुश्री शेक्ल,

बंबई से मैंने तुम्हे एयरमेल द्वारा पत्र लिखा था। अब मै कलकत्ता जा रहा हू, किंतु रास्ते मे कई जगह रुककर भाषण आदि देता हूं। 20 तारीख को कलकत्ता पहुंचूगा। यह पत्र गाड़ी में लिख रहा हूं इसलिए हाथ हिल रहा है। मै दो बार बीमार हुआ हूं। एक बार 23 सितंबर को कानपुर मे और दुबारा 5 अक्तूबर को बंबई मे। मै एक विशेष विमान द्वारा कलकत्ता से दिल्ली जा रहा था, किंतु बुखार के कारण मुझे रास्ते में कानपुर मे रुकना पड़ा। ठीक होने पर पुनः वायुयान से दिल्ली के लिए चला। दिल्ली से 5 अक्तूबर को बंबई के लिए रवाना हुआ और वहा पुनः बीमार हो गया। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। कलकत्ता से मैं शिलांग, आसाम की राजधानी जाऊगा। आसाम से लौटने पर लबी यात्रा पर निकलूंगा। अभी तक कई कारणो से दक्षिण भारत नहीं जा पाया हूं।

.. [अनुवाद-कृपया कभी-कभी मुझे जर्मन भाषा में पत्र लिखती रहा करो। मेजर की मृत्यु के बारे मे सुनकर बहुत दुख हुआ।] आशा है तुम्हे पोलाऊ जाने के लिए अवकाश मिल जाएगा, जिसकी तुम्हे बेहद आवश्यकता है। अधिक काम मत करो और अपने स्वास्थ्य की देखभाल करो। क्या डॉक्टर से मिली?

आशा है सावधानी से सड़क पार करती हो। यातायात बाए से दाए हो गया है।

पता नहीं मेरे पत्र तुम तक पहुचने मे इतने दिन क्यों लग जाते है।

मेरे विचार से मैं तुम्हारे 16 सितंबर के पत्र का उत्तर दे चुका हूं। यह चित्र पहले चित्र जैसा अच्छा नहीं है।--

[अनुवाद-हर समय अकेलापन अनुभव करता हूं। यद्यपि रात दिन अत्यधिक व्यस्त रहता हूं। जीवन बहुत कठिन है किंतु मैं क्या कर सकता हूं?]

आजकल तुम क्या कर रही हो? क्या सोच रही हो? आशा है तुम पूर्णतः स्वस्थ हो।

[प्रियतमा को ढेर सा प्यार। अपनी माता व बहन को मेरी नमस्ते कहना।-सं०]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

19.11.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कई दिन से तुम्हे पत्र नहीं लिख पाया। इसके लिए खेद है। शायद तुम्हारे तीन पत्रों का उत्तर मैं नहीं दे पाया हूं। क्षमा चाहता हूं।

तुम्हारे पिछले पत्र से पता चला कि आजकल तुम अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान दे रही हो। मुझे प्रसन्नता हुई। कृपया सूचित करो कि अस्पताल से लौटने के बाद तुम्हें कैसा लग रहा है? यदि इतनी हताश हो तो यह अच्छी बात नहीं है। क्या मैं तुम्हें एक राय दे सकता हूं। कृपया रोजाना दो लीसीकोल लो। इससे तुम्हें बहुत लाभ होगा। यह टॉनिक अब भारत मे भी उपलब्ध है। मै रोज लेता हूं। दूसरी चीज सैटोजेन है। यह जर्मनी का उत्पादन है और विएना मे सस्ता होगा। कृपया दिन मे एक बार इसे दूध के साथ अवश्य लो फिर तुममें परिवर्तन महसूस होगा। क्या मेरी यह राय मानोगी? मैं ये दोनों चीजे इस्तेमाल करता हूं और इन दोनो ने मुझमें बहुत परिवर्तन ला दिया है।

क्या तुम्हे समाचार पत्र निरंतर मिल रहे है? एक माह पूर्व मैंने पत्रिका की सदस्यता का नवीनीकरण करवा दिया था। ओरिएंट की क्या स्थिति है? क्या वह तुम्हें लगातार मिल रहा है? क्या उसका नवीनीकरण करवाना जरूरी है? यदि हां तो कृपया मुझे बताओ।

अब मै लखनऊ जा रहा हूं। वहां से कानपुर जाऊंगा, जहां संभवत: कटयार से भी मुलाकात हो। उसके बाद लाहौर जाऊंगा। वहां से कुछ दिन के लिए कलकत्ता लौटूंगा। कलकत्ता से वर्धा जाऊगा और वहां से दक्षिण भारत जाऊंगा। दक्षिण भारत की यात्रा लगातार टलती जा रही है। दिसंबर के प्रथम सप्ताह मे मैं कलकत्ता में होऊंगा, 8 दिसंबर को वर्धा मे और उसके बाद दक्षिण भारत मे।

तुम्हारा 10 तारीख का पत्र मुझे 11 तारीख मे मिला। अस्पताल जाने से पूर्व तुमने लिखा था। 28 तारीख का तुम्हारा पत्र भी समय पर मिल गया था। क्या मैंने सूचित किया था कि दोनों फोटो मिल गए हैं? पहला ज्यादा अच्छा था। दुख है कि तुम पर काम का अत्यधिक बोझ है। क्या आजकल तुम्हें तुम्हारी माताजी पर निर्भर होना पड़ता है? आजकल लोती क्या कर रही है? ..[अनुवाद–मेरी प्रेयसी के लिए हार्दिक शुभकामनाएं–संपादक]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जोधपुर
6 12.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हारा 21 नवंबर का पत्र मुझे कराची मे दोपहर में मिला। पिछले माह के मध्य से ही मै ऊपरी भारत (यानी यू०पी०, पंजाब, और सिंध) की यात्रा पर हू। लगातार एक जगह से दूसरी जगह घूम रहा हूं। अब कलकत्ता के लिए वायुयान द्वारा रवाना होऊंगा। (फिलहाल रात भर जोधपुर मे रहूंगा), वहां से वर्धा 9 तारीख को जाऊंगा। चार पांच दिन वर्धा में रहने के बाद मै दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूंगा। यह सब दिसंबर के अंत तक पूरा हो जाएगा।

क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएं और नववर्ष की मगल कामनाएं। यात्रा के दौरान संभवतः मैं तुम्हें लगातार पत्र न लिख सकूं उसके लिए क्षमा कर देना। जब भी तुम्हारे पास समय हो मुझे पत्र अवश्य लिखना। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि नया साल तुम्हारे लिए सुख स्वास्थ्यवर्धक सिद्ध हो।

तुम्हारे बुखार का चार्ट पढ़ कर खेद हुआ? कृपया प्रोफ़ेसर विल्हम न्यूमान से अपने फेफड़ों की जांच तुरंत करवाओ। वे फेफड़ों के विशेषज्ञ हैं। फेफड़ों की अनदेखी मत करो। तुमने कहां आपरेशन करवाया और किसने आपरेशन किया था? क्या तुमने गॉल ब्लैडर भी निकलवा दिया है? अमिय ने तुम्हारा कुमारी बनर्जी से परिचय कराया था, वह मुझे एक माह पूर्व मिली थी और उसने मुझ तक तुम्हारी नमस्ते व शुभकामनाएं पहुंचा दी थी। एम० का परिवार आजकल कष्ट में है, क्योंकि एम० को अब रिटायर होना है। अपने स्वास्थ्य का विस्तृत हाल लिखो। मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि आजकल तुम्हारा क्या हाल है? क्या तुम्हारी माताजी विएना मे ही थीं? वे ब्रेस्लू से कब वापिस लौटीं?

इसमें संदेह कि मैं आगामी वर्ष के लिए पुनः अध्यक्ष चुना जाऊंगा या नहीं।-[अनुवाद-प्रियवर, मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।]

लगातार यात्रा करने और भाषण देने के कारण मैं बहुत थक गया हूं।

समाचार पत्रों का क्या हुआ? क्या 'ओरिएंट' तुम्हें ठीक-ठाक मिल रहा है? जब नवीनीकरण आवश्यक हो वो मुझे बता देना। पत्रिका पढ़ने का तुम्हें समय मिल पाता है? डॉ० शर्मा कलकत्ता में मुझसे मिलने आए थे। माथुर से मेरी मुलाकात लाहौर मे हुई थी। उसे अच्छी नौकरी मिल गई है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

गाड़ी मे
10.12.38.

प्रिय सुश्री शेक्ल,

मै वर्धा के रास्ते मे हू। वहा 4, 5 दिन रहकर बबई के लिए रवाना हो जाऊंगा। बबई से 18, 19 तारीख मे मद्रास के लिए चल दूगा। दो सप्ताह या तीन सप्ताह मद्रास प्रेसीडेसी जाता रहूगा। तुम मुझे इस पते पर पत्र लिख सकती हो-

द्वारा, प्रातीय कांग्रेस कमेटी, मद्रास। 8 या 9 जनवरी को कलकत्ता वापिस लौट आऊगा।

मुझे इस बात की खुशी है कि तुम अस्पताल से निकलकर घर पहुच गई हो। मेरे भतीजे ने लिखा है कि वह एक महीना विएना मे व्यतीत करेगा। संभव है वह वहां पहुच भी चुका हो।

तुम्हारा पिछला पत्र 1 दिसंबर का था जो मुझे घर छोडने से कुछ ही देर पहले मिला था। उससे पहला पत्र 21 नवबर का था। वह तुमने अस्पताल से लिखा था उसका उत्तर मै दे चुका हू। कृपया अपने अस्पताल में बिताए दिनो का विस्तृत वृतात लिखो। तुम कहा थी? तुम्हारा आपरेशन किसने किया? क्या उन्होने गॉल ब्लैडर भी निकाल दिया है? अब कैसा महसूस करती हो? मुझे तुम्हारे फेफडो की बहुत चिंता है। एक बार विशेषज्ञ द्वारा जांच अवश्य करवा लो। इसकी अवहेलना मत करो।

पता नही तुम्हारे पत्र मुझ तक पहुचने मे इतना वक्त क्यों लगता है। तुमने भी देखा होगा कि मेरे पत्र तुम्हे काफी जल्दी मिल जाते है।

क्या अभी भी तुम्हे बुखार आता है? क्या ब्यूरो मे कार्य ग्रहण कर लिया? क्या कार्य करने के योग्य ताकत महसूस करती हो? मुझे उम्मीद है कि तुम सैटोजन और हैल्सीकोल लेकर देखोगी। मुझे दोनो से लाभ पहुंचा है।

तुम्हारे गले के विषय मे तुम्हारे डॉक्टर की क्या राय है? उसमे क्या खराबी है?

इस बार मैने उत्तर प्रदेश, पजाब और सिध की यात्रा की। कभी मुझे एक दिन मे दस-दस भाषण देने पडे और 17 से 18 घटे तक लगातार कार्य करना पड़ा। फिर भी मैं स्वस्थ हू। सर्दियो की जलवायु ठीक है, इसलिए मै इतना परिश्रम कर पा रहा हूं।

आशा है अब तुम अपने स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखोगी और फिर बीमार नहीं पड़ोगी।

ये अध्यक्ष पद के पुन: चुनाव का कुछ विरोध हो रहा है। पता नहीं क्या होगा। किसी भी दशा में मुझे फरवरी के अंत तक कठोर परिश्रम करना ही है।

कुछ दिन पूर्व सुश्री बनर्जी से मेरी मुलाकात हुई थी। उसने तुम्हारी चर्चा की थी। उसने बताया कि विएना बहुत बदल गया है।

कृपया अपनी माता को मेरा प्रणाम कहना और लोती को मेरी शुभकामनाएं देना। तुम्हारे शीघ्र स्वास्थ्य की कामना करता हूं। क्रिसमस और नववर्ष की भी शुभकामनाएं। पता नहीं इस वर्ष क्रिसमस और नववर्ष पर तुम कैसा महसूस करोगी। इससे पहले कि मैं भूल जाऊं, अपने जन्मदिन की मुबारकबाद स्वीकार करो।–(अनुवाद–प्रियवर, हार्दिक प्यार)

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बंबई
26.12.38

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आस्ट्रिया के चित्रो की पुस्तक भिजवाने के लिए शुक्रिया। वह मेरे पास 24 तारीख को पहुंच गई थी। आज तुम्हारा जन्मदिन है। मैं तुम्हें हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि तुम्हें मानव की सेवा में सुख और शांति मिले तथा ईश्वर तुम्हारी मनोकामनाएं पूरी करे।

आज वर्धा से चल दूंगा और कल मद्रास पहुंच जाऊंगा। 9 तारीख को कलकत्ता से वर्धा के लिए रवाना हुआ था जहां 16 तारीख की कार्यकारिणी की बैठक थी। वर्धा से मैं यहां आया वहां तभी से बीमार चल रहा हूं, गला खराब है। अब मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूंगा। 10 तारीख को वापिस बंबई पहुंचूंगा। यहां से 11 को बारदोली जाऊंगा, जहां कार्यकारिणी की बैठक होगी। मीटिंग के बाद 15 जनवरी को बंबई वापिस आ जाऊ, दो तीन दिन वहां रहने के बाद कलकत्ता चला जाऊंगा।

बहुत दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया क्षमाप्रार्थी हूं। प्रत्येक दिन तुम्हारे पत्र का इंतजार रहता था। तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है, विस्तार से लिखो।

नववर्ष के लिए हार्दिक शुभकामनाएं। मैं जानना चाहूंगा कि इस वर्ष नववर्ष की शाम तुमने कैसे बिताई। शुभकामनाओ सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

(क्रिसमस कार्ड जिस पर बीजापुर की रानी चादबीबी का चित्र है।)

क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाए।

सुभाष चद्र बोस
दिसबर 1938
वर्धा
4 1 39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

पिछले पत्र में मैंने तुम्हे लिखा था कि मे दक्षिण भारत की यात्रा पर जाने वाला हू। एक बार फिर व्यवधान पैदा हो गया है। मै यहा बंबई मे 27 दिसबर को महात्मा गाधी से मिलने आया था, मुझे उसी दिन वहा से मद्रास वापिस लौटना था, किंतु मै बीमार हो गया था। इस बार गला और नाक खराब है। चेहरे मे बहुत दर्द है और तेज बुखार है। दर्द कम हो गया है, किंतु चेहरे मे अभी आराम नही आया, क्योंकि बुखार अभी चल रहा है। 4-5 दिन मे ठीक हो जाने की आशा है। फिर मै बबई के उत्तर मे बारदोली नामक जगह जाऊगा, जहा 11 जनवरी को कार्यकारिणी की बैठक सपन्न होगी। कुछ दिन बाद कलकत्ता लौटने की उम्मीद है जहा 8 या 10 दिन रहूगा। फिर यदि सब सामान्य रहा तो फरवरी मे दक्षिण भारत की यात्रा पर निकलूगा।

बहुत दिन से तुम्हारा पत्र नही मिला। शायद कलकत्ता मे पडा हो। 8, 10 दिन से मेरी डाक कलकत्ता से यहां नहीं भेजी गई है, क्योंकि बीमारी की वजह से मेरे कार्यक्रम में परिवर्तन हो गया। किंतु मैंने कलकत्ता सदेश भिजवा दिया था अतः कल तक सारी डाक इकट्ठी यहां पहुच जाएगी। तुम्हारे स्वास्थ्य के विषय मे जानने को बहुत उत्सुक हू। कृपया मुझे अपने अस्पताल में बिताए दिनो के विषय में विस्तार से लिखो, तुम्हे डाक्टर नर्स, दवाइयां - इलाज आदि कैसा लगा। तुम किस अस्पताल मे थीं? क्या खाना खाने के बाद होने वाले दर्द से छुटकारा पाने की दृष्टि से तुमने अपना गॉल ब्लैडर निकलवा दिया है?

हालांकि लोग मुझे अध्यक्ष चुनने को उत्सुक हैं, किंतु मुझे नहीं लगता कि मैं पुनः अध्यक्ष चुना जाऊगा। कुछ लोग गांधीजी पर दबाव डाल रहे है कि इस बार कोई मुसलमान अध्यक्ष बनाना चाहिए, यही गांधीजी भी चाहते हैं - किंतु मेरी अभी तक उनसे कोई बात नहीं हुई है। एक तरह से तो यह अच्छा रहेगा कि मैं पुनः अध्यक्ष न बनूं। इससे मुझे बहुत सा वक्त अपने लिए मिल जाएगा। इस माह के अंत मे चुनाव होंगे।

... [अनुवाद - *प्रिय, तुम कैसी हो? मैं रात दिन तुम्हारे ही विषय मे सोचता रहता हूं।*]

मेरे विचार से आजकल तुम्हारे पास घर और दफ्तर में दोनों ही जगह खूब काम होगा। आजकल घर पर तुम कौन से वाद्य बजाती हो? क्या गिटार? कार्यालय से कितने दिन अनुपस्थित रहीं? यदि स्वास्थ्य लाभ के लिए तुम गैस्टीन या कहीं और जा सकीं तो बेहतर होगा। कृपया बताओ कि श्रीमती और श्री हेलमिग का क्या हाल है। आशा है आजकल उनके यहां बहुत से अतिथि होंगे। तुम्हारी माताजी के लिए सादर प्रणाम, बहन और तुम्हें प्यार।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

11.2.39

प्रिय सुश्री शेक्ल,

बहुत दिन से तुम्हें पत्र नहीं लिख पाया, क्षमा चाहता हूं। इन दिनों मैं अत्यधिक व्यस्त रहा। अगले वर्ष के लिए भी मैं पुनः अध्यक्ष चुन लिया गया हूं। महात्मा गांधी और उनके सहयोगियो ने मेरा विरोध किया। पंडित नेहरू तटस्थ रहे। इस चुनाव का परिणाम मेरी विजय है। पूरा देश इस निर्णय से उत्साहित है, किंतु मेरे कंधों पर बहुत बोझ आ पडा है। मेरा काम बहुत बढ़ गया है, जिसे संभालना मेरे लिए कठिन होगा।

तुम्हे मेरे चुने जाने की खबर कब और कैसे हुई? मेरे विचार से यूरोप के सभी पत्रों को केबल द्वारा सूचित किया गया था। मेरे भतीजे को इंग्लैंड में अगले दिन सुबह - 30 जनवरी को खबर मिल गई। क्या तुम मेरी जीत से प्रसन्न हो?

तुम्हारा 21 दिसंबर का पत्र मुझे दिसंबर के अंत या जनवरी के प्रारंभ में मिला। उससे तुम्हारा अस्पताल में बिताए गए दिनों के बारे में पता चला। क्या अब तुम पूर्ण स्वस्थ अनुभव करती हो?

तुम्हे विएना में मेरे भतीजे से मिलकर कैसा लगा? क्या उसमें कोई परिवर्तन अनुभव किया? मेरा मतलब बौद्धिक एवं शारीरिक परिवर्तन से है। उसने मुझे लिखा है कि उसे विएना बहुत पसंद आया।

दिसंबर के अंत में और जनवरी के प्रारंभ में मैं लगभग पंद्रह दिन अस्वस्थ रहा। अब ठीक हूं। नाक और गले में परेशानी है।

क्रिसमस उपहार के तौर पर तुमने जो चित्रों की किताब भेजी है, उसके लिए शुक्रिया। मुझे यह पुस्तक बहुत पसंद आई। मुझे खेद है कि मैं तुम्हें कुछ नहीं भेज सका, क्योंकि मुझे डर था कि तुम्हें बहुत सी ड्यूटी देनी पड़ सकती है। क्या तुम्हें मालूम है कि यहां कोई ऐसी व्यवस्था है, जिसमें मैं अग्रिम टैक्स जमा करा दूं ताकि तुम्हें पार्सल पर वहां टैक्स न देना पड़े? ऐसी स्थिति में मैं तुम कुछ उपहार भेज सकूंगा।

क्या तुम मुझे अपने जन्म का सही समय, तिथि और स्थान बता सकती हो?

कृपया हैल्सीकोल और सैंटोजेन निरंतर लो। आशा है तुम मेरी राय मानोगी जो मैं अपने अनुभव के आधार पर दे रहा हूं। .... [अनुवाद - मैं सदा तुम्हारे बारे में ही सोचता रहता हूं - तुम विश्वास क्यों नहीं करती? - सं०]

कृपया Zero लिखा करो Cero नहीं।

तुम्हारा 21 तारीख का पत्र मद्रास भेज दिया गया था, किंतु वह मुझे सही सलामत मिल गया। मुझे बीमारी की वजह से अपनी मद्रास की यात्रा स्थगित करनी पड़ी।

तुम्हारा 19 जनवरी का पत्र भी मिला। मेरे विचार से वेयर जाने पर जो परिवर्तन हुआ वह तुम्हारे लिए अच्छा रहा। अब विएना मे तुम कैसी हो?

क्या तुम्हें ओरिएंट चाहिए? कृपया मुझे सूचित करो।

मुझे तुम्हारा एक फरवरी का पत्र भी मिला जो तुमने मेरे पुनर्चुनाव की सूचना मिलने के बाद लिखा था। .... [अनुवाद - पता नहीं भविष्य में मुझे क्या कदम उठाना चाहिए। कृपया कुछ सुझाव दो कि मुझे क्या करना चाहिए?]

यह पत्र तुम्हारे तीन पत्रों के उत्तर में लिख रहा हूं। तुम्हारे टाइपराइटर का क्या हुआ?

... [अनुवाद - बहुत प्यार व हार्दिक शुभकामनाएं - सं०]

सुभाष चंद्र बोस

जेलगोड़ा
19.4.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हे पत्र लिखे एक अरसा हो गया। इन दिनों आपके पत्रों का उत्तर न दे पाने पर पता नहीं तुम मेरे बारे में क्या सोच रही होगी। भविष्य में तुम्हें लगातार पत्र लिखने का वादा करता हूं। वैसे मुझे भी तुमसे शिकायत है कि तुम मुझे लगातार पत्र नहीं लिखती हो।

15 फ़रवरी को मैं बीमार हुआ था और तभी से लगातार बीमार हूं। पिछले कई बरस से इतनी लंबी और गंभीर बीमारी कभी नहीं भुगती। अब कुछ स्वस्थ होना शुरू हुआ हूं। 21 तारीख को कलकत्ता के लिए रवाना हो जाऊंगा।

बीमारी की हालत में ही मुझे त्रिपुरी जाना पड़ा जहां कांग्रेस का वार्षिक सम्मेलन था और उसकी अध्यक्षता मुझे करनी थी। त्रिपुरी सम्मेलन के पश्चात मे यहां बिहार प्रांत में अपने भाई के पास रहने आ गया। कलकत्ता पहुंचते ही मैं अत्यधिक व्यस्त हो जाऊगा।

क्या तुम्हें अब पत्रिका मिल रही है? क्या उसे पढ़ने का समय मिल जाता है? यदि हां, तो तुम्हें मुख्य समाचार तो मिल ही जाते होंगे। पत्रिका के नवीनीकरण की तिथि पर मुझे सूचित कर देना।

शायद तुम जानती ही हो कि गांधीवादियों के विरोध के बावजूद मैं पुनः अध्यक्ष चुन लिया गया हूं। वे बहुत नाराज हैं कि मैंने उनके उम्मीदवार को हरा दिया। गांधीजी स्वयं मेरी जीत को अपनी हार मान रहे है। चुनाव के बाद से मेरी गांधीजी के ग्रुप से अनबन है जो अभी भी सामान्य नहीं हो पाई। कांग्रेस में बहुत विवाद है, मेरे चुनाव के बाद से, और यह सब गांधीवादी गुट की करनी है।

तुम्हे यह जानकर प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार ने मेरी पुस्तक पर से रोक हटा दी है। 'द इंडियन स्ट्रगल' नामक यह पुस्तक अब भारत मे भी आ सकती है।

तुम्हारा स्वास्थ्य अब कैसा है? आपरेशन के बाद क्या तुम पूर्ण स्वस्थ महसूस कर रही हो? क्या यह परिवर्तन तुम्हारे लिए लाभकारी रहा? तुम्हारा रोजमर्रा का कार्य क्या है? बाकी समय कैसे बिताती हो? क्या तुम्हारा कोई मित्र है?

मैं चाहता हूं कि काश मैं विश्राम के लिए बैगस्टीन जा पाता। लेकिन पता नहीं समय और पैसा निकाल पाऊंगा या नहीं। क्या बैगस्टीन के फ्रॉ हैलमिल की कोई खबर है? क्या अभी भी वे अपना पेंशन चला रही हैं? क्या पहले की अपेक्षा अब अधिक यात्री आ रहे हैं?

. [अनुवाद - पत्र न लिखने के लिए क्षमा चाहता हूं। किंतु तुम्हारे विषय में हमेशा की तरह रोज सोचता रहता हू। क्या तुम भी मेरे बारे मे सोचती हो? सच? -सं०] देखा मै अभी जर्मन भाषा पूरी तरह भूला नहीं हूं। हालाकि अब मुझे पढ़ने लिखने का समय नहीं मिलता। . . [अनुवाद - कृपया हेलमिक से पूछना कि यदि मैं वहां इलाज करवाने आऊ तो मुझे कितना खर्च करना पड़ेगा। पहले जितना या अधिक? यदि मैं वहां आऊ तो क्या तुम वहा पहुच पाओगी? क्या तुम्हारा मालिक इसकी इजाजत दे देगा? - संपादक]

मैने तुम्हे पिछला पत्र 10 जनवरी को लिखा था। तुमने 2 मार्च 1939 मे उसका उत्तर दिया था। इसलिए तुम पर भी देरी का आरोप लग सकता है? क्या तुम सैंटोजन और हैल्सीकोल ले रही हो?

मुझे तुम्हारे चचेरे भाई - दंत चिकित्सक की मृत्यु के विषय मे सुनकर बहुत दुख हुआ। मेरी हार्दिक संवेदनाएं स्वीकार करो। एक के बाद एक रिश्तेदार का इस दुनिया को छोड़ कर जाना कितना दुखद हो सकता है।

क्या तुम्हे अपने पुराने मित्रो - यानी हमारे मित्रों - से मिलने का समय मिल जाता है। एक साल से मै उनसे संपर्क नहीं कर पाया, किंतु अब पुनः पत्राचार शुरू करूंगा। अपनी माताजी को प्रणाम कहना और बहन को आशीर्वाद। [अनुवाद - प्रिये, तुम्हारे लिए प्यार। फिर मिलेगे। - सं०]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्च - क्या तुम्हे एक राय दे सकता हू? मुझे लगता है कि तुम्हारे शरीर मे आयोडीन की कमी है। इसीलिए तुम्हारी गदन और गला अपेक्षाकृत मोटे हैं। डाक्टर से राय लो। तुम्हे रोज आयोडीन लेना चाहिए। यह बात महत्वपूर्ण है।

सुभाष चंद्र बोस

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी

रेलगाड़ी से,
14.5.39

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हे पहले पत्र नहीं लिख सका। पिछले कुछ माह मैं अत्यधिक व्यस्त रहा और 16 फरवरी से 10 अप्रैल के बीच बीमार भी रहा। बीमारी की हालत में ही मै त्रिपुरी सम्मेलन में भी गया था। हालांकि अब स्वस्थ हूं, किंतु अभी भी कमजोरी है। 21 अप्रैल से फिर कठोर परिश्रम मे लगा हूं। अब मैं (उत्तरी भारत) यूनाइटेड प्रांतों के सम्मेलनो में जाऊंगा। संभवत: 18 तारीख को कलकत्ता वापिस लौटूंगा।

तुम शायद अब तक सुन ही चुकी होगी कि मैंने कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया है, क्योकि मेरे लिए महात्मा गांधी व उनके कट्टर अनुयायी के साथ समझौता करने मे बहुत मुश्किल पेश आई। हालांकि मेरे पक्ष में 3000 लोग थे कांग्रेस के, किंतु अखिल भारतीय काग्रेस समिति के 400 लोगों में मैं बहुमत नहीं पा सका। यह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी 12 महीने तक कार्य करेगी, जब तक कि नया सम्मेलन नहीं होता।

त्याग पत्र देने से मुझे कोई क्षति नहीं हुई है। बल्कि मैं और अधिक लोकप्रिय हो गया हूं।

तुम्हारा 2.2.39 का पत्र मुझे समय पर मिल गया था, किंतु मैं अभी तक उसका उत्तर नही दे पाया। ... [अनुवाद - मैं रोज तुम्हारे बारे मे ही सोचता रहता हूं।]

मुझे उम्मीद है कि तुम्हें मेरा जेलगौड़ा से लिखा पत्र मिल गया होगा। यह मैने उन दिनो लिखा था जब मै त्रिपुरी सम्मेलन के बाद आराम कर रहा था। तुम्हारे म्यूनिख जाने के संबंध मे - मुख्य मुद्दा तुम्हारे नौकरी के भविष्य का है। फिलहाल तुम्हे म्यूनिख में भी कोई लाभ नहीं होगा बल्कि विएना की अपेक्षा बुरी हालत ही हो सकती है। विएना मे तुम्हारा अपना मकान है तुम्हारा अपना परिवार है। म्यूनिख मे हर चीज के लिए अलग से व्यय करना पड़ेगा। पहले यह पता लगाओ कि भविष्य में तुम्हे विएना में अधिक पैसा मिलेगा या म्यूनिख मे। भविष्य को नजर मे रखकर ही तुम्हे यह निर्णय लेना होगा कि तुम म्यूनिख जा सकती हो, वरना विएना में रहना ही उचित है। भविष्य में तुम्हे विएना के 140 आर० एम० के स्थान पर 200 आर० एम० ही मिलते है तो तुम्हें विएना में अपने परिवार के साथ ही रहना चाहिए।

देरी से पत्र लिखने के लिए क्षमा चाहता हूं। अब मैं बेहतर महसूस कर रहा हूं। भविष्य में तुम्हे लगातार पत्र लिखता रहूंगा।. . [अनुवाद – सदा की तरह अत्यधिक प्यार। -संपादक]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

रेलगाड़ी से
15.6.39

प्रिय सुश्री शेक्ल,

मैं इस समय गाडी मे हू, लाहौर जा रहा हूं, जहां से पेशावर जाऊंगा (पूर्वी पश्चिमी भारत)। वहां से बंबई जाऊंगा जहां 21 जून को पहुंचूंगा। कुछ समय बंबई मे रहूगा फिर वहां से 8 या 10 जुलाई को कलकत्ता पहुचूंगा। संभव है बंबई से सीधा कलकत्ता लौटू–तब मैं जून के अंत मे कलकत्ता पहुंच जाऊंगा।

अब से तुम्हे लगातार पत्र लिखूंगा अर्थात् सप्ताह में एक बार। आशा है तुम्हें भी पत्र लिखने का समय मिलेगा। फोटो जो तुमने खींची और 30 मई के अपने पत्र के साथ भिजवाई उसके लिए धन्यवाद। यह पत्र मुझे 9 जून को मिला, क्योंकि मैं बंगाल के टूर पर था। (मैं ढाका गया था) यह पत्र 5 जून को कलकत्ता पहुंच गया था।

मेरे लिए यही सही कदम था कि मैं त्यागपत्र दे दू। इसकी वजह से बहुत सी जगहों पर (बंगाल आदि) और उदारवादी दृष्टिकोण के लोगो में, मैं बहुत लोकप्रिय हो गया हूं, हालांकि गांधीवादी मुझसे नाराज है। किंतु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। पहले की अपेक्षा अब मुझ पर और भी अधिक काम का बोझ आ पड़ा है। अब मैं कांग्रेस मे ही एक नया गुट, जिसे फारवर्ड ब्लॉक कहा जाएगा, बना रहा हूं जिसमे सभी निष्पक्ष और उदारवादी व्यक्ति शामिल होगे। इसके लिए मुझे अब बहुत सा काम और यात्राएं करनी पडेगी।

भारत एक अद्‌भुत देश है, जहा व्यक्ति इसलिए लोकप्रिय नहीं होता कि उसके हाथ में शक्ति है, बल्कि वह पद छोड़ दे तो लोकप्रिय होता है। उदाहरण के लिए इस बार लाहौर मे मेरा पहले, जब मैं कांग्रेस अध्यक्ष था, की अपेक्षा अधिक जोरदार स्वागत हुआ।

21.6.39

मुझे दुख है कि मैं यह पत्र पहले डाक में नहीं डाल पाया। अब मेरी लाहौर और पेशावर की यात्रा पूरी हुई है और मैं अब बंबई की ट्रेन में हूं। एक सप्ताह मैं बंबई में ही रहूंगा। बंबई के बाद संभवतः दक्षिण भारत जाऊंगा।

लाहौर में मेरी जेब काट ली गई थी। किसी चोर ने भीड़-भाड़ में मेरी जेब से मेरे पत्र और पैसे चुरा लिए थे। उन पत्रों में तुम्हारा पत्र और फोटो भी थे। मुझे दुख हुआ। यदि संभव हो तो मुझे अपना चौतिल द्वारा खिचवाया गया पासपोर्ट आकार का फ़ोटो भेजो। कुछ माह पूर्व तुमने पोस्टकार्ड आकार के दो चित्र भेजे थे। वे भी कुछ दिन मेरे पास रहे फिर न जाने कहां खो गए।

आजकल शारीरिक श्रम बहुत करना पड़ रहा है। खेद है कि आजकल मुझे आराम भी नहीं मिल पा रहा, क्योंकि यही काम का समय है, जबकि स्वास्थ्य की दृष्टि से मुझे परिवर्तन के लिए कहीं जाना चाहिए। मैं सोच रहा हूं कि जून और जुलाई में काम करने के बाद अगस्त में आराम करूंगा। अगस्त में बरसात शुरू हो जाती है। जिससे यात्रा करना कठिन हो जाता है।--[अनुवाद-अगस्त तक प्रतीक्षा करो। शायद मैं गैस्टीन आऊं। यदि मैं वहां पहुंचूं तो तुम्हें भी वहां पहुंचना होगा। क्या तुम आओगी?] आजकल जर्मन भाषा पढ़ने का बिल्कुल भी समय नहीं मिल पा रहा। क्या तुम भारतीय समाचार पत्र पढ़ती हो? तुम्हे पढ़ने चाहिएं। क्या तुमने भगवद्गीता पढ़ी? हां, क्या मैंने तुम्हें बताया था कि मेरे भतीजे अशोक ने शादी कर ली है? मेरा दूसरा भतीजा अमिय इस माह के अंतिम सप्ताह में इंग्लैंड से घर वापिस लौट रहा है।-[अनुवाद-तुम भारत कब आओगी? तुम्हारी माताजी और तुम कैसी हो? बहुत सा प्यार और ढेरों शुभकामनाएं-सं०]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

जबलपुर
4.7.39

प्रिय सुश्री शेक्ल,

कुछ दिन पहले तुम्हारा 23 जून का पत्र बंबई मे मिला। यह कलकत्ता से इधर भिजवाया गया था। मैं 14 जून को कलकत्ता से रवाना हुआ था पंजाब और सीमावर्ती प्रांतों में घूमा। वहां से दिल्ली होता हुआ बंबई गया। अब मैं जबलपुर (मध्यवर्ती प्रांत) में हूं। कुछ दिन में कलकत्ता या बंबई के लिए रवाना हो जाऊंगा। अगले कई सप्ताह तक लगातार यात्रा में रहूंगा। मेरा स्वास्थ्य अभी ठीक नहीं है, बहुत कमजोरी है। लोगों में इतना उत्साह है कि मुझे स्वास्थ्य का ध्यान किए बगैर कार्य करना होगा। हम कांग्रेस में

ही एक नया गुट फारवर्ड ब्लॉक बना रहे हैं। सब ओर से सहयोग मिल रहा है। अब मैं सोच रहा हूं कि एक महीना कार्य करने के बाद मैं कम से कम एक महीना आराम करूंगा। उदाहरण के लिए यदि मैं 15 अगस्त से 15 सितंबर तक आराम करता हूं तो मैं पुनः वर्ष के अंत तक कार्य करने के योग्य हो जाऊंगा। इसलिए अब पहले की अपेक्षा निरंतर पत्र लिखूंगा। मैंने अंतिम पत्र तुम्हें 21 जून को लिखा था, जो बंबई में डाक में डाला था। अब तक वह तुम्हें मिल गया होगा।

मुझे प्रसन्नता है कि तुम कुल मिलाकर ठीक-ठाक हो। मेरे विचार से आपरेशन के प्रभाव से मुक्त हो चुकी हो। मेरे विचार से गैस्टीन में तुम अपना इलाज कराओ तो पूर्णतः स्वस्थ हो जाओगी। आशा है तुम्हारी गॉल ब्लैडर की परेशानी दुबारा नहीं हुई होगी। यदि गैस्टीन आओ तो अगस्त या सितंबर अच्छा है, क्योंकि उन दिनों न अधिक गर्मी होती है और न अधिक सर्दी।

मेरा जो भतीजा कैंब्रिज में पढ़ रहा था। वह वापिस घर लौट आया है। कुछ माह यहां रहने के बाद पुनः कैंब्रिज लौट जाएगा।

एक माह पहले तुमने जो पत्र और फ़ोटो भेजे थे वे मुझे मिल गए हैं। दुर्भाग्य से मेरी जेब कट गई और वह पत्र, फोटो तथा पैसे जो मेरी जेब में थे वे चोरी हो गए। संभवतः तुम चीतिल वाली फ़ोटो पोस्टकार्ड आकार में पुनः भिजवा सको। पहली दो पोस्टकार्ड आकार की फ़ोटो भी कुछ दिन मेरे पास रहने के बाद खो गई।

तुम फ्रेंच क्यों पढ़ रही हो? तुमने दुबारा पढ़ना शुरू किया या पहले का ज्ञान ही पर्याप्त था जो तुम्हें परीक्षा में पास करवा सके?

रेलगाड़ी से
6.7.39

जबलपुर में अपना कार्य पूरा करने के पश्चात मैं बंबई लौट रहा हूं। पक्का पता नहीं कि कब कलकत्ता वापिस लौटूंगा, क्योंकि मुझे बहुत सी यात्राएं करनी हैं। फिर भी तुम मुझे मेरे कलकत्ता के पते पर, 38/2, एल्गिन रोड, कलकत्ता, पत्र लिखना। मुझे मिल जाएंगे।

मुझे खुशी है कि तुम्हारी फ्रेंच की परीक्षा हो गई और तुमने वह उत्तीर्ण कर ली है। क्या तुम्हें कोई अन्य भाषा भी सीखनी पड़ेगी?

मुझे कम से कम एक माह छुट्टियां लेनी चाहिए, लेकिन अभी यह मालूम नहीं कि अगस्त के मध्य में या सितंबर के प्रारंभ में। किंतु अगस्त के मध्य से पहले छुट्टी लेना कठिन है।

यात्रा और कठिन परिश्रम के बावजूद मैं स्वस्थ हूं।–[अनुवाद–मै सदा तुम्हारे विषय में ही सोचता रहता हूं। हमेशा की तरह ढेरों प्यार–सं०]

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

बर्लिन
3.4.41

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

तुम्हें मेरा यह पत्र पाकर परम आश्चर्य होगा और यह जानकर तो और भी कि यह पत्र मैं तुम्हें बर्लिन से लिख रहा हूं। कल दोपहर ही मैं बर्लिन पहुंच गया था और तत्काल तुम्हें पत्र लिखता किंतु मैं अत्यधिक व्यस्त हो गया था। सभी होटल भरे पडे हैं और बड़ी मुश्किल से मेरे लिए एक कमरे की व्यवस्था हो पाई। आज मैं दूसरे होटल मे 'नर्बरगर हॉफ' में शिफ्ट कर रहा हूं।

मेरा कार्यक्रम अभी निश्चित नहीं है, किंतु पूर्ण संभावना यही है कि मेरा मुख्यालय बर्लिन ही रहेगा। मैं नहीं जानता कि मैं विएना आ पाऊंगा या नहीं। इसलिए तुम मुझसे मिलने बर्लिन अवश्य आओ। क्या तुम आ सकती हो? तुमसे मिलकर मुझे कितनी प्रसन्नता होगी यह तुम समझ ही सकती हो।

यह भी संभावना है कि मुझे यहां सचिव की आवश्यकता पड़े। यदि ऐसा हुआ, तो क्या तुम आ जाओगी? क्या तुम्हारी माताजी और बहन इस बात के लिए राजी हो जाएंगी?

मेरा पासपोर्ट मेरे नाम से नहीं है, बल्कि ओरलैंडो मैजोटा के नाम से है। इसलिए जब तुम मुझे पत्र लिखो तो इसी नाम से लिखना। इस बात को पूर्णत: गुप्त रखना कि मैं यहां आया हूं। तुम अपनी माताजी को और बहन को तो बता सकती हो, किंतु वे किसी से चर्चा न करें।

लौटती डाक से निम्न बातों के उत्तर दो।

(1) यदि मुझे यहां सैक्रेटरी की आवश्यकता हुई तो क्या तुम काम करोगी? (2) यदि बर्लिन आओगी तो कितना वेतन लोगी? (3) अभी तुम्हें कितना वेतन मिल रहा है। (4) आजकल किस ब्यूरो में काम कर रही हो और कितने घंटे काम करती हो। (5) क्या तुम्हारे पास टेलिफ़ोन है। क्या तुम्हारा नं० अभी भी आर 60-2-67 है। (6) क्या तुम कुछ दिन के लिए ब्यूरो से छुट्टी लेकर बर्लिन आ सकती हो ताकि हम मिल सकें? यदि यहां आओ तो क्या यहां एक सप्ताह रहने और आने-जाने का व्यय कर पाओगी? बर्लिन में कोई जान-पहचान है जहां तुम रह सको, या मुझे ही बर्लिन में

तुम्हारे लिए जगह खोजनी पड़ेगी? यह प्रश्न केवल इसलिए है ताकि हम वैसे ही मिल सकें।

कृपया शीघ्र इस पते पर उत्तर दो – ओरलैंडो मैज़ोटा, होटल नर्बरगर हॉफ़, नजदीक एनहाल्टर बैनहॉफ़। कृपया अपनी माताजी को मेरा प्रणाम और बहन को शुभाशीष कहना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

पुनश्चः - यदि तुम एक सप्ताह बर्लिन में रहने का खर्च नहीं उठा पाओगी तो क्या उपहार के लिए पैसा उधार लेकर यहां आ जाओगी। युद्ध स्थितियों के कारण सरकार की ओर से तो यात्रा पर कोई प्रतिबंध नहीं है?

सुभाष चंद्र बोस

(तार - दिनांक 3 अप्रैल 1941)
ई० शेंक्ल फ़ैरोगासे 24,
विएना 18

(जर्मन भाषा का अनुवाद - बोस आजकल बर्लिन मे है और पूछ रहे हैं कि तत्काल बर्लिन आना सभव हैं? विदेश विभाग को सूचित करो - स०)

17.6 42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम स्वस्थ हो। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना। यह मित्र तुमसे मिलना चाहता है और बात करना चाहता है। क्या तुम इस पर विश्वास करती हो। इन परिस्थितियो मे जो उचित समझो वही करो।

तुम्हारा शुभाकाक्षी
ओ० मैजोटा

(तार - दिनाक 8 7 42)
रोम

शेक्ल सोफीनस्ट्रासे 6

बर्लिन चार्लटनबर्ग -2

[अनुवाद कल एवलडग ने तुम्हार लिए स्टॉप शुगर कार्ड भेजे हार्दिक शुभकामनाए - मैजोटा]

बर्लिन
मंगलवार, 1.9.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल रात मैं कोनिग्सब्रक से लौटा। वहां हमारी संख्या 740 है।

हैंबर्ग में हमें अच्छी सफलता मिली।

मैं ठीक हूं। श्री फ़ाल्टिस संभवतः विएना के रास्ते में शुक्रवार को यहां आएंगे।

साथ में तुम्हारे लिए भोजन के कूपन हैं। आशा है तुम ठीक हो।

रात को शायद फ़ोन करूं - यदि कोई अतिथि न आया तो। कृपया सूचित करना कि तुम विएना कब लौटना चाहती हो? मैंने तुम्हारे पत्र श्री मदन को भिजवा दिए थे। शुभकामनाओं सहित,

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैजोटा

(तार -दिनांक 26.9.42)

तार

1626 बर्लिन चार्लटन बर्ग/2-20-26 1750

शेंक्ल विएना - 18

फैरोगासे - 24 विएना

.. [अनुवाद - भाषा का प्रश्न हल हो गया है। इसके विषय में चिंतित न रहो। हार्दिक शुभकामनाएं - मैजोटा - सं०]

बर्लिन
बृहस्पतिवार 1/10/42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल यानी बुधवार को मैने पंजीकृत डाक द्वारा तुम्हारी प्रति 'इंडियन स्ट्रगल' को भिजवा दी थी। आशा है शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएगी।

क्या तुम्हे सिगरेट चाहिए? यदि धीरे-धीरे धूम्रपान छोड दो तो बेहतर होगा। किंतु यदि चाहिए तो मैं भिजवा सकता हूं। मैं फ्रॉ डिडरिक से ऐसी व्यवस्था कर रहा हूं, ताकि तुम्हें लगातार पढ़ने को कुछ सामग्री मिलती रहे।

मुझे तुम्हारा 19/9 और 27/9 का पत्र मिल गया है। इसके साथ कुछ टिकटें भिजवा रहा हूं।

आज (वृहस्पतिवार) तुम्हे एक्सप्रेस पार्सल द्वारा कुछ फल भी भेज रहा हूं। आशा है ठीक ठाक हालत मे तुम तक पहुंच जाएंगे।

फ्रों बी ... (अस्पष्ट) पुत्री का दो सप्ताह या दस दिन के अंदर विवाह हो जाएगा। वह पूछ रही थी कि क्या उन दिनो तुम बर्लिन में होगी। मैंने कह दिया नहीं।

वैसे, क्या मुझे उसे कुछ उपहार देना चाहिए? यदि हां, तो क्या? क्या कोई सुझाव दे सकती हो?

एक दिन मैंने श्रीमती हाफ़िज का पत्र तुम्हारे पते पर भिजवाया था। उन्हें जवाब लिखने में पूरी सावधानी बरतना।

मुझे आशा है कि तुम्हारी माताजी को व लोती को फल पसंद आएंगे। माताजी को प्रणाम और लोती को प्यार। आजकल पीटरहॉफ की नियुक्ति कहां पर है? क्या प्राज में?

शेष फिर, शुभकामनाओं सहित।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैजोटा

पुनश्च. – मगलवार को शायद मैं एक सप्ताह या कम समय के लिए रोम जाऊगा। शायद 11 अक्तूबर को कोनिग्स मे होउगा।

ओ० मैजोटा

(तार – दिनांक 6 10 42)

शेक्ल फैरोगासे 24 विएना 110

[अनुवाद – यात्रा मे हू, लौटकर फोन करुगा। – मैजोटा]

बर्लिन
शुक्रवार
(तिथि – नहीं – स०)

प्रिय सुश्री शेक्ल,

बुधवार और वृहस्पतिवार को मै कोनिग्सब्रक मे था। मगलवार को रात तुम्हे फोन करने की कोशिश की किंतु एक्सचेंज ने बताया कि उधर से कोई जवाब नहीं आ रहा। रात 10 बजे का समय था।

मेरा विश्वास है कि प्रतिमाह स्विरका को 20 एम और एलिजाबेथ को 10 एम मिलते हैं। क्या नहीं?

कोनिग्सब्रक में अब संख्या 1100 से भी ऊपर है।

साथ मे कुछ भोजन के कूपन भेज रहा हूं।

तुम्हारी माताजी कैसी हैं? उन्हें मेरा प्रणाम कहना। तुम और लोती कैसी हो? मैं ठीक हूं।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैज़ोटा

बर्लिन, चार्लटनबर्ग
सोफ़ीन स्ट्रीट - 6-7
बुधवार सायं
(21-10-42? सं०)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

साथ में रिकासबन का पत्र है। कृपया जो तुम उचित समझो वही करो।

मेरी रोम यात्रा कुछ दिन के लिए स्थगित हो गई है। कल दोपहर में ही मुझे पता चला, रोम से सूचना मिली। सभी व्यवस्थाएं स्थगित करनी पड़ीं।

तुम्हारा पत्र और पेस्ट्री जेलिटो को दे दी थीं।

फॉ० बुडहन (?) की बेटी का विवाह आज संपन्न हो गया। मैंने अपने कमरे उन्हें पार्टी करने के लिए दे दिए थे।

आशा है तुम ठीक हो। शेष सभी ठीक है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैज़ोटा
(संलग्नक)

बर्लिन
दिनांक - 20.10.1942

बर्लिन, चार्ल्टटन बर्ग - 2
सोफ़ीन स्ट्रासे - 6-7
शुक्रवार 23.10.42

प्रिय सुश्री शेक्ल,

साथ मे एक पत्र भेज रहा हूं। आवश्यक कार्रवाई के बाद इसे लौटा देना और अपने विषय मे उत्तर देना।

मंजूरूद्दीन अहमद ने मुझे 'गैहमिनस वोल इंडियन' नामक पुस्तक भिजवाई थी। मैं वह उसे लौटाना चाहता हू - किंतु वह मिल नहीं रही। क्या तुम कुछ जानती हो?

साथ मे मेरा चित्र है। क्या तुम यही चाहती थी?

क्या तुम मुझे बता सकती हो कि बीबर के फोटो मुझे कहां से मिल सकते हैं? मुझे कुछ और चित्रों के लिए भी आदेश देना है किंतु मुझे उनका नंबर मालूम होना चाहिए। आशा है वहा सब ठीक है।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मेजोटा

बर्लिन
शनिवार, 26.10.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

मैं टेलिफोन के बिल भिजवा रहा हूं ताकि तुम देख सको कि कौन से बिल मेरे नहीं हैं।

बर्लिन के .... (अस्पष्ट) ने मेरी शिकायत पर कार्रवाई की थी और उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने विएना को सूचित किया है कि मैं अंग्रेजी बोल सकता हूं।

कल ही तुम्हें पत्र लिखा था शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएगा।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैज़ोटा

5.11.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

कल प्रातःकाल जल्दी ही मैं वायुयान द्वारा रोम के लिए रवाना होऊंगा। साथ में वह फ़ोटो भेज रहा हूं जो तुम वापिस चाहती थी। शेष फ़ोटो मेरे पास है। पता नहीं रोम से तुम्हें तार भेज पाऊंगा अथवा नहीं। इसलिए कोई खबर नहीं का अर्थ सब ठीक-ठाक समझना। इसी बीच तुम्हारे लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

तुम्हारे भाई से मुझे पॉकिट लैंप मिल गया है।

माताजी को प्रणाम और लोती को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
सुभाष चंद्र बोस

(तार दिनांक 7.11.42)
7 नवंबर 1942
रेडियोग्राम
123 रोम 107 1430 =
शेंक्ल फ़ैरोगासे 24 विएना 18.

.... [अनुवाद - सुरक्षित पहुंच गया, शुभाशीष मैजोटा - संपादक]

(तार दिनांक 16.11.42)
16 नवंबर 1942
रेडियोग्राम
58 रोम 1216 1800 =
शेंक्ल फ़ैरोगासे - 24 विएना 18.
.... [अनुवाद - मंगलवार को मैं बर्लिन मे हूं - मैजोटा - संपादक]

(तार दिनांक 18.11.42)
18 नवंबर 1942
246, रोम 14.18.2005
शेक्ल फ़ैरोगासे 24 विएना 18.
. .. [अनुवाद - जल्दी यात्रा नहीं कर सकता। बृहस्पतिवार को आऊंगा - मैजोटा - संपादक]

(तार दिनांक 30.11.42)
30 नवंबर 1942
तार
15 बर्लिन चार्ल्सटनबर्ग 714 30 1305
शेक्ल विएना 18 फ़ैरोगासे 24.
.... [अनुवाद - कार्यालय से अप्रैल की छुट्टी स्वीकृत। कार्यालय को सूचित कर दिया है - संपादक]

बृहस्पतिवार
(10.12.42 संपादक)
आशा है तुम ठीक हो। साथ में कुछ टिकट हैं। मैं कोनिग्सब्रक जा रहा हूं।
ओ० एम०
10/12/42

बृहस्पतिवार
(तिथि नहीं है, शायद दिसंबर 1942)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आज प्रात: ही विशेष परिशिष्ट के 10 पेज टाइप किए हुए भेजे हैं। कुछ न कुछ रोज़ भिजवाने का प्रयास करूंगा – जब तक कि सब खत्म नहीं हो जाते। यदि 'यूरलब' जाने से पहले तुम उनका अनुवाद न कर पाओ तो उसे बर्लिन भेज देना। मुझे एक .... (अस्पष्ट) ने पत्र दिया वह मुझे मिला। संलग्न कुछ टिकट हैं। माताजी को प्रणाम व तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैजोटा

पुनश्चः - मेरे लायक कोई सेवा?

ओ० मैजोटा

शुक्रवार, दोपहर
(तारीख के बिना, शायद दिसंबर 1942)

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

1 से 23 तक पृष्ठ तुम तक भिजवाने के बाद मैंने 10 से 23 पृष्ठ के बीच कुछ शुद्धियां की हैं।

जब जर्मन में इसका अनुवाद करो तो इन अशुद्धियों का ध्यान रखना। अशुद्धियां नोट करने के बाद ये पृष्ठ मुझे लौटा देना।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैजोटा

पुनश्चः - शेष पृष्ठ कल सुबह भेजूंगा। उन्हे पंजीकृत डाक द्वारा नहीं भेज रहा। ताकि वे शीघ्र ही तुम्हें मिल जाएंगे।

ओ० मैज़ोटा

विशेष परिशिष्ट

1 से 1935 आज तक

(क्रमशः)
पृष्ठ 1-10- बृहस्पतिवार मे भेजें।
पृष्ठ 11-23- शुक्रवार में भेजें।
लिंकस्टीम एल 2.
बर्लिन डब्ल्यू 35
19.12.42

प्रिय सुश्री शेंक्ल,

आशा है तुम पूर्ण स्वस्थ हो और अनुवाद का कार्य संतोषजनक रूप से हो रहा है।

मैं स्वस्थ हूं किंतु अभी भी एंफ्लुएंजा का प्रभाव शेष है। श्री फ़ाल्टिस जबसे विएना से गए हैं मेरा उनसे संपर्क नहीं हो पाया। पता नहीं विएना मे वे आई० जैड० गैसेलशाफ़्ट मे मिलेगे या नहीं, किंतु मुझे विश्वास है कि वे कोई निर्णय होते ही मुझे अवश्य सूचित करेंगे। साथ मे कुछ भोजन के कूपन हैं।

माताजी को प्रणाम व तुम्हें तथा तुम्हारी बहन को शुभाशीष।

तुम्हारा शुभाकांक्षी
ओ० मैजोटा

सुभाष चंद्र बोस की ओर से शरतचंद्र बोस को

(बंगला से अनुदित)

मेरे प्रिय भाई,

आज एक बार फिर मैं खतरे के मार्ग पर चल पड़ा हूं। किंतु इस बार घर की ओर। सड़क का अन्त शायद दिखाई न दे। यदि ऐसा कोई खतरा मिला तो संभवतः इस जीवन में आगे कोई समाचार न दे पाऊं। इसीलिए आज अपना समाचार यहां छोड़ रहा हूं – यह तुम्हें शीघ्र ही मिल जाएगा। मैंने यहां शादी कर ली है। और मेरी एक बेटी भी है। मेरे अनुपस्थिति में कृपया मेरी पत्नी व बच्ची को वही प्यार देना जो जीवनभर तुमने मुझे दिया है। ईश्वर की कृपा से संभवतः मेरी पत्नी व मेरी बेटी मेरे अधूरे कार्य को सफलता पूर्वक पूर्ण कर सकें – यही मेरी अंतिम प्रार्थना है।

मेरा प्रणाम स्वीकार करें और मां को भी मेरा प्रणाम कहें। मेजबो दीदी और अन्य बुजुर्गों को भी मेरा प्रणाम...

तुम्हारा भाई
सुभाष

बर्लिन 8 फरवरी 1943

शरतचंद्र बोस की ओर से एमिली शेंक्ल को

वालमोट
क्लीनिक मेडिकल
ग्लोन
मोंट्रिक्स - टेरिटेट
(सूसी)
29 मई 1949
रविवार

मेरी प्रिय मिमी,

तुम्हारा रजिस्टर्ड लिफ़ाफा 21 तारीख का जिसमें अनीता का पत्र भी था, कल मिला।

इस बार मैं स्विट्जरलैंड इलाज करवाने और स्वस्थ होने के इरादे से आया हूं। 18 मई की सुबह अचानक मुझे हृदय का दौरा पड़ा जो लगभग 8 घंटे रहा। जहां तक मेरा प्रश्न है यह पहला ऐसा दौरा था – भाग्यवश यह गंभीर बात नहीं थी। मेरे भाई सुनील (डाक्टर) ने मुझे दस दिन बिस्तर से हिलने नहीं दिया और मुझे राय दी कि मैं इलाज के लिए यहां आऊं। मैं हर हाल में इस माह एक महीने के लिए यूरोप आता। किंतु 18 मई के हृदय के दौरे ने मेरे पर बहुत से बंधन लगा दिए हैं। जब से यहां आया हूं इस क्लिनिक से बाहर तक नहीं गया। फिलहाल मैं यहां 17 जून तक रहना चाहता हूं उसके बाद मोंटीवेरिटा (लाकारनो के निकट) दो या तीन सप्ताह के लिए जाना चाहूंगा।

24 तारीख को इसी क्लिनिक मे कार्डियोग्राफ़ी हुई थी। जो स्थिति कलकत्ता में थी वही यहां भी है। कोई प्रगति नहीं है। किंतु मैं पहले से बेहतर और ताकतवर महसूस कर रहा हूं।

अगले सप्ताह डाक्टर मुझे इस क्लिनिक से बाहर जाने की अनुमति दे देगा।

तुम्हारी दीदी जब यहां आई तो स्वस्थ नहीं थी, किंतु अब ठीक हैं। मेरे विचार से शारीरिक रूप से पिछले वर्ष अधिक बेहतर थीं।

हमारे साथ कुछ दिन स्विट्जरलैंड में बिताने के बारे में तुम्हारा क्या विचार है। जब से हम यहां आए है तभी से लगातार सोच रहे हैं कि तुम्हे अनीता के साथ यहां आने को कहे। कल तुम्हारा पत्र मिलने के बाद मैंने श्रीमती शर्मा, जो वर्न में भारतीय लीगेशन मे है, से प्रार्थना की कि वे तुम्हारे पासपोर्ट के कार्य को यथाशीघ्र करवा दें। मैंने उन्हे बताया था कि वर्तमान स्वास्थ्य की स्थिति मे हमें साथ चाहिए और फिर

पारिवारिक बातों पर भी चर्चा करनी है। वहां से कोई उत्तर मिलते ही शीघ्र तुम्हें पत्र लिखूंगा। यदि तुम अनीता को लेकर स्विट्ज़रलैंड आ जाओगी तो हमें अति प्रसन्नता होगी।

कृपया डॉ० मदान को हमारी शुभकामनाएं व प्रणाम कहना। उन्होंने क्या विचार बनाया भारत लौटेंगे या विएना में ही रहेंगे?

एक दिन पहले ही अशोक बर्न गया है। वहां से वह ज़्यूरिख, कोन्स्टांज और बसेल जाएगा। वह पांच जून को यहां वापिस लौटेगा।

आशा है परीक्षा में भाग्य तुम्हारा साथ देगा, एक बार ये समाप्त होने पर तुम्हारा मन शांत हो जाएगा।

यदि तुम्हें अपना पासपोर्ट जल्दी मिल जाए तो तुम यहां आ सकती हो (मेरा अभिप्राय इस क्लीनिक से है) अपना इलाज करवाने की दृष्टि से। उसके बाद हम लोग इकट्ठे लाकारनो की ओर जा सकते हैं।

कृपया अपनी माताजी को हमारा प्रणाम कहना और स्वयं हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करना। प्रिय अनीता को अत्यधिक प्यार भरे चुंबन।

तुम्हारा शुभचिंतक
शरत चंद्र बोस

सुश्री एमिली शेंक्ल